आनन्द-शब्द-सार

भाग पहिला

[आनन्द, वैराग्य तथा प्रेमाभक्ति को उपजाने वाले सुन्दर सुन्दर शब्दों का अनुपम संग्रह]

—संग्रहकर्त्ता—

महात्मा योग आत्मानन्द

श्रीआनन्दपुर

मार्च, १९५७

आनन्द प्रिंटिंग प्रेस, श्रीआनन्दपुर में छपा ।

प्रथम बार—४०००

विषय-सूची

खंड पहिला (गुरुबाणी के शब्द)

खंड दूसरा (अन्य सन्तों के शब्द)

कुल शब्द—७६१

आनंद-शब्द-सार

[भाग पहिला]

सूची

म

ल

व

स

ह

श्रीसद्गुरुदेवायनमः

भूमिका

आम तौर पर हम इनसान दुनिया में रहते हुये अपने जीवन को बिहतर और शानदार बनाने के बारे में बहुत कुछ सोचते रहते हैं। हर एक इनसान चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, पुरुष हो अथवा स्त्री, अमीर हो या ग़रीब, अकलमन्द अथवा बेसमझ; अपने अपने विचार के अनुसार हर समय अपनी भलाई और तरक्की की चिंता में लगा हुआ है। यों तो अगर गहरी नज़रसे देखा जावे, तो संसार की हर एक चीज़—जड़ हो अथवा चेतन—तरक्की की तरफ़ दौड़ लगा रही है, और कुदरती नियम के अनुसार हर चीज़को तरक्की की तरफ़ कदम बढ़ाना भी चाहिये। मगर ख़ास तौर पर इनसान के लिये कुदरत ने तरक्की और बिहतरी का एक खुला मैदान दे रखा है, जिसमें वह खुली दौड़ लगा सकता है। कुदरत की तरफ़ से इनसानको वह वह उत्तम साधन और वसीले हासिल हैं, जोकि दीगर आम जीव-जन्तुओं को प्राप्त नहीं हैं।

तरक्की या बिहतरी दो तरह की होती है—एक तो दुनियावी लिहाज़ से, दूसरे रूहानी दृष्टि से। दुनियावी लिहाज़ से अपनी तरक्की और बिहतरी चाहनेवाले तो आम तौर पर दुनिया में बहुत लोग होते हैं; मगर रूहानी बिहतरी की तरफ़ दृष्टि रखनेवाले उनके मुकाबले में बहुत कम होते हैं। आम तौर पर अधिकतर यही ख़्याल पाया जाता

है कि दुनियावी लिहाज़ से तरक्की करना या बड़ा बनना ही मानुष-जीवन का असली प्रयोजन है। मगर जो गहरी नज़र रखनेवाले और सोच-विचार से काम लेनेवाले होते हैं; वे अपनी दुनियावी तरक्की के साथ-साथ रूहानी भलाई की भी फ़िकर करते हैं। तथा असल में इनसानी ज़िन्दगी का सही मकसद भी यही है कि न केवल जिस्मानियत पर नज़र रक्खी जावे; बल्कि रूहानियत को भी इनसान साथ ही साथ अपनी तवज्जुह का प्रसंग बनावे। दुनियावी लिहाज़ से तरक्की पानेवाला और पूर्ण मनुष्य बनने की उसकी कोशिश वाजिबी और ठीक है; लेकिन सच्ची बड़ाई और बुज़ुर्गी तब है, जबकि वह अपने आपको रूहानी लिहाज़ से भी एक पूर्ण और तरक्की पाया हुआ इनसान बनावे।

मानुष-जीवन का असली प्रयोजन और सही इस्तेमाल यह नहीं कि मनुष्य सारे का सारा जीवन महज़ खाने-पीने ऐश-आराम, नफ़स-परस्ती और जिसमानी खुशी के हासिल करनेमें ही गुज़ार देवे। ऐसा करना तो अपने असली फ़र्ज़से, जो हम पर कुदरतकी तरफ़ से निश्चित किया गया है; एक प्रकार की गफ़लत और लापरवाही करना है। कुदरत की तरफ़ से इनसान पर शारीरिक निर्वाह और तरक्की के अलावा अपनी रूह को ऊँचे दर्जे पर पहुँचाना भी एक ज़रूरी फ़र्ज़ रखा गया है। मगर आम तौर पर बाहरी दुनिया के बाहरी पदार्थों और ज़ाहिरी सामानों में अधिकतर ब्योहार और बर्ताव होने के कारण मनुष्य की दृष्टि बाहरी दुनिया

की तरफ़ ज़्यादा रुख़ रखती है, और अपने बातिन या रूह की तरफ़ बहुत कम ध्यान जाता है। इसी को सन्तों-महात्माओं-सत्पुरुषों-अवतारों और फ़कीरों ने हकीकत से लापरवाही या ग़फ़लत का नाम दिया है। इस तरह की कमज़ोरी या ग़लत-फ़हमी का मनुष्य के अन्दर पाया जाना कुदरती नहीं; बल्कि ग़ैर-कुदरती और बनावटी है। कहने का मतलब यह है कि सन्तों-महात्माओं के बिचार से असल में मनुष्य के अन्दर यह हालत नहीं होनी चाहिये थी। कुदरती तौर पर उसका रुख़ या झुकाव रूह अथवा बातिन की तरफ़ होना चाहिये था। मगर बाहरी या ख़ारिजी दुनिया में बरतने और ख़ारिजी-सामानों की संगति-सुहबत से उसमें यह ग़लत हालत कम या अधिक आम तौर पर पैदा हो जाती है। इस हालत को सन्तों ने आरज़ी और बनावटी बतलाया है। इनसान की हकीकी और दायिमी हालत तो वह है; जहां उसका दर्जा जिस मानियत और नफ़सानियत का नहीं, बल्कि रूहानियत और सच्चाई का है। संतजन इसी असली या हकीकी हालत की तरफ़ ध्यान कराते हैं। वे इनसान को फिर से उसकी असली हालत में ले आना चाहते हैं और यही उनके जीवन का ख़ास मिशन होता है।

दुनिया में हम पर आम तौर से दो बातों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है—एक संगति-सुहबत का, दूसरे बचन-बिलास और बोल-चाल का। आम तौर पर इनसान जिस प्रकार की संगति-सुहबत में उठता बैठता है, उसी प्रकार के

असर को वह अपने अंदर दाखिल करता चला जाता है, और धीरे-धीरे उसी प्रकार की उसकी आदत और तबीयत भी बन जाती है। अच्छों की संगति से अच्छाई की आदत और बुरों की संगति से बुराई की आदतों का इनसान में आ जाना कुदरती बात है। जैसा कि सन्तों का वचन है:—

❀ दोहा ❀

जिन जैसी संगति करी, तैसो ही फल लीन्ह।
कदली सीप भुजंग-मुख, बूँद एक गुण तीन॥
(गोसाईं तुलसीदास जी)

अर्थ:—"जिसने जैसी संगति ग्रहण की, उसने वैसा ही फल पाया है। जिस प्रकार कि एक ही स्वाँती-बूँद भिन्न भिन्न प्रकार की संगति में पड़ जाने से भिन्न भिन्न रूप धारण कर गई। वही बूँद केले के मुख में पड़ी, तो मुश्क-काफ़ूर बन गई, वही समुन्द्र की सीप के मुखमें पड़ गई, तो अनमोल मोती का रूप धारण कर गई; तथा वही स्वाँती-बूँद जब सर्पके मुखमें जा पड़ी, तो विष अर्थात् ज़हर हो गई। अब विचार किया जा सकता है कि स्वाँती-बूँद तो वही एक ही है; मगर अलग-अलग स्वभाव रखनेवाली संगतिके प्रभावसे तीन प्रकार के रूपों में बदल गई। इसी प्रकार ही अलग-अलग संगति का अपना अपना अलग अलग प्रभाव सब पर पड़ता है।"

अब दूसरी बड़ी चीज़ है बोल-चाल या बचन-बिलास। जैसों की संगति होगी, वैसी ही बोल-चाल भी सुनने में

आवेगी। क्योंकि कोई भी इनसान जैसा होता है, उसकी ज़बान में उसके उन्हीं ख़्यालों की छाया और ख़्यालों की ताकत भी शामिल रहती है। बुरे इनसान की ज़बान से हमेशा बुरी बातें ही सुनने में आवेंगी और नेक लोगों के नेक ख्यालों की छाया उनकी मीठी और दिलको लुभानेवाली नेक बोल-चाल में भरी रहती है। यह बिल्कुल कुदरती बात है। जिन लोगों का दिन-रात धन-दौलत के साथ वासता रहता है; उनके पास बैठो, तो रुपया-पैसा की ही बातचीत हमेशा सुनोगे। लेन-देन करनेवालों या व्यापारियों के साथ उठने-बैठने से बाज़ार के निरख़-भाव और व्योपार-सम्बन्धी बातों की जानकारी मिलेगी। विद्वानों और आलिमों के पास बैठने से विद्या और इल्म की ही बातें सुनी जावेंगी। इसी प्रकार ही जो इनसान जिस किसी आदत और तबीयत का रखनेवाला है, उसकी संगति से वैसी ही बोल-चाल मिलेगी; और तब उस प्रकार की बोल-चाल के सुनने से अंदर में वही चीज़ अपना असर करने लगेगी तथा धीरे धीरे संगति करनेवालों को वही कुछ बनाती चलेगी। यह बोल-चाल या बचन-बिलास का असर है, जो आम तौर पर हमारे जीवन में बहुत ज़्यादा और गहरा पड़ता है।

इसीलिए बुज़ुर्गों और बिचारवानों का हमेशा यह कहना है कि नेक लोगों की संगति-सुहबत करना और नेक लोगों की बात-चीत को ही सुनना चाहिये। इसी में बिहतरी, भलाई

और तरक्की है। इस प्रकार की संगति को सत्सङ्ग या सत-संगति अथवा साध-संगति भी कहा जाता है। ऐसी शुभ संगति की बड़ी महिमा है। भक्ति, परमार्थ और रूहानियत के पाने की ख़्वाहिश रखनेवाले इनसान के लिये सत्संग की बड़ी लाज़मी ज़रूरत है; क्योंकि बग़ैर सत्संग करने के ख़्यालोंका रुख़ और झुकाव हरगिज़ नहीं पलट सकता। पहिले ही कहा जा चुका है कि जैसी संगति होगी; उसी प्रकारके ख़्याल अन्दरमें जगह बनाने लगेंगे और वैसा ही जीवन बनता जायेगा। हर एक इनसान के अन्दरूनी ख़्यालों की झलक उसके बाहरी रहन-सहन, बोल-चाल और बर्ताव के अंदर देखनेमें आतो है। सन्तों और साधुओं के ख़्याल चूँकि पाकीज़ा, नेक और मालिक की प्रेमाभक्ति में रंगे हुये होते हैं; इसीलिए उनकी रहनी-सहनी, उनकी बोल-चाल और उनका बर्ताव सब रूहानी असर रखनेवाले होते हैं, तथा धीरे धीरे यही नेक असर उनकी संगति करनेवालों की आदत और तबीयत में भी दाख़िल होते जाते हैं। तब वे भी उन्हीं जैसे नेक, पाकीज़ा और रूहानी इनसान बन जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा गया—संतों-साधुओं की ज़िंदगी का एक ख़ास मकसद या मिशन होता है। वैसे तो दुनिया में हर एक इनसान की ज़िन्दगी का कुछ न कुछ ख़ास मकसद ज़रूर होता है। किसी ने किसी बात को अपनी ज़िन्दगी का मकसद बनाकर सामने रखा होता है, और किसी ने किसी और ही चीज़ को। इसी प्रकार ही सन्तों की ज़िन्दगी का भी एक ख़ास मिशन है और वह

है परोपकार तथा परमार्थ का कार्य करना—अर्थात् वे दुनिया में दूसरोंकी भलाई करने, भूले-भटके हुओं को नेकी और सच्चाई का मार्ग दिखलाने, संसार का कल्याण करने और जगत में भक्ति-परमार्थ का प्रचार करने के लिये आते हैं। इसी ख़ास मक़सद की ख़ातिर वे हमेशा, हर समय और हर युग के अन्दर संसारमें अवतार धारण करते हैं। अगर ऐसा न होता, तो संसार में सच्चाई, धर्म और परमार्थ का वजूद टिका न रह सकता। क्योंकि यहां काल का चक्र हमेशा से चलता रहता है। तथा उस काल-चक्र के प्रभाव से कभी कभी मौका पाकर बुराई और झूठ की ताकतें अपना सिर उभारने लगती हैं, माया और काल का प्रभाव प्रबल हो जाता है; और आम इनसानों की निगाहें संतों के सच्चे उपदेशों से हटकर, रूह और बातिन की दुनिया से भटक कर—बाहिरी दुनिया, जिसमानियत और नफ़सानियत की तरफ़ हो जाती हैं। तब ऐसे अवसरों पर फिर सच्चे सन्तों-सत्पुरुषों, रूहानी राहनुमाओं और अवतारों के प्रगट होने की ज़रूरत संसारमें अनुभव होने लगती है। चुनाँचे समय और अवसर की कठिनाई का ध्यान रखते हुये महापुरुष सृष्टि में अवतार लेते हैं और बिगड़ी हुई हालत का सुधार करते हैं।

जिस प्रकार हमारे इस नाश्वान् शरीर के लिये स्वास्थ्य की बड़ी ज़रूरत हमेशा रहती है। अगर शरीर स्वस्थ न हो, तो हमें सच्ची खुशी और प्रसन्नता नहीं नसीब होती। स्वास्थ्य के ठीक न रहने पर ख़ुशियों और सुखों के सैंकड़ों

सामान पास होते हुये भी हम उनका रस नहीं ले सकते; बल्कि तबीयत बेचैन और बोझिल सी महसूस होती है। लेकिन कुदरत के कारखाना में दोनों पहलू साथ-साथ रहते हैं। तन्दुरुस्ती और बीमारी एक दूसरे से बंधी हुई हैं। कभी न कभी हमारी अपनी ही किसी बद-परहेज़ी अथवा ख़ूराक की कमी-बेशी के सबब से बीमारी हमें आन दबाती है और हम तन्दुरुस्ती की सच्ची ख़ुशी से वंचित या महरूम हो जाते हैं। जब शरीरमें इस प्रकार की कोई ख़राबी या बीमारी पैदा हो जावे अथवा कोई ज़हरीला फोड़ा निकल आवे; तो उस समय किसी काबिल हकीम, लायक डाकटर या होशियार जिर्राह की फ़ौरन ज़रूरत महसूस होने लगती है। नहीं तो वह शारीरिक खराबी दम-दम बढ़ती रहने से सारे शरीरमें ज़हर फैल जाने का और शरीरके बिल्कुल नाकारा हो जाने का अंदेशा रहता है।

ठीक यही हाल रूहानी मुआमले में भी समझना चाहिये। सृष्टि को एक प्रकार से शरीर की तरह समझ लिया जावे। उसमें रहनेवाले हम सब जीव-जन्तु उसके भिन्न भिन्न अंग हैं। कल्पना करो कि किसी एक अंग में ख़राबी पैदा हो जाती है—अर्थात् अधर्म-पाप और बुराई आदि कई प्रकार की रूहानी बीमारियां सृष्टि में फैल जाती हैं। तब अगर सम्मर्थ और शक्तिमान् महापुरुष-सन्तजन संसारमें एक होशियार जिर्राह या काबिल डाकटर की तरह इस ख़राबी की बुनियाद को दूर करने के लिये न आवें, तो

ख़राबी या बीमारी का ज़हर इस कदर हद्द से ज़्यादा फैल जावे, कि सबका सर्वनाश कर डाले। इसीलिये कुदरत की तरफ़ से यह प्रबन्ध है कि समय समय पर जब ऐसे महापुरुषों के अवतार लेने की सख़्त ज़रूरत महसूस होती है, तो वे संसार का सुधार करनेके लिये प्रगट होते हैं। तथा जिस प्रकार होशियार हकीम ज़हरीले फोड़े को नशतरसे चीरकर गंदे मवाद को शरीरसे बाहर निकाल फेंकता है, या अगर और कोई बीमारी हो तो उसकी बुनियाद को निहायत सफ़ाई के साथ शरीरसे दूर कर देता है; इसी प्रकार ही ये सत्पुरुष भी रूहानी बीमारियों और रूहानी ख़राबियों को जड़ से रफ़ा-दफ़ा करके संसारको फिर से रूहानी तौर पर तन्दुरुस्त, बलवान् और सुखी बना देते हैं।

डाकटर या हकीम या जिर्राह को तो अपने काम के पूरा करने के लिये नशतर वग़ैरह की ज़रूरत होती है और उसी से वह शरीर की सफ़ाई करता है। मगर ये सन्त-महापुरुष अधर्म और पाप को मिटाने के लिये किसी प्रकार के हथियार से काम नहीं लेते, न ही उन्हें अधर्मियों और दुष्टों से लड़ना होता है; बल्कि वे निहायत शान्ति, धीरज, हौसला और बुद्धिमानी के साथ अपने सच्चे उपदेशों द्वारा सृष्टि का सुधार करते हैं। उनका बचन ही उनका सबसे बड़ा हथियार होता है। इसी बचन-उपदेश के हथियार से वे अधर्म और पाप का मुकाबला करते हैं, इसी से वे बुराई और मलिनता की जड़ों को काटते हैं; और साफ़-साफ़, सीधे-सादे लफ़्ज़ों

में हकीकत का रासता बतलाकर साधारण मनुष्य को बुराई और पाप के रासते से हटाकर सच्चाई-धर्म-परमार्थ और रूहानियत की खुली सड़क पर लाकर खड़ा कर देते हैं। यही उनका ख़ास गुण और ख़ास विशेषता है, और इसी कारण ही वे संसारमें पूजनीय, आदरणीय और माननीय समझे जाते हैं।

ऐसे सत्पुरुषों की संगति-सुहबत और नज़दीकी को ही सत्संग का नाम दिया जाता है। इनकी संगति सुहबत से इनसानके मनसे मलिन कर्मों, बुराई और पाप की सब मैल धुल जाती है। भ्रम, संशय और अज्ञान भी इसी सत्संग से ही दूर होते हैं। जिस प्रकार रोशनीके आ जानेसे अंधेरा खुद-बखुद भाग जाता है, और उसे हटाने के लिये किसी प्रकार की अलग मिहनत करने की ज़रूरत नहीं रहती; उसी प्रकार ही सन्तों-सत्पुरुषों के पवित्र बचन की रोशनी से अज्ञानता का सब अंधेरा अपने आप रफ़ू-चक्कर हो जाता है। मनुष्यको केवल उनके सत्संग में श्रद्धा-भावना के साथ आ जाने की ज़रूरत होती है। बाकी काम खुद-बखुद बनता चला जाता है। तन्दुरुस्ती को चाहनेवाले मरीज़ या बीमार का काम केवल इतना होता है कि वह अपनी नब्ज़—अर्थात् अपनी बाँह डाकटर या हकीमके हाथमें थमा देवे और खुद उसकी मरज़ी के सुपुर्द हो जावे। आगे काम डाकटर या हकीम का है कि वह मरज़ की जांच करे, उसकी बुनियाद की तह को पहुँचे; और जिस प्रकार भी

मुनासिब समझे, उसे रफ़ा-दफ़ा करने की कोशिश करे। मरीज़को ज़्यादा झंझटमें पड़ने की ज़रूरत नहीं है। उसके दिलमें फ़कत डाकटर या हकीम पर दृढ़ बिश्वास, श्रद्धा और भरोसा होना ज़रूरी है। ऐसा होने से वह निश्चय ही तन्दुरुस्ती को हासिल करके रहेगा और उसकी ज़िन्दगी एक सुखभरी और ख़ुश-बाश ज़िन्दगी हो जावेगी।

इसी प्रकार ही सत्संग का भी फ़ैज़ है। यहां भी सबसे पहिली ज़रूरत सत्पुरुषों-सन्तों और महात्माओं पर दिली बिश्वास, श्रद्धा और भरोसा करनेकी होती है। बाज़े आदमी सत्संग में तो आ जाते हैं, मगर दिलमें श्रद्धा और बिश्वास की कमज़ोरी के सबब उसका पूरा पूरा लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे इनसान डाँवाँडोल ख़्याल के या ढिलमिल-यकीन के होते हैं। इनके दिलमें माया का मोह अधिक होता है और रूहानियत का लगाओ कम। ये अकसर ऐसा सोचते हैं कि कहीं सन्तोंके कथनपर बिश्वास कर लेनेमें कोई नुकसान न हो जावे। इसी असमंजस में रहने और बिश्वास की कमी के कारण ये सत्संग के फ़ैज़ से ख़ाली रह जाते हैं। वरना सत्संग का तो वह फ़ैज़ है कि कहते नहीं बनता। सत्संग में वह रूहानी बरकत है कि जिसकी मिसाल दी ही नहीं जा सकती। सत्संग में मिहर और बख़शिश है; बशरतेकि कोई सच्चे दिल से इस रूहानी मिहर, बख़शिश और बरकत को हासिल करनेवाला बने। फिर क्यों न उसकी हालत तत्काल पलटती और

बदलती हुई नज़र आवे ? बरसों, महीनों और दिनों की बात तो खैर लम्बी बात है; मगर सत्संग के फ़ैज़ से तो इनसान घड़ियों, पलों, मिनटों और सैकण्डों में कुछ का कुछ बनता चला जाता है। पहिली बात तो यह है कि सत्संग में कभी २ भूले-भटके से आ जानेपर भी वह आम दुनियावी आदमियोंकी नज़रमें एक सत्संगी आदमी कहलाने लगता है; और सब उसे श्रद्धा तथा आदर की दृष्टि से देखने लग जाते हैं। यह तो अभी उसके सत्संग में दाखिल होनेका ही फल है । आगे जब वह सन्तोंके बचन को आदर-पूर्वक दिलमें बसाकर उस पर अमल-दरामद करे, तो कितना बड़ा दर्जा उसका हो जावेगा ? यह खुद ही सोचा-समझा जा सकता है ।

बिचार किया जावे कि सत्पुरुषों का सत्संग क्या चीज़ है और वहां जाने से क्या लाभ प्राप्त होता है ? असलमें ये तीन चीज़ें हैं और तीनोंको ही जानने, समझने और ग्रहण करने की ज़रूरत है । ये तीन चीज़ें क्या हैं ? सत्गुरु, सत्संग और सत्नाम । सत्गुरु वे हैं, जिनकी महिमाका ब्यान ऊपर किया जा चुका है। सतगुरु या सत्पुरुष एक ही चीज़ के दो नाम हैं । ये वकत वकत पर रूहानियत, भक्ति और परमारर्थ को संसारमें फैलाने के लिये, धर्म और सच्चाई का प्रचार करने के लिये, बुराई-पाप और अधर्म को मिटाने के लिये प्रगट होते हैं; और यही उनके अवतार का खास मिशन या मकसद होता है।

॥ सलोक ॥

सतिपुरख जिनि जानिया, सतिगुरु तिसका नाउँ ॥
तिसकै संगि सिखु ऊधरै, नानक हरिगुन गाउँ ॥

(गुरुबाणी-सुखमनी साहिब)

॥ तथा ॥

जनम-मरन दोहू महि ँ नाहीं, जन पर-उपकारी आये ॥
जीअ दान दे भगती लाइनि, हरि स्यौं लैन मिलाये ॥

(गुरुबाणी—सूही मः ५)

और ऐसे सत्पुरुषोंकी संगति-सुहबत का नाम ही सत्संग है। यही सत्संग ही रूहानी प्रसंगमें सबसे बड़ी बरकत, मिहर और बख़शिश की चीज़ है। इसके बग़ैर परमार्थी का काम हरगिज़ नहीं बन सकता। तथा अगर कोई सत्संग के बग़ैर परमार्थ की खोज करेगा, तो वह हमेशा अधूरा ही रहेगा। भक्ति और परमार्थ का सिलसिला हमेशा से, आदि-काल से सत्संग के आधीन रहा है और रहेगा भी। यह कुदरती नियम है और इसके बग़ैर और कोई मार्ग नहीं। इसी कारण ही सत्संग करने पर इतना ज़ोर दिया जाता है। क्योंकि सत्संग को प्राप्त किये बिना नज़र हमेशा बाहरी दुनिया और बाहरी सम्बन्धों की तरफ़ रहेगी। बातिन की तरफ़ नज़र जब भी होगी, सत्पुरुषों के सत्संग के द्वारा ही होगी। दूसरी सूरत में ऐसा होना असम्भव है।

❀ चौपाई ❀

बिनु सतसंग विवेक न होई। राम-कृपा बिनु सुलभु न सोई ॥

(श्रीरामायण)

सत्संग का प्राप्त होना जीवके सबसे बड़े भाग्यकी निशानी

है। जब कभी संयोग से ऐसे महापुरुषों-सन्तों की संगति का मौका नसीब होवे, तो समझना चाहिये कि मालिक की बड़ी कृपा हुई है। ख़्यालों के रुख़ को माया-ममता और मोह आदि से पलटाकर रूहानियत और परमार्थ की तरफ़ रजूअ करने में सत्पुरुषों का सत्संग जादू की तरह असर रखता है। सत्संग से ही नामकी प्राप्ति होती है, नाम और भजन की कमाई में मन लगता है और रूह पर जन्म-जन्मांतरों के पड़े हुये ग़फ़लत तथा अज्ञानता के परदे दूर होने लगते हैं।

सतसंगति महिँ हरि-उस्तति है संगि साध मिले प्यारिया ॥

(*गुरुबाणी—गौड़ी की वार-म: ४*)

सतगुरु, सत्संग और सत्नाम तीनों आपस में जुड़े हुये हैं। सतगुरु का संग ही सत्संग है और सत्संग से नाम की प्राप्ति है। सत्संग में हमेशा मालिकके नाम-भजन और प्रेमाभक्ति की ही चर्चा होती है। इसके अलावा दीगर बातें सत्संग में नहीं होतीं। सत्संग में जाकर मालिक का सच्चा प्रेम और उसकी सच्ची भक्ति की दात ही मिलती है; तथा प्रेमाभक्ति या मालिकके नाम की ग़रज़ रखनेवालों के लिये ही सत्संग का सिलसिला होता है।

सतसंगत कैसी जाणियै ॥ जिथै एको नाम वखाणियै ॥

(*गुरुबाणी-सिरीराग म: १*)

॥ तथा ॥

मिलि सतसंगति हरि पाईयै गुरुमुख हरि लिव लाये ॥

(*गुरुबाणी—सिरीराग म: १*)

अब रहा यह प्रश्न कि सत्नाम क्या है? सत्नाम या मालिकका सच्चा नाम वह है, जो पूरे रूहानी सतगुरु से

हासिल होता है और जिसकी कमाई सतगुरु की दया से ही हो सकती है। यह वह बातिनी या रूहानी नाम है, जो सब प्राणियों के अंदर समाया हुआ और रोम रोम में रमा हुआ है; मगर जिसका भेद केवल पूरे गुरु की दया से ही मिल सकता है। यह जीवके अपने अंदर का गुप्त खज़ाना है, जिसे पाकर जीव मालामाल और निहाल हो जाता है; मगर जिससे भूलकर वह दुःखी, कंगाल, अशान्त और बेचैन बना फिरता है।

नौनिधि अमृत प्रभ का नाम ॥ देही महि इसका बिसराम ॥

॥ तथा ॥ (गुरुबाणी-सुखमनी साहिब)

बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥
सतिगुरु हथॅ कुंजी होरतों दरु खुलै नाहीं गुरु पूरै भाग मिलावणियाँ ॥

(गुरुबाणी—माझ मः ३)

यह मालिक का सच्चा नाम कोई शब्दों में ब्यान करने की चीज़ नहीं। यह अंतरीव अनुभव और अंतरीव अभ्यास की चीज़ है, और इसकी कमाई करने से अंतर में ज्योति प्रगट होती है। मनका सब अन्धकार दूर होकर घट में ही सब कुछ सूझने लगता है। लेकिन बिना पूरे गुरु का कृपा और सहायता के नामकी कमाई नहीं होती; और न ही जीव नामकी महिमा और उसके महत्त्व को जान सकता है। इसीलिये सतगुरु का सत्संग करने की हिदायत सन्तों ने बार-बार की है।

जिसु जलनिधि कारन तुम जग आये सो अमृत गुरु पाहीं जियो ॥
छोड़हु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इह फलु नाहीं जियो ॥

(गुरुबाणी—राग सोरठि मः १)

॥ तथा ॥

पूरे गुरु की साची बाणी ॥ सुखमन अंतरि सहिज समाणी ॥

(गुरुबाणी—धनासरी मः ३)

अंदरमें नामका गुप्त भंडार और गुप्त रूहानी ख़ज़ाना होते हुये भी जीव उससे भूला फिरता है; तो इसका कारण फ़कत यही है कि सत्गुरु के सत्संग की प्राप्ति नहीं हुई। जबतक पूरे गुरु नहीं मिले, तभीतक जीव नाम और भक्ति की सच्ची दौलत से ख़ाली है। लेकिन जब पूर्ण सत्गुरु मिल जाते हैं, तो वह जीवको उसके घट-भीतर में ही रूहानी दौलत का भारी ख़ज़ाना दिखलाकर मालामाल कर देते हैं और जीव कृतार्थ-रूप हो जाता है।

घर महिँ घरु दिखाय दे सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥
पंच शबद धुनिकार धुनि तहँ बाजै सबदु नीसाणु ॥

(गुरुबाणी-मलार की वार-सलोक मः १)

अतएव इनसान के लिये इस बात की बहुत ज़रूरत है कि पूरे सत्गुरु के सत्संग की खोज करे, और उनसे सच्चे नाम की प्राप्ति करके अपने जीवन को धन्य और जन्म को सफल बना लेवे। क्योंकि नाम-भक्ति और परमार्थ की कमाई के बग़ैर जीव अपने जन्म का सच्चा लाभ पाने से ख़ाली रह जाता है और ज़िन्दगीका असली मकसद—अर्थात् रूहानी-बिहतरी या रूहानी-तरक्की का काम पूरा नहीं होता। यह मानो एक तरह से मनुष्य-जीवन का पहिला-फ़र्ज़ और मुख्य-धर्म है तथा इससे ग़फ़लत या लापर्वाही करने में बड़ा रूहानी नुकसान है।

जिस प्रकार शरीरको बलवान् और फुर्तीला रखने के लिये मुनासिब ग़िज़ा की हमेशा ज़रूरत रहती है। तथा अगर शरीरको मुआफ़िक और मुनासिब ख़ूराक न दी जावे, तो यह कमज़ोर और बीमार बन जाता है। इसी प्रकार रूह के लिये भी मुनासिब और मुआफ़िक रूहानी ग़िज़ा की हमेशा ज़रूरत है। इससे रूह में जागृति और शक्ति पैदा होगी; और रूह ताकतवर होकर काल और माया के ज़बरदस्त झपेड़ों का मुकाबला करते हुये खुद को उनसे आज़ाद बना सकेगी।

पहिले बयान किया जा चुका है कि बचन-बिलास और बोल-चाल का हमारी ज़िन्दगियों पर बहुत गहरा असर पड़ता है। जैसे जैसे बचन हमारे कानों के रास्ते अन्दर दाख़िल होते हैं, वैसा ही असर हमपर पड़ता है और वैसी ही हमारी ज़िन्दगी बनती है। चुनाँचे ज़िन्दगी को रूहानी और परमार्थी बनानेके लिये सन्तों के रूहानी और परमार्थी बचन-उपदेशों को सुनने की बहुत बड़ी ज़रूरत है। सन्तोंके बचन क्या होते हैं? यह उनकी अमली ज़िन्दगी के अमली तजुर्बों का निचोड़ होते हैं। सन्तोंके उपदेश में कोई बनी-बनाई या घड़न्त बात नहीं होती; बल्कि जो कुछ उनके निजी अनुभव में आता है, उसी को वे हमारे सामने पेश करते हैं।

"संतन की सुण साची साखी ॥ सो बोलहिँ जो पेखहिँ आखी ॥"

(गुरुबाणी-रामकली म: ५)

सन्तोंके सच्चे उपदेशोंको हमेशा चाव और लगन से सुनने की ज़रूरत है। इनसे रूहानी तरक्की में बड़ी मदद

मिलती है। इन उपदेशों में रूहानियत के गहरे राज़ और असलियत के गूढ़ भेद भरे रहते हैं; जिनको पढ़-सुनकर मन से अशान्ति और कल्पना के ख़्याल दूर होते हैं और सच्ची ख़ुशी तथा सच्ची शान्ति हासिल होती है। यह रूहानी सत्संग है और रूहानी सत्संग की बड़ी भारी महिमा है, जैसा कि ऊपर बयान हुआ है।

चुनाँचे इसी बिचारसे सत्पुरुषोंके मधुर उपदेशोंसे भरी हुई कुछ बाणियों का संग्रह करके इस पुस्तक "आनन्द-शब्द-सार" में दिया जा रहा है; ताकि रूहानियत, भक्ति और परमार्थ की लगन रखनेवाले प्रेमी सज्जन घर बैठे रूहानी सत्संग का लाभ प्राप्त कर सकें, और इन सत्-उपदेशों को अपनी अमली ज़िन्दगी में लाकर सही अर्थों में रूहानी इनसान बन सकें। इस संग्रह में जो कुछ है; सब सतगुरु; सत्संग और सत्नाम की महिमा ही है। आनन्द, वैराग्य और प्रेमाभक्ति का लाभ पहुँचाने के लिये यह परिश्रम किया गया है; और आशा है कि प्रेमी सज्जन इससे यथार्थ-लाभ प्राप्त करेंगे; तथा अपने सत्संगियों और साथियों को भी इस रूहानी सत्संग का लाभ पहुँचावेंगे।

श्रीगुरुदेव सब का मंगल-कल्याण करें।

सबका शुभ-चिन्तक

महात्मा योग आत्मानन्द

श्रीसद्‌गुरुदेवायनमः

आनन्द-शब्द-सार

(भाग पहिला)

[खण्ड पहिला]

(गुरु-बाणी के शब्द)

राग सिरीराग

महल्ला १ घर १

[चेतावनी]

मोती त मंदर १ ऊसरहिँ रतनी त होहिँ जड़ाउ ॥
२ कस्तूरि कुंगू अगर चन्दनि लीपि आवै चाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै ३ नाउ ॥ १ ॥
हरि बिनु ४ जीउ जल बलि जाउ ॥
मैं आपणा गुरु पूछि देखिया अवरु नाहीं ५ थाउ ॥१॥ रहाउ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलंघ लाल जड़ाउ ॥
मोहणी मुख-मणी सोहै करै ६ रंग-पसाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥२॥
सिद्ध होवां सिद्धि लाई रिद्धि आखां आउ ॥

१—बनकर तैयार होवें ॥ २—अनेक प्रकार की सुगन्धित सामग्रियों-कस्तूरी कुंगू अगर चन्दन आदि का लोप उस मंदिर की दीवारों पर बड़े चावसे किया जाये ॥ ३—मालिक का सच्चा नाम ॥ ४—मालिकके प्रेमके बिना जीव तृष्णा अग्नि में जलता रहता है ॥ ५—सच्चे-सुख का ठिकाना॥ ६—मनको मोह लेनेवाले और चित्तको चंचल करनेवाले कौतुक ॥

गुपतु परगटु होय बैसा लोकु राखै १ भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥ ३ ॥
सुलतानु होवां मेलि लसकर तखति राखा २ पाउ ॥
हुकमु हासिल करी बैठां नानका सभ ३ वाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥ ४ ॥

[चेतावनी] सिरीराग महल्ला १ ॥

जालि मोह ४ घसि ५ मसु करि मति ६ कागदु करि सार ॥
७ भाउ कलम करि चित्त लेखारी गुर ८ पुछि लिखु बीचार ॥
लिखु नामु ९ सालाह लिखु अंत न पारावार ॥ १ ॥
बाबा इह लेखा लिखि जाणु ॥
जिथै लेखा मंगियै तिथै होय सच्चा १० नीसाण ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिथै मिलहिं वडियाईयाँ सद खुसियाँ सद चाउ ॥
तिन मुख टिक्के निकलहिं जिन मन सच्चा नाँउ ॥
करम मिलै तां पाईयै नाहीं गॅली ११ वाउ दुआउ ॥ २ ॥
इक आवहिं इक जाहि उठि रखियहिं नाँव १२ सलार ॥
इक उपाये मंगते इकनां वॅडे दरवार ॥
अगै गईयाँ जाणियै विणु नाँवै वेकार ॥ ३ ॥
भय तेरै डर अगला खपि खपि छिॅजै देह ॥
नाँव जिनां सुलतानखान होंदे डिॅठे खेह ॥
नानक उठी चलिया सभ कूड़े तुटे नेह ॥ ४ ॥

१—सब संसार भाव रखे । २—पाँव ॥ ३—वायुके झोंके के समान ये सब आडम्बर उड़ जानेवाले हैं ॥ ४—घिसकर ॥ ५—स्याही ॥ ६—कागज़ ॥ ७ भाव अथवा प्रेम ॥ ८—गुरु से पूछकर और विचारकर लिख ॥ ९—महिमा ॥ १०—चिन्ह ॥ ११—जबानी शोर-पुकार ॥ १२—सरदार ॥

[गुरुमुख] **सिरीराग महल्ला १ ॥**

गुणवंती गुण १ वीथरै औगुणवंती २ झूरि ॥
जे लोड़हि वर कामणी नहिँ मिलियै पिर ३ कूरि ॥
ना बेड़ी ना ४ तुलहड़ा ना पाईयै पिर दूरि ॥१॥
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥
गुरुमुख पूरा जे करे पाईयै साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु हरि मंदरु सोहणा तिसु महिँ माणिक लाल ॥
मोती हीरा निर्मला कंचन कोट ५ रीसाल ॥
बिनु ६ पौड़ो गढ़ क्यों चढ़हु गुर हरि ध्यान निहाल ॥२॥
गुरु पौड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि-नाँउ ॥
गुरु सर सागर ७ बोहिथो गुरु तीरथु दरियाउ ॥
जे तिसु भावै ऊजली सत सरि ८ नावणु जाउ ॥३॥
पूरो पूरो आखियै पूरै तखति निवास ॥
पूरै ९ थानि सुहावणै पूरै आस-निरास ॥
नानक पूरा जे मिलै क्यों घाटै गुणतास ॥४॥

[गुरुमुख] **सिरीराग महल्ला १ ॥**

आवहु १० भैणें गल मिलहिँ अंक सहेलड़ियाँह ॥
मिलिकै करहिँ कहाणियाँ समरथ कंत कियाँह ॥
साचे साहिब सभ गुण औगुण सभ ११ असाँह ॥१॥

१—बनज करै ॥ २—दुःखी ॥ ३— झूठी कमाई के द्वारा प्यारे को नहीं पाया जा सकता ॥ ४—दरिया से पार होने के लिये साधन ॥ ५—सुन्दर ॥ ६—सीढ़ी ॥ ७—जहाज़ ॥ ८—सत्-सरोवर में स्नान करे ॥ ९—स्थान १०—बहिनो ॥ ११—हममें ॥

करता सभ को तेरै १ जोरि ॥
एक सबदु बीचारियै जां तूँ ताँ क्या होरि ॥१॥ रहाउ ॥
जाय पुछहु सोहागणी २ तुसी राविया किनी गुणी ॥
सहजि संतोखि सींगारिया मिठा बोलणी ॥
पिर रीसालू तां मिलै जां गुरु का सबदु सुणी ॥२॥
केतियाँ तेरियाँ कुदरतीं केवड तेरी दाति ॥
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु-राति ॥
केते तेरे रूप रंग केते जाति-अजाति ॥३॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाय ॥
सुरति होवै ३ पति ऊगवै गुरुबचनी भौ खाय ॥
नानक सच्चा पातिसाहु आपे लये मिलाय ॥४॥

[मनमुख] **सिरीराग महल्ला १ ॥**

४ धृग जीवणु ५ दोहागणी ६ मुठी दूजै भाय ॥
७ कलर केरी कंध ज्यों अहिनिसि किरि ढहि पाय ॥
बिन सबदै सुख ना थियै पिर बिनु दूख न जाय ॥१॥
८ मुंधे पिर बिनु क्या सींगारु ॥
दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥
आपि सुजाणु न भुलई सच्चा वड किरसाणु ॥
पहिलाँ धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥
नौनिधि उपजै नामु एक करमि पवै नीसाणु ॥२॥

१—सब कुछ तेरे आधीन है ॥ २-तुमने किन गुणोंसे प्रियतमको रिझा लिया है। ३-विश्वास पैदा होवै। ४-धिक्कार के योग्य ॥ ५-मनमुख जीव ॥ ६-धोखेमें नुकसान कर लिया ॥ ७-जैसे कालर की दीवार ठहर नहीं सकती; बल्कि सदा गिर गिर पड़ती है ॥ ८-ऐ बेसमझ रूह ॥

गुर को जाणि न जाणई क्या तिसु १ चजु अचार ॥
अंधुले नामु विसारिया मनमुख अंधु गुबार ॥
आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होय खुआर ॥ ३ ॥
चंदनु मोलि २ अणाइया कुंगू मांग संधूर ॥
चोआ चंदनु बहु घणा पानां नालि कपूर ॥
जे ३ धन कंत न भावई त सभ अडंबर कूड़ ॥ ४ ॥
सभ रस भोगण बादि हैं सभ सींगार विकार ॥
जब लग सबदि न भेदियै क्यों सोहै गुरद्वार ॥
नानक धनु सुहागणी जिन ४ सह नालि प्यार ॥ ५ ॥

[मनमुख-गुरुमुख गति] **सिरीराग महल्ला १ ॥**

५ सुंञी देह डरावणी जां ६ जीउ विचहुँ जाय ॥
७ भाहि बलंदी ८ विझवी धूऊ न निकसियो काय ॥
पंचे रुन्ने दुःखभरे बिनसे दूजै भाय ॥ १ ॥
मूढे राम जपहु गुण सारि ॥
९ हौंमैं ममता मोहणी सभ मुॅठी अहंकारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिनी नामु विसारया दूजी कारै लगि ॥
दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि तिसना अगि ॥
गुरि राखे से ऊबरे होरि मुॅठी धंधै ठगि ॥ २ ॥
मुई परीति पियार गया मुआ वैर विरोधु ॥
धंधा थका हौं मुई ममता माया क्रोधु ॥
करमि मिलै सचु पाईयै गुरुमुख सदा १० निरोधु ॥ ३ ॥

१-शुभ-लक्षण ॥ २-बहुमूल्य ॥ ३-स्त्री ॥ ४-सच्चा साहब ॥
५-वीरान देही भयानक मालूम होती है ॥ ६-जब अंतर से प्राण निकल जाता है ॥ ७-जलती हुई अग्नि ॥ ८-बुझ गई ॥ ९-मैं-मेरी पना ॥ १०-निर्विघ्न ॥

सच्ची कारै सचु मिलै गुरुमति पल्लै पाय ॥
सो नर जंमैं ना मरै ना आवै ना जाय ॥
नानक दर परधान सो दरगह १ पैधा जाय ॥ ४ ॥

सिरीराग महल्ला १ ॥

सुणि मन मित्र पियारिया मिलु वेला है एह ॥
जब लगु जोबन सासु है तब लगु एह तन देह ॥
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तन खेह ॥१॥
मेरे मन लै लाहा घर जाहि ॥
२ गुरुमुख नाम सलाहियै हौंमैं निवरी भाहि ॥१॥ रहाउ ॥
३ सुणि सुणि गंढणु गंढियै लिखि पढ़ बुझहि भारु ॥
त्रिसना अहिनिसि अगली हौंमैं रोगु विकारु ॥
उह वेपरवाहु अतोलवां गुरुमति कीमति सारु ॥२॥
लख सियाणप जे करी लख स्यौं प्रीति मिलाप ॥
बिनु संगति-साध न ध्रापिया बिनु नाँवै दूख संताप ॥
हरि जपि जियरे छुटियै गुरुमुख चीन्है आप ॥३॥
तन मन गुर पहि वेचिया मनु दिया सिरु नालि ॥
त्रिभवणु खोजि ढंढोलिया गुरुमुख खोजि निहाल ॥
सतगुरि मेलि मिलाइया नानक सो प्रभु नालि ॥४॥

[गुरुमुख]

सिरीराग महल्ला १ ॥

इक तिल पियारा वीसरै रोगु वडा मन माहिँ ॥

१-पहुंच पा गया ॥ २-गुरुमुख द्वारा नामका सुमिरण करने से 'मैं-मेरी' की अग्नि शान्त हो जाती है । ३-यदि कोई शास्त्रोंके सुनने मात्र से अथवा पढ़ने करके मालिक से प्रीति गांठने का जतन करे ॥

क्यों दरगह पति पाईयै जा हरि न वसै मन माहिँ ॥
गुरि मिलियै सुखु पाईयै अगनि मरै गुण माहिँ ॥१॥
मन रे अहिनिसि हरिगुण सारि ॥
जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥
॥ रहाउ ॥
जोती जोति मिलाईयै सुरती सुरति संजोग ॥
हिंसा हौंमैं १ गतु गये नाहीं २ सहसा सोगु ॥
गुरुमुख जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥
काया कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥
तिसु स्यों नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥
गुरुमुख रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज ३ भतारु ॥३॥
चारे अगनि निवारि मरु गुरुमुख हरि-जल पाय ॥
अंतरि कमलु प्रगासिया अमृत भरिया ४ अघाय ॥
नानक सतिगुरु मीतु करि सचु पावहिँ दरगह जाय ॥४॥

[गुरुमुख] सिरीराग महल्ला १ ॥

५ भरमे भाहि न विझवै जे ६ भवै दिसंतर देस ॥
अंतरि मैलु न ऊतरै धृगु जीवण धृगु वेस ॥
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुरु के उपदेस ॥१॥
मन रे गुरुमुख अगनि निवारि ॥
गुर का कहिया मन वसै हौंमैं त्रिसना मारि ॥१॥ रहाउ ॥
मन माणकु ७ निर्मोलु है राम नामि पति पाय ॥

१—नष्ट हो गये। २—संशय। ३—भर्त्तार। ४-तृप्त होता है। ५—भरमकी अग्नि शान्त नहीं होती। ६—यदि देश-देशान्तरमें भ्रमता फिरै। ७—बहुमूल्य।

मिलि सतसंगति हरि पाईयै गुरुमुखि हरि लिव लाय ॥
१ आपु गया सुखु पाईया २ मिलि सललै सलल समाय ॥२॥
जिन हरि हरि नामु न चेतियो सो औगुण आवै जाय ॥
जिसु सतगुरु पुरखु ने भेंटियो सो भौजल ३ पचै पचाय ॥
इहु माणकु जीउ निर्मोलु है इयों कौडी बदलै जाय ॥ ३॥
जिना सतगुरु रसि मिलै सो पूरे पुरख सुजाण ॥
गुरि मिलि भौजल लंघियै दरगह पति परवाण ॥
नानक ते मुख ऊजले धुनि उपजै सबदु नीसाण ॥४॥

[सच्चा व्यापार] **सिरीराग महल्ला १ ॥**

४ वणजु करहु ५ वणजारिहु ६ वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु ७ वेसाहियै जैसी निबहै नालि ॥
अगै ८ साहु सुजाण है लैसी वसतु समालि ॥१॥
भाई रे राम कहहु चित्त लाय ॥
हरिजसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतियाय ॥१॥ रहाउ ॥
जिनां रासि न संचु है क्यों तिनां सुखु होय ॥
खोटै वणजु वणजियै मन तन खोटा होय ॥
९ फाही फाथे मिरग ज्यों दूख घणो नित रोय ॥२॥
खोटे १० पोतै ना पवहिं तिन हरि गुर दरस न होय ॥
खोटे जाति न पति है खोटि न ११ सीझसि कोय ॥

१—आपा भाव नष्ट हो गया। २—जलमें जल मिलकर समा गया। ३—खप-खप कर दुःखी होता है। ४—सौदा करो। ५—ऐ जीव रूपी सौदागरो। ६—सौदा या माल। ७— ख़रीद करनी चाहिये। ८—साहूकार अर्थात् मालिक। ९—मिरगकी तरह फंदेमें फँस गये। १०—खाते में या लेखेमें। ११—खोटी कमाई से कोई भी सुर्ख़रू नहीं हो सकता।

खोटे खोटु कमावणां आय गया पति खोय ॥३॥
नानक मनु समझाईयै गुर कै सबद सालाह ॥
राम-नाम रंगि १ रतियां भारु न भरमु २ तिनाह ॥
हरि जपि लाहा अगला निरभौ हरि मन माह ॥४॥

[सतगुरु और सत्-नाम] **सिरीराग महल्ला ३** (घर १)

हौं सतिगुरु सेवी आपणा इक मन इक चित्त भाय ॥
सतिगुर मन कामना तीरथु है जिसनों देय बुझाय ॥
मन ३ चिंदिया वरु पावणा जो इच्छै सो फलु पाय ॥
नाँउ ध्याईयै नाँउ मंगियै नामे सहजि समाय ॥१॥
मन मेरे हरिरसु चाखु ४ तिख जाय ॥
जिनी गुरमुखि चाखिया सहजे रहे समाय ॥१॥ रहाउ ॥
जिनी सतिगुरु सेविया तिनी पाईया नामु ५ निधानु ॥
अंतरि हरिरसु ६ रवि रहिया चूका मन अभिमानु ॥
हिरदै कमलु परगासिया लागा सहजि ध्यानु ॥
मन निरमलु हरि रवि रहिया पाया दरगह मानु ॥२॥
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसार ॥
हौमैं ममता मारिकै हरि राखिया उर धारि ॥
हौं तिनकै बलिहारणै जिना नामे लगा पियारु ॥
सेई सुखिये चहुँ-जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥
गुर मिलियै नामु पाईयै चूकै मोह पियास ॥
हरि सेती मनु रवि रहिया घरही माहिं उदासु ॥

१—रंगे होने से । २—तिनको । ३—मन-चाहा वर । ४—तृष्णा रूपी प्यास नष्ट हो जावे । ५—नामका खज़ाना । ६—लीन हो रहा है ।

जिना हरि का सादु आईया हौं तिन बलिहारै जासु ॥
नानक नदरी पाईयै सचु नामु गुण–तास ॥४॥

[उपदेश] **सिरीराग महल्ला ३ ॥**

जिनी सुणिकै मंनिया तिना निज-घरि वासु ॥
गुरमती सालाहि सचु हरि पाया गुणतासु ॥
सबदि रते से निरमले हौं सद बलिहारे जासु ॥
हिरदै जिनकै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥
मन मेरे हरि हरि निर्मलु ध्याय ॥ धुरि मसतकि जिनको लिखिया सो गुरुमुखि रहे लिव लाय ॥१॥ रहाउ ॥
हरिसंतहु देखहु १ नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥
गुरमति जिनी पछाणिया से देखहिँ सदा हदूरि ॥
जिन गुण तिन सद मन वसै औगुणवंतियाँ दूरि ॥
मनमुख २ गुण तै बाहरे बिनु नाँवै मरदे झूरि ॥२॥
जिन सबदि गुरू सुणि मंनिया तिन मन ध्याया हरि सोय ॥
३ अनदिनु भगती रतियां मनु तनु निरमलु होय ॥
कूड़ा रंग ४ कसुंभ का बिनसि जाय दुखु रोय ॥
जिसु अंदरि नामु प्रगासु है उह सदा सदा थिरु होय ॥३॥
इहु जनमु पदारथु पायकै हरिनामु न चेतै लिव लाय ॥
पग खिसियै रहणा नहीं आगे ठौर न पाय ॥
उह वेला हथि न आवई अंति गया पछुताय ॥
जिसु नदरि करे सो ऊबरै हरि सेती लिव लाय ॥४॥

१–नज़र । २–गुणसे रहित । ३–निशिदिन । ४–माया के नाशवान् रंग को ही कसुंभका कूड़ा रंग कहा गया है ।

देखादेखी सभ करे मनमुख बूझ न पाय ॥
जिन गुरुमुख हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाय ॥
हरिगुण गावहिं हरि नित पढ़हिं हरिगुण गाय समाय ॥
नानक तिनकी बाणी सदा सचु है जि नाम रहे लिव लाय ॥५॥

(गुरुमुख) सिरीराग महल्ला ३ ॥

जिनी इक मन नामु ध्याईया गुरमती वीचारि ॥
तिनके मुख सद ऊजले तित सच्चे दरबारि ॥
ओय अमृत पीवहिं सदा सदा सच्चै नामि पियारि ॥१॥
भाई रे गुरुमुखि सदा पति होय ॥
हरि हरि सदा ध्याईयै मल हौंमैं कढै धोय ॥१॥ रहाउ ॥
मनमुख नाम न जाणनी विणु नांवै पति जाय ॥
सबदै सादु न आईयो लागै दूजै भाय ॥
विसटा के कीड़े पवहिं विच विसटा से विसटा माहिं समाय ॥२॥
तिनका जनमु सफलु है जो चलहिं सतगुरु भाय ॥
कुल उधारहिं आपणा धनुं १ जणेंदी माय ॥
हरि हरि नामु ध्याईयै जिसनों किरपा करे रजाय ॥३॥
जिनी गुरुमुखि नाम ध्याईया विचहुँ आपु गँवाय ॥
ओय अंदरहुँ बाहरहुँ निरमले सच्चे सचि समाय ॥
नानक आये से परवाणु हैं जिन गुरमती हरि ध्याय ॥४॥

(नाम-भक्ति) सिरीराग महल्ला ३ ॥

हरि भगतां हरि धनु २ रासि है गुर पूछि करहिं वापारु ॥
हरिनामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरिनामु अधारु ॥

१—जन्म देनेवाली माता । २--पूँजी ।

गुरि पूरै हरिनामु दृढ़ाया हरिभगतां अतुटु भंडारु ॥१॥
भाई रे इस मन को समझाय ॥
ऐ मन आलसु क्या करहिं गुरुमुखि नामु ध्याय ॥१॥ रहाउ॥
हरि भगति हरि का पियारु है जे गुरुमुखि करे बीचारु ॥
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥
सो जनु रलाया न रलै जिसु अंतरि बिबेक बिचारु ॥२॥
सो सेवकु हरि आखियै जो हरि राखै उरधारि ॥
मनु तनु सौंपे आगै धरे हौंमैं विचहुँ मारि ॥
धनु गुरुमुखि सो परवाण है जि कदे न आवै हारि ॥३॥
करमि मिलै ताँ पाईयै विणु करमै पाया न जाय ॥
लख चौरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आय ॥
नानक गरुमुखि हरि पाईया सदा हरिनाम समाय ॥४॥

[मनमुख-गुरुमुख] सिरीराग महल्ला ३ ॥

मनमुख करम कमावणे ज्यों दोहागणि तनि सींगारु ॥
सेजै कंतु न आवई नित नित होय खुआरु ॥
१ पिर का २ महलु न पावई ना दीसै घर-बारु ॥१॥
भाई रे इक मन नामु ध्याय ॥
संतां संगति मिलि रहै जपि रामनामु सुखु पाय ॥१॥रहाउ॥
गुरुमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिया उरधारि ॥
मिठा बोलहिं निवि चलहिं सेजै रवै भतारु ॥
सोभावंती सोहागणी जिन गुरु का ३ हेत अपारु ॥२॥
पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का ४ उदौ होय ॥

१—प्रियतम अर्थात् मालिक । २—स्थान । ३—प्रेम-भाव । ४—भाग्यका उदय ।

अंतरहुँ दुख भ्रमु कटियै सुखु परापति होय ॥
गुर कै १ भाणै जो चलै दुखु न पावै कोय ॥३॥
गुरके भाणै विचि अमृतु है सहजे पावै कोय ॥
जिनां परापति तिन पीया हौंमैं विचहुँ खोय ॥
नानक गुरुमुख नामु ध्याईयै सचि मिलावा होय ॥४॥

[मनमुख] **सिरीराग महल्ला ३ ॥**

जिनी पुरखीं सतगुरु न सेवियो से दुखिये जुग चारि ॥
घरि होंदा पुरखु न पछाणिया अभिमान मुठे अहंकारि ॥
सतगुरू कीया फिटकिया मंगि थके संसारि ॥
सच्चा सबदु न सेवियो सभि काज सँवारणहारु ॥१॥
मन मेरे सदा हरि वेख हदूरि ॥
जनम-मरन दुख परिहरै सबदि रहिया भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥
सच्चु सलाहनि से सच्चे सच्चा नामु अधारु ॥
सच्ची कार कमावणा सच्चे नालि पियारु ॥
सच्चा साहु वरतदा कोय न मेटणहारु ॥
मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़ियार ॥२॥
हौंमैं करता जग मुआ गुरु बिनु घोर अंधारु ॥
माया मोह विसारिया सुखदाता दातारु ॥
सतगुरु सेवहिं तां उबरहिं सच्चु रखहिं उरधारि ॥
किरपा ते हरि पाईयै सचि सबदि विचारि ॥३॥
सतगुरु सेवि मन निर्मला हौंमैं तजि विकार ॥
आपु छोड़ि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥

१—भाने में या मौज में ।

धंधा धावत रहि गये लागा साचु पियारु ॥
सचि रत्ते मुख ऊजले तितु साचै दरबारि ॥४॥
सतगुरु पुरखु न मंनियो सबदि न लगो पियारु ॥
इसनानु दानु जेता करहिं दूजै भाय खुआरु ॥
हरिजीउ आपणी कृपा करे तां लागै नामि पियारु ॥
नानक नामु समालि तूँ गुर कै हेति अपारु ॥५॥

[गुरुमुख] **सिरीराग महल्ला ३ ॥**

इकि पिरु रावहिँ आपणा हौं कैं दरि पूछौं जाय ॥
सतिगुरु सेवीं भाउ करि मैं पिरु देहु मिलाय ॥
सभु उपाये आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥
जिनि पिरु संगे जाणिया पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥
मुंधे तूँ चलु गुर कै भाय ॥
अनदिनु रावहिँ पिरु आपणा सहजे सच्चि समाय ।१।रहाउ॥
सबदि रत्तियाँ सोहागणी सच्चै सबदि सींगारि ॥
हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पियारि ॥
सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभ सैं देय अधारु ॥२॥
पिरु सालाहनि आपणा तिनकै हौं सद बलिहारै जाउँ ॥
मनु तनु अरपीं सिरु देईं तिनकै लागां पाँय ॥
जिनी इकु पछाणिया दूजा भाउ चुकाय ॥
गुरमुखि नामु पछाणियै नानक सच्चि समाय ॥३॥

(निर्मल) **सिरीराग महल्ला ३ ॥**

जगि हौंमैं मैलु दुखु पाईया मलु लागी दूजै भाय ॥

मलु हौंमैं धोती किवैं न उतरै जे सौ तीरथ नाय ॥
बहुबिधि करम कमांवदे दूणी मलु लागी आय ॥
पढ़िये मैलु न ऊतरै पूछहु गियानियाँ जाय ॥१॥
मन मेरे गुर सरणि आवै तां निर्मल होय ॥
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोय ॥१॥ रहाउ ॥
मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाया जाय ॥
मनमुख मैलै मैलै मुए जासनि पति गँवाय ॥
गुर परसादी मनि वसै मलु हौंमैं जाय समाय ॥
ज्यों अंधेरै दीपकु बालियै त्यों गुर गियान अग्यिानु तजाय ।२।
हम कीया हम करहँगे हम मूरख गावार ॥
करणै वाला विसरिया दूजै भाय पियारु ॥
माया जेवड दुख नहीं सभि भवि थकै संसारु ॥
गुरमती सुख पाईयै सच्चु नामु उरधारि ॥३॥
जिसनों मेले सो मिलै हौं तिसु बलिहारै जाउँ ॥
ए मन भगती रत्तियाँ सचु बाणी निज थाउँ ॥
मनि रत्ते जिहवा रती हरिगुण सच्चे गाउँ ॥
नानक नामु न वीसरै सच्चे माहिं समाउँ ॥४॥

(वैराग्य) सिरीराग महला ४ ॥

दिनसु चढ़ै फिर १ आथवै रैणि सबाई जाय ॥
२ आँव घटै नरु ना बुझै निति ३ मूसा ४ लाज टुकाय ॥
गुड़ मिठा माया पसरिया मनमुखु लगि माखी पचै पचाय॥१॥

१—अस्त हो जाता है। २—आयु। ३—काल रूपी चूहा। ४—आयु रूपी रस्सी को काट रहा है।

भाई रे मैं मीत सखा प्रभु सोय ॥
१ पुत्तु २ कलतु मोहु बिखु है अंति ३ बेली कोय न होय।१।रहाउ।
गुरमति हरि लिव ऊबरै अलिपतु रहे सरणाय ॥
उनी चलणु सदा निहालिया हरि खरचु लिया पति पाय ॥
गुरमुखि दरगह मंनियहिँ हरि आपि लये गलि लाय॥२॥
गुरमुखां नूँ पंथ परगटा दरि ४ ठाक न कोई पाय ॥
हरिनामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाय ॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सच्चै सोभा पाय ॥ ३ ॥
जिनी गुरमुखि नामु सलाहिया तिना ५ सभको कहै साबासि ॥
तिनकी संगति देहि प्रभ मैं जाचिक की अरदासि ॥
नानक भाग वडे तिनां गुरुमुखां जिन अंतरि नामु परगासि॥४॥

[वैराग्य] सिरीराग महला ५ (घर१)

क्या तूँ ६रत्ता देखिकै पुत्र कलत्र सींगार ॥
रस भोगहिं खुसियां करहिं ७माणहिं रंग अपार ॥
बहुतु करहिं ८फुरमाइसी वरतहिं होय ९ अफार ॥
करता चिति न आवई मनमुख अंध गँवार ॥१॥
मेरे मन सुखदाता हरि सोय ॥
गुर परसादी पाईयै करमि परापति होय ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कपड़ि भोगि लपटाईया सुइना रुपा खाकु ॥
१० हैवर ११ गैवर बहुरंगे कीये रथ १२ अथाक ॥

१—पुत्र ॥ २—स्त्री ॥ ३—संगी-सहायी ॥ ४—रोक या विघ्न ॥ ५ सब कोई अथवा हर एक धन्य धन्य कहता है ॥ ६-लीन हो रहा है । ७—अनेक प्रकार के रंग-रस मानता है । ८—बहुत तरह के हुकुम करता है । ९—अभिमानी । १०—घोड़े । ११-हाथी । १२—बेअन्त ।

किसही चित्ति न पावही बिसरिया सभ १ साक ॥
सिरजणहारि भुलाईया विणु नाँवै नापाक ॥२॥
लैंदा बददुआय तूं माया करहिं इकत्त ॥
२जिसनों तूं पतियाएँदा सो सणु तुझै अनित्त ॥
अहंकारु करहिं अहंकारिया वियापिया मनकी मति ॥
तिनि प्रभि आपि भुलाईया ना तिसु जाति न पति ॥३॥
सतिगुरि पुरखि मिलाईया इको सजणु सोय ॥
हरिजन का राखा एकु है क्या ३ माणस हौंमैं रोय ॥
जो हरिजन भावै सो करै दरि फेरि न पावै कोय ॥
नानक रत्ता रंगि हरि सभ जग महिं चानणु होय ॥४॥

[चेतावनी] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

भलके उठि पपोलियै विणु बुझै मुगध अजाणि ॥
सो प्रभु चित्ति न आइयो छूटैगी बेबाणि ॥
सतिगुरु सेती चित्तु लाय सदा सदा रंगु माणि ॥१॥
प्राणी तूँ आया लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥
कुदमु करे पसु पंखिया दिसै नाहीं कालु ॥
उतै साथि मन खुहै फाथा माया जालि ॥
मुकते सेई भालियहिं जि सच्चा नामु समालि ॥२॥
जो घरु छडि गँवावणां सो लगा मन माहिं ॥
जिथै जाय तुधु वरतणा तिसु की चिंता नाहिं ॥

१—सम्बन्ध या नाता। २—जिस माया का तू भरोसा करता है, वह तेरे साथ बेवफ़ाई करने वाली है। ३-क्या मनुष्य व्यर्थ में मैं-मेरी के चक्र में रोता फिरता है।

फाथे सेई निकले जि गुरकी पैरी पाहिं ॥३॥
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाय ॥
चारे कुंडां भालिकै आय पया सरणाय ॥
नानक सच्चै पातिसाह डुबदा लया कढाय ॥ ४ ॥

[चेतावनी] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

घड़ी १ मुहुत का पाहुणा काज सँवारणहार ॥
माया कामि वियापिया समझै नाहीं गँवार ॥
उठि चलिया पछुताइया परिया २ वसि जंदार ॥१॥
अंधे तूँ बैठा कंधी पाहिँ ॥
जे होवी पूरबि लिखिया तां गुर का बचनु कमाहिँ ॥१॥रहाउ॥
हरी नाहीं नहँ ३ डडुरी पक्की वढणहार ॥
लै लै ४ दात पहुतिया ५ लावे करि तईयार ॥
जां होआ हुकमु किरसाण दा तां लुणि मिणिया खेतार॥२॥
पहिला पहिरु धंधै गया दूजै भरि सोया ॥
तीजै झाख झखाईया चौथै भोरु भया ॥
६ कदही चित्ति न आइयो जिनि जीउ पिंडु दीया ॥ ३ ॥
साधसंगति को वारिया जीउ कीया कुरबाणु ॥
जिसते सोझी मनि पई मिलिया पुरखु सुजाणु ॥
नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥ ४ ॥

[अनन्य-भाव] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

सभे ७ गलां विसरनु इको विसरि न जाउ ॥

१—मुहूर्त अर्थात् पलभर। २—जमदूतों के बसमें पड़ गया। ३—डोडेवाली। ४-दराँती। ५—फ़सल काटने वाले —यहाँ अर्थ जमदूतों से है। ६—कभी भी। ७—सभी दीगर बातें भूल जावें।

धंधा सभु जलायकै गुरि नाम दीया सचु १ सुआउ ॥
आसां सभे २ लाहिकै इका आस कमाउ ॥
जिनी सतिगुरु सेविया तिनि अगै मिलिया थाउ ॥१॥
मन मेरे करते नों सालाहि ॥
सभे छडि सियाणपां गुरकी पैरी पाहि ॥१॥ रहाउ ॥
दुख भुख नहँ वियापई जे सुखदाता मनि होय ॥
३ कितही कंमि न छिजियै जां हिरदै सच्चा सोय ॥
जिस तूँ रखहिं हथ दे तिसु मारि न सकै कोय ॥
सुखदाता गुरु सेवियै सभि अवगण कढै धोय ॥२॥
सेवा मंगै सेवको लाईयां अपनी सेव ॥
साधूसंगु मसॅकत्ते ४ तूठै पावा देव ॥
सभु किछु वसगति साहिबै आपे ५ करण करेव ॥
सतिगुरु कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥३॥
इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥
इकसै दी सामग्री इकसै दी है रीति ॥
इकस स्यों मन मानिया तां होआ निहचलु चीतु ॥
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥

[नाम] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

नामु ध्याये सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होय ॥
पूरे गुर ते पाईयै परगटु सभनी ६लोय ॥
साधसंगति कै घरि वसै एको सच्चा सोय ॥१॥

१--सोई सच्चा है । २--छोड़कर । ३--किसीभी काममें हार नहीं है। ४--संतुष्ट अथवा प्रसन्न होने से । ५--वह आप ही करन-करावनहार है। ६--सभी लोकोंमें।

मेरे मन हरि हरि नामु ध्याय ॥
नामु सहाई सदा संगि आगै लये छडाय ॥१॥ रहाउ॥
दुनिया कीयां वडियाईयाँ कवनै आवहिं कामि ॥
माया का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥
जाकै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥
साधू की होहु रेणुका आपणा आपु तियागि ॥
उपाव सियाणप सगल छडि गुरकी चरणी लाग ॥
तिसहि परापति रतनु होय जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥
तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥
सतिगुरकी सेवा सो करे जिसु बिनसै हौंमैं तापु ॥
नानक को गुरु भेटिया बिनसे सगल संताप ॥४॥

[नाम धन] सिरीराग महल्ला ५ ॥

उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥
संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥
मन मेरे राम-नामु जपि जापु ॥
मन इच्छे फल [1]भुंचि तूँ सभु चूकै सोगु संतापु ॥१॥रहाउ॥
जिसु कारणि तनु धारिया सो प्रभु डिठा नालि ॥
जलि थलि महीअलि पूरिया प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥
मनु तनु निरमलु होइया लागी साचु परीति ॥
चरण भजे पारब्रह्म के सभि जप तप तिनही कीति ॥३॥
रतन जवेहर माणिका अमृत हरि का नाउँ ॥
सूख सहज आनंद रस जन नानक हरिगुण गाउँ ॥४॥

१—भोग ले ।

[सतगुरु-महिमा] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

संतजनहु मिलि भाईहो सच्चा नामु समालि ॥
तोसा बंधहु जीअका १ ऐथै-ओथै नालि ॥
गुरु पूरे ते पाईयै आपणी नदरि निहालि ॥
करमि परापति तिसु होवै जिसनों होय दयाल ॥१॥
मेरे मन गुर २ जेवड अवरु न कोय ॥
दूजा थाँव न को सुझै गुर मेले सचु सोय ॥१॥ रहाउ॥
सगल पदारथ तिसु मिले जिन गुरु डिठा जाय ॥
गुरचरणी जिन मनु लगा से वडभागी माय ॥
गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महिँ रहिया समाय ॥
गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लये तराय ॥ २ ॥
कितु मुखि गुरु सालाहियै करण-कारण समरथु ॥
से मथे निहचल रहे जिन गरि धारिया हथु ॥
गुरि अमृत-नामु पियालिया जनम-मरन का ३ पथु ॥
गुरु परमेसरु सेविया भयभंजनु दुख ४ लथु ॥ ३ ॥
सतिगुरु गहिर गंभीरु है सुखसागरु ५ अघखंडु ॥
जिनि गुर सेविया आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥
गुर नालि ६ तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥
नामु-निधान सतिगुरि दीया सुखु नानक मन महिँ ७ मंडु॥४॥

१—जो लोक-परलोक में संगी है। २—गुरुके समान बड़ा और कोई नहीं है। ३—औषधि (अर्थात सच्चा नाम जो जन्म-मरण के रोग की औषधि है)। ४—उतर गया। ५—पापों को नाश करने वाला। ६--तुल्य (समान)। ७—मान।

[वैराग्य] सिरीराग महल्ला ५ (घर २)

१गोइलि आया गोइली क्या तिसु डंफ पसारु ॥
२मुहलति पुंनी चलणा तूँ संमलु घर-बारु ॥१॥
हरिगुण गाउ मनां सतिगुरु सेवि पियारि ॥
क्या थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहिं परभाति ॥
क्या तूँ रत्ता ३गिरसत स्यौं ४सभ फुलां की बागाति ॥२॥
मेरी मेरी क्या करहिं जिनि दीया सो प्रभु लोड़ि ॥
५सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥
लख चौरासी भ्रमतियाँ दुलभ जनमु पायौए ॥
नानक नामु समालि तूँ ६सो दिनु नेड़ा आयौए ॥४॥

[चेतावनी] सिरीराग महला ५ ॥

७संचि हरिधनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥
जिनि तूँ साजि सँवारिया हरि सिमरि होय उद्धारु ॥१॥
जपि मन नामु एकु अपारु ॥
प्रान मनु तनु जिनहिं दीया रिदै का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥

१—मारवाड़देश में बरसात न होनेसे वहाँ के लोग अपने ढोर-डंगर लेकर दूर-देशों में जहाँ हरियावल मिल सके, चराने को ले जाते हैं; उन्हें गोइली कहते हैं। अर्थात् जिस प्रकार गोइली गोइल के लिये परदेश में आया है; तो वहाँ वह क्या आडम्बर- पसारा करेगा ? क्योंकि उसे शीघ्र ही अपने देशको लौट जाना होता है। २—समय बीत जानेके पीछे चल देना है। ३— गृहस्थ। ४—यह सब रचना फूलोंके बागकी तरह सुन्दर अवश्य है; मगर टिकाऊ नहीं है। ५—आखिरकार हर हालमें। ६—वह अन्त का दिन जबकि जमदूत लेनेको आवैंगे। ७—जमा कर।

कामि क्रोधि अहंकारि माते वियापिया संसारु ॥
१ पौ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥
सतु संतोखु दया कमावै एह करणी सार ॥
आपु छोडि सभ होय रेणा जिसु देय प्रभु निरंकारु ॥३॥
जो दीसै सो सगल तूँ है पसरिया पासारु ॥
कहु नानक गुरि भरमु काटिया सगल ब्रह्म बीचारु ॥४॥

[सतगुरु-महिमा] **सिरीराग महल्ला ५ ॥**

गुरु परमेसर पूजियै मनि तनि लाय पियारु ॥
सतिगुरु दाता जीअका २ सभसै देय अधारु ॥
सतिगुर-बचन कमावणे सच्चा एहु वीचारु ॥
बिनु साधूसंगति रत्तियाँ माया मोहु सभु ३ छारु ॥१॥
मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥
साधूसंगति मनि वसै पूरन होवै ४ घालु ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होय ॥
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोय ॥
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सच्ची सोय ॥
गुरते बाहरि किछु नहीं गुर कीता लोड़ै सो होय ॥२॥
गुरु तीरथु गुरु ५ पारजातु गुरु मनसा-पूरणहारु ॥
गुरु दाता हरिनामु देय उधरै सभु संसारु ॥
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊँचा अगम अपारु ॥
गुरकी महिमा अगम है क्या कथै कथनहारु ॥३॥

१—पड़ जा। २—सब किसी को। ३—खाक। ४—करनी, कमाई अथवा मिहनत। ५—कल्पवृक्ष।

जितड़े फल मनि बाछियहिं तितड़े सतिगुरु पासि ॥
पूरबि लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥
सतिगुर सरणी आईया बाहुड़ि नहीं बिनासु ॥
हरि नानक कदे न विसरऊँ एहु जीउ पिंड तेरा सासु ॥४॥

[चेतावनी] **सिरीराग महल्ला १** (घर १)

सुणि मन भूले बावरे गुरकी चरणी लागु ॥
हरि जपि नामु ध्याय तूँ जम डरपै दुख भागु ॥
दूख घणो दोहागणी क्यों थिरु रहै सुहागु ॥१॥
भाई रे अवरु नाहीं मैं थाँउ ॥
मैं धनु नामु-निधानु है गुरि दीया बलि जाँउ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरमति पति साबासि तिसु तिसकै संगि मिलाउँ ॥
तिसु बिनु घड़ी न जीवऊँ बिनु नाँवै मरि जाउँ ॥
मैं अंधुले नामु न वीसरै टेकि टिकी घरि जाउँ ॥२॥
गुरू जिनां का अंधुला चेले नाहीं ठाउँ ॥
बिनु सतिगुरु नाँउ न पाईयै बिनु नाँवै क्या १ सुआउ ॥
आय गया पछुतावणा ज्यों २ सुंञे घरि काउँ ॥३॥
बिनु नाँवै दुखु देहुरी ज्यों कलरकी भीति ॥
तबलगु महलु न पाईयै जबलगु साचु न चीति ॥
सबदि ३ रपै घरु पाईयै निरबाणी पदु नीति ॥४॥
हौं गुर पूछौं आपणे गुर पुछि कार कमाउँ ॥
सबदि सलाही मनि वसै हौंमैं दुखु जलि जाउ ॥

१—कार्यसिद्धि। २—जिस प्रकार वीरान घरमें कौआ निराश जाता है। ३—सार-शब्द में सुरतिको लगा देने से।

सहजे होय मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥
सबदि रत्ते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहिं उरधारि ॥
सो क्यों मनहुँ विसारियै सभ जीयां का आधारु ॥६॥
सबदि मरे सो मरि रहै फिरि मरैं न दूजो वार ॥
सबदै ही ते पाईयै हरि नामे लगै पियारु ॥
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारोवार ॥७॥
सभ सालाहै आप को वडहु वडेरी होय ॥
गुर बिनु आपु न चीनियै कहे सुणे क्या होय ॥
नानक सबदि पछाणियै हौं मैं करै न कोय ॥८॥

[गुरुकी दात्त] सिरीराग महल्ला १ (घर १)

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईयै रतनु बीचारु ॥
मनु दीजै गुर आपणे पाईयै १ सरब पियारु ॥
मुकति पदारथु पाईयै अवगण मेटणहारु ॥१॥
भाई रे गुर विनु गियानु न होय ॥
पूछहु ब्रहमे नारदै बेदबियासै कोय ॥१॥ रहाउ ॥
गियानु धियानु धुनि जाणियै अकथ कहावै सोय ॥
सफलियो बिरखु हरियावला छाँव घणेरी होय ॥
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोय ॥२॥
गुर भंडारै पाईयै निरमल नामु पियारु ॥
साचो वखरु संचियै पूरै करमि अपारु ॥
सुखदाता दुख-मेटणो सतिगुरु २ असुर-संघारु ॥३॥

१—मन और चित्तका सम्पूर्ण प्रेम । २—बुराई और पापको नष्ट करनेवाला ।

भवजल बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥
ना बेड़ी ना १ तुलहड़ा ना तिसु २ वंझु-मलारु ॥
३ सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥
इकु तिलु पियारा वीसरै दुखु लागै सुख जाय ॥
जिहवा जलौ जलावणी नामु न जपै रसाय ॥
घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताय ॥५॥
मेरी मेरी करि गये तनु धनु ४ कलतु न साथि ॥
बिनु नाँवै धनु बादि है भूलो मारगि ५ आथि ॥
साचौ साहिब सेवियै गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥
आवै जाय भवाईयै पैइयै किरति कमाय ॥
पूरबि लिखिया क्यों मेटियै लिखिया लेख रजाय ॥
बिनु हरिनामु न छुटियै गुरमति मिलै मिलाय ॥७॥
तिसु बिनु मेरा को नहीं जिसका जीउ परानु ॥
हौंमैं ममता जलि बलऊँ लोभ जलऊँ अभिमानु ॥
नानक सबदु वीचारियै पाईयै गुणी-निधानु ॥८॥

[प्रेम] **सिरीराग महला १** (घर १)

रे मन ऐसी हरि स्यों प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥
६ लहरीं नालि पछाड़ियै भी विगसै असनेहि ॥

१–डोहँगी या चमड़ेकी मशक जिसपर चढ़कर दरियासे पार होते हैं। २–वंझु अर्थात् चप्पू और मलारु अथात् मल्लाह। ३–सतगुरु ही भवसागर से तारनेवाला जहाज़ है और सतगुरुकी दया-दृष्टि ही पार उतारनेवाली है। ४–मित्र-सम्बन्धी यौर कुटुम्बी आदि ५–असली और सच्चा मार्ग। ६–अगरचे जल अपनी लहरोंके साथ कमल-फूलको थपेड़े मारता रहता है; तो भी कमल प्रेमके कारण खिलता (प्रसन्न होता) है।

जल महिं जीअ उपायकै बिनु जल मरण तिनेहि ॥१॥
मन रे क्यों छूटहिं बिनु पियार ॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिया बखसे भगति भंडार ॥१॥रहाउ॥
रे मन ऐसी हरि स्यौं प्रीति करि जैसो मछुली नीर ॥
ज्यौं अधिको त्यौं सुख घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै १अभ पीर ॥२॥
रे मन ऐसी हरि स्यौं प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥
२सर-भरि थर हरियावले इक बूँद न पवई केह ॥
करमि मिलै सो पाईयै किरतु पाईया सिरि देह ॥३॥
रे मन ऐसी हरि स्यौं प्रीति करि जैसी जल-दुध होय ॥
३आवटणु आपे खवै दुध कौ खपणि न देय ॥
आपे मेल बिछुंनियाँ सचि वडियाई देय ॥४॥
रे मन ऐसी हरि स्यौं प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥
खिनु पलु नींद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सो होय ॥
ताकी कीमति ना पवै जो लोचै सभु कोय ॥
गुरमति होय त पाईयै सचि मिलै सुखु होय ॥६॥
सच्चा नेह न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोय ॥

१—ऐसे प्रेमीके प्रेमकी तड़पको भगवान् जानता है। २—चात्रिकका यह नियम है कि वह स्वाँती-नक्षत्रकी बूँदके सिवाये और जल हरगिज ग्रहण नहीं करता। ३—दूध और पानीकी प्रीति की मिसाल दी गई है कि जब दोनोंको मिलाकर आगपर चढ़ाया जाता है; तो पानी अपने-आपको जला देता है, मगर दूधको खपने नहीं देता।

गियान पदारथु पाइयै त्रिभवणु सोझी होय ॥
निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होय ॥७॥
खेलि गये से पंखणूँ जे चुगदे सरतलि ॥
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥
जिस तूँ मेलहिं सो मिलै जाय सच्चा पिड़ मलि ॥८॥
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हौंमैं मैलु न जाय ॥
सोहं आपु पछाणियै सबदि भेदि पतियाय ॥
गुरमुखि आपु पछाणियै अवर कि करे कराय ॥९॥
मिलिया का क्या मेलियै सबदि मिलै पतियाय ॥
मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटां खाय ॥
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाय ॥१०॥

(माया मुक्त) सिरीराग महला ३ ॥

गुरमुखि नामु ध्याईयै मनमुखि बूझ न पाय ॥
गुरमुखि सदा मुख ऊजलै हरि वसिया मनि आय ॥
सहजे ही सुखु पाईयै सहजे रहै समाय ॥१॥
भाई रे दासनिदासा होय ॥
गुरकी सेवा गुरभगति है विरला पाये कोय ॥१॥ रहाउ ॥
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहिं सतिगुर भाये ॥
सदा पिरु निहचलु पाईयै ना उहु मरै न जाये ॥
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिरकै अंकि समाये ॥२॥
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाया न जाये ॥
पाठु पढ़ै ना बुझई भेखी भरमि भुलाये ॥
गुरमती हरि सदा पाइया रसना हरिरसु समाये ॥३॥

माया मोह चुकाइया गुरमती सहजि सुभाय ॥
बिनु सबदै जगु दुखिया फिरै मनमुखां नों गई खाय ॥
सबदे नामु धियाईयै सबदे सचि समाय ॥४॥
माया भूले सिंध फिरहिँ समाधि न लगै सुभाय ॥
तीने लोअ वियापत है अधिक रही लपटाय ॥
बिनु गुर मुकति न पाईयै ना दुबिधा माया जाय ॥५॥
माया किसनों आखियै क्या माया करम कमाय ॥
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हौंमैं करम कमाय ॥
बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहुँ हौंमैं जाय ॥६॥
बिनु प्रीति भगति न होवई बिनु सबदै थाय न पाय ॥
सबदे हौंमैं मारियै माया का भ्रमु जाय ॥
नामु पदारथु पाईयै गुरमुखि सहजि सुभाय ॥७॥
बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होय ॥
भगतिवछलु हरि मनि वसिया सहजि मिलिया प्रभु सोय ॥
नानक सबदे हरि सालाहियै करमि परापति होय ॥८॥

[नाम-महमा] सिरीराग महल्ला ५ ॥

जाको मुसकलु अति बणै ढोई कोय न देय ॥
लागू होये दुसमनां साका भि भजि खले ॥
सभो भजै आसरा चुकै सभ आसराउ ॥
चिति आवै उसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥१॥
साहिबु निताणियाँ का ताणु ॥
आय न जाई थिरु सदा गुरसबदी सचु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥
जेको होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥

दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥
सुआरथु सुआउ न को करै ना किछु होवै काजु ॥
चिति आवै उसु पारब्रहमु तां निहचलु होवै राजु ॥२॥
जाकौ चिंता बहुतु बहुतु देही बियापै रोगु ॥
ग्रिसति कुटंबि पलेटिया कदे हरखु कदे सोगु ॥
गौण करे चहुँकुँट का घड़ी न बैसणु सोय ॥
चिति आवै उसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होय ॥३॥
कामि क्रोधि मोहि बसि कीया १किरपन लोभि पियारु ॥
चारे किलविख उनि अघ कीये होआ असुर संघारु ॥
पोथी गीत कवित्त किछु कदे न करनि धरिया ॥
चिति आवै उसु पारब्रहमु तां निमखु सिमरत तरिया ॥४॥
सासत सिमृति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥
तपे तपीसर जोगीयां तीरथि गवनु करे ॥
खट करमां ते दुगुणे पूजा करता नाय ॥
रंगु न लगी पारब्रहमु तां सरपर नरके जाय ॥५॥
राज मिलक सिकदारियाँ रस भोगण बिसथार ॥
बाग सुहावे सोहणे चले हुकमु अफार ॥
रंग तमासे बहुबिधी चाय लगि रहिया ॥
चिति न आयो पारब्रहमु तां सरप की जूनि गया ॥ ६ ॥
बहुतु धनाढि अचारवंत सोभा निरमल रीति ॥
मात पिता सुत भाईयां साजन संगि परीति ॥
लसकर तरकस बंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥
चिति न आयो पारब्रहमु तां २खड़ि रसातल दीत ॥७॥

१—दुःखदायी। २—रसातलमें चला गया।

काया रोगु न छिद्र किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥
मिरतु न आवी चित्ति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥
सभ किछु कीतोनु आपणा जीये न संक धरिया ॥
चित्ति न आयो पारब्रह्मु १ जमु कंकर वसि परिया ॥८॥
किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधूसंगु ॥
ज्यों ज्यों उहु वधाईयै त्यों त्यों हरि स्यों रंगु ॥
दुहां सिरियां का खसमु आपि अवरु न दूजा थाँउ ॥
सतिगुर तुठै पाईया नानक सच्चा नाँउ ॥९॥

[उपदेश] सिरीराग महल्ला ५ (छंत)

मन पियारिया जीऊ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥
संगि सहाई हरिनामु धियाई बिरथा कोय न जाये ॥
मन चिंदे सेई फल पावहिँ चरणकमल चित्तु लाये ॥
जलि थलि पूरि रहिया बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥
नानकु सिख देय मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥
मन पियारिया जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा २ बिखुसागरु संसारे ॥
चरणकमल करि ३ बोहिथु करते सहसा दूखु न बियापै ॥
गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥
आदि जुगादी सेवक सुआमी भगतां नामु अधारे ॥
नानकु सिख देय मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥१॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा हरि लदे खेप सवॅली ॥

१—यमदूत । २—ज़हरका समुद्र । ३—जहाज़ ।

मन पियारिया जीऊ मित्रा हरि दरु निहचलु मॅली ॥
हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाया ॥
तहँ जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाया ॥
चित्रगुपत का कागदु फारिया जमदूतां कछु न चली ॥
नानकु सिख देय मन प्रीतम हरि लदे खेप सवॅली ॥३॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा करि संताँ संगि निवासो ॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा हरिनाम जपत परगासो ॥
सिमरि सुआमी सुखहँ गामी इच्छ सगली पुंनियाँ ॥
पुरबे कमाये स्रीरंग पाये हरि मिले १ चिरी विछुंनियाँ ॥
अंतरि बाहरि सरबति रविया मनि उपजिया बिसुआसो ॥
नानकु सिख देय मन प्रीतम करि संताँ संगि निवासो ॥४॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा हरि प्रेम-भगति मनु लीना ॥
मन पियारिया जीऊ मित्रा हरिजल मिलि जीवे मीना ॥
हरि पी २ आघाने अमृत-बाने स्रब सुखा मन ३ वुठे ॥
स्रीधर पाये मंगल गाये इच्छ ४ पुंनी सतिगुर तुठे ॥
लड़ि लीने लाये नौनिधि पाये नाँउ सरब सुठाकुरि दीना ॥
नानकु सिख संत समझाई हरि प्रेम-भगति मन लीना ॥५॥

[विनय] सिरीराग की वार (मः१)

गलीं असीं चंगियाँ आचारीं बुरियाँह ॥
मनहुँ ५ कुसुधां कालियाँ बाहरि चिटवियाँह ॥
रीसां करहिं तिनाड़ियाँ जो सेवहिं दरु खड़ियाँह ॥

१—चिरकालसे बिछुड़ा हुआ। २—तृप्त हो गये। ३—बस गये। ४—पूर्ण हो गई। ५—अशुद्ध।

नालि खसमै रत्तियाँ माणहिं सुखि रलियाँह ॥
होंदे ताणि निताणियाँ रहहिं निमानणियाँह ॥
नानक जनमु सकारथा जे तिनकै संगि मिलाँह ॥

[चेतावनी] मः ३

मनमुख नाम-विहूणियाँ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ॥
इसका रंगु दिन थोड़िया [1] छोछा इसदा मुलु ॥
दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गँवार ॥
बिसटा अंदरि कीट से पं पॅचहिं वारोवार ॥
नानक नाम रत्ते से रंगुले गुरकै सहजि सुभाय ॥
भगती रंगु न ऊतरै सहजै रहै समाय ॥

[उपदेश] सलोक महला ३

नानक सो सूरा [2] वरीयामु जिनि विचहुँ दुसटु अहंकरणु मारिया ॥
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सँवारिया ॥
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिया ॥
सोहनि सचि दुआरि नामु पियारिया ॥
मनमुखि मरहिं अहंकारि मरणु विगाड़िया ॥
सभो वरतै हुकमु क्या करहिं विचारिया ॥
आपहुँ दूजै लगि खसमु विसारिया ॥
नानक बिनु नाँवै सभु दुखु सुखु विसारिया ॥

[गुरमुख] पौड़ी

हरिके संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥

१–होछा या थोथा । २–श्रेष्ठ ॥

जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥
हरि अमृत कथा सरेसट ऊतम गुरबचनी सहजे चाखी ॥
तहँ भया प्रगासु मिटिया अंधियारा ज्यों सूरज रैणि १ किराखी ॥
अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिया गुरमुखि आखी ॥

[उपदेश] **सलोक महला १**

कुबुधि डूमणी कुदया कसाइणि परनिंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥
कारी २ कढी क्या थियै जां चारे बैठियाँ नालि ॥
सचु संजमु करणी कारां नावणु नाँउ जपेही ॥
नानक अगे ऊतम सेई जि पापां ३ पंदि न देही ॥

[सतगुरु] **मः ३**

सतिगुर मिलियै उलटी भई नवनिधि खरचियो खाउ ॥
अठारह सिधी पिछै लगियाँ फिरनि निज घरि वसै निज थाय ॥
अनहद धुनी सद वजदे ४ उनमुनि हरि लिव लाय ॥
नानक हरिभगति तिनां कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिया धुरि पाय ॥

१—नष्ट हो गई। २—उज्जल या सफ़ेद ॥ ३—जो पापोंके मार्गमें नहीं चलते ॥ ४—एक प्रकारकी योग-मुद्रा का नाम है।

राग माझ

[बिरह] **माझ महल्ला ५** (घर १)

मेरा मनु लोचे गुर–दरसन ताई ॥
बिलप करे चात्रिक की निआई ॥
तृखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीऊ ॥१॥
हौं घोली जीऊ घोलि घुमाई गुर-दरसन संत पिआरे जीऊ।१ रहाउ॥
तेरा मुख सुहावा जीऊ सहज धुनि बाणी ॥
चिरु होआ देखे सारंगि-पाणी ॥
धंनु सुदेसु जहाँ तूँ वसिया मेरे सॅजण मीत मुरारे जीऊ ॥२॥
हौं घोली जीऊ घोलि घुमाई गुर सॅजण मीत मुरारे जीऊ।१ रहाउ॥
इक घड़ी न मिलते तां कलिजुगु होता ॥
हुणि कदि मिलियै प्रिय तुध भगवंता ॥
मोहि रैणि न विहावै नींद न आवै बिनु देखे गुरदरबारे जीऊ॥३॥
हौं घोली जीऊ घोलि घुमाई तिसु सच्चे गुरदरबारे जीऊ।१ रहाउ॥
भागु होआ गुरि संत मिलाया ॥
प्रभु अबिनासी घर महिं पाया ॥
सेव करीं पलु चसा न विछुड़ाँ जन नानक दास तुमारे जीऊ ॥४॥
हौं घोली जीऊ घोलि घुमाई जननानक दास तुमारे जीऊ।रहाउ१॥

[परिचय] **माझ महल्ला ५ ॥**

सभ किछु घर महिं बाहरि नाहीं॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाहीं॥
गुरपरसादी जिनी अंतरि पाया सो अंतरि बाहरि सुहेला जीऊ।१।

झिमि झिमि वरसै अमृत-धारा। मनु पीवै सुनि सबद बीचारा ॥
अनद-बिनोद करे दिन-राती सदा सदा हरि केला जीऊ ॥२॥
जनम जनम का बिछुड़िया मिलिया। साध-कृपा ते सूका हरिया ॥
सुमति पाये नाम धियाये गुरमुखि होये मेला जीऊ ॥३॥
जलतरंगु ज्यों जलहिं समाया। त्यों जोती संगि जोति मिलाया ॥
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईये १जौला जीऊ ॥४॥

[नाम बिना व्यर्थ है] **माझ महल्ला ५ ॥**

जिथै नामु जपियै प्रभ पियारे। से असथल सोइन चौबारे ॥
जिथै नामु न जपियै मेरे गोइंदा सेई नगर उजाड़ी जीऊ ॥१॥
हरि रुखा रोटी खाय समाले। हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥
खाय खाय करै बदफ़ैली जाणु २ विसू की वाड़ी जीऊ ॥२॥
संताँ सेती रंगु न लाये। साकत संगि विकरम कमाये ॥
दुलभ देह खोई अगियानी जड़ आपणी आपि उपाड़ी जीऊ॥३॥
तेरी सरणि मेरे दीनदयाला। सुखसागर मेरे गुर गोपाला ॥
करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीऊ ॥४॥

[घट-मठ] **माझ महल्ला ३ ॥**

इसु गुफा महिं अखुट भंडारा तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा।
आपे गुपतु परगटु है आपे गुरसबदी आपु वंञावणियाँ ॥१॥
हौं वारी जीऊ वारी अमृत-नामु मंनि वसावणियाँ ॥
अमृत-नामु महारसु मीठा गुरमती अमृत पीयावणियाँ ।१रहाउ॥
हौमैं मारि बजर कपाट खुलाया। नामु अमोलकु गुरपरसादी पाया।
बिनु सबदै नामु न पाये कोई गुर-किरपा मंनि वसावणियाँ ।२।

१--धोखा। २-ज़हर की खेती।

गुर गियान-अंजनु सचु नेत्रीं पाया ॥
अंतरि चानणु अगियानु अंधेरु गँवाया ॥
जोती जोति मिली मनु मानिया हरि दरि सोभा पावणियाँ ।३।
सरीरहुँ भालणि को बाहरि जाये ॥
नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाये ॥
मनमुख अंधे सूझै नाहीं फिरि घिरि आये गुरमुखि वथु पावणियाँ ॥४॥
गुरपरसादी सच्चा हरि पाये ॥
मनि तनि वेखै हौंमैं मैलु जाये ॥
बैसि सुथानि सद हरिगुण गावै सच्चे सबदु समावणियाँ ॥५॥
नौ दरि १ ठाके धावतु रहाये । दसवैं निज-घरि वासा पाये ॥
ओथै अनहद सबद वजहिँ दिनु-रातो गुरमती सबदु सुणावणियाँ ॥६॥
बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥
सतिगुर हथि कुंजी होरतों दरु खुलै नाहीं गुरु पूरै भागि मिलावणियाँ ॥७॥
गुपतु परगटु तूँ सभनीं थाईं ॥ गुरपरसादी मिलि सोझी पाई ॥
नानक नामु सलाहि सदा तूँ गुरमुखि मंनि वसावणियाँ ॥८॥

वार माझकी तथा सलोक महल्ला १ ॥

(मनमुख का जीवन)

पहिले पियारि लगा थण दुधि ॥ दूजे माय बाप की सुधि ॥
तीजै भया भाभी बेब ॥ चौथै पियारि उपंनी खेड ॥

१-रोक लेवै ॥

पंजवें खाण पियण की धातु ॥ छिवैं कामु न पुछै जाति ॥
सतवें संजि कीया घर वासु ॥ अठवें क्रोधु होआ तनि नासु ।
नावें धौले ऊभे साह ॥ दसवें दँधा होआ सुआह ॥
गये सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिया हंस दसाये राह ॥
आया गँया मुइया नाँउ ॥ पिछै पत्तलि सदिहु काँव ॥
नानक मनमुखि अंधु पियारु ॥ बाझु गुरू डूबा संसारु ॥

सलोक महल्ला २ ॥

(घट-मठ)

अखीं बाझों वेखणा विणु कंनाँ सुनणाँ ॥
पैराँ बाझों चलणा विणु हथाँ करणाँ ॥
जीभै बाझहुँ बोलणाँ इयों जीवत मरणाँ ॥
नानक हुकमु पछाणिकै तौ खसमै मिलणाँ ॥

पौड़ी ॥

(भक्त और संसारी)

भगतां तै सैंसारियाँ जोड़ कदे न आया ॥
करता आपि अभुॅलु है न भुॅलै किसै दा भुलाया ॥
भगत आपे मेलियनु जिनी सचो सचु कमाया ॥
सैंसारी आपि खुआइयनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाया॥
चलणु सारु न जाणनी कामु करोधु विसु वधाया ॥
भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धियाया ॥
दासनिदास होयकै जिनी विचहुँ आपु गँवाया ॥
उनाँ खसमै कै दरि मुख ऊजले सच्चै सबदि सुहाया ॥

राग गौड़ी

राग गौड़ी गुआरेरी महल्ला ३ ॥

(गुरुमुख)

गुर ते गियान पाये जनु कोय, गुर ते बूझै सीझै सोय ॥
गुर ते सहजु साचु बीचारु, गुर ते पाये मुकति दुआरु ॥१॥
पूरै भागि मिलै गुरु आय, साचै सहजि साचि समाय ॥१॥रहाउ॥
गुरि मिलियै तिसना अगनि बुझाये, गुर ते सांति वसै मन आये ॥
गुर ते पवित पावन पावन सुचि होय,गुर ते सबदि मिलावा होय।२।
बाझु गुरू सभ भरम भुलाई, बिनु नाँवै बहुता दुख पाई ॥
गुरमुखि होवै सो नामु धियाई, दरसनि सच्चै सच्ची पति होई।३।
किसनों कहियै दाता इकु सोई, किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥
मिलि प्रीतम साचे गुण गावाँ, नानक साचे साचि समावाँ ॥

[मन] गौड़ी गुआरेरी महल्ला ३ ॥

मनु मारे १ धातु मरि जाय ॥ बिनु मूए कैसे हरि पाये ॥
मनु मरै दारू जाणै कोय ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोय ॥१॥
जिसनों बखसे दे वडियाई ॥ गुरपरसादी हरि वसै मनि आई ॥
॥१॥ रहाउ ॥
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ तां इसु मनकी सोझी पावै ॥
मनु मैं २ मत्तु ३ मैंगल ४ मिकदारा ॥ गुरु ५ अंकुस मारि जीवालणहारा ॥२॥

१--मनसा । २--मतवाला । ३--हाथी । ४--बलवान् । ५--हाथीको वशमें करनेवाला हथियार ।

मनु असाधु साधै जनु कोय,अचरु चरै तां निरमलु होय ॥
गुरमुखि इहु मनु लया सँवारि,हौं मैं विचहुँ तजे विकार ॥३॥
जो धुरि राखियनु मेलि मिलाये,कदे न विछुड़हिं सबदि समाये॥
आपणी कला आपे ही जाणे,नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥

[गुरुमुख] गौड़ी गुआरेरी महल्ला ३ ॥

गुर सेवा जुग चारे होई, पूरा जनु कार कमावै कोई ॥
अखुटु नाम-धनु हरि तोटि न होई,एथै सदा सुखु दरि सोभा होई१
ऐ मन मेरे भरमु न कीजै, गुरमुखि सेवा अमृत-रसु पीजै ।।१रहाउ।
सतिगुरु सेवहिं से महापुरख संसारे,आपि उधरे कुल सगल निसतारे
हरि का नामु रखहिं उरधारे,नामि रते भौजल उतरहिं पारे ॥२॥
सतिगुरु सेवहिं सदा मन दासा, हौं मैं मारि कमलु परगासा ॥
अनहदु वाजै निज-घरि वासा, नामि रते घर माहिं उदासा॥३॥
सतिगुरु सेवहिं तिनकी सच्ची बाणी, जुगु जुगु भगता आखि वखाणी ॥
अनदिनु जपहिं हरि सारंगपाणी,नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥४॥

[मनमुख-गुरुमुख] गौड़ी गुआरेरी महल्ला ३॥

सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाय ॥
हौंमैं करम कमावँदे मनमुखि मिलै सजाय ॥१॥
मेरे मन गुरुचरणी चित्तु लाय ॥
गुरमुखि नामु-निधान है दरगह लये छडाय ॥१॥रहाउ॥
लख चौरासीह भरमदे मन १ हठि आवै जाय ॥

१—मनमति के पीछे लगकर ।

गुरका सबदु न चीनियो फिरि फिरि जोनी पाय ॥२॥
गुरमुखि आपु पछाणिया हरिनामु वसिया मनि आय ॥
अनदिनु भगती रतिया हरिनामे सुखि समाय ॥३॥
मन सबदि मरै परतीति होय हौंमैं तजे विकार ॥
जन नानक करमी पाईयनि हरिनामा भगति भंडार ॥४॥

[चेतावनी] **गौड़ी गुआरेरी महल्ला ५ ॥**

कई जनम भये कीट पतंगा, कई जनम गज मीन १ कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होयो, कई जनम हैवर बृख जोयो ॥१॥
मिलु जगदीस मिलन की बरिया, चिरंकाल एह देह २ संजरिया ॥
॥१॥ रहाउ ॥
कई जनम सैल गिरि करिया, कई जनम गरभ हिरि ३ खरिया ॥
कई जनम साख करि उपाया, लख चौरासीह जोनि भ्रमाया ॥२॥
साधसंगि भयो जनमु परापति, करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥
तियागि मानु झूठु अभिमानु, जीवत मरहिं दरगह परवानु ॥३॥
जो किछु होआ सो तुझ ते होगु, अवरु न दूजा करणै जोगु ॥
तां मिलिये जां लैहि मिलाय, कहु नानक हरि हरि गुण गाय ॥४॥

(गुरुबचन) **गौड़ी गुआरेरी महल्ला ५ ॥**

गुर का बचनु सदा अबिनासी, गुरकै बचनि कटी जम-फासी ॥
गुरका बचन जीअ कै संगि, गुरकै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥
जो गुरि दीया सो मनकै कामि, संत का कीया सति करि मानि ॥
॥१॥ रहाउ ॥
गुरका बचनु अटल अच्छेद, गुर कै बचनि कटे भ्रम-भेद ॥

१--मृग। २--प्राप्त भई। ३--दुःख भोगता रहा।

गुरका बचनु कतहुँ न जाय, गुरकै बचनि हरिके गुण गाय ॥२॥
गुरका बचनु जीअ कै साथ, गुरका बचनु अनाथ को नाथ ॥
गुरकै बचनि नरकि न पवै, गुरकै बचनि रसना अमृत रवै॥३॥
गुरका बचनु परगटु संसारि, गुरकै बचनि न आवै हारि ॥
जिसु जन होये आप कृपाल, नानक सतिगुर सदा दयाल॥४॥

[चोर] **गौड़ी गुआरेरी महला ५ ॥**

नैनहुँ नींद पर दृसटि विकार, स्रवण सोये सुणि निंद वीचार ॥
रसना सोई लोभि मीठै सादि, मनु सोया माया बिसमादि ॥१॥
इसु गृह महिं कोई जागतु रहै, साबतु वसतु उहु अपनी लहै ॥
॥१॥ रहाउ ॥
सगल सहेली अपनै रस माती, गृह अपने की खबरि न जाती ॥
१मूसनहार पंच २बटवारे, सूने नगरि परे ठगहारे ॥२॥
उनते राखै बापु न माई, उनते राखै मीतु न भाई ॥
दरबि सियाणप ना ओय रहते,साधसंगि ओये दुसट वसि होते।३।
करि किरपा मोहि सारिंग-पाणि, संतन धूरि सरब निधान ॥
साबतु पूँजी सतिगुर संगि, नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥४॥
सो जागै जिसु प्रभु किरपालु, इहु पूंजी साबतु धनु मालु ॥
॥१॥ रहाउ दूजा ॥

[नाम-विहीन] **गौड़ी महल्ला ५ ॥**

दुलभ देह पाई वडभागी, नामु न जपहिं ते आतमघाती ॥१॥
मरि न जाहिं जिन बिसरत राम, नाम-बिहून जीवन कौन काम॥
॥१॥ रहाउ ॥

१—लूटनेवाले । २—डाकू ।

खात पीत खेलत हसत बिसथार, कवन अरथ मिरतक सींगार ॥२॥
जो न सुनहिं जसु परमानंदा, पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥३॥
कहु नानक गुरि मन्त्र दृढ़ाया, केवल नामु रिद माहिं समाया ॥४॥

(साधु-संग) **गौड़ी महल्ला ५ ॥**

संतकी धूरि मिटे अघ कोट, संत-प्रसादि जनम मरण ते छोट॥१॥
संत का दरसु पूरन इसनानु, संत-कृपा ते जपियै नामु ॥१ रहाउ ॥
संत कै संगि मिटिया अहंकारु, दृसटि आवै सभ एकंकारु॥२॥
संत सुप्रसन्न आये वसि पंचा, अमृत नामु रिदै लै संचा ॥३॥
कहु नानक जाका पूरा करम, तिसु भेटे साधू के चरन ॥४॥

राग गौड़ी पूरबी महल्ला ५ ॥

(खोज)

किनबिधि मिलै गुसाईं मेरे रामराय ॥
कोई ऐसा संत सहज सुखदाता मोहि मारगु देय बताई ॥१॥रहाउ॥
अंतरि अलखु न जाई लखिया विचि पड़दा हौमै पाई ॥
माया मोहि सभो जगु सोया इहु भरमु कहहु क्यों जाई ॥१॥
एका संगति इकतु गृहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥
एक बसतु बिनु पंच दुहेले उहु बसतु अगोचर ठाई ॥२॥
जिसका गृह तिनि दीया ताला कुंजी गुर सों पाई ॥
अनिक उपाव करे नहिं पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥३॥
जिनके बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥
पंच जनां मिलि मंगलु गाया हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥
मेरे रामराय इनबिधि मिलै गुसाईं ॥ सहजु भया भ्रम खिन महिँ नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥ १रहाउ दूजा ॥

[उपदेश] **गौड़ी महल्ला ५ ॥**

अवध घटै दिनसु रैना रे ॥
मन गुर मिलि काज सँवारे ॥१॥ रहाउ ॥
करउँ बेनती सुनहु मेरे मीता संत-टहल की बेला ॥
ईहाँ खाटि चलहु हरि-लाहा आगे बसनु सुहेला ॥१॥
इहु संसारु बिकारु १ सहसे महिं तरियो ब्रहमगियानी ॥
जिसहि जगाये पीयाये हरिरसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥
जाको आये सोई २ विहाझहु हरि गुर ते मनहिं बसेरा ॥
निज-घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होयगो फेरा ॥३॥
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मनकी पूरे ॥
नानकु दासु इही सुखु मांगै मोको करि संतनकी धूरे ॥४॥

[उपदेश] **गौड़ी महला ६ ॥**

साधो मनका मानु तियागौ ॥
काम क्रोधु संगति दुरजन की ताते अहिनिसि भागौ ॥ १ रहाउ ॥
सुखु दुखु दोनों सम करि जानै औरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥
उसतति निंदा दोऊ तियागै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूँ गुरमुखि जाना ॥२॥

[वैराग्य] **गौड़ी महला ६ ॥**

साधो रचना राम बनाई ॥
इक बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लख्यो न जाई ॥१ रहाउ ॥
कामु क्रोध मोह बसि प्रानी हरिमूरति बिसराई ॥

१—हजारोंमें कोई एक । २—कमाई करो ।

झूठा तन साचा करि मान्यौ ज्यौं सुपना रैनाई ॥१॥
जो दीसै सो सगल बिनासै ज्यौं बादर की छाई ॥
जन नानक जग जान्यो मिथिया रहियो राम सरनाई ॥२॥

[सूझ-बूझ] **गौड़ी महला १ ॥**

गुरपरसादी बूझि ले तौ होय निबेरा ॥
घरि घरि नामु निरंजनां सो ठाकुरु मेरा ॥१॥
बिनु गुर सबद न छूटियै देखहु वीचारा ॥
जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधियारा ॥१॥ रहाउ ॥
अंधे १ अकली बाहरे क्या तिन स्यौं कहियै ॥
२ बिनु गुर पंथ न सूझई कितबिधि निरबहियै ॥२॥
खोटे कौ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥
अंधे का नाँउ पारखू कली काल ३ विडाणै ॥३॥
सूते कौ जागतु कहै जागत कौ सूता ॥
जीवत कौ मूआ कहै मूए नहीं रोता ॥४॥
आवत कौ जाता कहै जाते कौ आया ॥
४ परकी कौ अपुनी कहै अपुने नहीं ५ भाया ॥५॥
मीठे कौ कौड़ा कहै कड़ूए को मीठा ॥
राते की निंदा करहिँ ऐसा कलि महिँ डीठा ॥६॥
चेरी की सेवा करहिँ ठाकुर नहीं दीसै ॥
पोखर नीरु विरोलियै माखनु नहीं ६ रीसै ॥७॥

१—बुद्धि से हीन। २—जब गुरुके बिना ठीक मार्ग ही नहीं सूझ सकता, तो फिर मार्ग तय करना और मनज़िलपर पहुँचना किस प्रकार हो सकता है ? ३—इस दम्भ-भरे कलि-काल में। ४—पराई वस्तु को। ५—अपनों को नहीं जाना। ६—नहीं प्राप्त हो सकता।

इसु पद जो अरथाय लेय सो गुरू हमारा ॥
नानक चीनै आपको सो अपर अपारा ॥८॥
सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाया ॥
गुर-किरपा ते बूझियै सभु ब्रहमु समाया ॥६॥

राग गौड़ी बैरागणि महल्ला ३ ॥

(विमुख और गुरुमुख)

सतिगुर ते जो मुँह फेरें ते वेमुखि बुरे दिसंन ॥
अनदिनु बधे मारियन फिरि[१]वेला ना लहंन ॥१॥
हरि हरि राखहु किरपा धारि ॥
सतसंगति मेलाये प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥१रहाउ॥
से भगत हरि भाँवदे जो गुरुमुखि भाय चलंनि ॥
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥२॥
जिसदा पिंडु पराण है तिसकी सिरिकार ॥
उह क्यों मनहुँ विसारियै हरि रखियै हिरदै धारि ॥३॥
नामि मिलियै पति पाईयै नामि मंनियै सुखु होय ॥
सतिगुर ते नामु पाईयै करमि मिलै प्रभु सोय ॥४॥
सतिगुर ते जो मुँह फेरें ओय भ्रमदे ना टिकंनि ॥
धरति असमानु न झलई विचि विसटा पये पचंनि ॥५॥
इहु जगु भरमि भुलाईया मोह ठगौली पाय ॥
जिनां सतिगुरु भेटिया तिन [२] नेड़ि न भिटै माय ॥६॥
सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हौंमैं मैलु गँवाय ॥
सबदि रते से निरमले चलहिँ सतिगुर भाय ॥७॥

१—ऐसा सुन्दर और लाभदायक अवसर फिर नहीं पा सकेंगे।
२—माया उनके निकट नहीं फटक सकती।

हरि प्रभ दाता एकु तूँ तूँ बखसि मिलाय ॥
जनु नानकु सरणागती ज्यों भावै तिवैं छडाय ॥८॥

[गुरुमहिमा] **गौड़ी महला ५ ॥**

गुरकै बचनि मोहि परमगति पाई, गुरि पूरे मेरो पैज रखाई ॥१॥
गुरकै बचनि धियायौ मोहि नाउँ, गुर परसादि मोहि मिलिया थाउँ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरकैबचनि सुणि रसनि वखाणी,गुर किरपा ते अंमृत मेरी। बाणी ॥२॥
गुरकै बचनि मिटिया मेरा आपु,गुरकी दया ते मेरा वड परतापु।३।
गुरकै बचनि मिटिया मेरा भरमु, गुरकै बचनि पेखियो सभु ब्रहमु ४
गुरुकै बचनि कीनो राजु जोगु, गुरकै संगि तरिया सभु लोगु ।५।
गुरकै बचनि मेरे कारज सिद्धि, गुरकै बचनि पाया नाउँ निद्धि।६।
जिनि जिनि कीनी मेरे गुरकी आसा, तिसकी कटियै जम की फासा ॥७॥
गरकै बचनि जागिया मेरा करमु, नानक गुरु भेटिया पारब्रहमु।८।

[गुरुमहिमा] **गौड़ी महला ५ ॥**

तिसु गुर कौ सिमरऊँ सासि सासि, गुर मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥ रहाउ ॥
गुर का दरसनु देखि देखि जीवां, गुर के चरण धोय धोय पीवां ।१।
गुर की रेणु नित मजॅनु करऊँ, जनम जनम की हौं मैं मलु हरऊँ।२।
तिसु गुर कौ भूलावऊँ पाखा, महा अगनि ते हाथ दे राखा।३।
तिसु गुर के गृह ढोवऊँ पाणी,जिसु गुर ते अकल गति जाणी।४।
तिसु गुर के गृह पीसऊँ नीत, जिसु प्रसादि वैरी सभ मीत ।५।

जिनि गुरि मोकौ दीना जीउ, आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ।६।
आपे लायौ अपना पियारु, सदा सदा तिसु गुर कौ करीं
नमसकारु ।।७।।
कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा, कहु नानक मेरा गुरु समराथा ।८।

[नाम] **गौड़ी महल्ला ५ ॥**

मिलि मेरे गोबिंद अपना नाम देहु, नाम बिना धृग धृग असनेहु ॥
॥१॥ रहाउ ॥
नाम बिना जो पहिरै खाय, ज्यौं कूकर जूठन महिं पाय ॥१॥
नाम बिना जेता बियोहारु, ज्यौं मिरतक मिथिया सींगारु। ।२॥
नाम बिसारे करे रस भोग, सुख सुपनै नहीं तन महिं रोग ॥३॥
नाम तियागि करै अन काज, बिनसि जायँ झूठे सभि पाज ॥४॥
नाम संगि मनि प्रीति न लावै, कोटि करम करतो नरकि जावै ॥५॥
हरिका नामु जिनि मनि न आराधा, चोरकी नियाईं जमपुरि बाधा६
लाख अडंबर बहुतु बिसथारा, नाम बिना झूठे पासारा ॥७॥
हरि का नामु सोई जनु लेय, करि किरपा नानक जिसु देय ॥८॥

गौड़ी सुखमनी महल्ला ५ ॥

[विनय] (सलोकु)

दीन दरद दुखभंजना घटि घटि नाथ अनाथ ।
सरणि तुम्हारी आइयो नानक के प्रभ साथ ॥२॥

[नाम महिमा] **॥ असटपदी २ ॥**

जहँ मात पिता सुत मीत न भाई, मन ऊहाँ नामु तेरै संगि सहाई ॥
जहँ महा भयान दूत जम दलै, तहँ केवल नामु संगि तेरै चलै ॥
जहँ मुसकलु होवै अति भारी, हरि को नामु खिन माहिं उद्धारी ॥

अनिक पुनह चरन करत नहीं तरै,हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे, नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥
सगल सृसटि को राजा दुखीआ,हरिका नामु जपत होय सुखीआ॥
लाख करोरी बंधनु परै, हरि का नामु जपत निसतरै ॥
अनिक माया रंग तिखु न बुझावै, हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारग इहु जात इकेला, तहँ हरिनाम संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धियाईयै,नानक गुरमुखि परमगति पाईयै ।२।

[मायाधारी] ॥ असटपदी ४ ॥

रतनु तियागि कौडी संगि रचै,साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै,जो होवनु सो दूरि परानै ॥
छोडि जाय तिसका स्रमु करै,संगि सहाई तिसु परहरै ॥
चंदन लेपु उतारै धोय,गरधब प्रीति भसम संगि होय ॥
अंधकूप महिं पतित बिकराल,नानक काढि लेहु प्रभ दयाल ॥१॥

[उपदेश] ॥ असटपदी ५ ॥

अगनत साहु अपनी दे रासि,खात पीत बरतै अनंद उल्लासि ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेय, अगियानी मनि रोसु करेय ॥
अपनी परतीति आप ही खोवै,बहुरि उसका बिसवासु न होवै ॥
जिसकी बसतु तिसु आगै राखै,प्रभकी आगिया मानै माथै ॥
उसते चौगुन करै निहालु,नानक साहिबु सदा दयालु ॥२॥

अनिक भांति माया के हेत, सरपर होवत जानु अनेत ॥
बिरख की छाया स्यों रंगु लावै, उह बिनसै उहु मनि पछतावै ॥
जो दीसै सो चालनहारु, लपटि रहयो तहँ अंध अंधारु ॥

बटाऊ स्यों जो लावै नेह, ताकौ हाथि न आवै केह ।।
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई,करि किरपा नानक आपि लये लाई ।।३।।

मिथिया तनु धनु कुटंबु सबाया,मिथिया हौंमें ममता माया ।।
मिथिया राज जोबन धन माल,मिथिया काम क्रोध बिकराल ।।
मिथिया रथ हसती असव बसत्रा,मिथिया रंग संगि माया पेखि हसता ।।
मिथिया ध्रोह मोह अभिमानु,मिथिया आपस ऊपरि करत गुमानु ।
असथिरु भगति साधकी सरन,नानक जपि जपि जीवै हरिके चरन।

रहत अवर कछु अवर कमावत,मनि नहीं प्रीति मुखहुँ गंढ लावत ।
जाननहार प्रभू परबीन , बाहरि भेख न काहू भीन ।।
अवर उपदेसै आपि न करै , आवत जावत जनमै मरै ।।
जिसकै अंतरि बसै निरंकारु , तिसकी सीख तरै संसारु ।।
जो तुम भाने तिनि प्रभु जाता ,नानक उन जन चरन पराता ।।७।।

[विनय] **सलोकु ।।**

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाय अहंमेव ।।
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ।।१।।

[साध-महिमा] **।। असटपदी ७ ।।**

साधकै संगि मुख ऊजल होत , साधसंगि मलु सगली खोत ।।
साधकै संगि मिटै अभिमानु , साधकै संगि प्रगटै सुगियानु ।।
साधकै संगि बुझै प्रभु नेरा , साधसंगि सभु होत निबेरा ।।
साधकै संगि पाये नाम रतनु , साधकै संगि एक ऊपरि जतनु ।।

साधकी महिमा बरनै कौनु प्रानी, नानक साध की सोभा प्रभ माहिँ समानी ॥१॥

[ग़रीबी] सलोक ॥

सुखी बसै मसकीनिया आपु निवारि तले ॥
बड़े बड़े अहंकारिया नानक गरबि गले ॥१॥

[अभिमान] ॥ असटपदी १२ ॥

जिसकै अंतरि राज अभिमानु, सो नरक पाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मैं जोबनवंतु, सो होवत बिसटा का जंतु ॥
आपस कौ करमवंतु कहावै, जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु, सो मूरखु अंधा अगियानु ॥
करि किरपा जिसकै हिरदै गरीबी बसावै, नानक ईहाँ मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥

जब लगु जानै मुझ ते कछु होय, तब इसकौ सुखु नाहीं कोय ॥
जब इहु जानै मैं किछु करता, तबलगु गरभ जोनि महिं फिरता ॥
जब धारै कोऊ बैरी मीतु, तबलगु निहचलु नाहीं चीत ॥
जबलगु मोह मगन संगि माय, तबलगु धरमराय देय सजाय ॥
प्रभ-किरपा ते बंधन तूटै, गुरप्रसादि नानक हौं छूटै ॥

[संत महिमा] सलोक ॥

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उद्धरनहारु ।
संतकी निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

॥ असटपदी १३ ॥

संतकै दूखनि आरजा घटै, संतकै दूखनि जम ते नहीं छुटै ॥

संतकै दूखनि सुख सभु जाय,संतकै दूखनि नरक महिं पाये ॥
संतकै दूखनि मति होय मलीन,संतकै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संतके हते को रखै न कोय, संतकै दूखनि थान भ्रसटु होय ॥
संत कृपाल कृपा जे करै, नानक संत संगि निंदकु भी तरै॥१॥

संतकै दूखनि ते मुख भवै, संतकै दूखनि काग ज्यों लवै ॥
संतनकै दूखनि सरप जोनि पाय, संतकै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाय ॥
संतनकै दूखनि त्रिसना महिं जलै,संतकै दूखनि सभु को छलै ॥
संतकै दूखनि तेजु सभु जाय,संतकै दूखनि नीचु नीचाय ॥
संत दोखी का थाँउ को नाहिं,नानक संत भावै तां ओय भी गति पाहिं ॥२॥

संतका निंदकु महा अतताई,संतका निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥
संतका निंदकु महा हतियारा, संतका निंदकु परमेसुरि मारा ॥
संतका निंदकु राजते हीनु, संतका निंदकु दुखिया अरु दीनु ॥
संतके निंदक को सरब रोग, संतके निंदक को सदा बिजोग ॥
संतकी निंदा दोख महिं दोखु,नानक संत भावै तां उसका भी होय मोखु ॥३॥

संतका दोखी सदा अपवितु, संतका दोखी किसै का नहीं मित्तु॥
संतके दोखी को डानु लागै, संतके दोखी को सभ तियागै ॥
संतका दोखी महा अंहकारी, संतका दोखी सदा बिकारी ॥
संतका दोखी जनमै मरै, संतकी दूखना सुख ते टरै ॥
संतके दोखी को नाहीं ठाँउ, नानक संत भावै तां लये मिलाय ॥४॥

संतका दोखी अधबीच ते टूटै,संतका दोखी कितै काजि न पहूँचै ॥
संतके दोखी कौ उदियान भ्रमाईयै, संतका दोखी ऊझड़ि पाईयै ॥
संतका दोखी अंतर ते थोथा, ज्यौं सास बिना मिरतक की लोथा ॥
संतके दोखी की जड़ किछु नाहिं, आपन बीजि आपे ही खाहिं ॥
संतके दोखी कौ अवर न राखनहार, नानक संत भावै तां लये उबारि ॥५॥

संतका दोखी इयौं बिललाये,ज्यौं जल बिहून मछुली तड़फड़ाय ॥
संतका दोखी भूखा नहीं राजै, ज्यौं पावकु ईंधनि नहीं ध्रापै ॥
संतका दोखी छुटै इकेला, ज्यौं बुवाड़ तिल खेत माहि दुहेला ॥
संतका दोखी धरम ते रहत, संतका दोखी सद मिथिया कहत ॥
किरतु निंदक का धुरि ही पैया, नानक जो तिसु भावै सोई थीआ ॥६॥

[उपदेश] ॥ असटपदी १५ ॥

टूटी गांढनहार गोपाल, सरब जीआं आपे प्रतिपाल ॥
सगलकी चिंता जिसु मन माहिं, तिस ते बिरथा कोई नाहिं ॥
रे मन मेरे सदा हरि जापि, अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
आपन कीया कछू न होय, जे सौ प्रानी लोचै कोय ॥
तिसु बिनु नाहीं तेरै किछु काम, गति नानक जपि एक हरिनाम ॥१॥

मन मूरख काहे बिललाईयै, पुरब लिखे का लिखिया पाईयै ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु, अवर तियागि तू तिसहिं चितारु ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु, भूला काहे फिरहि अजान ॥

कौन बसत आई ते रै स ंगि, लपटि रहियो रसि लोभी पतंग ॥
राम नाम जपि हिरदे माहिं, नानक पति सेती घरि जाहिं ॥४॥

जिसु वखर कौ लैनि तू आया, रामनामु संतन घरि पाया ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि, रामनामु हिरदे महिं तोलि ॥
लादि खेप संतह संगि चालु, अवर तियागि बिखिया जंजाल ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोय, मुख ऊजल हर दरगह सोय ॥
इहु वापारु विरला वापारै, नानक ताकै सद बलिहारै ॥५॥

चरन साध के धोय धोय पियो, अरपि साध कौ अपना जियो ॥
साधकी धूरि करहु इसनानु, साध ऊपरि जाईयै कुरबानु ॥
साध-सेवा वडभागी पाईयै, साध-संगि हरिकीरतनु गाईयै ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै, हरिगुन गाय अंमृतु-रस चाखै ॥
ओट गही संतह दरि आया, सरब सूख नानक तेहि पाया ॥६॥

[सतगुरु] सलोक ॥

सतिपुरुखु जिनि जानिया, सतिगुरु तिसका नाउँ ॥
तिसकै संगि सिखु ऊधरै नानक हरिगुन गाउँ ॥१॥

॥ असटपदी १८ ॥

सतिगुरु सिखकी करै प्रतिपाल, सेवक कौ गुरु सदा दयाल ॥
सिखकी गुर दुरमति मलु हिरै, गुरबचनी हरिनामु उचरै ॥
सतिगुरु सिखके बंधन काटै, गुरका सिखु बिकार ते हाटै ॥
सतिगुरु सिख कौ नाम-धनु देय, गुरका सिख वडभागी हे ॥
सतिगुरु सिखका हलतु-पलतु सँवारै, नानक सतिगुर सिख कौ जीअ नालि समारै ॥१॥

[सेवक]

गुरकै गृह सेवकु जो रहै, गुरकी आगिया मन महिं सहै ॥
आपस कौ करि कछु न जनावै, हरि हरि नामु रिदै सद धियावै ॥
मनु बेचै सतिगुरु कै पासि, तिसु सेवक के कारज रासि ॥
सेवा करत होय निहकामी, तिसकौ होत परापति सुआमी ॥
अपनी कृपा जिसु आपि करेय, नानक सो सेवक गुरकी मति लेय ॥२॥

[उपदेश] **सलोकु ॥**

साथि न चालै बिनु भजन बिखिया सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥

॥ असटपदी १९ ॥

संत जनां मिलि करहु बीचारु, एक सिमिर नाम आधारु ॥
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु, चरनकमल रिद महिं उरधारहु ॥
करन-कारन सो प्रभु समरथु, दृढ़ करि गहहु नामु हरि वथु॥
इहु धनु संचहु होवहु भागवंत, सन्त जनां का निरमल मंत ॥
एक आस राखहु मन माहिं, सरब रोग नानक मिटि जाहिं।१।

संगि न चालसि तेरै धना, तूँ क्या लपटावहिं मूरख मना ॥
सुत मीत कुटंब अरु १ बनिता, इन ते कहहु तुम कवन सनाथा।
राज रंग माया बिसथार, इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
२ असु हसती रथ असवारी, झूठा ३ डंफु झूठु पासारी ॥
जिनि दीये तिस बुझै न बिगाना,नामु बिसारि नानक पछुताना।५।

गुरकी मति तूँ लेह इआने, भगति बिना बहु डूबे सियाने ॥
हरिकी भगति करहु मन मीत, निरमल होय तुमारौ चीत ॥

१-स्त्री । २-घोड़े । ३-आडम्बर ।

चरनकमल राखहु मन माहिं, जनम जनम के १किलबिख जाहिं ॥
आपि जपहु अवरां नाम जपावहु, सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सारभूत सति हरिको नाउँ, सहजि सुभाय नानक गुन गाउँ ॥६॥

[विनय] सलोक ॥

फिरत फिरत प्रभु आईया, परिया तौ सरनाय ॥
नानक की प्रभ बेनती, अपनी भगती लाय ॥१॥

[सेवक] ॥ असटपदी २० ॥

सेवक की २ मनसा पूरी भई, सतिगुर ते निरमल मति लई ॥
जन कौ प्रभु होयौ दयालु, सेवकु कीनो सदा निहालु ॥
बंधन काटि मुकति जनु भॅया, जनम मरन दूखु भ्रमु ग ॅया ॥
इ ॅछ ३ पु ंनी सरधा सभ पूरी, रवि रहिया सद संगि हजूरी ॥
जिसका सा तिनि लिया मिलाय, नानक भगती नामि समाय॥३॥

[सेवक] ॥ असटपदी २२ ॥

जनु लागा हरि एकै नाय, तिसकी आस न बिरथी जाय ॥
सेवक कौ सेवा बनि आई, हुकमु बूझि परम-पदु पाई ॥
इसते ऊपरि नहीं बीचारु, जाकै मनि वसिया निर ंकारु ॥
बंधन तोरि भये निरवैर, अनदिनु पूजहिं गुरके पैर ॥
इह लोक सुखिये परलोक सुहेले, नानक हरि प्रभि आपहिं मेले॥४॥

तिस ते दूरि कहाँ को जाय, उबरै राखनहारु धियाय ॥
निरभौ जपै सगल भौ मिटै, प्रभ किरपा ते प्रानी छुटै ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाहीं दूख, नामु जपत मनि होवत सूख ॥

१—मलिन संस्कार। २—मनोरथ। ३—पूर्ण हो गईं।

चिंता जाय मिटै अहंकारु,तिसु जन कौ कोय न पहुँचनहारु ॥
सिर ऊपरि ठाढ़ा गुरु सूरा,नानक ताकै कारज पूरा ॥७॥

[गुरु-कृपा] सलोकु ॥

गियान अंजनु गुरि दीया अगियान अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिया नानक मनि परगासु ॥१॥

॥ असटपदी २३ ॥

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा,नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहिं,अनिक रंग नाना द्रसटाहिं ॥
नौनिधि अंमृतु प्रभ का नामु,देही महिं इसका बिसरामु ॥
सुंन समाधि अनहत तँह नाद,कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥
तिनि देखिया जिसु आपि दिखाये, नानक तिसु जन सोझी पाये ॥१॥

[उपदेश] ॥ असटपदी २४ ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु, पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद,मन अंतर की उतरै चिंद ॥
आस अनित तियागहु तरंग,संत जनां की धूरि मन मंग ॥
आपु छोडि बेनती करहु,साध-संगि अगिन-सागरु तरहु ॥
हरि-धन के भरि लेहु भंडार, नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥

उत्तम सलोक साध के बचन,अमुलीक लाल एहि रतन ॥
सुनत कमावत होत उद्धार, आपि तरैं लोकह निसतार ॥
सफल जीवनु सफलु ता का संगु, जाकै मनि लागा हरि-रंगु ॥
जै जै सबदु अनाहदु वाजै, सुनि सुनि अनंद करै प्रभु गाजै ॥

प्रगटे गुपाल१ महांत कै माथै, नानक उद्धरे तिनकै साथै ॥३॥

इहु निधानु जपै मनि कोय, सभ जगु महिं ताकी गति होय ॥
गुण गोबिंद नाम-धुनि बाणी, सिमृति सासत्र बेद बखाणी ॥
सगल मतांत केवल हरिनाम, गोबिंद भगत कै मनि बिसराम ॥
कोटि अपराध साधसंगि मिटै, संत-कृपा ते जम ते छुटै ॥
जाकै मसतकि करम प्रभि पाये, साध-सरणि नानक ते आये ॥७॥

गौड़ी की वार महल्ला ३ ॥

(मायाधारी और गुरुमुख)

मायाधारी अति अंना बोला, सबदु न सुणई बहु २ रौल घचौला।
गुरमुखि जापै सबदि लिव लाय, हरिनामु सुणि मंने हरिनाम समाय ॥
जो तिसु भावै सु करे कराया, नानक वजदा जंतु वजाया ॥२॥

॥ गौड़ी की वार सलोक महल्ला ५ ॥

(धन्य-जीवन)

जिनां सासि गिरासि न विसरै हरिनामां मन मंतु ॥
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संत ॥१॥

१--महान्-आत्मा अथवा पुण्यात्मा। २--माया-ममता की, झूठी खटपट में पड़कर।

राग आसा

आसा महल्ला १ (चौपदे घरु २)

(नाम-महिमा)

आखां जीवां विसरै मरि जाऊँ, आखणि औखा साचा नाउँ ॥
साचे नाम की लागै भूख, तितु भूखै खाय चलियहिं दूख ॥१॥
सो क्यों विसरै मेरी माय, साचा साहिबु साचै नाय ॥१॥ रहाउ ॥
साचे नाम की तिलु वडियाई, आखि थकै कीमति नहीं पाई ॥
जे सभि मिलिकै आखण पाहिं, वडा न होवै घाटि न जाय ॥२॥
ना उहु मरै न होवै सोगु, देंदा रहै न चूकै भोगु ॥
गुणु एहो होरु नाहीं कोय, ना को होआ ना को होय ॥३॥
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति, जिनि दिनु करिकै कीती राति ॥
खसम बिसारहिं ते कमजाति, नानक नाँवै बाझु सनाति ॥४॥

[उपदेश] **आसा महल्ला ५ ॥**

जीवत दीसै तिसु सरपर मरणां, मुआ होवै तिसु निहचलु रहणां ॥१॥
जीवत मुए मुए से जीवे ॥ हरि हरि नामु १ अवखधु मुखि पाया गुरपरसादी रसु अंमृतु पीवे ॥१॥ रहाउ ॥
२ काची मटुकी बिनसि बिनासा, जिसु छूटै ३ त्रिकुटी तिसु निजघरि वासा ॥२॥

१—दवाई। २—शरीर रूपी कच्ची मटकी अंत में अवश्य बिनस जाने वाली है। ३—अंतरीव अभ्यास के एक स्थान का नाम है। भाव यह कि जिसने अभ्यासकी कमाई करके त्रिकुटी स्थान को माया के ग़लबे से आज़ाद करा लिया है, उसका वासा निज-घर में सहज ही हो जाता है।

ऊँचा चढ़ै सो पवै १ पैयाला, धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥३॥
भ्रमत फिरे तिन किछू न पाया, से असथिर जिन गुर सबदु कमाया ॥४॥
जीउ पिंडु सभु हरि का माल, नानक गुर मिलि भये निहाल ॥५॥

[वैराग्य] **आसा महल्ला ५ ॥**

जैसे किरसाणु बोवै किरसानी, काची पाकी २ बाढि परानी ॥१॥
जो जनमै सो जानहु मूआ, गोविंद भगत असथिर है थीआ ॥१॥ रहाउ ॥
दिन ते सरपर पौसी राति, रैणि गई फिरि होय परभाति ॥२॥
माया मोए सोय रहे अभागे, गुरप्रसादि को विरला जागे ॥३॥
कहु नानक गुण गाइअहिं नीत, मुख ऊजल होय निरमल चीत॥४॥

[उपदेश] **आसा महल्ला ५ ॥**

कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥
होय निमानी सेव कमावहिं तां प्रीतम होवहिं मनि पियारी ॥१॥
सुणि सुंदर साधू बचन उद्धारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुखु पावहिं तूँ ३ सुखमनि नारी ॥१॥ रहाउ ॥
चरण पखारि करौ गुर सेवा आतम सुधु बिखु ४ तियास निवारी ॥
दासन की होय दासि दासरी तां पावहिं सोभा हरि-दुआरी ॥२॥

१—नीचे :–भाव यह कि जो अभिमान करेगा, वह मुखके बल नीचे गिरता है ।
२—खेतीका फ़सल पहिले कच्चा होता है; फिर पकता है और काटा जाता है । ३—मनुष्यके शरीरके अंदर सुखमना नाड़ी की तरफ़ इशारा किया गया है, जिसका मुख रूहानी अभ्यास द्वारा खुल जाने से अंतरमें सुखकी प्राप्ति होती है । ४—विषय-विकारों की तृष्णा को मिटाकर ।

इही अचार इही बियौहारा आगिया मानि भगति होय तुमारी ॥
जो इहु मंत्र कमावै नानक सो भौजलु पारि उतारी ॥३॥

[चेतावनी] **आसा महल्ला ५ ॥**

भई परापति मानुख १देहुरीया ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीया ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साध-संगति भजु केवल नाम ॥१॥
२सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
जनमु बृथा जात रंगि माया कै ॥१रहाउ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाया ॥
सेवा साध न जानिया हरिराया ॥
कहु नानक हम नीच करंमा ॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥

[विनय] **आसा महल्ला ५ ॥**

तुझ बिन अवरु नाहीं मैं दूजा तूँ मेरे मन माहीं ॥
तूँ साजन संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराहीं ॥१॥
तुमरा ओट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाहीं तूँ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥
राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनिसागर ३ विकराला ॥
नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गोपाला ॥२॥

१–देही या शरीर । २–जतन । ३–भयानक ।

आसा महल्ला ५ (घरु ३)

(चेतावनी)

राज मिलक जोबन गृह सोभा रूपवंतु जोआनी ॥
बहुत दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख १बैआनी ॥
आगै दरगहि कामि न आवैं छोडि चलै अभिमानी ॥१॥
काहे एक बिना चित्तु लाईयै ॥
ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि ध्याईयै ॥१ रहाउ॥
महाबचित्र सुंदर आखाड़े रण महिं जिते २पवाड़े ॥
हौं मारौं हौं बंधौं छोडऊँ मुखते एव ३ बबाड़े ॥
आया हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिया एक दिहाड़े ॥२॥
करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥
नाँगा आया नाँगो जासी ज्यौं हसती खाकु छानै ॥३॥
संत सॅजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥
मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गँवारा ॥
गुर मिलि नानक नामु धियाया साचि नामि निसतारा ॥४॥

[सच्ची निरति] आसा महल्ला ५ ॥

उदम करत होवै मन निरमल नाचै आपु निवारे ॥
पंच जनां ले वसगति राखै मन महिं एकंकारे ॥१॥
तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ रबाबु पखावज
ताल घुंघरू अनहद सबद वजावै ॥१॥ रहाउ ॥
प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछे अवर रीझावै ॥

१—कबज़े में होवैं। २—फ़ौजें। ३—अहंकार के वशमें होकर लाफ़ मारता फिरता है।

रामनाम जपु हिरदै जापै मुखते सगल सुनावै ॥२॥
कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥
मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥३॥
जो जो सुनै पेखै लाय सरधा ता का जनम मरण दुखु भागै ॥
ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरुमुखि जागै ॥४॥

[सुमिरण] आसा महल्ला ५ ॥

ऊठत बैठत सोवत धियाईयै, मारगि चलत हरे हरि गाईयै ॥१॥
स्रवन सुनीजै अंमृत कथा ॥ जासु सुनी मनि होय अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥
कारजि कामि बाट घाट जपीजै, गुरप्रसादि हरि अंमृत पीजै ॥२॥
दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईयै, सो जनु जमकी वाट न पाईयै ।३।
आठ पहर जिसु विसरहि नाहीं, गति होवै नानक तिसु लगि पाईं ॥४॥

[आचार] आसा महल्ला ३ ॥

संताँ की होय दासरी एहु अचारा सिखु री ॥
सगल गुणाँ गुण ऊतमो भरता दूरि न १ पिखु री ॥१॥
इहु मनु सुंदरि आपणा हरिनामि मजीठै रंगि री ॥
तियागि सियाणप चातुरी तूं जाणु गुपालहिं संगि री ॥१ रहाउ ॥
भरता कहै सो मानियै एहु सींगार बणाय री ॥
दूजा भाव विसारियै एहु २ तंबोला खाय री ॥२॥
गुरका सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाय री ॥
आठ पहर करि जोड़ि रहु तौ भेंटै हरिराय री ॥३॥

१—देख । २—पान ।

तिसही चजु सींगारु सभु साई रूपि अपार री ॥
साई सुहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥

आसा महल्ला ५ (घरु १०)

(चेतावनी)

जिसनों तूँ असथिरु करि मानहिं ते १ पाहुन दो २ दाहा ॥
पुत्र ३ कलत्र गृह सगल समग्री सभ मिथिया ४ असनाहा ॥१॥
रे मन क्या करहिं है हाहा ॥
दृसटि देख जैसे हरि ५ चंदौरी इक राम भजनु लै लाहा ॥१ रहाउ ॥
जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोय चारि ६ भोराहा ॥
भीति ऊपरे केतक धाईयै अंति ७ ओर को आहा ॥२॥
जैसे अंभ कुंड करि राखियो परत ८ सिंधु गल जाहा ॥
आवगि आगिया पारब्रहम की उठि जासी ९ मुहत चसाहा ॥३॥
रे मन लेखै चालहिं लेखै बैसहिं लेखै लैंदा साहा ॥
सदा कीरति करि नानक हरिकी १० ऊबरे सतिगुर चरण ११ ओटाहा ॥४॥

[लोभ] आसा महल्ला ९ ॥

बिरथा कहउँ कौन स्यों मनकी ॥
लोभि ग्रसियो दसहूँ दिस धावत आसा लागियो धनकी ॥१ रहाउ॥
सुखकै हेत बहुतु दुख पावतु सेव करत जन-जनकी ॥
दुआरहिं दुआर सुआन ज्यों डोलत नहँ सुध राम-भजनकी ।१।

१—मेहमान । २—दो दिनों के । ३—स्त्री । ४—प्यार । ५—जैसे चकोर चंद्रमा को प्यारसे देखता है । ६—फट जाते हैं । ७—सिरा । ८—नमक । ९—घड़ी- पल में । १०—बचेगा । ११—ओट में आकर ।

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरिजसु क्यों नहीं गावतु कुमति बिनासै तनकी ॥२॥

[बंधन] आसा महल्ला १ (इकतुकी)

गुरु सेवै सो ठाकुर जानै, दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥१॥
राम जपहु मेरी सखी सखैनी, सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥१॥ रहाउ ॥
बंधन मात पिता संसारि, बंधन सुत कन्या अरु नारि ॥२॥
बंधन करम धरम हौं कीया, बंधनु पुत्तु कलतु मनि बीया ॥३॥
बंधन किरखी करहिं किरसान, हौ मैं १ डंनु सहै राजा मँगै दान॥४॥
बंधन सौदा अणवीचारी, २ तिपति नाहीं माया मोह पसारी ॥५॥
बंधन साह संचहिं धनु जाय, बिनु हरिभगति न पवई थायँ ॥६॥
बंधन बेदु ३ बादु अहंकार, बंधनि बिनसै मोह विकार ॥७॥
नानक राम-नाम सरणाई, सतिगुरि राख बंधु न पाई ॥८॥

[घट-मठ] आसा महल्ला ३ ॥

घरै अंदरि सभु ४ वथु है बाहरि किछु नाहीं ॥
गुरपरसादी पाईयै अंतरि ५ कपट खुलाहीं ॥१॥
सतिगुर ते हरि पाईयै भाई ॥
अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीया दिखाई ॥१॥रहाउ॥
हरिका गाहकु होवै सो लये पाये रतन वीचारा ॥
अंदरि खोलै दिबदिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥

१—दण्ड । २—माया-मोह के पसारे में किसी को भी तृप्ति नहीं मिल सकती । ३—वाद-विवाद करना । ४—सच्ची वस्तु । ५—अंतरके द्वार या बज्र-कपाट ।

अंदरि महल अनेक हैं जीऊ करे वसेरा ॥
मनचिंदिया फलु पाइसी फिरि होय न फेरा ॥३॥
पारखियाँ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥
नामु पदारथु अमुल सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥
बाहरु भाले सु क्या लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥
भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गँवाई ॥५॥
घर दर छोडै आपणा पर घर झूठा जाई ॥
चोरैं वाँगू पकड़ियै बिनु नाँवै चोटां खाई ॥६॥
जिनी घर जाता आपणा से सुखिये भाई ॥
अंतरि ब्रहम पछाणिया गुरकी वडियाई ॥७॥
आपे दानु करे किस आखियै आपे देय बुझाई ॥
नानक नामु धियाय तूँ दरि सच्चै सोभा पाई ॥८॥

[उपदेश] **आसा महल्ला ३ ॥**

सतिगुर ते गुण ऊपजै जां प्रभु मेलै सोय ॥
सहजे नामु धियाईयै गियानु परगटु होय ॥१॥
ऐ मन मत जाणहिं हरि दूर है सदा वेखु हदूरि ॥
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिया भरपूरि ॥१ रहाउ ॥
गुरमुखि आपु पछाणिया तिन्हीं इक मन धियाइया ॥
सदा रवहिं पिरु आपणा सच्चे नामि सुखु पाइया ॥२॥
ऐ मन तेरा को नहीं करि वेखु सबदि वीचार ॥
हरि सरणाई भजि पौ पायहिं मोखु दुआर ॥३॥
सबदि सुणियै सबदि बुझियै सचि रहै लिव लाय ॥
सबदे हौंमैं मारियै सच्चै महलि सुखु पाय ॥४॥

इस जग महिं सोभा नाम का बिनु नांवै सोभ न होय ॥
इह माया का सोभा चारि दिहाड़े जांदी बिलमु न होय ॥५॥
जिनी नामु विसारिया से मुए मरि जाहिं ॥
हरिरस सादु न आइयो बिसटा माहिं समाहिं ॥६॥
इक आपे बखसि मिलाईयन अनदिनु नामे लाय ॥
सच्चु कमावहिं सच्चि रहहिं सच्चे सच्चि समाहिं ॥७॥
बिनु सबदै सुणियै न देखियै जग बोला अंना भरमाय ॥
बिनु नांवै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाय ॥८॥
जिन बाणी स्यों चित्तु लाईया से जन निरमल परवाणु ॥
नानक नाम तिनाँ कदे न वीसरै सो दरि सच्चे जाणु ॥९॥

[सच्ची रहिनी] **राग आसा महल्ला १ ॥**

अनहदो अनहदु वाजै रुण-झुणकारे राम ॥
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पियारे राम ॥
अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाया ॥
आदिपुरख अपरंपरु पियारा सतिगुरि अलख लखाया ॥
१ आसणि बैसणि थिरु नाराइण तित मनु राता वीचारे ॥
नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण-झुणकारे ॥१॥
तित अगम तित अगमपुरे कहु कितबिधि जाईयै राम ॥
सचु संजमो सारि गुणां गुर सबदु कमाईयै राम ॥
सचु सबदु कमाईयै निजघर जाईयै पाईयै गुणीनिधाना ॥
तित साखा मूलु पत्तु नहीं डाली सिर सभनां परधाना ॥
जप तप करि करि संजम थाकी हठि २ निग्रह नहीं पाईयै ॥

१—आसणि-बैसणि अर्थात् उठक-बैठक या रहनी-सहनी। २—अर्थात् हठयोग-क्रिया।

नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईयै ॥२॥
गुरु सागरो १ रतनागरु तित रतन घणेरे राम ॥
करि मॅजनो २ सपतसरे मन निरमल मेरे राम ॥
निरमल जलि नाये जां प्रभ भाये पंच मिले वीचारे ॥
कामु करोधु कपटु बिखिया तजि सचु नामु उरधारे ॥
हौंमैं लोभ लहरि लब थाके पाये दीनदयाला ॥
नानक गुर समानि तीरथु नहीं कोई साचे गुर गोपाला ॥३॥
हौं बन बनो देखि रही तृण देखि सबाया राम ॥
त्रिभवणो तुझहिं कीया सभु जगतु सबाया राम ॥
तेरा सभु कीया तूँ थिरु थीश्रा तुधु समान को नाहीं ॥
तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किस सालाहीं ॥
अणमँगिया दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥
राम-नाम बिनु मुकति न होई नानक कहै वीचारा ॥४॥

राग आसा महल्ला ३ ॥

[उपदेश] (छंत घर ३)

साजन मेरे प्रीतमहु तुम ३ सह की भगति करेहो ॥
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥
भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पियारे भावए ॥
आपणा भाणा तुम करहु तां फिरि सह खुसी न आवए ॥
भगति भाव इहु मारगु ४ बिखड़ा गुरदुआरे को पावए ॥
कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरिभगती चित्त लावए ॥१॥

१—रत्नोंकी खान। २—सत्य, संतोष, दया, धर्म, धैर्य्य, वैराग्य और ज्ञान रूपी सात तीर्थ। ३—मालिक। ४—कठिन।

मेरे मन बैरागीया तूँ बैरागु करि किसु दिखावहिं ॥
हरि सोहिला तिन सद सदा जो हरिगुण गावहिं ॥
करि बैराग तूँ छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥
जलि थलि महियल एको सोई गुरुमुखि हुकमु पछाणए ॥
जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥२॥

जहँ जहँ मन तूँ १ धाँवदा तहँ तहँ हरि तेरै नाले ॥
मन सियाणप छोडियै गुरका सबदु समाले ॥
साथि तेरै सो सहु सदा है इक खिन हरिनामु समालहे ॥
जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परमपदु पावहे ॥
साचे नालि तेरा २ गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥
इयौं कहै नानकु जहँ मन तूँ धाँवदा तँह हरि तेरे सदा नाले ॥३॥

सतिगुरु मिलियै धावतु ३ थंमिया निजघरि वसिया आये ॥
नामु ४ विहाझे नामु लये नामि रहे समाय ॥
धावतु थंमिया सतिगुरु मिलियै दसवां द्वार पाया ॥
तिथै अंमृत भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंमि रहाया ॥
तहँ अनेक वाजे सदा अनहदु है सच्चे रहिया समाय ॥
इयौं कहै नानकु सतिगुरु मिलियै धावतु थंमिया निजघरि वसिया आये ॥४॥

१—दौड़ता है। २—सुरति जुड़ जावेगी। ३—अपने ठिकाने पर ठहर गया। ४—नामका ही सौदा खरीद करे।

मन तूं जोति सरूपु हैं अपना मूल पछाणु ॥
मन हरिजी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
मूल पछाणहिं तां सह जाणहिं मरण जीवण की सोझी होई ॥
गुरपरसादी एको जाणहिं तां दूजा भाव न होई ॥
मन साँति आई वॅजी वधाई ताँ होआ परवाणु ॥
इयौं कहै नानकु मन तूँ जोति सरूप हैं अपणा मूल पछाणु ।५।

मन तूँ १ गारबि २ अटिया गारबि लदिया जाहिं ॥
माया मोहणी मोहिया फिरि फिरि जूनी भवाहिं ॥
गारबि लागा जाहिं मुगध मन अंति गया पछुतावहे ॥
अहंकारु तिसना रोगु लागा बिरथा जनमु गँवावहे ॥
मनमुख मुगध चेतहिं नाहीं अगै गया पछुतावए ॥
इयौं कहै नानकु मन तूँ गारबि अटिया गारबि लदिया जावहे ।६।

मन तूँ मत माण करहिं जे हौं किछु जाणदा गुरमुखि निमाणां होहु ॥
अंतरि अगियानु हौं बुद्धि है सचि सबदि मलु खोहु ॥
होहु निमाणां सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥
आपणे अहंकारि जगत जलिया मत तूँ आपणा आपु गँवावहे ।
सतिगुर कै भाणै करहिं कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥
इयौं कहै नानकु आपु छडि सुख पावहिं मन निमाणां होय रहु ॥७॥

धंनु सुवेला जित मैं सतिगुरु मिलिया सो सहु चिति आइया ॥
महा अनंदु सहजु भया मनि तनि सुख पाइया ॥

१—अहंकार से । २--भरा हुआ है ।

सो सहु चित्ति आया मंनि वसाया अवगणि सभि विसारे ॥
जां तिस भाणा गुण परगट होये सतिगुर आपि सँवारे ॥
सो जन परवाणु होये जिनीं इक नामु दिढ़िया दुतिया भाव चुकाया।
इयौं कहै नानकु धंन सुवेला जित मैं सतिगुरु मिलिया सो सहु चित्ति आया ॥८॥

राग आसा की वार

[गुरु] (महल्ला २)

जे सौ चंदा ऊगवहि सूरज चढ़हिं हज़ार ॥
एते चानण हौंदियाँ गुर बिनु घोर अंधारु ॥२॥

[सतगुरु] महला १ (पौड़ी)

बिनु सतिगुर किनै न पाईयो बिनु सतिगुर किनै न पाया ॥
सतिगुर विचि आपु रखियोन करि परगटु आखि सुणाया ॥
सतिगुर मिलियै सदा मुकतु है जिनि विचहुँ मोहु चुकाया ॥
उत्तमु एहु बीचारु है जिनि सच्चै स्यौं चित्त लाया ॥
जगजीवन दाता पाया ॥ ६ ॥

[विद्या] सलोकु महला १ ॥

पढ़ि पढ़ि गॅडी लदियहिं पढ़ि पढ़ि भरियहिं साथ ॥
पढ़ि पढ़ि बेड़ी पाईयै पढ़ि पढ़ि गडियहिं खात ॥
पढ़ियहिं जेते बरस बरस पढ़ियहिं जेते मास ॥
पढ़ियै जेती आरजा पढ़ियहिं जेते सास ॥
नानक लेखै इक गॅल होर हौंमैं झखणा-झाख ॥१॥

[झूठ] **सलोक महला १ ॥**

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसारु ॥
कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसणहारु ॥
कूड़ सोइना कूड़ रुपा कूड़ पैनणहारु ॥
कूड़ काया कूड़ कपड़ कूड़ रूप अपारु ॥
कूड़ मीयाँ कूड़ बीबी खपि होये १खारु ॥
कूड़ कूड़ै नेहु लगा विसरिया करतारु ॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जग चालणहारु ॥
कूड़ मिठा कूड़ माखियों कूड़ डोबै २पूर ॥
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ ॥१॥

१—खुआर। २—झूठे नेह में लगकर पूरी तरह डूब गये।

राग गूजरी महल्ला ५ ॥

[मन-मति] (चौपदे घरु २)

किरियाचार करहिं खटु करमां इत राते संसारी ॥
अंतरि मैलु न उतरै हौंमैं बिनु गुर बाजी हारी ॥१॥
मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥
कोटि मॅधे को विरला सेवकु होर सगले बियोहारी ॥१ रहाउ ॥
सासत बेद सिमृति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥
बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥२॥
अठसठि मॅजनु करि इसनाना भ्रमि आये १ धर सारी ॥
अनिक सोच करहिं दिन राती बिनु सतिगुर अंधियारी ॥३॥
धावत धावत सभु जगु धायौ अब आये हरि द्वारी ॥
दुरमति मेटि बुद्धि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥४॥

[परिचय] गूजरी महल्ला ५ ॥

दिनु राती आराधहु पियारो निमख न कीजै ढीला ॥
संत सेवा करि भावनी लाईयै तियागि मान हाठीला ॥१॥
मोहन प्रान मान रांगीला ॥
बासि रहियौ हियरे कै संगे पेखि मोहियो मनु लीला ॥१रहाउ॥
जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहुँ २ जंगीला ॥
मिलबे की महिमा बरनि न साकौं नानक परै परीला ॥२॥

१--सारी पृथ्वी। २--मलिनता का ज़ंग।

राग गूजरी वार महला ५ ॥

[अनन्य] सलोक महला ५ ॥

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुरु नाउँ ॥
नेत्रीं सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुरु नाउँ ॥
सतिगुर सेती रत्तियाँ दरगह पाईये ठाउँ ॥
कहु नानक किरपा करे जिसनों एह वथु देय ॥
जग महिं ऊत्तम काढियाहिं विरले केई केय ॥१॥

[जीवनमुक्त] पौड़ी ॥

सो मुकता संसार जि गुर उपदेसिया ॥
तिसकी गई १ बिलाय मिटे अंदेसिया ॥
तिसका दरसनु देखि जगतु निहालु होय ॥
जन कै संगि निहालु पापां मैलु धोय ॥
अंमृत साचा नाउँ ओथै जापियै ॥
मन कौ होय संतोखु भुखां धापियै ॥
जिसु घटि वसिया नाउँ तिसु बंधन काटियै ॥
गुरपरसादि किनै विरलै हरिधनु खाटियै ॥५॥

[उपदेश] पौड़ी ॥

जीअकी २ बिरथा होय सो गुर पहिं अरदासि करि ॥
छोडि सियाणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥
पूजहु गुर के पैर दुरमति जाय जरि ॥
साध जनां कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥

१—दुःख-रोग आदि सब बला टल गई। २—हृदयका दुःख।

सेवहु सतिगुरुदेव अगै न मरहु डरि ॥
खिन महिं करे निहालु ऊणे १ सुभर भरि ॥
मन कौ होय संतोखु धियाईयै सदा हरि ॥
सो लगा सतिगुर सेव जाकौ करमु धुरि ॥६॥

[दाति] **सलोक महल्ला ५ ॥**

प्रेम २ पटोला तैं सहि दित्ता ढकन कूँ पति मेरी ॥
दाना बीना साईं मैंडा नानक सार न जाणां तेरी ॥१॥

[सच्चे-मित्र] **महल्ला ५ ॥**

जिन्हां दिसंदड़ियाँ दुरमति ३ वंझै मित्र असाडड़े सेई ॥
हौं ढूँढेंदी जगु सबाया जन नानक विरले केई ॥२॥

[संग] **महल्ला ५ ॥**

सच्ची बैसक तिनां संगि जिन संगि जपियै नाउँ ॥
तिन संगि संगु न कीचई नानक जिन्हाँ आपणा ४ सुआउ ॥२॥

[प्रिय-मिलन] **महल्ला ५ ॥**

पिरीं मिलावा जां थियै साई सुहावी रुति ॥
घड़ी ५ मुहतु नहँ वीसरै नानक रवियै नित ॥२॥

[सतगुरु] **महल्ला ५ ॥**

नानक सतिगुरि भेंटियै पूरी होवै जुगति ॥
हसंदियाँ खेलंदियाँ पैनंदियाँ खावंदियाँ विचे होवै मुकति ॥२॥

१—सतगुरु खाली सरोवर को भर देनेवाले हैं अर्थात् जीवके अंतर में प्रेमाभक्ति भर देते हैं। २—वस्त्र। ३—दूर होवै। ४—स्वार्थ। ५—पल-क्षण।

[अपवित्र जीवन] **महल्ला ५ ॥**

खांदियाँ खांदियाँ मुंह १ घॅठा पैनंदियाँ सभु अंग ॥
नानक धृगु तिनां दा जीविया जिन्ह सचि न लगो रंगु ।२।

सलोक महल्ला ५ ॥

जीवंदियाँ न चेतियो मुआ रलंदड़ो खाक ॥
नानक दुनिया संगि गुदारिया साकत मूढ़ नपाक ॥१॥

[धन्य-जीवन] **महल्ला ५ ॥**

जीवंदियाँ हरि चेतिया मरंदियाँ हरि-रंगि ॥
जनम पदारथु तारिया नानक साधू-संगि ॥२॥

[नाम-विहीन] **महल्ला ५ ॥**

कोटि बिघन तिसु लागते जिसनों विसरै नाउँ ॥
नानक अनदिनु बिलपते ज्यौं २ सुंञै घरि काउँ ॥२॥

१--घिस गया । २--वीरान ।

राग देवगंधारी

[गुरुमहिमा] **महल्ला ५** (घरु २)

माई गुरचरणी चितु लाईयै ॥
प्रभु होय कृपाल कमल परगासे सदा सदा हरि धियाईयै ॥१रहाउ॥
अंतरि एको बाहरि एको सभ महिं एकु समाईयै ॥
घटि अवघटि रविया सभ ठाईं हरि पूरन ब्रह्मु दिखाईयै ॥१॥
उसतति करहिं सेवक मुनि केते तेरा अंत न कतहुँ पाईयं ॥
सुखदाते दुखभंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईयै ॥२॥

[गुरु-शरण] **देवगंधारी महल्ला ५ ॥**

सरब सुखा गुरचरना ॥
कलिमल डारन मनहिं सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१रहाउ॥
पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥
बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥
सफल मूरति परसौं संतन की इहै धियाना धरना ॥
भयो कृपाल ठाकुरु नानक कौ परियौ साधकी सरना ॥२॥

[गुरु चरण] **देवगंधारी महल्ला ५ ॥**

गुर के चरन रिदै परवेसा ॥
रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥
जन्म जन्म के किलविख नासहिं कोटि मॅजन इसनाना ॥
नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धियाना ॥१॥

करि किरपा अपुना दास कीन्हो बंधन तोरि निरारे ॥
जपि जपि नामु जीवां तेरी बाणी नानकदास बलिहारे ॥२॥

[मनोरथ] **देवगंधारी महल्ला ५ ॥**

प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥
कृपानिधान दयाल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥१रहाउ॥
प्रातह काल लागौं जन चरनी [1] निसबासुर दरसु पावौं ॥
तनु मनु अरपि करौं जन सेवा रसना हरिगुन गावौं ॥१॥
सासि सासि सिमरौं प्रभु अपुना संतसंगि नित रहियै ॥
एकु अधारु नामु-धनु मेरा अनंदु नानक इहु लहियै ॥२॥

[वैराग्य] **देवगंधारी महल्ला ९ ॥**

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥१॥रहाउ॥
तन ते प्रान होत जब नियारे टेरत प्रेत पुकारि ॥
आध घरी कोऊ नहिं राखै घरि ते देत निकारि ॥१॥
मृगत्रिसना ज्यों जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु राम-नाम नित जाते होत उद्धार ॥२॥

१—रात-दिन ।

राग बिहागड़े की वार महल्ला ४ ॥

[निर्भय] महल्ला ३ ॥

तिन भौ संसा क्या करे जिनि सतिगुरु सिर करतारु ॥
धुरि तिनकी पैज रखदा आपे रखणहारु ॥
मिलि प्रीतम सुखु पाईया सच्चै सबदि वीचारि ॥
नानक सुखदाता सेविया आपे रखणहारु ॥२॥

[बंधन] सलोक महल्ला ३ ॥

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥
ममता मोहु सुबंधना पुत्र कलत्र सुधंधु ॥
जहँ देखां तहँ जेवरी माया का सनबंधु ॥
नानक सच्चे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥१॥

सलोक महल्ला ४ ॥

बिन सतिगुर सेवे जीअके बंधना जेते करम कमाहिं ॥
बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावहीं मरि जंमहिं आवहिं जाहिं ॥
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आय ॥
नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बँधे मारियहिं मुहिं काले उठि जाहिं ॥१॥

[तृप्ति] महल्ला ३ ॥

प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पियास न जाय ॥
नानक सतिगुर मिलियै मेरी पियास गई पिरु पाया घरि आय ॥२॥

[उपदेश] महल्ला ३ ॥

सतिगुरु फ़ुरमाइया १ कारी एह करेहु ॥
गुरुद्वारे होय कै साहिब संमालेहु ॥
साहिबु सदा हजूरि है भरमे के २ छौड़ कटिकै अंतरि जोति धरेहु ॥
हरि का नामु अंमृत है ३ दारू एहु लायेहु ॥
सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सच्चा नेहु ॥
नानक एथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि स्यौं केलि करेहु ॥२॥

राग वडहंस

[निर्मल] राग वडहंस महल्ला ३ (घरु १)

मन मैलै सभ किछु मैला तनि धोतै मनु हच्छा न होय ॥
इहु जगतु भरमि भुलाईया विरला बूझै कोय ॥१॥
जपि मन मेरे तूँ एको नामु ॥
सतगुरि दीया मोकौ एहु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सिद्धां के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाय ॥
मनकी मैलु न ऊतरै हौंमैं मैलु न जाय ॥२॥
इसु मन कौ होर संजमु को नाहीं विणु सतिगुर की सरणाय ॥
सतगुरि मिलियै उलटी भई कहणा किछू न जाय ॥३॥
भणति नानकु सतिगुर कौ मिलदो मरै गुरकै सबदि फिरि जीवै कोय ॥ ममता की मलु ऊतरै इह मनु हच्छा होय ॥४॥

१—कारज । २—परदे । ३—इलाज (भाव जतन-साधन अथवा उपाय) ।

[दयादृष्टि] वडहंस महल्ला ३ ॥

नदरी सतगुर सेवियै नदरी सेवा होय ॥
नदरी इह मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होय ॥१॥
मेरे मन चेति सच्चा सोय ॥
एको चेतहिं तां सुख पावहिं फिरि दूख न मूले होय ॥१॥रहाउ॥
नदरी मरिकै जीवियै नदरी सबद वसं मनि आय ॥
नदरी हुकमु बुझियै हुकमे रहै समाय ॥२॥
जिनि जिहवा हरिरसु न चखियो सा जिहवा जलि जाउ ॥
अनरस सादे लगि रही दुखु पाया दूजै भाय ॥३॥
सभनां नदरि एक है आपे फरकु करेय ॥
नानक सतगुरि मिलियै फलु पाइया नामु वडाई देय ॥४॥

(हौंमैं) वडहंस महल्ला ३ ॥

हौंमैं नाँवै नाल विरोध है दोय न वसहिं इक ठाँय ॥
हौंमैं विच सेवा न होवई तां मनु बिरथा जाय ॥१॥
हरि चेति मन मेरे तूं गुरका सबदु कमाय ॥
हुकमि मंनहिं तां हरि मिलै तां विचहुं हौंमैं जाय ॥१रहाउ॥
हौंमैं सभु सरीर है हौंमैं ओपति होय ॥
हौंमैं वॅडा गुबारु है हौंमैं विचि बुझि न सकै कोय ॥२॥
हौंमैं विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिया जाय ॥
हौंमैं विचि जीऊ बंधु है नामु न वसै मनि आय ॥३॥
नानक सतगुरि मिलियै हौंमैं गई तां सचु वसिया मनि आय ॥
सचु कमावै सचि रहै सच्चे सेवि समाय ॥४॥

(गुरमहिमा) **वडहंस महल्ला ५ ॥**

धनु सुवेला जितु दरसन करणा , हौं बलिहारी सतिगुर चरणा ।१।
जीअके दाते प्रीतम प्रभ मेरे, मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ।।१रहाउ ।।
सचु मंत्र तुमारा अंमृत बाणी , सीतल पुरख द्रसटि सुजाणी।२।
सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी , आय न जाय मेरा प्रभु अबिनासी ।।३।।
तुम मिहरवान दास हम दीना,नानक साहिबु भरपुरि लीणा ।४।

[सतगुरु-महिमा] **वडहंस महल्ला ४** (छंत)

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ।।
हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ।।
हरि हरि नामु मेरै मनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ।।
वडभागी गुरदरसनु पाया धनु धनु सतगुरू हमारा ।।
ऊठत बैठत सतिगुरु सेवहिं जितु सेविये सांति पाई ।।
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ।।१।।

हौं जीवां हौं जीवां सतिगुर देखि सरसे राम ।।
हरिनामो हरिनामु द्रढ़ाये जपि हरि हरि नामु विगसे राम ।।
जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरिनामु नवैनिधि पाई ।।
हौमैं रोगु गया दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ।।
हरिनामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतगुरदेव मनु परसे ।।
हौं जीवां हौं जीवां सतिगुर देखि सरसे ।।२।।

कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतगुरु पूरा राम ।।
हौं मनु तनु हौं मनु तनु देवां तिसु काटि सरीरा राम ।।

हौं मनु तनु काटि काटि तिसु देईं जो सतिगुर बचन सुणाये ॥
मेरै मनि बैरागु भया बैरागी मिलि गुरदरसनि सुखु पाये ॥
हरि हरि कृपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतगुरु पूरा ॥३॥
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मैं अवरु न कोई राम ॥
हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥
हरि हरि नामु जिनीं अराधिया तिनका दुखु भरम भौ भागा ॥
सेवक भाय मिले वडभागी जिन गुरचनी मनु लागा ॥
कहु नानक हरि आपि मिलाये मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई॥
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मैं अवरु न कोई ॥४॥

राग वडहंस की वार महल्ला ४ ॥

[मनमुख] **महल्ला ३ ॥**

सतिगुर का सेव न कानियां हरिनामु न लगो पियारु ॥
मत तुम जाणहु ओय जीवंदे ओय आपि मारे करतारि ॥
हौं मैं वॅडा रोगु है भाय दूजै करम कमाय ॥
नानक मनमुखि जीवंदियां मुए हरि विसरिया दुख पाय ॥२॥

[बंधन] **सलोक महल्ला ३ ॥**

बिनु सतिगुर सेवे जीअके बंधना विचि हौं मैं करम कमाहिं ॥
बिनु सतिगुर सेवे ठौरु न पावहीं मरि जंमहि आवहिं जाहिं ॥
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि माहिं ॥
नानकबिनु सतिगुरसेवे जमपुरिबॅधे मारियहिं मुहिं काले उठिजाहिं १

[मनमुख] **सलोक महल्ला ३ ॥**

सतिगुर की परतातिं न आईया सबदि न लागो भाव ॥

उसनों सुखु न ऊपजै भावैं सौ १ गेड़ा आवौ जाव ॥
नानक गुरमुखि सहजि मिल सच्चे स्यौं लिव लाव ॥१॥

[गुरुमुख] **सलोकु महल्ला ३ ॥**

जिनकौं सतिगुरु भेटिया से हरि २ कीरति सदा कमाहिं ॥
अचिंतु हरिनामु तिनकै मनि वसिया सच्चै सबदि समाहिं ॥
कुलु उद्धारहिं आपणा मोख पदवी आपे पाहिं ॥
पारब्रह्मु तिनकौं ३ संतुसटु भया जो गुरचरनी जन पाहिं ॥
जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहिं ॥१॥

[गुरुमुख] **महल्ला ३ ॥**

इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता ४ मोहि पियासि ॥
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रत्ते सच्चि नामि ५ गुणतासि ॥
मनमुखि अंधु न चेतनी जनमि मरि होहिं बिनासि ॥
नानक गुरमुखि तिनी नामु धियाइया जिनकौं धुरि पूरबि लिखियासि ॥२॥

[गुरुमुख] **सलोकु महल्ला ३ ॥**

सतिगुर नों सभको वेखदा जेता जगतु संसारु ॥
डिठे मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥
हौं मैं मैलु न चुकई नामि न लगै पियारु ॥
इक आपे बखसि मिलाइयनु दुबिधा तजि विकार ॥
नानक इक दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पियारि ॥१॥

१—चाहे सौ बार जन्म धारण करे। २—नाम-भजन की कमाई। ३—मालिक उन जीवोंपर प्रसन्न होता है। ४—मोह-ममता की तृष्णा में लगकर। ५—गुणनिधान।

राग सोरठ

[भक्ति] सोरठ महल्ला ३ (घरु १)

भगति खजाना भगतन कौ दीया नाँउ हरिधनु सचु सोय ॥
अखुटु नामधनु कदे १ निखुटै नाहीं किनै न कीमति होय ॥
नामधनि मुख ऊजले होये हरि पाया सचु सोय ॥१॥
मन मेरे गुरसबदी हरि पाया जाय ॥
बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाय ॥रहाउ॥
इसु देही अंदरि पंच चोर वसहिं कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंमृत लूटहिं मनमुख नहीं बूझहिं कोय न सुणै पुकारा ॥
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥
हौंमैं मेरा करि करि २ विगुते किहु चल न चलादियाँ नालि ॥
गुरमुखि होवै सो नामु धियावै सदा हरिनामु समालि ॥
सच्ची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥
सतिगुर गियानु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥
अनदिनु भगति करहिं दिनु राती रामनामु सचु लाहा ॥
नानक रामनामि निसतारा सबदि रत्ते हरि पाहा ॥४॥

[उपदेश] सोरठ महल्ला ३ ॥

सो सिखु सखा बंधपु है भाई जे गुरके भाणे विचि आवै ॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटां खावै ॥
बिनु सतिगुर सुख कदै न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥
हरिके दास सुहेले भाई ॥

१—खतम होवै या नष्ट होवै । २—लूटे गये ।

जनम जनम के किलविख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥
इहु कुटंबु सभु जीअके बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥
बिनु गुर बंधन टूटहिं नाहीं गुरमुखि मोख दुआरा ॥
करम करहिं गुर सबदु न पछाणहिं मरि जनमहिं वारोवारा ॥२॥
हौं मेरा जगु १ पलचि रहिया भाई कोय न किसही केरा ॥
गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निजघरि होय बसेरा ॥
ऐथै बूझै सो आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥
सतिगुरू सदा दयालु है भाई विणु भागां क्या पाईयै ॥
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाव तेहा फलु पाईयै ॥
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहुँ आपु गँवाईयै ॥४॥

[सतगुरु] सोरठ महल्ला ३ (घरु १)

सतिगुरु सुखसागरु जग अंतरि होर थैं सुखु नाहीं ॥
हौं मैं जगतु दुखि रोगि वियापिया मरि जनमै रोवै २धाहीं ॥१॥
प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाय ॥ सतिगुरु सेवहिं तां सुखु पावहिं नाहिं तां जाहिंगा जनमु गँवाय ॥ रहाउ ॥
त्रैगुण ३ धातु बहु करम कमावहिं हरिरस सादु न आया ॥
संधिया तरपणु करहिं गाइत्री बिनु बूझै दुखु पाया ॥
सतिगुरु सेवै सो वडभागी जिसनों आपि मिलाये ॥
हरिरसु पी जन सदा तृपतासे विचहुँ आपु गँवाये ॥३॥
इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाये ॥
नानक सतिगुरु मिलै त अखीं वेखै घरै अंदरि सचु पाये ॥४॥

१—खप रहा है। २—विलाप करके रोता है। ३—तीन गुणों अर्थात् सत्-रज और तम के आधीन होकर।

[गुरुमुख] **सोरठ महल्ला ३** (चौतुके)

सच्ची भगति सतिगुर ते होवै सच्चा हिरदै बाणी ॥
सतिगुरु सेवे सदा सुख पाये हौंमें सबदि समाणी ॥
बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै सिथाणी ॥
मनमुखि फिरहिं सदा दुख पावहिं डूबि मुए विणु पाणी ॥१॥
भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडियाई ॥ रहाउ ॥
पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सच्चै वीचारा ॥
हिरदै जगजीवन सद वसिया तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥
सदा हजूरि रविया सभ ठाईं हिरदै नामु अपारा ॥
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउँ मीठा मनहिं पियारा ॥२॥
सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आया ॥
हरिरसु चाखि सदा मनु त्रिपतिया गुण गावै गुणी १अघाया ॥
कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाया ॥
तनु मनु निरमलु निरमलु बाणी सच्चे साचि समाया ॥३॥
राम नाम की गति कोय न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥
गुरमुखि होवै सो २मगु पछाणै हरिरस रसन रसाई ॥
जपु तपु संजम सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥
नानक नामु समालहिं से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥

[संत महिमा] **सोरठ महल्ला ५** (दुतुके)

तन संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीया ॥
संतप्रसादि हरिनामु धियाया सरब कुसल तब थीआ ॥१॥

१—तृप्त हो गया । २—मार्ग या रासता ।

संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीया ॥ रहाउ ॥
कोटि पराध मिटहिं जन सेवा हरिकीरतनु रसि गाईयै ॥
इहाँ सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईयै ॥२॥
रसना एक अनेक गुण पूरन जनकी केतक उपमा कहियै ॥
अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतनकी लहियै ॥३॥
निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥
बूडत मोह गृह अंधकूप महिं नानक लेहु निबाही ॥४॥

[संत-शरण] **सोरठ महल्ला ५** (घरु २ चौपदे)

हम संतन की १ रेन पियारे हम संतन की सरणा ॥
संत हमारी ओट २ सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥
हम संतन स्यौं बणि आई ॥ पूरबि लिखिया पाई ॥
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥
संतन स्यौं मेरी ३ लेवादेवी संतन स्यौं बियोहारा ॥
संतन स्यौं हम लाहा खाटिया हरिभगति भरे भंडारा ॥२॥
संतन मोकौ पूँजी सौंपी तौ उतरिया मनका धोखा ॥
धरमराय अब कहा करैगो जौ फाटियो सगलो लेखा ॥३॥
महा अनंद भये सुखु पाया संतन के परसादे ॥
कहु नानक हरि स्यौं मनु मानिया रंगि रते बिसमादे ॥४॥

[विनय] **सोरठ महल्ला ५** (घरु २ दुपदे)

काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इनते आपि छडावहु ॥
इह भीतर ते इनकौ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥१॥

१- चरण-धूरि । २--आसरा । ३--लेन-देन या व्यवहार ।

अपुनी बिधि आपि जनावहु। हरिजन मंगल गावहुँ ॥१॥ रहाउ ॥
बिसरु नाहीं कबहूँ हिये ते इहबिधि मन महिं पावहुँ ॥
गुरु पूरा भेटियो वडभागी जन नानक कतहिं न धावहुँ ॥२॥

[चेतावनी] **राग सोरठ महल्ला ९ ॥**

रे मन राम स्यों करि प्रीति ॥
स्रवन गोविंद गुनु सुनौ अरु गाओ रसना गीत ॥१॥ रहाउ ॥
करि साधसंगति सिमरु माधो होहिं पतित पुनीत ॥
कालु १बिआलु ज्यौं परियो डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसिहै समझि राखौ चीति ॥
कहै नानकु रामु भजि लै जातु औसर बीत ॥ २॥

[चेतावनी] **सोरठ महल्ला ९ ॥**

मनकी मनही माहिं रही ॥
ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥
दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभु मही ॥
अवर सगल मिथिया ए जानौ भजनु राम को सही ॥१॥
फिरत फिरत बहुते जुग हारियो मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलनकी बरिया सिमरत कहा नहीं ॥२॥

[नाम-महिमा] **सोरठ महल्ला ९ ॥**

मन रे प्रभकी सरनि बिचारो ॥
जिह सिमरत गनका सी उद्धरी ताको जसु उर धारौ ॥१॥ रहाउ ॥
अटल भयौ ध्रूअ जाकै सिमरनि अरु निरभै पद पाया ॥

१--अजगर।

दुखहरता इहबिधि को सुआमी तैं काहे बिसराया ॥१॥
जबही सरनि गही किरपानिधि गज गराह ते छूटा ॥
महिमा नाम कहाँलौं बरनौं राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥
अजामलु पापी जगु जाने निमख माहिं निसतारा ॥
नानक कहत चेत चिंतामनि तैं भी उतरहिं पारा ॥३॥

[विनय]　　**सोरठ महल्ला ६ ॥**

माई मैं केहिबिधि लखउँ गुसाईं ॥
महामोह अगियान तिमिर मो मनु रहियो उरझाई ॥ १ रहाउ ॥
सगल जनम भरम ही भरम खोयो नहँ असथिरु मति पाई ॥
बिखियासक्त रहियो निसबासुर नहँ छूटी अधमाई ॥१॥
साधसंगु कबहूँ नहीं कीना नहँ कीरति प्रभ गाई ॥
जन नानक मैं नाहिं कोऊ गुन राखि लेहु सरनाई ॥२॥

[चेतावनी]　　**सोरठ महल्ला ६ ॥**

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न १बार ॥१रहाउ॥
२बारू भीति बनाई ३रचि पचि रहत नहीं दिन चारि ॥
तैसे ही इह सुख माया के उरझियो कहा गँवार ॥१॥
अजहूँ समझि कछु बिगरियो नाहिन भजि ले नामु मुरारि ॥
कहु नानक निजमत साधन कौ भाखियो तोहि पुकारि ॥२॥

[चेतावनी]　　**सोरठ महल्ला ६ ॥**

इह जगि मीत न देखियो कोई ॥

१–देर। २–रेत की दीवार। ३–मिहनत करके।

सगल जगतु अपनै सुख लागियो दुख मैं संगि न होई ॥१ रहाउ॥
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन स्यौं लागे ॥
जबही निरधन देखियो नरको संग छाडि सभ भागे ॥१॥
कहौं कहा या मन बौरे कौ इन स्यौं नेहु लागायौ ॥
दीनानाथ सगल भैभंजन जसु ताकौ बिसरायौ ॥२॥
१ सुआन पूछ ज्यौं भयौ न २ सूधौ बहुतु जतनु मैं कीनौ ॥
नानक लाज बिरदकी राखहु नामु तुम्हारौ लीनौ ॥३॥

[जीवनमुक्त] **सोरठ महल्ला ९ ॥**

जो नरु दुख मैं दुखु नहीं मानै ॥
सुख सनेह अरु भै नहीं जाकै कंचन माटी मानै ॥१ रहाउ॥
नहँ निंदिया नहँ उसतति जाकै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै नियारौ नाहिं मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तियागै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह ३ परसै नाहनि तिह घट ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कौ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भयौ गोबिंद स्यौं ज्यौ पानी संगि पानी ॥३॥

[चेतावनी] **सोरठ महल्ला ९ ॥**

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं ॥
अपने सुख स्यौं ही जगु फांधियौ को काहू को नाहीं ॥१ रहाउ ॥
सुख मैं आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहूँदिसि घेरै ॥
बिपति परी सभही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥
घरकी नारि बहतु हितु जास्यौं सदा रहत संग लागी ॥

१—कुत्तेकी पूँछकी तरह। २—सीधा। ३—छुवै।

जबही हंस तजी इह काया प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥
इहविधि को बियोहारु बनियो है जास्यौं नेहु लगायौ ॥
अंति बार नानक बिन हरिजी कोऊ कामि न आयौ ॥३॥

[गुरुकृपा] **सोरठ महल्ला ३** (दुतुकी)

निगुणियाँनों आपे बखसि लये भाई सतिगुर की सेवा लाये ॥
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई रामनामि चित्तु लाये ॥१॥
हरिजीउ आपे बखसि मिलाय ॥
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लये रलाय ॥ १रहाउ ॥
कौण कौण अपराधी बखसियन पियारे साचै सबदि वीचारि ॥
भौजलु पारि उतारियन भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥२॥
१ मनूरै ते कंचन भये भाई गुरु पारसु मेलि मिलाय ॥
आपु छोडि नाउँ मनि वसिया भाई जोती जोति मिलाय ॥३॥
हौं वारी हौं वारणै भाई सतिगुर कौ सद बलहारै जाउँ ॥
नामु निधानु जिनि दित्ता भाई गुरमति सहजे समाउँ ॥४॥
गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गियानियाँ जाय ॥
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहुँ आपु गँवाय ॥५॥
गुरमती भौ ऊपजै भाई भौ करणी सचु सार ॥
प्रेम पदारथु पाईयै भाई सचु नामु आधारु ॥६॥
जो सतिगुर सेवहिं आपणा भाई तिनकै हौं लागौं पाय ॥
जनम सँवारीं आपणा भाई कुल भी लई बखसाय ॥७॥
सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होय ॥
नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोय ॥८॥

१--लोहा ।

राग सोरठ वार महल्ले ४ की

[माया] **सलोक महल्ला ३ ॥**

माया ममता मोहणी जिनि विणु दंताँ जगु खाया ॥
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाया ॥
बिनु नाँवै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आया ॥
धंधा करतियाँ निहफलु जनमु गँवाया सुखदाता मनि न वसाया ॥
नानक नामु तिनांको मिलिया जिनकौ धुरि लिखि पाया ॥१॥

[गुरु-शब्द] **महल्ला ३ ॥**

घर ही महिं अंमृतु भरपूर है मनमुखाँ सादु न पाया ॥
ज्यौं कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाया ॥
अंमृत तजि बिख संग्रहै करतै आपि खुआया ॥
गुरमुखि विरले सोझी पई तिन्हाँ अंदरि ब्रहमु दिखाया ॥
तन मन सीतल होइया रसना हरि सादु आया ॥
सबदे ही नाउँ ऊपजै सबदे मेलि मिलाया ॥
बिन सबदै सभु जगु बौराना बिरथा जनमु गँवाया ॥
अंमृतु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाया ॥२॥

[गुरुमुख] **सलोक महल्ला ३ ॥**

सतिगुरकी सेवा सफल है जेको करे चित्त लाय ॥
मनचिंदिया फलु पावणा हौंमैं विचहुँ जाय ॥
बंधन तोड़ै मुकति होय सच्चे रहै समाय ॥
इसु जगु महिं नाम अलभु है गुरमुखि वसै मनि आय ॥
नानक जो गुर सेवहिं आपणा हौं तिन बलिहारै जाउँ ॥१॥

[गुरुमुख] **पौड़ी ॥**

तिनका खाधा १ पैधा गाया सभ पवितु है जे नाम हरि राते ॥
तिनके घर मंदर महल सराई सभ पवितु हैं जिनि गुरमुखि सेवक सिख अभियागत जाय २ वरसाते ॥
तिनके ३ तुरे ४ जीन ५ खुरगीर सभि पवितु हैं जिनी गुरमुखि सिख साधसंगत चढ़ि जाते ॥
तिनके करम धरम कारज सभि पवितु हैं जो बोलहिं हरि हरि रामनामु ६ हरिसाते ॥
जिनके ७ पोते पुंन है से गुरमुखि सिख गुरू पहिं जाते ॥१६॥

[सच्ची विद्या] **सलोक महल्ला ३ ॥**

पढ़णां गुड़णां संसारकी कार है अंदरि तृसना विकारु ॥
हौंमैं विचि सभि पढ़ि थके दूजें भाय खुआरु ॥
सो पढ़िया सो पंडितु बीना गुरसबदि करे वीचारु ॥
अंदरु खोजै ततु लहै पाये मोख दुआरु ॥
गुणनिधनु हरि पाईया सहजि करे वीचारु ॥
धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥१॥

[निर्मल] **सलोकु महल्ला ३ ॥**

जनम जनम की इसु मन कौ मलु लागी काला होआ सियाहु ॥
८ खंनली ९ धोती उजली न होवई जे सौ धोवणि पाहु ॥

१—पहिनना । २--तृप्त होते हैं । ३—घोड़े । ४--घोड़ेका साज़ जो सवारी के लिये इस्तेमाल होता है । ५--ज़ीनका एक भाग जिसमें सवार पाँव रखता है । ६--प्रसन्न होते हैं । ७-पल्लेमें या भाग्यमें । ८--तेलीके कोल्हू को साफ़ करने का कपड़ा जो अत्यधिक मैला होता है । ९--धोने से ।

गुरपरसादी जीवत मरै उलटी होवै मति १ बदलाहु ॥
नानक मैल न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥

राग धनासरी

[संत-शरण] **महल्ला ४ ॥**

हम अंधुले अंध बिखै बिख राते किव चालहँ गुर चाली ॥
सतगुरु दया करे सुखदाता हम लावै आपन २पाली ॥१॥
गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥
जो गुर कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१ रहाउ॥
हरि के संत सुणहु जन भाई गुर सेवहु ३ बेगि बेगाली ॥
सतगुर सेवि ४ खरचु हरि बांधो मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥२॥
हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥
जिन हरि जपिया से हरि होये हरि मिलिया ५ केलि ६ केलाली ।३।
हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि ७ बनवाली ॥
जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साधजनां ८ पगराली ॥४॥

[प्रीतिकी रीति] **धनासरी महल्ला ५** (घरु १ चौपदे)

बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल स्यौं ९ हेतु बढायौ॥
कमल१ ०हेति बिनसियो है भँवरा उन मारग निकसि न पायौ ॥१॥

१-बदलकर । २-- साथ अर्थात् शरणमें । ३--शीघ्र और अति शीघ्र । ४--परलोकका तोशा । ५--खेल-खेलमें । ६--लीलाधारी मालिक मिल गया । ७--हे मालिक ! ८--चरण-धूरि । ९--प्यार । १०--के प्यारमें लगकर ।

अब मन एकस स्यों मोह कीना ॥ मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदा १ चीन्हा ॥१रहाउ ॥
काम हेति २ कुंचर लै ३ फांकियो उह परवसि भयो बिचारा ॥
४ नाद हेति सिर डारियो ५ कुरंका उसही हेत ६ बिदारा ॥२॥
देखि कुटंबु लोभि मोहियो प्रानी माया कौ लपटाना ॥
अति रचियो करि लीनो अपुना उन छोडि ७ सरापर जाना ॥३॥
बिनु गोविंद अवर संगि नेहा जाणहु सदा ८ दुहेला ॥
कहु नानक गुर इहै बुझायो प्रीति प्रभू सद ९ केला ॥४॥

[चेतावनी] **धनासरी महल्ला ५ ॥**

वडे वडे १० राजन अरु ११ भूमन ताकी त्रिसन न बूझी ॥
लपटि रहे माया रंग १२ माते लोचन कछू न सूझी ॥१॥
१३ बिखिया महँ किनही तृपति न पाई ॥ ज्यों पावक ईंधन नहीं १४ धापै बिनु हरि कहाँ अघाई ॥१॥ रहाउ ॥
दिन दिन करत भोजन बहु १५ बिंजन ताकी मिटै न भूखा ॥
उदमु करै सुआनकी नियाई चारे १६ कुंटाँ १७ घोखा ॥२॥
कामवंत कामी बहु नारी परगृह जोह न चूकै ॥
दिनप्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महिं सूकै ॥३॥
हरि हरि नामु अपाक अमोला अंमृतु एक निधाना ॥
सूख सहजु आनंद संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥

१--पहिचान लिया । २--हाथी । ३--फँसा लिया गया । ४--शब्द या सुरीली आवाज़ । ५--हरिण । ६--नष्ट हो गया । ७--हर हाल में (आगे पीछे) । ८--दुःखी । ९--आनन्दरूप । १०--राजा-महाराजा । ११--ज़मींदार । १२--मस्त हैं । १३--विषय-विकारों में । १४--तृप्त होवें । १५--अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ । १६--चारों दिशाओं में । १७--भटकता फिरता है ।

[चेतावनी] **धनासरी महल्ला ५** (घरु २ चौपदे)

छोडि जाहिं से करहिं १ पराल, कामि न आवहिं से जंजाल ॥
संगि न चालहिं तिन स्यों हीत, जे २ बैराई सेई मीत ॥१॥
ऐसे भरमि भुले संसारा, जनमु पदारथु खोय गँवारा ॥रहाउ॥
साचु धरमु नहीं भावै डीठा, झूठ धोह स्यों रचियो मीठा ॥
दाति पियारी विसरिया दातारा, जाणै नाहीं मरण विचारा ॥२॥
वसतु पराई कौ उठि रोवै, करम धरम सगला ई खोवै ॥
हुकमु न बूझै आवण जाणै, पाप करै ताँ पछोताणै ॥३॥
जो तुधु भावै सो परवाणु, तेरे भाणै नों कुरबाणु ॥
नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा, राखि लेय साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥

[घट-मठ] **राग धनासरी महल्ला ६**

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरबनिवासी सदा ३ अलेपा तोही संगि समाई ॥१ रहाउ॥
४ पुहप ५ मधि ज्यों ६ बासु बसतु है ७ मुकर महिं जैसे ८ छाई ॥
तैसे ही हरि बसे ९ निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गियानु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीन्है मिटै न भ्रमकी १० काई ॥२॥

१--प्यार। २--वैरी। ३--निर्लेप (मालिक)। ४--फूल। ५--में। ६--सुगन्धि। ७--दर्पण (मुख देखनेका काँच)। ८--परछाहीं। ९--अंदर ही में। १०--मैल।

राग जैतसरी

[चेतावनी] **महल्ला ५** (घरु ३)

कोई जानै कवन ईहाँ जगि मीत ॥
जिसु होय कृपालु सोई १ बिधि बूझै ताकी निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥
मात पिता २ बनिता सुत ३ बंधप ४ इसट मीत अरु भाई ॥
पूरब जनम के मिलै संजोगी अंतहिं को न सहाई ॥१॥
५ मुकतिमाल ६ कनिक लाल हीरा मन ७ रंजन की माया ॥
हाहा करत ८ बिहानी ९ अवधहिं ता महिं १० संतोखु न पाया ॥२॥
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन ११ चतुरांगा ॥
संगि न चालियो इन महिं कछूऐ ऊठि सिधायौ नांगा ॥३॥
हरिके संत प्रिय प्रीतम प्रभके ताकै हरि हरि गाईयै ॥
नानक ईहां सुख आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईयै ॥४॥

[सुमिरण] **जैतसरी महल्ला ५ ॥**

१२ लोड़ींदड़ा साजनु मेरा ॥
घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहिं बसेरा ॥१ रहाउ ॥
सूखि १३ अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥

१--असली युक्ति । २--स्त्री । ३--सम्बन्धी । ४--प्यारे । ५--मोतियोंकी मालायें । ६--सोना । ७--यह सब मनके रिझानेकी माया है । ८--बीत गई । ९--आयु । १०--तृप्ति । ११--चार प्रकार की सेना । १२--चाहिये । १३--सुमिरन ।

नामु जपत कोटि १ सूर २ उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥१॥
३ थानि थनंतरि सभनो ४ जाई जो दीसै सो तेरा ॥
संत संगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न ५ होई है ६ फेरा ॥२॥

जैतसरी महल्ला ५ ॥

[मिलन] (छंत घरु १) सलोक

दरसन पियासी ७ दिनसु राति ८ चितवौं ६ अनदिनु नीत ॥
खोल्हि १० कपट गुरि मेलिया नानक हरि संगि मीत ॥१॥

[चेतावनी] जैतसरी महल्ला ६ ॥

भूलियौ मन माया उरझायौ ॥
जो जो करम कीयौ लालच लगि तिह तिह आपु बंधायौ ॥ ॥१ रहाउ ॥
समझ न परी बिखैरस रचियौ जसु हरि कौ बिसरायौ ॥
संगि सुआमी सो जानियौ नाहिन बनु खोजन कौ धायौ ॥१॥
रतनु रामु घट ही के भीतरि ताको गियानु न पायौ ॥
जन नानक भगवंत भजन विन बिरथा जनमु गँवायौ ॥२॥

१—सूर्य। २—प्रकाश। ३--स्थान-स्थान में। ४-जगह पर। ५—होवेगा। ६—जन्म-मरण। ७--दिन। ८--सुमिरन करौं। ६--प्रतिदिन। १०—कपाट या अंतरके द्वारे।

राग टोडी

[अभिलाषा] **महल्ला ५** (घरु २ दुपदे)

माँगौं दानु ठाकुर नाम ॥
अवर कछू मेरै संगि न चालै मिलै कृपा गुण-गाम।१ रहाउ।
राजु मालु अनेक भोग रस सगल १ तरवर की छाम ॥
धाय धाय बहुबिधि कौ धावै सगल २निरारथ काम ॥१॥
बिनु गोविंद अवर जे चाहौं दीसै सगल बात है ३ खाम ॥
कहु नानक संतरेन माँगौं मेरो मन पावै बिसराम ॥२॥

[विनय] **टोडी महला ५ ॥**

सतिगुरु आयो सरणि तुम्हारी ॥
मिलै सूख नाम हरि सोभा चिंता ४ लाहि हमारी ॥१ रहाउ॥
अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परियो तव द्वारी ॥
लेखा छोडि अलेखै छूटहँ हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥
सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभनां देय अधारी ॥
नानकदास संत पाछै परियौ राखि लेहु इह बारो ॥२॥

१--वृक्षकी छाया। २--सभी इच्छायें व्यर्थ हैं। ३--कच्ची अर्थात् फ़ज़ूल।
४--दूर कर दे।

राग तिलंग

[उपदेश] **महल्ला १** (घरु ३)

इहु तनु माया १ पाहिया पियारे २ लीतड़ा ३ लबि रंगाये ॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पियारे क्यों धन सेजै जाये ॥१॥
हौं कुरबानै जाउँ मिहरवाना हौं कुरबानै जाउँ ॥
हौं कुरबानै जाउँ तिनां कै लैन जो तेरा नाउँ ॥
लैन जो तेरा नाउँ तिनां कै हौं सद कुरबानै जाउँ ॥१ रहाउ ॥
काया रंङणि जे थीऐ पियारे पाईयै नाउँ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिब ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥
जिनके चोले रतड़े पियारे कंतु तिनां कै पासि ॥
धूड़ि तिनां की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेय ॥
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही ४ रावेय ॥४॥

[उपदेश] **तिलंग महल्ला १**

५ इयानड़ीये ६ मानड़ा काये करेहि ॥
७ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥
८ सहु नेड़े धनु कमलिये बाहरु क्या ढूँढेहि ॥

१--इस तन को माया का पान चढ़ाया है। २--लिया। ३--लालचके रंगमें। ४--लीन रहता है। ५-- ऐ अनजान रूह ! ६--मान-गुमान। ७--क्यों नहीं अपने अंतरमें मालिककी प्रीति का आनन्द भोगती।
८-- ऐ कम-अकल रूह ! मालिक तो तेरे निकट ही है; फिर तू उसको बाहर क्या ढूँढती फिरती है ?

भै कीयाँ देहि सलाईयाँ नैंणी भाव का करि सींगारो ॥
ता सोहागणि जाणियै जां सहु धरै पियारो ॥१॥

इयाणी बाली क्या करै जा धन कंत न भावै ॥
१ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महल न पावै ॥
विणु करमां किछु पाईयै नाहीं जे बहुतेरा धावै ॥
लब लोभ अहंकार की माती माया माहिं समाणी ॥
इनी बातीं सहु पाईयै नाहीं भई कामणि इयाणी ॥२॥

जाय पुछहु सोहागणी २ वाहै किनी बातीं सहु पाईयै ॥
जो किछु करे सो भला करि मानियै ३ हिकमति हुकमु चुकाईयै ॥
जाकै प्रेम पदारथु पाईयै तौ चरणी चित्तु लाईयै ॥
सहु कहै सो कीजै तन मनो दीजै ऐसा परमल लाईयै ॥
एव कहैं सोहागणीं भैणें इनी बातीं सहु पाईयं ॥३॥

आपु गँवाईयै तां सहु पाईयै और कैसी चतुराई ॥
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नौनिधि पाई ॥
आपणे कंत पियारी सा सोहागणि नानक सा ४ सभराई ॥
ऐसे रंग राती सहज की माती अहिनिसि भाय समाणी ॥
सुंदरि ५ साई सरूप ६ बिचखणि कहियै सा सियाणी ॥४॥

[चेतावनी] **तिलंग महल्ला ६** (काफ़ी)

चेतना है तौ चेत लै निसिदिन मैं प्रानी ॥

१—दुःखभरी पुकारें। २—बहु। ३—अपनी बुद्धि को मालिककी मौज अथवा हुकम में खतम कर देवे। ४—सबमें उत्तम। ५—सोहं। ६—अद्भुत आकर्षक।

छिनु छिनु १औध २बिहातु है फूटे ३घट ज्यों पानी ॥१ रहाउ ॥
हरिगुन काहि न गावही मूरख अगियाना ॥
झूठे लालचि लागि कै नहिं मरनु पछाना ॥१॥
अजहूँ कछु बिगरियो नहीं जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तेहि भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥

[चेतावनी] **तिलंग महल्ला ६ ॥**

जागि लेहु रे मनां जागि लेहु कहा ग़ाफ़िल सोया ॥
जो तनु उपजिया संग ही सो भी संग न होया ॥१॥ रहाउ ॥
मात पिता सुत बंधजन हित जा स्यों कीना ॥
जीउ छूटियो जब देह ते डारि अगनि मैं दीनां ॥१॥
जीवत लौं बियौहार है जग कौ तुम जानौ ॥
नानक हरिगुन गाइलै सभ ४सुफन समानौ ॥२॥

[चेतावनी] **तिलंग महल्ला ६ ॥**

हरिजसु रे मनां गाइलै जो संगी है तेरो ॥
औसरु बीतियो जातु है कहियो मानि लै मेरो ॥१ रहाउ ॥
संपति रथ धन राज स्यों अति नेह लगायौ ॥
काल फाँस जब गलि परी सभ भयौ परायौ ॥१॥
जानि बूझि कै बावरे तैं काज बिगारियौ ॥
पाप करत ५सकुचियो नहीं नहँ ६गरबु निवारियौ ॥२॥
जिहबिधि गुर उपदेसिया सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥

१--आयु । २--बीती जा रही है । ३--जिस प्रकार फूटे घड़ेमें पानी नहीं ठहर सकता । ४--स्वप्न । ५--लज्जा नहीं आई । ६--अहंकार ।

राग सूही

[उपदेश] **सूही महल्ला ५ ॥**

बुरे काम कौ ऊठि खलोइया ॥
नाम की बेला पै पं सोइया ॥१॥
औसरु अपना बुझै न १ इयाना ॥
माया मोह रंगि लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥
लोभ लहरि कौ बिगसि २ फूलि बैठा ॥
साधजनां का दरसु न डीठा ॥२॥
कबहूँ न समझै अगियानु गँवारा ॥
बहुरि बहुरि लपटियो जंजारा ॥१॥ रहाउ ॥
बिखै नाद करन सुनि ३ भीना ॥
हरिजसु सुनत आलसु मनि काना ॥३॥
द्रसटि नहीं रे पेखत अंधे ॥
छोडि जाहिं झूठे सभि धंधे ॥१॥ रहाउ ॥
कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥
करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥४॥
तौ किछु पाईयै जब होईयै रेना ॥
जिसहिं बुझाये तिसु नामु लैना ॥१॥ रहाउ ॥

[सतगुरु-महिमा] **सूही महल्ला ५ ॥**

गुरु परमेसरु करणैहारु, सगल सृसटि कौ दे आधारु।१।

१--अनजान। २--प्रसन्न होकर फूला न समाया ३--विषयों के नाद अपने कानों से सुनकर प्रसन्न हुआ।

गुरके चरणकमल मन धियाय, दूख दरद इस तन ते जाय ।१रहाउ।
भवजल डूबत सतिगुरु काढै, जनम जनम का टूटा गांढै ।२।
गुरकी सेवा करहु दिन राति, सूख सहज मनि आवै सांति ।३।
सतिगुर की रेणु वडभागी पावै, नानक गुरको सद बलि जावै ।४।

[विनय] **सूही महल्ला ५ ॥**

दरसनु देखि जीवां गुर तेरा, पूरन करम होय प्रभ मेरा ।१।
इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे, देहि नाम करि अपणे १चेरे ॥१ रहाउ॥
अपणी सरणि राखु प्रभ दाते, गुरप्रसादि किनै विरलै जाते ।२।
सुनहु बिनौ प्रभ मेरे मीता, चरणकमल वसहिं मेरे चीता ।३।
नानकु एक कहै अरदासि, विसरु नाहीं पूरन गुणतासि ।४।

[साधु-संग] **राग सूही महल्ला ५** (घरु ४)

भली २सुहावी ३छापरी जा महि गुन गाये ॥
कितही कामि न ४धौलहर जितु हरि बिसराये ॥१रहाउ॥
अनंद गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चित्ति आये ॥
जलि जाउ एहु बडपना माया लपटाये ॥१॥
पीसनु पीसि ओढि ५कामरी सुखु मनु संतोखाये ॥
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नहँ तृपताये ॥२॥
नगन फिरत रंगि एक कै उहु सोभा पाये ॥
पाट पटंबर बिरथिया जिह रचि लोभाये ॥३॥
सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराये ॥
सासि सासि सिमरत रहाँ नानक दानु पाये ॥४॥

१—सेवक । २—सुंदर (शोभनीक) ३—फूँसकी कुटिया । ४—ऊँचे ऊँचे महल । ५—कम्बल ओढ़कर ।

[संत-महिमा] **सूही महल्ला ५ ॥**

१भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरिनामा ॥
परवाणु गणी सेई इह आये सफल तिनां के २कामा ॥१॥
मेरे राम हरिजन के हौं बलि जाई ॥ केसां का करि चँवरु
ढुलावां चरणधूड़ि मुखि लाई ॥१रहाउ ॥
जनम मरण दोहू महिं नाहीं जन परउपकारी आये ॥
जीअ दानु दे भगती लाइन हरि स्यौं लैनि मिलाये ॥२॥
सच्चा ३अमरु सच्ची पातिसाही सच्चे सेती राते ।
सच्चा सुख सच्ची वडियाई ४जिसके से तिनि जाते ॥३॥
पँखा फेरीं पाणी ढोवाँ हरिजन कै पीसणु पीसि कमावाँ ॥
नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे ५जन देखणु पावाँ ॥४॥

[सेवक] **सूही महल्ला ५ ॥**

जिसके सिरि ऊपरि तूँ स्वामा सो दुखु कैसा पावै ॥
बोलि न जाणै माया मदि माता मरना चीति न आवै ॥१॥
मेरे रामराय तूँ संताँ का संत तेरे ॥ तेरे सेवक कौ भौ किछु
नाहीं जमु नहीं आवै नेरे ॥१रहाउ ॥
जो तेरै रंगि राते स्वामी तिन्हका जनम मरण दुखु नासा ॥
तेरी ६बख्स न मेटै कोई सतिगुर का ७दिलासा ॥२॥
नामु धियाइन सुख फल पाइन आठ पहर आराधहिं ॥
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै ८साधहिं ॥३॥

१--भाग्यशाली । २-उनके किये हुये सभी कार्य सफल हैं । ३-उनका बचन सच्चा है । ४-अर्थात् जिस मालिकके साथ सच्चा सम्बन्ध है; उसीको पहिचानकर उसमें मिल चुके हैं । ५-तेरे प्यारे सन्तजन । ६-बख़शीश । ७-बिश्वास । ८-पाँचों विकारों को वशमें कर लेते हैं ।

गियानु धियानु किछु करम न जाणां सार न जाणां तेरी ॥
सभते वॅडा सतिगुरु नानकु जिनि १कल राखी मेरी ॥४॥

[गुरुमुख] राग सूही महल्ला ३ (घरु१)

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न २ जापै ॥
गुरका सबदु महांरसु मीठा बिनु चाखे ३ सादु न जापै ॥
कोडी बदलै जनमु गँवाया चीन्हसि नाहीं आपै ॥
गुरमुखि होवै तां एको जाणैं हौंमैं दुखु न संतापै ॥१॥
बलिहारी गुर आपणें विटहुँ जिनि साचे स्यौं लिव लाई ॥
सबदु चीन्हि आतमु परगासिया सहजे रहिया समाई ॥१ रहाउ ॥
गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥
जीउ पिंडु सभु गुरते उपजै गुरमुखि कारज सँवारे ॥
मनमुखि अंधा अंधु कमावै ४बिखु खटे संसारे ॥
माया मोहि सदा दुखु पाये बिन गुर अति पियारे ॥२॥
सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाये ॥
साचा सबदु सिफ़ति है साची साचा मंनि वसाये ॥
सच्ची बाणी गुरमुखि आखै हौंमैं विचहुँ जाये ॥
आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाये ॥३॥
गुरमुखि ५ घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाये ॥
सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुरकै सहजि सुभाये ॥
मनमुख सदही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाये ॥
जम कालि बाधा तृसना ६दाधा बिनु गुर कवण छडाये ॥४॥

१-मेरी सुधि ली। २--नहीं जाना जा सकता। ३--स्वाद या रस का पता नहीं लग सकता। ४--जहर। ५--पुरुषार्थ करता है। ६--जलता रहता है।

सच्चा तीरथु जितु सतसरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाये ॥
अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाये तितु नातै मलु जाये ॥
सच्चा सबदु साचा है निरमलु ना मलु लगै न लाये ॥
सच्ची सिफति सच्ची सालाह पूरे गुर ते पाये ॥५॥
तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाये ॥
हुकमु होवै तां निरमलु होवै हौमैं विचहु जाये ॥
गुरकी साखी सहजे चाखी तृसना अगनि बुझाये ॥
गुरकै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिया समाये ॥६॥
हरि का नामु सति करि जाणै गुरकै भाय पियारे ॥
सच्ची वडियाई गुरते पाई सच्चै नायँ पियारे ॥
एको सच्चा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥
आपे मेलि लये तां बखसे सच्ची भगति सँवारे ॥७॥
सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥
जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै॥
नामु धियाये तां सतिगुर भाये जो इच्छै सो फलु पाये ॥
नानक तिसदा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गँवाये ॥८॥

[बिरह] राग सूही महल्ला ४ (घरु २)

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पियारा हौं तिसु पहिं आपु वेचाईं ॥१॥
दरसनु हरि देखण कै ताईं ॥ कृपा करहिं तां सतिगुरु मेलहिं हरि हरि नामु धियाईं ॥१॥ रहाउ ॥
जो सुखु देहिं त तुझहिं अराधीं दुख भी तुझै धियाईं ॥२॥

जे भुख देहिं त इतही [१]राजा दुख विचि सूख मनाई ।३।
तनु मनु काटि काटि सभु अरपीं विचि अगनी आपु जलाई ।४।
पॅखा फेरीं पाणी ढोवाँ जो देवहिं सो खाई ।५।
नानकु गरीबु ढहि पया दुआरै हरि मेलि लैहु वडियाई ।६।

अखीं काढि धरीं चरणां तलि सभ धरती फिरि मत पाई ।७।
जे पासि बहालहिं तां तुझहिं अराधीं जे मारि कढहिं भी धियाई।८।
जे लोकु सलाहे तां तेरी उपमा जे निंदैं त छोडि न जाई ।९।
जे तुधु वलि रहै त कोई किहुँ आखौं तुधु विसरियै मरि जाई।१०।
वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरीं संत मनाई ।११।
नानकु विचारा भया दिवाना हरि तौ दरसन कै ताई ।१२।

[२]झखड़ झागी मींहु वरसै भी गुरु देखण जाई ।१३।
समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहिं जाई ।१४।
ज्यौं प्राणी जल बिनु है मरता त्यौं सिखु गुर बिनु मरि जाई।१५।
ज्यौं धरती सोभ करे जलु बरसै त्यौं सिखु गुर मिलि [३]बिगसाई ।१६।
सेवक का होय सेवकु वरताँ करि करि बिनौ बुलाई ॥१७॥
नानक की बेनंती हरि पहिं गुर मिलि गुर सुखु पाई ।१८।

तूँ आपे गुर चेला है आपे गुर विचु दे तुझहिं धियाई ।१९।
जो तुधु सेवहिं सो तूहै होवहिं तुधु सेवक पैज रखाई ।२०।
भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ।२१।
जिसु तूँ देहिं सोई जनु पाये होर निहफल सभ चतुराई ।२२।

१--सन्तुष्ट। २--मूसलाधार बरसात, आँधी और तूफ़ान सहित। ३--प्रफुल्लित।

सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोया मनु जागाई ।२३।
इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनिदासु कराई ।२४।

जे गुर झिड़कै त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडियाई ।२५।
गुरमुखि बोलहिं सो थायँ पाये मनमुखि किछु थायँ न पाई ।२६।
१पाला २कॅकर ३वरफ़ वरसै गुरसिख गुर देखण जाई ।२७।
सभु दिनसु रैणि देखौं गुर अपुना विचि अखीं गुरपैर धराई ।२८।
अनेक उपाव करीं गुर कारणि गुर भावै सो थायँ पाई ।२६।
रैणि दिनसु गुरचरण अराधीं दया करहु मेरे साईं ।३०।
नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि तृपति अघाईं ।३१।
नानक का प्रभु पूरि रहियो है जत कत तत गोसाईं ।३२।

सूही महल्ला ५ ॥

(गुणवंती)

जो दीसै गुर सिखड़ा तिसु निवि निवि लागौं पाँय जीउ ॥
आखां बिरथा जीअकी गुर सॅजणु देहि मिलाय जीउ ॥
सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु ४अनत न काहू जाय जीउ ॥
इहु मनु ५तैंकूँ ६डेवसाँ मैं मारगु देहु बताय जीउ ॥
हौं आया दूरहुँ चलिकै मैं ७तॅकी तौ सरणाय जीउ ॥
मैं आसां रखी चित्ति महिं मेरा सभो दुख गँवाय जीउ ॥
इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहैं सु कार कमाय जीउ ॥
तियागें मनकी मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥
इयौं पावहिं हरिदरसावड़ा नहँ लगै तत्ती वाउ जीउ ॥

१--सर्दी, कुहरा । २--तुषार । ३--ओले । ४--दूसरी तरफ़ । ५--तुझको । ६--दूँगा । ७--देखी ।

हौं आपहुँ बोलि न जांणदा मैं कहिया सभु हुकमाउ जीउ ॥
हरि भगति खजाना बखसिया गुरि नानक कीया पसाउ जीउ ॥
मैं बहुड़ि न तृसना भुखड़ी हौं रँजा तृपति अघाय जीउ ॥
जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागौं पाय जीउ ॥

राग सूही की वार

[रहनी] सलोकु महल्ला ३ ॥

जिन्ही चलणु जाणिया से क्यों करहिं १विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सँवारनहार ॥१॥

[वैराग्य] महल्ला २ ॥

राति कारणि धनु संचियै भलके चलणु होय ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होय ॥२॥

[विनय] महल्ला १ ॥

सतिगुर भीखिया देहि मैं तूँ संम्रथु दातारु ॥
हौंमैं गरबु निवारियै कामु क्रोध अहंकारु ॥
लबु लोभु परनिंदा जालियै नामु मिले आधारु ॥
अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहुँ न होय ॥
नानक इहबिधि छुटियै नदरि तेरी सुख होय ॥१॥

[धन्य] महल्ला २ ॥

नानक तिनां बसंतु है जिन घरि वसिया कंतु ॥

१--फैलाओ ।

जिन्हके कंत १ दिसापुरी से अहिनिसि फिरहिं जलंत॥२॥

[अनन्य] सलोक महल्ला २ ॥

किसही कोई कोय २ मंभु निमाणी एक तूँ ॥
क्यों न मरीजै रोय जां लगु चित्ति न आवही ॥१॥

[अनन्य] महल्ला २ ॥

जां सुखु तां रावियौ दुखि भी संम्हालियोए ॥
नानकु कहै सियाणिये इयौं कंत मिलावा होय ॥३॥

राग बिलावल

[सतगुरु] बिलावल महल्ला ५ ॥

भूले मारगु जिनहिं बताया, ऐसा गुर वडभागी पाया ॥१॥
सिमरि मनां रामनामु ३ चितारे, बसि रहे हिरदै गुरचरन पियारे ॥१रहाउ॥
कामि क्रोधि लोभि मोहि मन लीना, बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥२॥
दुख सुख करत जनमि ४ फुनि मूआ, चरनकमल गुरि ५ आसमु दीया ॥३॥
अगनिसागर बूडत संसारा, नानक बाँह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥४॥

१--परदेस। २-मैं। ३—सुमिरन करके। ४—फिर। ५—ठौर-ठिकाना।

[चेतावनी] **बिलावल महल्ला ५ ॥**

१ मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नहीं बूझै ॥
२ बाद ३ साद अहंकार महिं मरणा नहीं सूझै ॥१॥
सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥
देखि ४ कसुंभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥१॥रहाउ॥
करि करि पाप ५ दरबु कीया वरतण कै ताई ॥
माटी स्यौं माटी रली नांगा उठि जाई ॥२॥
जाकै कीयै स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥
अंतकालि भजि जाहिंगे काहे जलहु करोधी ॥३॥
दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमां ॥
कह नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥४॥

[सत्संग-कुसंग] **बिलावल महल्ला ५ ॥**

पाणी पॅखा पीसु दास कै तब होहिं निहालु ॥
राज मिलख ६ सिकदारियाँ अगनी महिं जालु ॥१॥
संतजनां का ७ छोहरा तिसु चरणी लागि ॥
मायाधारी छत्रपति तिन्ह छोडौ तियागि ॥१॥रहाउ॥
संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥
गृह ८ साकत छत्तीह प्रकार ते बिखू समान ॥२॥
भगत जनां का ९ लूगरा ओढि नगन न होई ॥
साकत १० सिरपाउ रेशमी पहिरत पति खोई ॥३॥

१—मृत्यु। २—झगड़े बखेड़े। ३—स्वाद-रस। ४—माया का झूठा रंग। ५—धन एकत्र किया। ६-सरदारियाँ। ७-सेवक। ८-मनमुख जीव। ९-फटा-पुराना वस्त्र। १०-सिरोपा (रेशमी पगड़ी)।

साकत स्यौं मुखि जोरियै अधबीचहुँ टूटै ॥
हरिजन की सेवा जो करै १इत ऊतहिँ छूटै ॥४॥
सभ किछु तुम्ह ही ते हुआ आपि बणत बणाई ॥
दरसनु भेंटत साध का नानक गुण गाई ॥५॥

[चेतावनी] **बिलावल महल्ला ५ ॥**

बिन हरि कामि न आवत हे ॥
जा स्यौं २राचि माचि तुम्ह लागे उह मोहनी मोहावत हे।१ रहाउ।
कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ।
उरझि रहियो इंद्री रस-प्रेरियो बिखै ठगौरी खावत हे ।१।
३तृण को मंदरु साजि सँवारियो पावकु तलै जरावत हे ।
ऐसे ४गढ़ महिं ५ऐंठि ६हठीलो फूलि फूलि क्या पावत हे ।२।
पंच दूत मूड़ परि ठाढ़े केस गहे फेरावत हे ॥
द्रसटि न आवहिं अंधि अगियानी सोय रहियो ७मद मावत हे।३।
जालु पसारि चोग ८बिसथारी पंखी ज्यौं ९फाहावत हे ॥
कहु नानक बंधन काटन कौ मैं सतिगुरु पुरखु धियावत हे ॥४॥

[नाम-विहीन] **बिलावल महल्ला ९ ॥**

जामैं भजनु रामको नाहीं ॥
तेहि नर जनमु अकारथ खोया यह राखहु मन माहीं ।१ रहाउ।
तीरथ करै व्रत फुनि राखै नहँ मनूआ बसि जाकौ ॥
निहफल धरम ताहि तुम मानो साचु कहत मैं याकौ ॥१॥

१-यहाँ भी और वहाँ भी । २-आनंद मनाकर । ३-फूँसका मकान । ४-किला । ५-अभिमान-सिहत । ६-हँठ करके । ७-नशेमें मतवाला हो रहा है । ८-दाना फैला दिया है । ९-फँसाता है ।

जैसे पाहनि जल महिं राखियो १भेदै नाहिं तेहि पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानौ भगतिहीन जो प्रानी ॥२॥
कलि मैं मुकति नाम ते पावत गुर यह भेद बतावै ॥
कहु नानक सोई नर २गरुआ जो प्रभके गुन गावै ॥३॥

[उपदेश] **बिलावल महल्ला १ ॥**

मनका कहिया ३मनसा करै, इहु मनु पुंन पापु उचरै ॥
माया मदि माते तृप्ति न आवै, तृप्ति मुकति मनि सच्चा भावै ।१।
तन धन कलतु सभु देख अभिमाना, बिन नांवै किछु संगि न जाना ॥ रहाउ ॥
४कीचहिं रस भोग खुसियाँ मन केरी, धनु लोकां तन भसमै ढेरी ॥
खाकु खाकु रलै सभु फैल, बिन सबदै नहीं उतरै मैल ॥२॥
गीत राग घन ताल सि कूरे, त्रिहुगुण उपजै बिनसै दूरे ॥
दूजी दुरमति दरदु न जाय, छूटै गुरमुखि दारू गुण गाय ॥३॥
धोती ऊजल तिलक गलि माला, अंतरि क्रोधु पड़हिं नटसाला ॥
नामु विसारि माया मदु पाया, बिनु गुरभगति नाहीं सुख थीआ॥४।
६सूकर ७सुआन ८गरधभ ९मंजारा, पसू मलेछ नीच चंडाला ॥
गुरते मुहुँ फेरे तिन्ह जोनि भवाईयै, बंधन बाधिया आईयै जाईयै ।५।
गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥
साची दरगह पूछ न होय ॥ मानै हुकमु १०सीझै दरि सोय ।६।

१--जिस प्रकार पत्थरको पानी नहीं जोड़ सकता । २--कीमतदार । ३--बुद्धि । ४--किये जावें । ५--कार्यवाही । ६--सूअर । ७--कुत्ता । ८--गधा । ९--बिल्ली । १०--प्रवाण होवै ।

सतिगुरु मिलै त तिसकौ जाणै, रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥
हुकमु पछाणि सच्चै दरि वासु, काल बिकाल सबदि भये नासु ॥७॥
रहै अतीत जाणै सभु तिसका, तनु मनु अरपै है इह जिसका ॥
ना उहु आवै न उहु जाय, नानक साचे साचि समाय ॥८॥

राग गोंड

[गुरुसुमिरण] गोंड महल्ला ५ ॥

गुरकी मूरति मन महिं धियानु, गुरके सबदि मंत्रु मनु मानु ॥
गुरके चरन रिदै लै धारौ, गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारौ ॥१॥
मत कौ भरमि भूलै संसारि, गुर बिनु कोय न उतरसि पारि ।१रहाउ।
भूले कौ गुरि मारगि पाया, अवरि तियागि हरि भगती लाया ॥
जनम मरन की त्रास मिटाई, गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥२॥
गुरप्रसादि ऊरध कमल बिगास, अंधकार महिं भया प्रगास ॥
जिनि कीया सो गुरते जानिया, गुर किरपा ते मुगध मनु मानिया ॥३॥
गुर करता गुरु करणै जोगु, गुर परमेसरु है भी होगु ॥
कहु नानक प्रभि इहै जनाई, बिनु गुर मुकति न पाईयै भाई ।४।

[गुरुसुमिरण] गोंड महल्ला ५ ॥

गुरू गुरू गुर करि मन मोर, गुरू बिनां मैं नाहीं होर ॥
गुरकी टेक रहहु दिन-राति, जाकी कोय न मेटै दाति ॥१॥

गुर परमेसरु एको जाणु, जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१ रहाउ ॥
गुरचरणी जाका मनु लागै, दूख दरदु भ्रमु ताका भागै ॥
गुरकी सेवा पाये मानु, गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥
गुरका दरसनु देखि निहाल, गुरके सेवककी पूरन घाल ॥
गुरके सेवक कौ दूखु न बियापै, गुरका सेवक दहदिसि जापै ॥३॥
गुरकी महमा कथनु न जाय, पारब्रहमु गुरु रहिया समाय ॥
कहु नानक जाके पूरे भाग, गुरचरणी ताका मनु लाग ।४।

[गुरुसुमिरण] **गोंड महल्ला ५ ॥**

गुर मेरी पूजा गुरु गोबिंदु, गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥
गुरु मेरा १देउ २अलख ३अभेउ, सरब पूज चरन गुर सेउ ।१।
गुर बिन अवरु नाहीं मैं थाउँ, अनदिनु जपौं गुरू गुर नाउँ ।१ रहाउ।
गुरु मेरा गियानु गुरु रिदै धियानु, गुरु गोपालु पुरखु भगवान ॥
गुरकी सरणि रहौं कर जोरि, गुरू बिनां मैं नाहीं होरु ॥२॥
गुरु बोहिथ तारे भवपारि, गुर सेवा जमते छुटकारि ॥
अंधकार महिं गुरमंत्र उजारा, गुरकै संगि सगल निसतारा ॥३॥
गुरु पूरा पाईयै वडभागी, गुरकी सेवा दूखु न लागी ॥
गुरका सबदु न मेटै कोय, गुरु नानकु नानकु हरि सोय ॥४॥

[भक्तिकी बड़ाई] **गोंड महल्ला ५ ॥**

उनकौ खसम कीनी ४ठाकहारे, दास संगि ते मारि बिदारे ॥
गोबिंद भगत का महलु न पाया, राम जनां मिलि मंगलु गाया ।१।
सगल सृसटि के पंच ५सिकदार, रामभगत के ६पानीहार ।१ रहाउ।

१--इष्टदेव । २--जो लखा न जा सके । ३--जिसका भेद नहीं पाया जा सकता।
४--रुकावट डालनेवाली (माया) । ५--सरदार । ६--पानी ढोनेवाले (सेवक)।

जगत पास ते लेते दानु, गोबिंद भगत कौ करहिं सलामु ॥
लूटि लेहिं साकत पति खोवहिं,साधजनां पग मलिमलि धोवहिं ।२।
पंच पूत जणे इक माय, उतभुज खेलु करि जगत वियाय ॥
तीनि गुणां कै संगि रचि रसे, इनकौ छोडि ऊपरि जन बसे ।३।
करि किरपा जन लीये छडाय, जिसके से तिन रखे हटाय ॥
कहु नानक भगति प्रभ सारु, बिनु भगती सभ होय खुआरु ।४।

[संत-महिमा] **गोंड महल्ला ५ ॥**

संतनकै बलिहारै जाऊँ,संतनकै संगि राम गुन गाऊँ ॥
संतप्रसादि १किलविख सभि गये,संत सरणि वडभागी पये ।१।
राम जपत किछु बिघन न वियापै,गुरपरसादि अपुना प्रभु जापै॥
॥१॥ रहाउ ॥
पारब्रहमु जब होय दयाल,साधूजन की करै २रवाल ॥
कामु क्रोधु इसु तन ते जाय,राम रतनु वसै मनि आय ॥२॥
सफलु जनमु तांका परवाणु, पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥
भाय भगति प्रभ कीरतनि लागै, जनमजनम का सोया जागै ।३।
चरनकमल जन का आधारु, गुण गोबिंद ३रौ सचु वापारु ॥
दास जनां की मनसा पूरि,नानक सुखु पावै जन धूरि ॥४॥

१—पापों के संस्कार । २—चरनधूरि । ३—लीन हो रहो ।

राग रामकली

[गुरुमुख] रामकली महल्ला ४ (घरु १)

जे वडभाग होवहिं वडभागी तां हरि हरि नाम धियावै ॥
नामु जपत नामो सुख पावै हरिनामे नामि समावै ।१।
गुरमुखि भगति करहु सदा प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामु समाणी ॥१रहाउ ॥
हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीया ॥
जिसु वडभागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीया।२।
रतनु जवेहर लाल हरिनामां गुरि काढि १तली दिखलाया ॥
भागहीण मनमुखि नहीं लीया २तृण ओल्है लाख छपाया।३।
मसतकि भाग होवै धुरि लिखिया तां सतगुर सेवा लाये ॥
नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाये ।४।

[उपदेश] रामकली महल्ला ५ ॥

जपि गोबिंद गोपालु लालु ॥
रामनाम सिमरि तूँ जीवहिं फिरि न खाई महाकालु ॥१रहाउ॥
कोटि जनम भ्रमि भ्रमि आयौ,बड़े भागि साधसंगु पायौ ।१।
बिनु गुर पूरे नाहीं उद्धारु, बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ।२।

[संत-महिमा] रामकली महल्ला ५ ॥

भेंटत संगि पारब्रहमु चित्ति आया॥ संगति करत संतोखु मनि पाया ॥

१-हाथकी हथेलीपर रखकर । २-तिनके की ओटमें ।

संतह चरन माथा मेरो पौत, अनिक बार संतह डंडौत ।१।
इहु मनु संतनकै बलिहारी ॥
जाकी ओट गही सुखु पाया राखे किरपा धारी ॥१ रहाउ ॥
संतह चरण धोय धोय पीवां, संतह दरसु पेखि पेखि जीवां॥
संतह की मेरै मनि आस, संत हमारी निरमल रासि ।२।
संत हमारा राखिया पड़दा, संतप्रसादि मोहि कबहूँ न १कड़दा ॥
संतह संगु दीया किरपाल, संत सहाई भये दयाल ।३।
सुरति मति बुद्धि परगासु, गहिर गंभीर अपार गुणतासु ॥
जीअ जंत सगले प्रतिपाल, नानक संतह देखि निहाल ।४।

[चेतावनी]　　रामकली महल्ला ५ ॥

२सिंचहिं ३दरबु देहि दुखु लोग, तेरै काजि न अवरां ४जोग॥
करि अहंकारु होय वरतहिं अंध, जमकी ५जेवड़ी तूँ आगै बंध ।१।
छाडि ६विडाणी ७ताति मूड़े, ईहाँ बसना ८राति मूड़े ॥
माया के माते तैं उठि चलना, राचि रहियो तूँ संगि सुपना ॥१॥ रहाउ ॥
बाल ९बिवसथा १०बारिकु अंध, भरि जोबनि लागा ११दुरगंध।
१२तृतीय बिवसथा सिंचे माय, बिरधि भया छोडि चलियो पछुताय ।२।

१—मोह नहीं जकड़ सकता । २--इकट्ठा करता है । ३--धन । ४ --वास्ते । ५--रस्सी । ६--बेगानी । ७--जलन अथवा ईर्ष्या । ८--थोड़ी देर तक। ९--बाल -अवस्था । १०--बालक । ११--विषय-वासना रूपी दुर्गन्धि । १२--तीसरी अवस्था अर्थात् प्रौढ़ --आयु ।

चिरंकाल पाई द्रुलभ देह, नाम १बिहूणी होई खेह ॥
पसू परेत मुगध ते बुरी, तिसहिं न बूझै जिनि एह २सिरी ॥३॥
सुणि करतार गोविंद गोपाल, दीन दयाल सदा किरपाल ॥
तुमहि छडावहु छुटकहिं बंध बखसि मिलावहु नानक जग अंध।४।

[उपदेश] रामकली महल्ला ५ ॥

३ बीजमंत्र हरिकीरतनु गाउ, आगै मिली निथावें थाउँ ॥
गुर पूरे की चरणी लागु, जनम जनम का सोया जागु ॥१॥
हरि हरि जाप जपला ॥
गुरकिरपा ते हिरदै वासै भौजलु ४ पार परला ॥१ रहाउ ॥
नामु निधानु धियाये मन अटल, तां छूटहिं माया के ५ पटल ॥
गुरका सबदु अंमृतु रस पीउ, तां तेरा होय निरमल जीउ ।२।
सोधत सोधत सोधि बीचारा, बिनु हरिभगति नहीं छुटकारा ॥
सो हरिभजनु साधके संगि, मनु तनु ६ रापै हरि कै रंगि ॥३॥
छोडि सियाणप बहु चतुराई, मन बिनु हरिनाँवै ७ जाय न काई ॥
दया धारी गोविंद गुसाई, हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥४॥

[माया] रामकली महल्ला ५ ॥

८गहु करि पकरी न आई हाथ, प्रीति करी चाली नहीं साथि ॥
कहु नानक जौ तियागि दई, तब उह चरणी आय पई ॥१॥
सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ रामनाम बिनु गति नहीं काई
गुर पूरा भेंटत उद्धार ॥१ रहाउ॥

१—बगैर। २—रची है। ३—मूल-मन्त्र (अर्थात् जो अंदर में नामकी अखण्ड धुनि होती है। ४—पार हो गया। ५—परदे। ६—रंगा जाता है। ७—ठौर-ठिकाना। ८—पक्की करके।

जब उसकौ कोई देवै मानु, तब आपस ऊपर रखै गुमानु।
जब उसकौ कोई मनि परहरै, तब उह सेवकि सेवा करै ।२।
मुखि १बेरावै अंति ठगावै, इकतु ठौर उह कहीं न समावै ॥
उन मोहे बहुते ब्रहमंड, राम जनीं कीनी खंड खंड ।३।
जो माँगे सो भूखा रहै, इसु संगि राचै सो कछू न लहै ॥
इसहि तियागि सतसंगति करै, वडभागी नानक उह तरै ।४।

[मनमुख] रामकली महल्ला ५ ॥

कौडी बदलै तियागै रतनु, छोडि जाय ताहू का जतनु ॥
सो संचै जो २होछी बात, माया मोहिया ३टेढौ जात ।१।
अभागे तैं लाज नाहीं ॥ सुखसागर पूरन परमेसरु हरि न चेतियो मन माहीं ॥१रहाउ॥
अंमृतु ४कौरा ५बिखिया मीठी,साकत की बिधि नैनहुँ डीठी ॥
कूड़ि कपट अहंकारि रीझाना,नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ।२।
माया कारणि सहदी झूरै, मनमुख कबहिं न उसतति करै ॥
निरभौ निरंकार दातारु, तिसु स्यौं प्रीति न करै गँवारु ।३।
सभ साहां सिरि साचा साहु, वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥
मोह मगन लपटियो भ्रम गिरह, नानक तरियै तेरी मिहर ।४।

[नाम] रामकली महल्ला ५॥

रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोख गियान ॥
सूख सहज दया का ६पोता, हरिभगतां हवाले होता ॥
मेरे राम को भंडारु ॥

१--दिलासा देती है । २--तुच्छ । ३--टेढ़ा । ४--कड़वा । ५--विषय-विकार । ६--खज़ाना ।

खात खरचि कछु १तोटि न आवै अंतु नहीं हरि पारावारु ।१ रहाउ।
कीरतनु निरमोलक हीरा, आनंद गुणी गहीरा ॥
अनहद बाणी पूँजो, संतन हथि राखी कूँजी ॥२॥
सुंन समाधि गुफा तहँ आसनु, केवल ब्रह्म पूरन तहँ २बासनु।
भगत संगि प्रभ गोसटि करत, तहँ हरख न सोग न जनम न मरत ॥३॥
करि किरपा जिसु आपि दिवाया, साधसंगि तिनि हरिधनु पाया।
दयाल पुरख नानक अरदासि, हरि मेरी ३वरतणि हरि मेरी ४रासि ॥४॥

[नाम] रामकली महल्ला ६ ॥

साधो कौन जुगति अब कीजै ॥
जाते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु ५भीजै ॥१ रहाउ॥
मनु माया में उरझि रहियो है बूझै नहँ कछु गियाना ॥
कोन नामु जग जाकै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥
भये दयाल कृपाल संतजन तब इह बात बताई ॥
सरब धरम मानो तेहि कीये जेहि प्रभ कीरति गाई ॥२॥
राम नाम नर ६निसिबासुर में निमख एक उरधारै ॥
जम को ७त्रास मिटै नानक तेहि अपनो जनमु सँवारै ॥३॥

[चेतावनी] रामकली महल्ला ५ ॥

प्रानी नाराइन सुधि लेहु ॥
छिनु छिनु औध घटै निसबासुर बृथा जात है देह ॥१ रहाउ॥

१-कमी। २-बसता है। ३-बर्तावकी वस्तु। ४-पूँजी। ५-रंगा जावे। ६-रात-दिन ७-भय।

१तरनापो बिखियन स्यौं खोयौ बालपनु अगियाना ॥
बिरध भयौ अजहूँ नहीं समझै कौनु कुमति २उरझाना ॥१॥
मानस जनमु दीयौ जेहि ठाकुर सो तैं क्यों बिसरायौ ॥
मुकति होत नर जाकै सिमरै निमख न ताकौ गायौ ॥२॥
माया को ३मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥
नानक कहत चेति चिंतामनि होइहै अंति सहाई ॥३॥

[गुरु-शब्द] **रामकली महल्ला १** (असटपदियाँ)

खटुमटु देही मन बैरागी, सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥
वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा, गुरबचनी सचि नामि ४पतीणा ।१।
प्राणी रामभगति सुखु पाईयै ॥
गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै हरि हरि नामि समाईयै ॥१ रहाउ॥
माया मोहु ५बिवरजि समाये, सतिगुरु भेटे मेलि मिलाये ॥
नामु रतनु निरमोलकु हीरा, तितु राता मेरा मनु धीरा ॥२॥
हौंमैं ममता रोगु न लागै, रामभगति जमका भौ भागै ॥
जमु ६जंदारु न लागै मोहि, निरमल नामु रिदै हरि ७सोहि॥३॥
सबदु बीचारि भये निरंकारी, गुरमति जागे दुरमति ८परहारी ॥
अनदिनु जागि रहे लिव लाई, जीवनमुकति गति अंतरि पाई ।४।
अलिपत गुफा महिं रहहिं निरारे, ९तसकर पंच सबदि संघारे ॥
पर घर जाय न मनु डोलाये, सहज निरंतरि रहऊँ समाये ॥५॥
गुरमुखि जागि रहे औधूता, सद बैरागी तत १०परोता ॥
जगु सूता मरि आवै जाय, बिनु गुरसबद न सोझी पाये ॥६॥

१—युवावस्था । २—फँस रहा है । ३—अभिमान । ४—विश्वास उत्पन्न हो गया । ५—मनको रोककर । ६—यमदूतों की मार । ७—शोभा देता है । ८—त्याग दी । ९—चोर । १०—तत्त्वमें समाया हुआ ।

अनहद सबदु वजै दिन राती, १अविगत की गति गुरमुखि जाती ।
तौ जानी जां सबदि पछानी, एको रवि रहिया निरबानी ।७।
सुंन समाधि सहजि मनु राता, तजि २हौं लोभा एको जाता ।
गुर चेले अपना मनु मानिया, नानक दूजा मेटि समानिया ।८।

[आनन्द] **रामकली महल्ला ३ ॥**

अनंदु भया मेरी माय सतिगुरू मैं पाईया ॥
सतिगुरु त पाया सहज सेती मनि वजीयाँ वाधाईयाँ ॥
राग रतन परवार परीयाँ सबद गावण आईयाँ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिन्हीं वसाईया ॥
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मैं पाईया ॥१॥

ऐ मन पियारिया तूँ सदा सचु समाले ॥
एहु कुटुंबु तूँ जि देखदा चलै नाहीं तेरै नाले ॥
साथि तेरे चलै नाहीं तिसु नालि क्यों चित्तु लाईयै ॥
ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईयै ॥
सतिगुरु का उपदेस सुणि तूँ होवै तेरै नाले ॥
कहै नानकु मन पियारे तूँ सदा सचु समाले ॥ ११॥

भगतां की चाल निराली !!
चालां निराली भगताँह केरी ३बिखम मारगि चलणा ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाहीं बोलणा ॥
४खंनियहुँ तिखी ५वालहुँ निकी ६एतु मारगि जाणा ॥

१—अपार । २—अहं-पने का लोभ त्यागकर । ३—कठिन ।४--तलवारकी धार से अधिक तेज़ ५- बाल से भी बारीक । ६--ऐसे मार्गपर जाना होता है ।

गुरपरसादी जिनीं आपु तजिया हरि वासना समाणी ॥
कहै नानकु चाल भगतां जुगहुँ जुगु निराली ॥१४॥

जेको गुरते वेमुखु होवै विनु सतिगुर मुकति न पावै ॥
पावै मुकति न होर थैं कोई पुछहु बिबेकियाँ जाये ॥
अनेक जूनो भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाये ॥
फिरि मुकति पाये लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाये ॥
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाये ॥२२॥

सतिगुरू बिनां होर कच्ची है बाणी ॥
बाणी त कॅची सतिगुरू बाझहुँ होर कॅचो बाणी ॥
कहँदे कॅचे सुणदे कॅचे कॅची आखि वखाणी ॥
हरि हरि नित करहिं रसना कहिया कछू न जाणी ॥
चितु जिनका हिरि लया माया बोलनि पये १रवाणी ॥
कहै नानकु सतिगुरू बाझहुँ होर कच्ची बाणी ॥२४॥

गुरका सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाऊ ॥
सबदु रतनु जित मंनु लागा एहु होआ २ समाउ ॥
सबद सेती मनु मिलिया सच्चै लाया भाउ ॥
आपे हीरा रतन आपे जिसनों देय बुझाय ॥
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाऊ ॥२५॥

हरिजीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाया ॥
वजाया वाजा पोण नौ दुआरे परगट कीये दसवां गुपतु रखाया ॥
गुर दुआरै लाय भावनी इकनां दसवां दुआर दिखाया ॥

१—खुलकर बातें करें; मगर सब व्यर्थ । २—आनन्द ।

तहँ अनेक रूप नाउँ नवनिधि तिसदा अंत न जाई पाया ।। कहै नानकु हरि पियारै जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाया ।।३८।।

रामकली की वार

[चेतावनी] **महला १ ।।**

नानकु आखै रे मनां सुणियै सिख सही ।।
लेखा रॅबु मंगेसिया बैठा कढि वही ।।
तलबां पौसिन १आकीयाँ बाकी जिनां रही ।।
अजराईल फरेसता होसी आय २तई ।।
आवणु जाणु न सुझई ३भीड़ी गली ४फही ।।
कूड़ ५निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ।।२।।

[सतगुरु] **सलोक महल्ला ५ ।।**

जैसा सतगुरु सुणींदा तैसो ही मैं डीठु ।।
विछुड़ियाँ मेले प्रभू हरि दरगह का ६बसीठु ।।
हरिनामो मंत्र दृढ़ाएँदा कटे हौंमैं रोगु ।।
नानक सतिगुरु तिनां मिलाया जिन्हां धुरे पैया संजोगु।१।

[गुरुदर्शन] **महल्ला ५ ।।**

धंनु सुवेला घड़ी धंनु धंनु मूरत पलु सार ।।
धंनु सुदिन सुसंजोगड़ा जितु डिठा गुरदरसारु ।।
मन कीयाँ इच्छां पूरियां हरि पाया अगम अपारु ।।

१—सख्त जोरदार । २—हिसाब चुकानेवाला । ३—तंग । ४—फँसी । ५—नष्ट हो जावेगा । ६—बैठक रखनेवाला ।

हौंमैं तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु ॥
जन नानकु लगा सेव हरि उधरिया सगल संसारु ॥२॥

[मनमुख का संग] महल्ला ५ ॥

मनमुखां केरी दोसती माया का सनबंधु ॥
वेखदियाँ ही भजि जानि कदे न पाइन बंधु ॥
जिचरु पैनंनि खावने तिचरु रखनि गंढु ॥
जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि १ गंधु ॥
जीअकी सार न जाणनी मनमुख अगियानी अंधु ॥
कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पॅथर बंधु ॥
अंधे आपु न जाणनी २ फकॅड़ पिटनि धंधु ॥
झूठै मोहि लपटाईया हौं हौं करत ३ बिहंधु ॥
कृपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेय ॥
जन नानक से जन ऊबरे जे सतिगुरु सरणि परे ॥२॥

[सन्तोष] महल्ला ५ ॥

काहे मन तूँ डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥
सतिगुरु पुरखु धियाय तूँ सभि दुख विसारणहारु ॥
हरिनामा आराधि मन सभि किलविख जाहिं विकार ॥
जिनकौ पूरबि लिखिया तिन रंगु लगा निरंकार ॥
उनी छडिया माया ४सुआवड़ा धनु संचिया नामु अपारु ॥
अठे पहर इकतै लिवै मंनेनि हुकमु अपारु ॥
जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पियारु ॥२॥

१-निन्दा। २-व्यर्थ के झूठे धंधों की खातिर खपते रहते हैं। ३-आयु बीत गई। ४-स्वाद या रस।

[उपदेश] **महल्ला ५॥**

सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥
हरि हरि नामु जपंतियाँ कोय न बंधै वाट ॥२॥

राग मारू

[गुरु की दाति] **मारू महला ४ ॥**

बाहरि ढूँढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहिं दिखाया था ॥
अनभौ अचरज रूप प्रभ पेखिया मेरा मन छोडि न कतहूँ जाया था ॥१॥
१मानकु पायौ रे पायौ हरि पूरा पाया था ॥
मोलि अमोलि न पाया जाई करि किरपा गुरू दिवाया था ॥१॥ रहाउ ॥
अदिसटु अगोचर पारब्रहमु मिलि साधू अकथ कथाया था ॥
अनहद सबदु दसम दुआरि वजियौ तहँ अंमृत नामु चुवाया था ॥२॥
तोटि नहीं मनि तृसना बूझी अखुट भंडार समाया था ॥
चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ घड़ियो रसु पाया था ।३।
सहजे आवां सहजे जावां सहजे मनु खेलाया था ॥
कहु नानक भरमु गुरि खोया तां हरि महलीं महल पाया था ॥४॥

१—मोती ।

[चेतावनी] **मारू महला ५** (घरु ३ असटपदियाँ)

लख चौरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पायौ ॥१॥
रे मूढ़े तूँ होछै रसि लपटायौ ॥
अंमृतु संगि बसतु है तेरै बिखिया स्यौं उरझायौ ॥१ रहाउ ॥
रतन जवेहर १बनजनि आयौ २कालरु लादि चलायौ ॥२॥
जेहि घर महिं तुधु रहना बसना सो घर चीति न आयौ ॥३॥
अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नहीं तुझु गायौ ॥४॥
जहाँ जाणां सो थानु विसारयो इक निमख नहीं मन लायौ ॥५॥
पुत्र कलत्र गृह देखि समग्री इसही महिं उरझायौ ॥६॥
जित को लायौ तित ही लागा तैसे करम कमायौ ॥७॥
जौ भयौ कृपालु तां साधसंगु पाया जन नानक ब्रहमु धियायौ ।८।

[उपदेश] **मारू महल्ला १ ॥**

घरि रहु रे मन मुगध इयाने, राम जपहु अंतर गति धियाने ॥
लालचु छोडि रचहु अपरंपर इयौं पावहु मुकति दुआरा हे ।१।
जिसु बिसरियै जमु ३ जोहिण लागै, सभि सुखु जाहिं दुखा फुनि आगै ॥
रामनामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम तत्त वीचारा हे ॥२॥
हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा, गुरमुखि हरिरसु अंतरि डीठा ॥
अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ।३।
रामनामु गुरबचनी बोलहु, संत सभा महिं एहु रसु ४टोलहु ॥
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मंझारा हे ।४।

१—खरीद करने को। २—कलर (अर्थात तुच्छ वस्तु)। ३—दुःख देने। ४—तलाश करो।

सचु तीरथि नावहु हरिगुण गावहु, तत्त वीचारहु हरि लिव लावहु ॥
अंतकालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पियारा हे ।५।
सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा, जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥
जिसकौ सतिगुरु मेलि मिलाये तिसु चूका जम भै भारा हे ।६।
पंचु तत्त मिलि काया कीनी, तिस महिं राम रतन लै चीनी ॥
आतमु रामु रामु है आतम हरि पाईयै सबदि वीचारा हे ।७।
सत संतोखि रहहु जन भाई, खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥
आतमु चीनि परातमु चीन्हु गुर संगति इहु निसतारा हे ।८।
साकत कूड़ कपट महिं टेका, अहिनिसि निंदा करहिं अनेका ॥
बिनु सिमरन आवहिं फुनि जावहिं ग्रभ जोनी नरक मंझारा हे।६।
साकत जमकी १काणि न चूकै, जमका डंडु न कबहूँ मूकै ॥
बाकी धरमराय की लाजै सिरि २अफरियो भार ३अफारा हे ।१०।
बिनु गुर साकत कहहु को तरिया, हौं मैं करता भव जल परिया ॥
बिनु गुर पार न पावै कोई हरि जपियै पारि उतारा हे ।११।
गुरकी दाति न मेटै कोई, जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥
जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभ अपर अपारा हे ।१२।
गुरते भूले आवहु जावहु, जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥
साकत मूढ़ अचेत न चेतहिं दुखु लागै तां राम पुकारा हे ।१३।
सुखु दुखु पुरब जनम के कीये, सो जाणै जिनि दातै दीये ॥
किसकौ दोसु देहि तूं प्राणी सहु अपणा कीया करारा हे ।१४।
हौंमैं ममता करदा आया, आसा मनसा बंधि चलाया ॥
मेरी मेरी करता क्या ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ।१५।

१-दण्ड । २--सिरपर बोझ लद गया । ३--भारी ।

हरिकी भगति करहु जन भाई, अकथ कथहु मन मनहिं समाई ।।
उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपनै दुखु काटे काटणहारा हे ।१६।
हरि गुर पूरे की ओट पराती, गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ।।
नानक रामनामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ।१७।

[गुरु-स्तुति] **मारू महल्ला ५** (सोलहे)

गुरु गोपाल गुरु गोविंदा, गुरु दयाल सदा बखसिंदा ।।
गुरु सासत सिमृत खटु करमां गुरु पवित्र असथाना हे ।।१।।
गुरु सिमरत सभ किलविख नासहिं, गुरु सिमरत जम संगि न फासहिं ।।
गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ।।२।।
गुरका सेवकु नरकि न जाये, गुरका सेवकु पारब्रहमु धियाये ।।
गुरका सेवकु साधसंगि पाये करदा नित जीअ दाना हे ।।३।।
गुर द्वारै हरिकीरतनु सुणियै, सतिगुरु भेंटि हरिजसु मुखि १भणियै ।।
कलि कलेस मिटाये सतिगुरु हरि दरगह देवै माना हे ।।४।।
अगमु अगोचर गुरू दिखाया, भूला मारगु सतिगुरि पाया ।।
गुर सेवक कौ बिघनु न भगती हरि पूर द्रढ़ाया गियाना हे ।।५।।
गुरि द्रसटाया सभनी ठाई, जलि थलि पूरि रहिया गोसाईं ।।
२ ऊँच ऊन सभ एक समाना मनि लागा सहजि धियाना हे ।।६।।
गुरि मिलियै सभ त्रिसन बुझाई, गुरि मिलियै नहँ जोहै माई ।।

१—उच्चारण कीजे । २—ऊँच और नीच ।

सतु संतोखु दीया गुरि पूरै नामु अंमृतु पी पाना हे ॥७॥
गुरकी बाणी सभ माहिं समाणी, आपि सुणीं तैं आपि वखाणी॥
जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाया १निहचल थानां हे ॥८॥
सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै, जो किछु करे सो आपण भाणे ॥
साधू धूरि २जाचहिं जन तेरे नानक सद कुरबाना हे ॥९॥

[गुरु-स्तुति] **मारू महल्ला ५ ॥**

सूरति देखि न भूल गँवारा, ३मिथन ४मोहारा झूठु पसारा ॥
जग महिं कोय रहणु न पाये निहचलु एकु नाराइणा ॥१॥
गुर पूरे की पौ सरणाई, मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥
एको मंत्रु दृढ़ाये औखधु सच नामु रिद गाइणा ॥२॥
जिसु नामै कौ तरसहिं बहु देवा, सगल भगत जाकी करदे सेवा ॥
अनाथां नाथु दीन दुखभंजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥३॥
होर दुआरा कोय न सूझै, त्रिभवण धावै तां किछु न बूझै ॥
सतिगुरु साहु भंडारु नाम जिसु इहु रतन तिसै ते पाइणा ॥४॥
जाकी धूरी करे ५पुनीता, सुर नर देव न पावहिं मीता ॥
सतिपुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेंटत पारि पराइणा ॥५॥
६पारजातु लोड़हिं मन पियारे, कामधेनु सोही दरबारे ॥
तृपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाय ७रसाइणा ॥६॥

१—जो चलायमान् न हो सके। २—माँगते हैं। ३—मिथ्या (असत्)। ४—ढेर। ५—पवित्र। ६—कल्पवृक्ष। ७—एक प्रकार की औषधि जो तांबे को सोना बनाने के काम आती है।

गुरकै सबदि मरहिं पंच १धातू, भै पारब्रहम होवहिं निरमला तूँ ॥
पारसु जब भेंटै गुरु पूरा तां पारसु परसि दिखाइणा ॥७॥
कई वैकुंठ नाहीं २लवैं लागे, मुकति बपुड़ी भी गियानी तियागे ॥
एकंकारु सतिगुर ते पाईयं हौं बलि बलि गुर दरसाइणा ॥८॥
गुरकी सेव न जाणै कोई, गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥
जिसनों लाय लये सो सेवकु जिसु वडभाग ३मथाइणा ॥९॥
गुरकी महिमा बेद न जाणहिं,४ तुच्छ मात सुणि सुणि वखाणहिं॥
पारब्रहम अपरंपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु ५सीतलाइणा।१०।
जाका सोय सुणी मनु जीवै, रिदै वसै तां ठंढा थीवै ॥
गुरमुखहुँ ६अलाये तां सोभा पाये तिसु जमकै पंथि न पाइणा।११।
संतनकी सरणाई पड़िया, जीउ प्राण धनु आगे धरिया ॥
सेवा सुरति न जाणां काई तुम करहु दया ७किरमाइणा ।१२।
निरगुण कौ संगि लेहु रलाये, करि किरपा मोहिं टहलै लाये ॥
पॅखा फेरों पीसौं संत आगै चरण धोय सुख पाइणा ॥१३॥
बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आया, तुमरी कृपा ते तुम सरणाया ॥
सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥१४॥
भये कृपाल गुसाईं मेरे, दरसनु पाया सतिगुर पूरे ॥
सुख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥१५॥

१—पाँचों विकार । २—उस नामकी तुलना में नहीं लग सकते । ३—मस्तक में । ४—बहुत थोड़ी सी । ५—शीतल-शान्त हो जाता है । ६—जो भी वचन कहे । ७—मुझ नीच कीड़े पर ।

राग भैरो

[गुरु-स्तुति] **भैरो महल्ला ४ ॥**

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु, सतिगुरु मेरा सच्चा साजु ॥
सतिगुरु मेरा सभस का दाता, सतिगुर मेरा पुरख बिधाता ।१।
गुर जैसा नाहीं को देव, जिसु मसतकि भागु सो लागा सेव ।१ रहाउ।
सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै, सतिगुरु मेरा १मारि जीवालै ॥
सतिगुरु मेरे की वडियाई, प्रगटु भई है सभनीं थाईं ॥२॥
सतिगुरु मेरा २ताणु निताणु, सतिगुरु मेरा घरि ३दीबाणु ॥
सतिगुरु के हौं सद बलि जाया; प्रगट मारग जिन करि दिखलाया ॥३॥
जिनि गुरु सेविया तिसु भौ न बियापै, जिन गुरु सेविया तिसु दुख न संतापै ॥
नानक सोधे सिंमृति बेद, पारब्रहम गुर नाहीं भेद ॥४॥

[संत-महिमा] **भैरो महल्ला ५ ॥**

संत मंडल महिं हरि मनि वसै, संत मंडल महिं ४दुरतु सभु नसै ॥
संत मंडल महिं निरमल रीति, संतसंगि होय एक परतीति ।१।
संत मंडल तहां का नाउँ, पारब्रहम केहल गुण गाउँ ॥१ रहाउ॥
संत मंडल महिं जनम मरण रहै, संत मंडल महिं जम किछू न कहै ॥
संत संगि होय निरमल बाणी, संत मंडल महिं नामु वखाणी ।२।

१--अर्थात् मन और इन्द्रियों को मारकर अमर बना देते हैं। २--दीन-हीनों का आसरा। ३--हज़ूरी पुरुष। ४--दुष्कृत अर्थात् पापकर्म।

संत मंडल का निहचल आसनु, संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥
संत मंडल महि निरमल कथा, संत संगि हौं मैं दुख नसा ।३।
संत मंडल का नहीं बिनासु, संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥
संत मंडल ठाकुर बिसरामु, नानक १ओतपोति भगवानु ।४।

[गुरुमहिमा] **भैरो महल्ला ५ ॥**

सतिगुर अपुने सुनी अरदासि, कारजु आया सगला रासि ॥
मन तन अंतरि प्रभू धियाया, गुर पूरे डरु सगल चुकाया ।१।
सभते वड समरथ गुरुदेव, सभि सुख पाई तिसकी सेव ॥रहाउ॥
जाका कीया सभु किछु होय, तिसका अमरु न मेटै कोय ॥
पारब्रहमु परमेसरु अनूप, सफल मूरति गुरु तिसका रूप ।२।
जाकै अंतरि बसै हरिनामु, जो जो पेखै सो ब्रहमगियानु ॥
बीस बिसुए जाकै मनि परगासु तिसु जन कै पारब्रहमु का निवासु ।३।
तिसु गुर कौ सद करीं नमसकार, तिसु गुर कौ सद जाउँ बलिहार ॥
सतिगुरके चरण धोय धोय पीवां, गुर नानक जपि जपि सद जीवां ४

[नाम-महिमा] **भैरो महल्ला ५** (असटपदियाँ घरु२)

जिस नाम रिदै सोई वड राजा, जिस नाम रिदै तिस पूरे काजा ॥
जिस नाम रिदै तिस कोटि धन पाये, नाम बिनां जनम बिरथा जाये ।१।
तिस सालाही जिस हरिधन रासि, सो वडभागी जिस गुर मसतकि हाथु ॥१रहाउ॥
जिस नाम रिदै तिस कोट कई सैना, जिस नाम रिदै तिस

१--जिस प्रकार माला के धागेमें मनके परोये रहते हैं—अर्थात् समाया हुआ ।

सहज सुखैंना ॥
जिस नाम रिदै सो सीतल हूआ, नाम बिनां धृग जीवण मूआ ।२।
जिस नाम रिदै सो जीवनमुकता, जिस नाम रिदै तिस सभही जुगता
जिस नाम रिदै तिन नौनिधि पाई, नाम बिनां भ्रमि आवै जाई ।३।
जिस नाम रिदै सो वेपरवाहा, जिस नाम रिदै तिस सद ही लाहा ॥
जिस नाम रिदै तिस वड परवारा, नाम बिनां मनमुख गाँवारा ।४।
जिस नाम रिदै तिस निहचल आसन, जिस नाम रिदै तिस तखति निवासन ॥
जिस नाम रिदै सो साचा साहु, नामहीण नाहीं पति वेसाहु ।५।
जिस नाम रिदै से सभ महिं जाता, जिस नाम रिदै सो पुरखु बिधाता ॥
जिस नाम रिदै सो सभते ऊँचा, नाम बिना १भ्रमि जोनि मूचा ॥६॥
जिस नाम रिदै तिस प्रगट २पहारा, जिस नाम रिदै तिस मिटिया अंधारा ॥
जिस नाम रिदै सो पुरख परवाणु, नाम बिनां फिरि आवण जाणु ॥७॥
तिन नाम पाया जिस भयौ कृपाल, साधसंगति महिं लखे गोपाल ॥
आवण जाण रहे सुखु पाया, कहु नानक तत्तै तत्तु मिलाया ।८।

१—बहुत योनियोंमें भ्रमता है । २—सामार्थ्य या शक्ति ।

राग बसंत

[सतगुरु] बसंत हिंडौल महल्ला १ ॥

साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुखं गँवाये ॥
करि किरपा हरिभगति दृढ़ाये अनदिनु हरिगुण गाये ॥१॥
मत भूलहिं रे मन चेति हरी ॥
बिनु गुर मुकति नाहीं त्रैलोई गुरमुखि पाईयै नाम हरी।१रहाउ।
बिनु भगती नहीं सतिगुर पाईयै बिनु भागां नहीं भगति हरी॥
बिनु भागां सतसंगु न पाईयै करमि मिलै हरिनामु हरी ॥२॥
घट घट गुपतु उपाये वेखै परगटु गुरमुखि संतजनां ॥
हरि हरि करहिं सो हरिरंग भीने हरिजलु अंमृत नाम मनां ॥३॥
जिनकौ तखति मिलै वडियाई गुरमुखि से परधान कीये ॥
पारसु भेंट भये से पारस नानक हरि गुर संगि थीये ॥४॥

[गुरु शब्द] राग बसंत हिंडौल महल्ला ४ ॥

मन खिन खिन भरमि भरमि बहु धावै तिल घर नहीं वासा पाईयै ॥
गुरि १अंकसु सबदु दारू सिरि धारियो घर मंदर आणि वसाईयै।१।
गोबिन्द जीउ सतसंगति मेलि हरि धियाईयै ॥
हौंमैं रोगु गया सुखु पाया हरि सहजि समाधि लगाईयै ॥१रहाउ॥
घर रतन लाल बहु माणक लादे मन भ्रमियां २लहि न सकाईयै।
ज्यों ३ओडा कूप ४गुहज ५खिन काढै त्यों सतिगुरि वसतु

१--हाथी को वश में रखने का हथियार । २--पा लेना । ३--एक विशेष जाति के लोग जो धरती सूँघकर जलका पता लगाते हैं । ४--ढूँढकर । ५--खोदकर ।

लहाईयै ॥२॥
जिन ऐसा सतिगुर साध न पाया ते धृग धृग नर जीवाईयै ॥
जनमु पदारथु पुंन फल पाया कौडी बदलै जाईयै ॥३॥
मधूसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईयै ॥
जन नानक निरबाण पद पाया मिलि साधू हरिगुण गाईयै।४।

[बाजी] **बसंत महल्ला ५** (घरु २ हिंडौल)

होय इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाय ॥
हरिनामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाय ॥१॥
इनबिधि पांसा ढालहु १बीर ॥ गुरमुखि नाम जपहु दिन
राती अंतकालि नहँ लागै पीर ॥१॥ रहाउ॥
करम धरम तुम्ह चौपड़ि साजहु सत करहु तुम्ह २सारी ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पियारी ॥२॥
उठि इसनानु करहु परभातै सोये हरि आराधे ॥
३बिखड़े ४दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घर
जाते ॥३॥
हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचन रचाया ॥
जन नानक गुरमुखि जो नर खेलै सो ५जिणि बाजी घर
आया ॥४॥

[उपदेश] **राग बसंत हिंडोल महल्ला ६ ॥**

साधो इह तनु मिथिया जानौ ॥
या भीतरि जो राम बसतु है साचो ताहि पछानौ ॥१रहाउ॥

१--ऐ भाई। २--नरद या गोट। ३--कठिन। ४--घाटियाँ। ५--जीतकर।

इह जग है १ संपति सुपने की देखि कहा २ऐंडानौ ॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानौ ॥
उसतति निंदा दोऊ ३ परिहर हरिकीरति उर आनौ ॥
जन नानक सभ ही में पूरन एक पुरख भगवानौ ॥२॥

[गुरुमुख] **बसंत महल्ला ९ ॥**

माई मैं धन पायौ हरिनाम ॥
मन मेरो धावन ते छूटियौ करि बैठो बिसराम ॥१ रहाउ ॥
माया ममता तन ते भागी उपजियो निरमल गियान ॥
लोभ मोह इह ४परसि न साकैं गही भगति भगवान ॥१॥
जनम जनम का संसा चूका रतन नामु जब पाया ॥
तृसना सगल बिनासी मन तें निज-सुख माहिं समाया ॥२॥
जाकौ होत दयालु किरपानिधि सो गोबिंद गुन गावै ॥
कहु नानक इहबिधि की ५ संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥

१--सामग्री । २--अहंकार करता है । ३--त्यागकर ।
४--छू नहीं सकते हैं । ५--सम्पति ।

राग सारंग की वार महल्ला ४

[गुरु] **सलोक महल्ला २ ॥**

गुर कुंजी १पाहू २निवल मन कोठा तन छत ॥
नानक गुर बिनु मनका ३ताक न ४ऊघड़ै अवर न कुंजी हॅथ ॥२॥

[सेवक] **सलोक महल्ला २ ॥**

जिचरु इहु मन लहरीं विचि है हौं मैं बहुतु अहंकारु ॥
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पियार ॥
सेवा थायँ न पवई तिसकी खपि खपि होये खुआर ॥
नानक सेवक सोई आखियै जो सिर धरै उतारि ॥
सतिगुरका भाणा मंनि लये सबद रखे उरधारि ॥१॥

[पारख] **सलोक महल्ला ३ ॥**

पराई अमाण क्यों रखियै दित्ती ही सुख होय ॥
गुरका सबदु ५गुरथैं ६टिकै होरथैं परगट न होय ॥
अंन्हे वसि माणक पाईया घर घर वेचण जाय ॥
उन्हाँ परख न आवई ७अढु न पॅलै पाय ॥
जे आपि परख न आवई तां पारखियाँ ८थावहुँ लयौ परखाय ॥
जे उस नालि चित्तु लाये तां वॅथु लहै नौनिधि पॅलै पाय ॥
घर होंदे धन जग भुॅखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होय ॥

१–मनुष्यका शरीर। २–ताला। ३–दरवाज़ा ४–खुले। ५–गुरुके द्वारा। ६–ठहर सकता है। ७–आधी दमड़ी। ८—के पास जाकर।

सबदु सीतल मन तन वँसै तिथै सोग विजोग न कोय ॥
वसतु पराई आपि गरब करे मूरख आपु गणाये ॥
नानक बिनु बूझे किनै न पाईयौ फिरि फिरि आवै जाये ॥१॥

राग मलार

वार मलार की सलोक महला १ ॥

(सतगुरु)

घर महिं घर दिखाय देय सो सतिगुरु पुरख सुजाण ॥
पंच सबद धुनकार धुनि तहँ बाजै सबदु नीसाण ॥
दीप १लोअ पाताल तँह खंडमंडल हैरान ॥
तार घोर २बाजित्र तहँ साचि तखति सुलतान ॥
३सुखमन कै घर राग सुनि ४सुंन मंडल लिव लाय ॥
अकथ कथा बीचारियै मनसा मनहिं समाय ॥
उलट कमल अंमृत भरिया इह मन कतहुँ न जाय ॥
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाय ॥
सभि सखियाँ पंचे मिलें गुरमुखि निजघर वास ॥
ससद खोजि इहु घर लहै नानक ताका दास ॥१॥

१—लोक। २—बज रहे हैं। ३—सुखमना नाड़ी। ४—दशम-द्वारा।

राग कानड़ा

[साध-संग] कानड़ा महल्ला ५ ॥

बिसरि गई सभि १ताति पराई ॥
जबते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥ रहाउ ॥
ना को बैरी नाहीं बिगाना सगल संगि हमकौ बनि आई ॥१॥
जो प्रभ कीनौ सो भल मानियौ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥
सभ महिं रवि रहिया प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई॥३॥

[गुरु-तीरथ] प्रभाती महल्ला १ ॥

अंमृत २नीर गियान मन ३मॅजन अठसठि तीरथ ४संगि गहे ॥
गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिख सो खोजि लहे ॥१॥
गुर समान तीरथ नहीं कोय ॥
सर संतोख ५तासु गुर होय ॥१॥ रहाउ ॥
गुर दरियाउ सदा जल निरमल मिलियां दुरमति मैल हरै ॥
सतिगुर पाइयै पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥
रत्ता साचि नाम ६तलहीयल सो गुरु ७परमल कहियै ॥
जाकी ८वास बनासपति सौरे तासु चरण लिव रहियै ॥३॥
गुरमुखि जीअ प्रान ऊपजहिं गुरमुखि ९सिव घर जाइयै ॥
गुरमुखि नानक सचि समाइयै गुरमुखि निजपद पाइयै ॥४॥

१--तपश। २--जल। ३--स्नान। ४--अपने साथ ही ले लेवे। ५--संतोष रूपी सरोवर उस गुरु का है। ६--हृदयके अंतर में। ७-- श्रेष्ठ। ८--सुगन्धि। ९--शिव-धाम अर्थात् निज-धाम।

सलोक वारां ते वधीक

[उपदेश] महल्ला ३ ॥

सतिगुरू न सेवियौ सबदि न रखियौ उरधारि ॥
धृग तिन्हां का जीविया कितु आये संसारि ॥
गुरमती भौ मनि पवै तां हरिरस लगै पियारि ॥
नाउँ मिलै धुरि लिखिया जन नानक पारि उतारि ॥१३॥

* गुरुमुख *

माया १भुवंगम सरपु है जगु घेरिया बिख खाय ॥
बिखका मारण हरिनामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाय ॥
जिनकौ पूरिब लिखिया तिन सतिगुरु मिलिया आय ॥
मिलि सतिगुर निरमल होइया बिख हौं मैं गया २बिलाय ॥
गुरमुखां के मुखि ऊजले हरिदरगह सोभा पाय ॥
जनु नानकु सदा कुरबाण तिन जो चालहिं सतिगुर भाय ॥२२॥

जैजावंती महल्ला ९ ॥

राम सिमर राम सिमर इहै तेरै काजि है ॥
माया को संगु तियागि प्रभ जू की सरनि लागि ॥
जगत सुख मान मिथिया झूठो सभ साजु है ॥१रहाउ ॥
सुपने ज्यौं धन पछानु काहे पर करत मानु ॥
३ बारू की भीत जैसे ४बसुधा को राजु है ॥१॥

१-जहरीला (कुण्डलीवाला नाग) २-नष्ट हो गई ३-रेतकी दीवार ४-पृथ्वीभर का राज्य

नानक जन कहत बात बिनसि १जैहै तेरो २गात ॥
छिन छिन करि गयौ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥

राग बसंत

[चेतावनी] **सलोक महल्ला ६ ॥**

गुन गोबिंद गायौ नहीं जनमु अकारथ कीन ॥
कहु नानक हरि भजु मनां जेहिबिधि जल को मीन ॥१॥
३ बिखियन स्यौं काहे रचियो ४ निमख न होहिं उदास ॥
कहु नानक भजु हरि मनां परै न जमकी फास ॥२॥
५तरनापो इयौं ही गयौ लीयौ जरा तन जीति ॥
कहु नानक भज हरि मनां ६औध जातु है बीति ॥३॥
बिरध भयौ सूझै नहीं काल पहूँचियो आन ॥
कहु नानक नर बावरे क्यों न भजे भगवान ॥४॥
धनु दारा संपति सगल ७जिनि अपुनी करि मानि ॥
इनमें कछु संगी नहीं नानक साची जानि ॥५॥
पतितउद्धारन भैहरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तेहि जानियै सदा बसतु तुम साथ ॥६॥
तनु धनु जेहि ८तोकौ दीयौ तां स्यौं नेह न कीन ॥

१-नष्ट हो जावेगा । २-शरीर । ३--विषय-विकारों में । ४--एक पलक भर भी । ५--युवावस्था । ६-आयु । ७--मत । ८--तुझको ।

कहु नानक नर बावरे अब क्यों डोलत दीन ॥७॥
तनु धनु १संपै सुख दीयौ अरु जेहि २नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मनां सिमरत काहि न राम ॥८॥
सभ सुखदाता राम है दूसर नाहिन कोय ॥
कहु नानक सुनि रे मनां तेहि सिमरत ३ गति होय ॥९॥
जेहि सिमरत गति पाईयै तेहि भजु रे तैं मीत ॥
कहु नानक सुन रे मनां औध घटत है नीत ॥१०॥
पाँच तत्त कौ तन रचियौ जानहु चतुर सुजान ॥
जेहि ते उपजियौ नानका लीन ताहि मैं मान ॥११॥
घटि घटि मैं हरिजू बसै संतन कहियौ पुकारि ॥
कहु नानक तेहि भजु मनां भौनिधि उतरहिं पारि ॥१२॥
सुखु दुखु जेहि परसै नहीं लोभ मोह अभिमान ॥
कहु नानक सुन रे मनां सो मूरत भगवान ॥१३॥
उसतति निंदिया नाहिं जेहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मनां मुकति ताहि तैं जानि ॥१४॥
हरख सोग जाकै नहीं बैरी मीत समान ॥
कहु नानक सुनि रे मनां मुकति ताहि तैं जान ॥१५॥
भै काहू कौ देत नहिं नहिं भै मानत ४आनि ॥
कहु नानक सुनि रे मनां गियानी ताहि बखानि ॥१६॥
जेहि बिखिया सगली तजी लीयौ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनि रे मनां तेहि नर माथै भाग ॥१७॥
जेहि माया ममता तजी सभते भयौ उदास ॥

१--सम्पति। २--सुन्दर घर अथवा मकान। ३--परमगति अर्थात् मोक्ष। ४--दूसरे का।

कहु नानक सुन रे मनां तेहि घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥
जेहि प्रानी १ हौंमैं तजी करता राम पछान ॥
कहु नानक वह मुकति नर इह मन साची मान ॥१९॥
भैनासन दुरमतिहरन कलि मैं हरि को नाम ॥
निसिदिन जो नानक भजै सफल होहिं तेहि काम ॥२०॥
जिहवा गुन गोबिंद भजहु २ करन सुनहु हरिनाम ॥
कहु नानक सुन रे मनां परहिं न जमकै धाम ॥२१॥
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै औरन लेत उद्धार ॥२२॥
ज्यौं सुपना अरु पेखना ऐसे जग कौ जानि ॥
इनमैं कछु साचो नहीं नानक बिनु भगवान ॥२३॥
निसिदिन माया कारने प्रानी डोलत्त नीत ॥
कोटन में नानक कोऊ नाराइन जेहि चीति ॥२४॥
जैसे जल ते ३बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ॥२५॥
प्राना कछू न चेतई मद माया कै अंध ॥
कहु नानक बिनु हरिभजन परत ताहि जमफंध ॥२६॥
जो सुख कौ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुन रे मनां दुरलभ मानुख देह ॥२७॥
माया कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरिभजन बिरथा जनमु ४ सिरान ॥२८॥
जो प्रानी निसिदिन भजे रूप राम तेहि जानु ॥

१--मैं-पना या अहं-भाव २--कानों के द्वारा । ३--पानी का बुलबुला।
४--बीत गया ।

१ हरिजन हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु ॥२६॥
मन माया मैं फधि रहियौ बिसरियौ गोबिंद नाम ॥
कहु नानक बिनु हरिभजन जीवन कौने काम ॥३०॥
प्रानी राम न चेतई २ मदि माया कै अंध ॥
कहु नानक हरिभजन बिनु परत ताहि जम-फंध ॥३१॥
सुख मैं बहु संगी भये दुख मैं संगि न कोय ॥
कहु नानक हरि भजु मनां अंति सहाई होय ॥३२॥
जनम जनम भरमत फिरियौ मिटियौ न जम को ३त्रासु ॥
कहु नानक हरि भजु मनां निरभै पावहिं ४बासु ॥३३॥
जतन बहुतु मैं करि रहियौ मिटियौ न मन को मानु ॥
दुरमति स्यौं नानक फधियौ राखि लेहु भगवानि ॥३४॥
बाल जुआनी अरु बिरध फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरिभजन बिनु बिरथा सभही मान ॥३५॥
५करणो हुतो सो ना कियौ परियौ लोभ कै फंध ॥
नानक ६समयो ७रमि गयौ अब क्यों रोवत अंध ॥३६॥
मन माया मैं रमि रहियौ निकसत नाहिनि मीत ॥
नानक मूरति चित्र ज्यौं छाडित नाहनि भीत ॥३७॥
नर चाहत कछु और औरे की औरे भई ॥
चितवत रहियौ ८ठगौर नानक फासी गलि परी ॥३८॥
जतन बहुत सुख के कीये दुख को कीयौ न कोय ॥
कहु नानक सुन रे मनां हरि भावै सो होय ॥३९॥

१--मालिक के प्यारे भक्त और संत-जन। २--मस्ती या नशा। ३--भय। ४--स्थान (ठौर)। ५--जो कार्य करना था, सो नहीं किया। ६--समय। ७--निकल गया। ८--बावलों की तरह टुगुर टुगुर देखता रह गया।

जगत भिखारी फिरत है सभको दाता राम ॥
कहु नानक मन सिमरु तेहि पूरन होवहिं काम ॥४०॥
झूठै मान कहा करै जग सुपने ज्यौं जान ॥
इनमैं कछु तेरो नहीं नानक कहियौ बखान ॥४१॥
गरब करत है देह को बिनसै छिन मैं माति ॥
जेहि प्रानी हरिजसु कहियौ नानक तेहि जग जीति ॥४२॥
जेहि घटि सिमरनु राम को सो नर मुकता जानु ॥
तेहि नर हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु ॥४३॥
एक भगति भगवान जेहि प्रानी कै नाहिं मन ॥
जैसे १सूकर २सुआन नानक मानौ ताहि तन ॥४४॥
३सुआमी को गृह ज्यौं सदा सुआन तजत नहीं नित ॥
नानक इहबिधि हरि भजहु इक मन होय इक चित्ति ॥४५॥
तीरथ ब्रत अरु दान करि मन में धरै ४गुमानु ॥
नानक निहफल जात तेहि ज्यौं ५कुंचर इसनानु ॥४६॥
सिर ६कंपियौ पग ७डगमगै नैन जोति ते हीन ॥
कहु नानक इहबिधि भई तऊ न हरिरस लीन ॥४७॥
निज करि देखियौ जगतु मैं को काहू को नाहिं ॥
नानक थिरु हरिभगति है तेहि राखौ मन माहिं ॥४८॥
जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै ज्यौं बालू की भीत ॥४९॥

१–सूअर । २–कुत्ता । ३–मालिकके घरको । ४–अहंकार । ५–हाथीका स्नान (अर्थात् जिस प्रकार हाथी स्नान करने के बाद अपने सिर के ऊपर मिट्टी डाल लेता है) । ६–काँपने लगा है । ७–पाँव चलनेमें लड़खड़ाने लगे हैं ।

राम गयौ रावनु गयौ जाकौ बहु परिवार ॥
कहु नानक थिरु कछु नहीं सुपने ज्यौं संसारि ॥५०॥
चिंता ताकी कीजियै जो अनहोनी होय ॥
इह मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोय ॥५१॥
जो उपजियौ सो बिनसिहै परो आज कै काल ॥
नानक हरिगुन गाइलै छाडि सकल जंजाल ॥५२॥

* दोहरा *

बलु छुटकियौ बंधन परे कछू न होत उपाय ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज ज्यौं होहु सहाय ॥५३॥
बल होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाय ॥
नानक सभ किछु तुमरै हाथ मैं तुम ही होत सहाय ॥५४॥
संग सखा सभ तजि गये कोऊ न निबहियौ साथ ॥
कहु नानक इह १बिपति मैं टेक एक रघनाथ ॥५५॥
नाम रहियौ साधू रहियौ रहियौ गुर गोबिंद ॥
कहु नानक इह जगत मैं किन जपियौ गुरमंतु ॥५६॥
रामनामु उर मैं गहियौ जाकै सम नहीं कोय ॥
जेहि सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होय ॥५७॥

१--दुःखदायी अवस्था में ।

॥ श्री सद्गुरु देवायनमः ॥

आनन्द-शब्द-सार

[भाग पहिला]

खंड दूसरा

(अन्य सन्तों के शब्द)

श्री कबीर साहब जी

[परिचय] **राग गौड़ी**

जम ते उलटि भये हैं राम। दुख बिनसे सुख कियौ बिसराम ॥
बैरी उलटि भये हैं मीता। 1साकत उलटि सुजन भये चीता ॥१॥
अब मोहि सरब कुसल करि मानिया।
सान्ति भई जब गोबिंद जानिया ॥१॥ रहाउ ॥
तन महि होती कोटि उपाधि, उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥
आपु पछानै आपै आप, रोग न ब्यापै तीनौ ताप ॥२॥
अब मन उलटि 2सनातन हूआ, तब जानिया जब जीवत मूआ ॥
कहु कबीर सुख सहजि समावौं, आपि न डरौं न अवर डरावौं ॥३॥

[तृप्ति] **गौड़ी पूरबी**

सुरग बास न 3बाछियै डरियै न नरकि निवासु ॥

१—दुष्ट अथवा दुश्मन। २—असली स्वरूप में आ गया। ३—चाह नहीं करनी चाहिए।

होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥१॥
रमईया गुन गाइयै ॥ जा ते पाईयै परम निधान ॥१ रहाउ॥
क्या जपु क्या तपु संजमो क्या बरतु क्या इस्नानु ॥
जब लगु जुगति न जानियै भाउ भगति भगवान ॥२॥
१संपै देखि न हरखियै बिपति देखि न रोइ ॥
ज्यौं संपै त्यौं बिपति है २बिध ने रचिया सो होइ ॥३॥
कहि कबीर अब जानिया संतन रिदै ३मंझारि ॥
सेवक सो सेवा भले जि घट बसै मुरारि ॥४॥

[निन्दा] **गौड़ी**

निंदौ निंदौ मोकौ लोगु निंदौ ।
निंदा जन को खरी पियारी । निंदा बापु निंदा ४महतारी । १रहाउ।
निंदा होइ त बैकुंठि जाईयै । नामु पदारथु मनहि बसाईयै ॥
रिदै ५सुध जो निंदा होय । हमरे कपरे निंदकु धोय ॥१॥
निंदा करै सु हमरा मीतु । निंदक माहिं हमारा चीत ॥
निंदक सो जो निंदा ६होरै । हमरा जीवन निंदकु लोरै ॥२॥
निंदा हमरी प्रेम पियारु । निंदा हमरा करै उधारु ॥
जन कबीर को निंदा सारु । निंदक डूबा हम उतरै पारि ॥३॥

[चेतावनी] **राग आसा**

जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥
तेल जले बाती ७ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥१॥

१—धन-पदार्थ अथवा सुख । २-बिधाता (कुदरत) ने जो कुछ रच रखा है, वही होगा । ३-में । ४-माता । ५-पवित्र । ६-मना करे या हटावे । ७--बुझ गई ।

रे बौरे तोहि घरी न राखै कोई ॥
तूँ राम नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥
काकी मात पिता कहु काको कवन पुरख की जोई ॥
घट फूटे को बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥२॥
देहुरी बैठी माता रोवै १खटिया ले गये भाई ॥
२लट ३छिटकाये ४तिरिया रोवै ५हंसु इकेला जाई ॥३॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु भैसागर कै ताई ॥
इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नहीं हटै गुसाईं ॥४॥

[तीर्थ]

आसा

अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकूंठ न जानां ॥
लोक ६पतीणे कछू न होवै नाहीं रामु अयानां ॥१॥
पूजहु रामु एक ही देवा ॥
साचा नांवण गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥
जल कै मॅजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहिं ॥
जैसे मेंडुक तैसे ऊहि नर फिरि फिरि जोनी आवहिं ॥२॥
मनहुँ कठोर मरै ७बानारसि नरकु न बांचिया जाई ॥
हरि का संतु मरै ८हाडंबै त सगली ९सैन तराई ॥३॥
दिनसु न रैनि बेद नहीं सासत्र तहां बसै निरंकारा ॥
कहि कबीर नर तिसहि धियावहु बावरिया संसारा ॥४॥

१--अर्थी । २--बाल । ३--खोलकर । ४--स्त्री । ५--जीवात्मा । ६--रिझाने से । ७--काशी । ८--मगहर देश जहां पर शरीर त्यागना अपवित्र माना जाता है । ९--अपने साथ संगी-साथियों को भी ।

[चेतावनी] **राग सोरठ**

बहु १परपंच करि परधनु लियावै,सुत दारा पहिं आनि लुटावै ।१।
मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥
अंति निबेरा तेरे जीअ पहिं लीजै ॥१॥ रहाउ ॥
छिनु छिनु तनु छीजै २जरा जनावै ॥
तब तेरी ३ओक कोई पानियो न पावै ॥२॥
कहतु कबीरु कोई नहीं तेरा,हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥३।६।
संतहु मन ४पवनै सुखु बनिया,किछु जोग परापति ५गनिया ।रहाउ
गुरि दिखलाई मोरी । जितु मिरग पड़त है चोरी ॥
मूँदि लिये दरवाजे । बाजीयले अनहद बाजे ॥१॥
कुंभ कमलु जलि भरिया । जलु मेटिया ६ऊभा करिया ॥
कहु कबीर जन जानिया । जो जानिया तौ मन मानिया ॥२।१०।

[चेतावनी] **राग धनासरी**

दिन ते पहर पहर ते घरियाँ ७आंव घटै तनु ८छीजै ॥
काल ९ अहेरी फिरै १० बधिक ज्यों कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥
सो दिनु आवन लागा ॥
मात पिता भाई सुत ११बनिता कहहु को है १२ काका ।१।रहाउ।
जब लगु जोति काया महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥
लालच करै जीवन पद कारन १३लोचन कछू न सूझै ॥२॥
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥

१—झूठ कपट करके । २—वृद्ध अवस्था निकट आती जाती है । ३—अंजुली में । ४—हवा की तरह वेग से उड़ने वाले मन को । ५—गिनाया गया । ६—सीधा ।७—आयु । ८—घटता जा रहा है । ९-शिकारी । १०-बाँधने वाला । ११-स्त्री । १२-किसका । १३-आँखों से ।

केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरना ॥३॥२॥

[चेतावनी] **राग सूही**

अमलु १सिरानो लेखा देना, आये कठिन दूत जम लेना ॥
क्या तैं खटिया कहा गँवाया,चलहु सिताब २दीवानि बुलाया ।१।
चलु ३दरहालु दीवानि बुलाया ।
हरि फुरमानु दरगह का आया ॥१॥ रहाउ ॥
करौं अरदासि ४गाव किछु बाकी, लेहु निबेरि आजु की राती ॥
किछु भी खरचु तुम्हारा सारौं, सुबह निवाज ५सराय गुजारौं ।२।
साध संगि जाकौ हरि रंगि लागा, धनु धनु सो जन पुरखु सभागा
ईत ऊत जन सदा सुहेले, जनमु पदारथु जीति अमोले ॥३॥
जागतु सोया जनमु गँवाया, मालु धनु जोरिया भया पराया ॥
कहु कबीर तेई नर भूले, खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥४॥

[सत्संग] **राग भैरो**

गंगा के संगि ६सलिता बिगरी ॥
सो सलिता गंगा होई ७निबरी ॥१॥
बिगरियो कबीरा राम दुहाई ॥
साचु भयो ८अन कतहि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
चंदन के संगि ९तरवरु बिगरियो ।
सो तरवरु चंदनु होइ निबरियो ॥२॥
पारसके संग तांबा बिगरियो, सो तांबा कंचनु होइ निबरियो ।३।

१-किये हुए कर्मों का । २--धर्मराज । ३--अभी अभी । ४--गरज । ५--जगत रूपी मुसाफिरखाना । ६--नदी । ७--बदल गई । ८--और कहीं नहीं जायगा । ९--वृच ।

संतन संगि कबीरा बिगरियौ, सो कबीरु रामै होइ निबरियौ ।४।

[परिचय]

राग प्रभाती

अवलि अलह नूरु उपाया कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जंगु उपजिया कौन भले को मंदे ॥१॥
लोगां भरमि न भूलौ भाई ॥ १खालिक २खलक खलक महि खालिकु पूरि रहियो सरब ठाई ॥१॥रहाउ॥
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु ३पोच माटी के भांडे ना कछु पोच ४कुंभारै ॥२॥
सभ महि सॅचा एको सोई तिसका कीया सभु कछु होई ॥
हुकमु पछानै सो एको जानै बंदा कहिये सोई ॥३॥
अलहु अलखु न जाई लखिया गुरि गुड़ दीना माठा ॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥४॥

चेतावनी

(१)

कबहुँ न भये संग और साथा, ऐसो जन्म गँवाये हाथा ॥१॥
बहुरि न ऐसो पैहौ ५थाना । साधुसंग तुम नहिं पहिंचाना ॥२॥
अब तौ होइ नरक में बासा । निशिदिन परे ६लबार के पासा ॥३॥
जात सबन कहँ देखिया, कहैं कबीर पुकार ।
७चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवस परत है ८धार ॥४॥

(२)

मानुष जन्म ९चुके जग १०मांझी, यहि तन केर बहुत हैं ११सांझी १

१--मालिक । २--सृष्टि के सभी जीव । ३--दोष । ४--घड़ने वाले अर्थात् मालिक को । ५--स्थान या ठिकाना । ६--झूठी माया । ७--यदि चेतने वाले हो तो चेता । ८--डाका । ९--योंही बीत जायगा । १०--में । ११-हिस्सेदार ।

१ तात २ जननि कहै हमरो बाला। स्वारथ लागि कीन्ह प्रतिपाला ॥२॥
कामिनि कहै मोर पिय आही, ३ बाघिनि रूप गरासै चाही ॥३॥
पुत्र कलत्र रहैं लव लाये, ४ जम्बुक नाई रहैं मुंह बाये ॥४॥
काग गीधि दोउ मरण बिचारैं, शूकर श्वान दोउ पन्थ निहारैं ।५।
धरती कहै मोहिं मिलि जाई। पवन कहै मैं ५ लेब उड़ाई ॥६॥
अग्नि कहै मैं ई तन जारों। ६ सो न कहै जो जरत उबारों।७।
ज्यहि घर को घर कहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ॥८॥
सो तन तुम आपनकै जानी। विषय स्वरूप भुले अज्ञानी ।६।

इतने तनके सांझिया, जन्मोभरि दुख पाय।
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर ७ गोहराय ॥१०॥

(३)

८ हंसा प्यारे ६ सरवर ते जे जाय।
जेहि सरवर बिच १० मोतिया चुनते बहुबिधि ११ केलि कराय ॥१॥
१२ सुखे ताल १३ पुरइनि जल छोड़े १४ कमल गयो कुंभिलाइ।
कह कबीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कब आइ ॥२॥

१-पिता। २-माता। ३-शेरनी का रूप धारण करके खा जाना चाहती है। ४-बाघ की तरह मुंह फाड़े रहते हैं। ५-उड़ा ले जाऊँगी। ६-ऐसा कहने वाला कोई नहीं है कि मैं इसे जलने अथवा क्लेशों से बचा लूँगा। ७-पुकारता है। ८-जीवात्मा। -६ मानुष देह रूपी सरोवर। -१०अर्थात श्रेष्ठ कर्म रूपी मोती। ११-अनेक प्रकार के सुख-भोग। १२-सूख गये। १३-जो पहिले जल से भरपूर थे। १४-हृदय का कमल।

*** संत-महिमा ***

१हरिजन हंस दशा लिये डोलें, निर्मल नाम चुनी चुनि बोलें ।१।
२मुक्ताहल लिये चोंच लोभावें, मौन रहैं की हरि गुण गावें ।२।
३मानसरोवर तट के बासी, राम चरण चित ४अनंत उदासी ।३।
काग कुबुद्धि निकट नहिँ आवे, प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै ।४।
५ नीर क्षीर को करै निबेरा, कहैं कबीर सोई जन मेरा ।५।

*** माया ***

माया महा ठगिनी हम जानी ।
६तिरगुण फांस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥१॥
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी ।
पण्डा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भई पानी ॥२॥
योगी के योगिनि ह्वै बैठी, राजा के घर रानी ।
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी ॥३॥
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ।
कहैं कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथ कहानी ॥४॥

*** चेतावनी ***

माया मोहहि मोहित कीन्हा ! ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा ॥१॥
जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना ।
शब्द गुरू उपदेश दियो तैं, छांड़्यो ७परमनिधाना ॥२॥
ज्योतिहि देखि पतंग ८हूलसे, ९ पशु नहिं पेखै १०आगी ।

१—मालिक के प्यारे संतजन । २—अमृत-रस । ३—सच खंड रूपी मानसरोवर। ४—अन्य संसारी रसों से उदासीन रहते हैं । ५—जल और दूध को जो अलग२ करे अर्थात् सत्-असत् का जो कोई विवेक करे। ६—तीन गुणों अर्थात् सत-रज और तम आदि का बंधन । ७—गुरु का उपदेश जो बड़ा खज़ाना है । ८—प्रसन्न होता है । ९—अज्ञानी । १०—अग्नि ।

काम क्रोध नर १मुगुध परे हैं, कनक कामिनि लागी ॥३॥
सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डित शास्त्र बिचारैं ।
सतगुरु के उपदेश बिना तुम, जानि कै जीवहिं मारैं ॥४॥
करौ बिचार बिकार परिहरौ, तरनतारनै सोई ।
कहैं कबीर भगवन्त भजन करु, २द्वितिया और न कोई ॥५॥

(२)

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो ।
३दशौं द्वार नरकै में बूड़े तू गन्धी को ४बेढो ॥१॥
फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी ।
काम क्रोध तृष्णा के मारे बूड़ि मुए बिन पानी ॥२॥
जारे देह भसम ह्वै जाई गाड़े माटी खाई ।
शूकर श्वान काग के भोजन तन की इहै बड़ाई ॥३॥
चेति न देखु मुगुध नर बौरे तूते काल न दूरी ।
कोटिन यतन करै बहुतेरे तनकि अवस्था ५धूरी ॥४॥
बालू के घरवा में बैठे चेतत नाहिं अयाना ।
कहैं कबीर इक राम भजे बिन बूड़े बहुत सयाना ॥५॥

(३)

बन्दे करिले आप ६निबेरा ।
आपु जियत लखु आप ठवर करु मुये कहाँ घर तेरा ॥१॥

१—मतवाले । २—दूसरा कोई उपाय भजन के बिना तरने का नहीं है । ३—दसों इन्द्रियों के द्वार नरक के मार्ग हैं । ४—तू उसी गंधी रूपी जगत की वासना को ही आधार मान बैठा है । ५—अन्त में धूर हो जाना है । ६—विवेक अथवा निर्णय ।

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा ।
कहैं कबीर सुनो हो सन्तो कठिन काल को घेरा ॥२॥

(४)

अब कहँ चल्यो अकेले मीता, उठि १ किन करहु घरहु की चीता ।१।
खीर खांड घृत पिण्ड २ समारा, सो तन लै बाहर कै डारा ।२।
जेहि शिर रचि रचि बांध्यो पागा, सो शिर अन्त ३ बिदारहिं कागा ।३।
हाड़ जरैं जैसे लकड़ी ४ झूरी, केश जरैं जस तृण कै ५ कूरी ।४।
आवत संग न जात को साथी, कहा भयो दल साजे हाथी ।५।
माया को रस लेइ न पाया, अन्तर यम ६ बिलार ह्वै धाया ।६।
कहैं कबीर नर अजहुँ न जागा, यम को ७ मोगरा मधि शिर लागा ।७।

(५)

ऐसो दुर्लभ जात शरीर, राम नाम भजु लागै ८ तीर ॥१॥
गये ९ बेणु १० बलि गे हैं कंस, दुर्योधन गये बूड़े बंस ॥२॥
११ पृत्थु गये पृथ्वी के राव, बिक्रम गये रहे नहिं १२ काव ॥३॥
१३ छौं चकवै मंडली के झार, अजहूँ हो नर देखु बिचार ॥४॥

१—क्यों नहीं जागकर अपने असली घर की सुध करता है? २—पालना करता रहा। ३—उसी सिर को अन्त में काग अपनी चोचों से बिगाड़ेंगे। ४—सूखी लकड़ी की तरह। ५—कूड़े का ढेर। ६—यम रूपी बिल्ला। ७—जबकि यम का डंडा सिर के ऊपर लगेगा। ८—पार लगेगा। ९—एक प्रसिद्ध और शक्तिशाली महाराजा हुये हैं। १०—पाताल देश के राजा का नाम है। ११—अर्थात् बेणु, बलि, दुर्योधन, कंस और पृथु राजा जैसे बलवान्‌भी काल के मुख में चले गये हैं। १२—कोई भी नहीं रहा है। १३—ये छः के छः ही बड़े प्रभावशाली अथवा भूमि के सरदार थे; किन्तु काल से न बच सके।

गोपीचन्द भल कीन्हो योग, रावण मरिगो करतै भोग ॥५॥
जात देखु अस सबके १जाम, कहैं कबीर भजु रामै नाम ॥६॥

* उपदेश *

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाईये ।
कीजे साहिब से हेत, परम पद पाइये ॥१॥
सतगुरु सब कछु दीन्ह, देत कछु ना रह्यो ।
हमहिं अभागिनि नारि, सुक्ख तजि दुख लह्यो ॥२॥
गई पिया के महल, पिया सँग ना रची ।
हृदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी ॥३॥
२जहवाँ ३गैल ४सिलहला, चढ़ौं गिरि गिरि पड़ौं ।
उठौं सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं ॥४॥
जो पिय मिलन की चाह, कौन तेरे लाज हो ।
५अधर मिलो ना जाय, भला दिन आज हो ॥५॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपो सीस, साहिब हँस बोलना ॥६॥
जो गुरु रूठे होयँ, तो तुरत मनाइये ।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥७॥
जो गुरु होयँ दयाल, दया दिल हेरिहैं ।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिन ६फेरिहैं ॥८॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो ।

१—जामा अर्थात् मनुष्य चोला । २-जाना है । ३-मार्ग । ४-फिसलवाँ (अर्थात् फिसलवाँ मार्ग से सुरतिको चढ़ना होता है)। ५-फिर दूसरी बार ऐसा संजोग साहिब से मिलनेका नहीं बनेगा । ६-जब एक पल के लिये भी दया की दृष्टि फेर देवें ।

जुगन जुगन करो राज, ऐसी दुर्मति परिहरो ॥६॥

* सतगुरु *

सतगुरु हैं रँगरेज, चुनर मेरी रँगि डारी ॥ टेक ॥
स्याही रंग छुड़ाइ के रे, दियो १मजीठा रंग ।
धोय से छूटै नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग ॥१॥
भाव के कुंड नेह के जल में, प्रेम रंग दइ २बोर ।
३चसकी चास लगाइ के रे, खूब रंगी ४झकझोर ॥२॥
सतगुरु ने चुनरी रंगी रे, सतगुरु चतुर सुजान ।
सब कछु उन पर वार दूँ रे, तन मन धन और प्रान ॥३॥
कहैं कबीर रंगरेज गुरू रे, मुझ पर हुए दयाल ।
सीतल चुनरी ओढ़ि के रे, भइहौं मगन निहाल ॥४॥

* नाम *

अजर अमर इक नाम है, सुमिरन जो आवै ॥ टेक ॥
बिनहीं मुख के जप करो, नहिं जीभ ५डुलावो ।
उलटि सुरति ऊपर करो, नैनन दरसावो ॥१॥
जाहु हंस ६पच्छिम दिसा, ७खिरकी खुलवावो ।
८तिरबेनी के घाट पर, हंसा नहवावो ॥२॥
पानी पवन की गम नहीं, वोहि लोक मँझारा ।
ताही बिच इक रूप है, वोहि ध्यान लगावो ॥३॥
जिमीं असमान उहां नहीं, वो अजर कहावै ।

१—गूढ़ा रंग । २—डुबो दी । ३—छाँट २ कर । ४—अच्छी तरह रंग में हिला २ कर । ५—हिलावो । ६—ऊपर के मार्ग में । ७—दसवें द्वारे की खिड़की । ८—इड़ा पिंगला और सुखमना का संगम जिसे संतोंकी भाषा में तिरबेनी कहा जाता है ।

कहैं कबीर सोइ साध जन, वा लोक १मंझावै ॥४॥

* गुरु-शब्द *

हंसा करो नाम नौकरी ॥ टेक ॥

नाम बिदेही निसिदिन सुमिरै, नहिं भूलै छिन घरी ॥१॥
नाम बिदेही जो जन पावै, कभुं न सुरति बिसरी ॥२॥
ऐसो सबद सतगुरु से पावै, आवा गवन हरी ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो, पावै अमर नगरी ॥४॥

* नाम *

जो जन लेहिं खसम का नाउँ, तिन के सद बलिहारी जाउँ ॥१॥
जो गुरु के निर्मल गुन गावै, सो भाई मेरे मन भावै ॥२॥
जेहिं घट नाम रह्यो भरपूर, तिन की पग पंकज हम धूर ॥३॥
जाति जुलाहा मति का धीर, सहज सहज गुन रमे कबीर ॥४॥

* वैराग्य *

मन फूला फूला फिरै, जक्त में कैसा नाता रे ॥ टेक ॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, बहिन कहै बिर मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥१॥
पेट पकरि के माता रोवै, बांहि पकरि के भाई ।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई ॥२॥
जब लगि जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करे घर बासा ॥३॥
चार गजी २चरगजी मँगाया, चढ़ा ३काठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगाया, फूँक दियो जस होरी ॥४॥
हाड़ जरै जस लाहकड़ी को, केस जरै जस घासा ।

१—जो कोई उस लोकमें पहुँचे । २—लट्ठे की चादर । ३—अर्थी ।

साना ऐसी काया जरि गइ कोई न आयो पासा ॥५॥
घर की तिरिया ढूँढन लागी, ढूंढि फिरी चहुँ देसा।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, छाड़ौ जग को अंदेसा ॥६॥

(२)

१सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा ॥ टेक ॥
इस पिंजरे में दस दरवाजा, दसो दरवाजे २किवरवा लागा ॥१॥
अंखियन सेती नीर बहन लग्यो, अब कस नाहिं तू बोलत अभागा ॥२॥
कहत कबीर सुनो भई साधो, उड़िगे हंस टूटि गयो तागा ॥३॥

* चेतावनी *

(१)

बीती बहुत रही थोरी सी ॥ टेक ॥
खाट पड़े नर ३भींखन लागे, निकसि प्रान गयो चोरी सी ॥१॥
भाई बंद कुटुंब सब आये, फूँक दियो मानो होरी सी ॥२॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सिर पर देत हैं ४भौंरी सी ॥३॥

(२)

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै ॥ टेक ॥
५पाँच पचीस तीन हैं चुरवा।
यह सब कीन्हा सोर, बटोहिया का रे सोवै ॥१॥
जागु सबेरा बाट ६अनेड़ा।

१--प्राण रूपी तोता। २--किवाड़ लगे हैं अर्थात बंद हैं। ३--खाँसने लगता है। ४--चक्कर (अर्थात् काल चक्कर दे रहा है)। ५--पाँचों विकार (काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार), पच्चीस प्रकृतियां तथा तीन गुण (सत्-रज-तम) आदि ६--मनज़िल दूर है।

फिर नहिं लागै जोर, बटोहिया का रे सोवै ॥२॥
भवसागर इक नदी बहतु है ।
बिन उतरे जाव १बोर, बटोहिया का रे सोवै ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो ।
जागत कीजे भोर, बटोहिया का रे सोवै ॥४॥

(३)

और मुए का सोग करीजै, तौ कीजै जो आपन जीजै ॥१॥
मैं नहिं मरौं मरै संसारा, अब मोहिं मिला जियावनहारा ॥२॥
या देही २परिमल महकंदा, ता सुख बिसरे परमानन्दा ॥३॥
३कुअटा एक पंच ४पनिहारी, टूटी ५लेजुरी भरैं मतिहारी ॥४॥
कहैं कबीर इक बुद्धि बिचारी, ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥५॥

(४)

टुक ज़िंदगी बंदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना ॥ टेक ॥
रथ घोड़े सुखपाल पालकी, हाथी और ६बाहन नाना ।
तेरा ठाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना ७समसाना ॥१॥
रूम ८पाट पाटम्बर अम्बर, जरी बफ़त का बाना ।
तेरे काज गजी गज ९चारिक, भरा रहै तोसाखाना ॥२॥
खर्चे को तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना ।
पहिचन्ते का गाँव न मग में, चौकी न हाट दुकाना ॥३॥
जीते जी ले जीति जनम को, यही १०गोय यहि मैदाना ॥

१-डूब । २-सुगन्धित इत्र और तेल फुलैल आदि । ३-छोटा कुआँ अर्थात् मानुष तन । ४-पाँच पानी भरनेवाली अर्थात् पाँचों कर्मेन्द्रियाँ जो शरीरका रस चूसती हैं । ५-रस्सी । ६-सवारियाँ । ७-शमशान (मुरदे जलाने का घाट) । ८-ऊनी कपड़े । ९-चार एक गज़ । १०-गेंद(अर्थात् मानुष तन रूपी गेंदकी बाजी ।)

कहैं कबीर सुनो भई साधो, नहिं कलि तरन जतन आना ॥४॥

(५)

जाग री मेरी सुरति सुहागिनि जाग री ॥ टेक ॥

का तुम सोवत मोह नींद में, उठि के भजनियाँ में लाग री ॥१॥
चित से सबद सुनहु सरवन दै, उठत मधुर धुन राग री ॥२॥
दोऊ कर जोरि सीस चरनन दै, भगति अचल बर मांग री ॥३॥
कहत कबीर सुनहु भई साधो, जगत पीठ दै भाग री ॥४॥

(६)

काया बौरी चलत प्रान काहे रोई ॥टेक॥

काया पाय बहुत सुख कीन्हो, नित उठि मलि मलि धोई ।
सो तन छिया छार ह्वै जैहै, नाम न लैहै कोई ॥१॥
कहत प्रान सुनु काया बौरी, मोर तोर संग न होई ।
तोहि अस मित्र बहुत हम त्यागा, संग न लीन्हा कोई ॥२॥
ऊसर खेत कै कुसा मँगाये, चाँचर चवर कै पानी ।
जीवत ब्रह्म को कोई न पूजै, मुरदा कै मिहमानी ॥३॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, सेस सहस मुख होई ।
जो जो जन्म लियो बसुधा में, थिर न रह्यो है कोई ॥४॥
पाप पुन्य हैं जन्म सँघाती, समुझि देख नर लोई ।
कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत बिरला कोई ॥५॥

(७)

१उपजै निपजै निपजि समाई, नैनन देखि चल्यो जग जाई ॥१॥
लाज न मरौ कहौ घर मेरा, अंत की बार नहीं कछु तेरा ॥२॥

१—यह जीव बारम्बार जन्मता और मरता रहता है ।

अनेक जतन करि काया पाली, मरती बेर अगिन सँग जाली ॥३॥
चोवा चंदन १मरदन अंगा, सो तन जरै काठ के संगा ॥४॥
कहत कबीर सुनो रे गुनिया, बिनसै रूप देखैगी दुनियाँ ॥५॥

(८)

यही घड़ी यह बेला साधो ॥ टेक ॥
लाख खरच फिर हाथ न आवै, मानुष जन्म सुहेला ॥१॥
ना कोई संगी ना कोई साथी, जाता हंस अकेला ॥२॥
क्यों सोया उठि जागु सवेरे, काल मारेंदा २सेला ॥३॥
कहत कबीर गुरु गुन गावो, झूठा है सब मेला ॥४॥

(९)

३हटरी छोड़ि चला ४बनिजारा ॥ टेक ॥
इस हटरी बिच मानिक मोती, कोइ बिरला परखनहारा ॥१॥
इस हटरी के नौ दरवाजे, दसवाँ ५ठाकुरद्वारा ॥२॥
निकसि गइ६थंभी ढहि परा मन्दिर, रलि गया ७चिकड़ गारा ।३।
कहत कबीर सुनो भई साधो, झूठा जगत पसारा ॥४॥

* उपदेश *

जो कोइ या बिधि मन को लगावै, मन के लगावै प्रभु पावै ।१।
जैसे नटवा चढ़त बाँस पर, ढोलिया ढोल बजावै ।
अपना बोझ धरै सिर ऊपर, सुरति ८ बरत पर लावै ॥२॥
जैसे ९ भुवंगम चरत बनहिं में, ओस चाटने आवै ।
कभी चाटै कभी मनि तन चितवै, मनि तजि प्रान गँवावै ॥३॥
जैसे कामिनि भरे कूप जल, कर छोड़े १० बतरावै ।

१--अर्थात् शरीरके जिन अंगोंपर चंदन इत्यादिक मले जाते हैं । २--तलवार । ३--शरीर रूपी दुकान । ४--जीवात्मा रूपी सौदागर । ५--दसवाँ द्वारा जो मालिक का मन्दिर है । ६--प्रान रूपी थंभी । ७--तत्त्वों में तत्त्व मिल गये । ८--डोरी । ९--सर्प । १०बातें करती है ।

अपना रंग सखियन संग राचै, सुरति गगर पर लावै ॥४॥
जैसे सती चढ़ी १सर ऊपर. अपनी काया जरावै ।
मातु पिता सब कुटुंब तियागै, सुरति पिया पर लावै ॥५॥
धूप दीप नैवेद अरगजा, ज्ञान की आरत लावै ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फेर जनम नहिं पावै ॥६॥

* बिरह *

प्रीति लगी तुम नाम की, पल बिसरै नाहीं ।
नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलौ गुसाईं ॥१॥
बिरह सतावै मोहिं को, जिव तड़पै मेरा ।
तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलौ सवेरा ॥२॥
नैना तरसैं दरस को, पल पलक न लागै ।
दर्दवंद दीदार का, निसि बासर जागै ॥३॥
जो अब के प्रीतम मिलैं, करूँ २निमिख न न्यारा ।
अब कबीर गुरु पाईया, मिला प्रान पियारा ॥४॥

* मिलन *

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगी पिय जाय ॥ टेक ॥
समझि सोचि पग धरौं जतन से, बार बार डिग जाय ।
ऊँची गैल राह ३रपटीली, पाँव नहीं ठहराय ॥१॥
लोक लाज कुल की मरजादा, देखत मन सकुचाय ।
नैहर बास बसौं पीहर में, लाज तजी नहिं जाय ॥२॥
अधर भूमि जहँ महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय ।
धन भई बारी पुरुष भये भोला, सुरत झकोला खाय ॥३॥
दूती सतगुरु मिले बीच में, दीन्हो भेद बताय ।

१—चिता । २—एक पल-भर भी । ३—कठिन, पथरीली ।

दास कबीर पिया से भेंटे, सीतल कंठ लगाय ॥४॥

* बिरह *

१नैहरवा हम काँ नहिं भावै ॥ टेक ॥

साईं की नगरी परम अति सुन्दर, जहँ कोई जाय न आवै ।
चाँद सुरज जहँ पवन न पानी, को संदेस पहुँचावै,
दरद यह साईं को सुनावै ॥१॥
आगे चलौं पंथ नहिं सूझै, पीछे दोष लगावै ।
केहि बिधि ससुरे जाँव मोरी सजनी, बिरहा जोर जनावै,
विषै रस नाच नचावै ॥२॥
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई, जो यह राह बतावै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सुपने न प्रीतम पावै,
तपन यह जिय की बुझावै ॥३॥

* उपदेश *

घूंघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलैंगे ॥ टेक ॥
घट घट में वोहि साईं रमता, २कटुक बचन मत बोल रे ।
तो को...............॥१॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै, झूठा पचरँग चोल रे ।
तो को...............॥२॥
सुन्न महल में ३दियाना ४बारि ले, आसा से मत डोल रे ।
तो को...............॥३॥
जोग जुगत से रँग महल में, पिय पाये अनमोल रे ।

१—नानिहाल अर्थात् संसार के रस-भोग इत्यादिक । २—कड़वा । ३—दीपक । ४—जलाले ।

तो को..............॥४॥

कहैं कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे।

तो को..............॥५॥

* परिचय *

मोरे लगि गये बान सुरंगी हो ॥ टेक ॥

धन सतगुरु उपदेस दियो है, होइ गयो चित्त भिरंगी हो ॥१॥

ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पाँचो संगी हो ॥२॥

घायल की गति घायल जानै, क्या जानै जाति पतंगी हो ॥३॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निसिदिन प्रेम उमंगी हो ॥४॥

* प्रेम *

(१)

हमन हैं इस्क मस्ताना, हमन को होसियारी क्या।

रहैं आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ॥१॥

जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते।

हमारा यार है हम में, हमन को इन्तेज़ारी क्या ॥२॥

खलक सब नाम अपने को बहुत कर सिर पटकता है।

हमन गुरु नाम साचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥३॥

न पल बिछुड़ै पिया हम से, न हम बिछुड़ैं पियारे से।

उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बे-करारी क्या ॥४॥

कबीरा इस्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।

जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ॥५॥

(२)

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥ टेक ॥

जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में ॥१॥

भला बुरा सब को सुनि लीजै, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ॥३॥
हाथ में कूँड़ी बगल में सोंटा, चारों दिस जागीरी में ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी में ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी में ॥६॥

* घट-मठ *

साधो सहज समाधि भली ।
गुरु प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ॥१॥
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कछु करौं सो सेवा ।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा ॥२॥
कहौं तो नाम सुनौं सो सुमिरन, खाँव पियौं सो पूजा ।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा ॥३॥
आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं ।
खुले नैन पहिचानौं हंसि हंसि, सुंदर रूप निहारौं ॥४॥
सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन बासना त्यागी ।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥५॥
कहैं कबीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट करि गाई ।
दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥६॥

* गुरु-शब्द *

गुरू ने मोहिं दीन्हीं अजब जड़ी ॥टेक॥
सोई जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी ॥१॥
काया नगर अजब इक बँगला, ता में गुप्त धरी ॥२॥
पाँचों नाग पचीसों नागिन, सूंघत तुरत मरी ॥३॥

या कारे ने सब जग खायो, सतगुरु देख डरी ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लै परिवार तरी ॥५॥

विनय

(चौपाई)

दरसन दीजे नाम सनेही । तुम बिन दुख पावै मेरी देही ॥

(छन्द)

दुखित तुम बिन रटत निसिदिन, प्रगट दरसन दीजिये ।
बिनती सुन प्रिय स्वामियाँ, बलि जाऊँ १बिलँब न कीजिये ॥१॥

(चौपाई)

अन्न न भावै नींद न आवै । बार बार मोहिं बिरह सतावै ॥

(छन्द)

बिबिघ बिधि हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव ना रहै ।
तपत तन जिव उठत २झाला, कठिन दुख अब को सहै ॥२॥

(चौपाई)

नैनन चलत सजल जल धारा । निसिदिन पंथ निहारौं तुम्हारा ॥

(छंद)

गुन औगुन अपराध छिमा करि, औगुन कछु न बिचारिये ।
पतित-पावन राखु परमति, अपना-पन न बिसारिये ॥३॥

(चौपाई)

गृह आँगन मोहिं कछु न सुहाई, बन्न भई और फिरयो न जाई ॥

(छंद)

नैन भरि भरि रहे निरखत, निमख नेह न तुड़ाइये ।
बाँह दीजे बंदी-छोड़ा, अब के बंद छुड़ाइये ॥४॥

१--देरी । २--झुलसाहट ।

(चौपाई)

मीन मरै जैसे बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखत सरीरा॥

(छंद)

दास कबीर यह करत बिन्ती, महापुरुष अब मानिये।
दया कीजे दरस दीजे, अपना करि मोहिं जानिये॥५॥

(२)

दरमांदे ठाढ़े दरबार॥ टेक॥
तुम बिन सुरत करै को मेरी, दरसन दीजै खोलि किवार॥१॥
तुम हौ धनी उदार दयालू, स्रवनन सुनियत सुजस तुम्हार॥२॥
मांगौं कौन रंक सब देखौं, तुमहीं तें मेरो निस्तार॥३॥
जैदेव नामा बिप्र सुदामा, तिन पर किरपा भई अपार॥४॥
कहैं कबीर तुम समरथ दाता, चार पदारथ देत न बार॥५॥

* साध-महिमा *

नारद साध से अंतर नाहीं।
जो कोई साध से अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं॥१॥
जागै साध तो मैं हूँ जांगूँ, सोवै साध तो सोऊँ।
जो कोइ मेरे साध दुखावै, १जरा मूल से खोऊँ॥२॥
जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करूँ मैं बासा।
साध चलै आगे उठ धाऊँ, मोहिं साध की आसा॥३॥
माया मेरी अर्ध-सरीरी, और भक्तन की दासी।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी॥४॥
अंतर ध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई।
कहत कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई॥५॥

१--उसको मैं जड़-मूल से नष्ट कर देता हूँ।

* परिचय *

मन मस्त हुआ तब क्यों बोलै ॥ टेक ॥

हीरा पायो गाँठ १गठियायो, बार बार वा को क्यों खोलै ॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोलै ॥२॥
सुरत २कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गई बिन तोलै ॥३॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोलै ॥४॥
तेरा साहिब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोलै ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिल गये तिल ३ओलै ॥६॥

* सत्संग *

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसँग बिना जिय तरसे ॥१॥
इस सतसँग में लाभ बहुत हैं, तुरत मिलावै गुरु से ॥२॥
मूरख जन कोइ सार न जानै सतसँग में अमृत बरसे ॥३॥
सबद सा हीरा पटकि हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से ॥५॥

* रेखता *

(१)

गंग औ जमुन के घाट को खोजि ले,
भँवर गुंजार तहँ करत भाई ।
सरसुती नीर जहँ देखु निर्मल बहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई ॥१॥
पाँच की प्यास तहँ देखि पूरी भई,
तीन को ताप तहँ लगै नाहीं ।

१—गांठ में पक्का करके बाँध लिया । २—नशा पीने वाली । ३—तिल की ओट में ।

कहैं कब्बीर यह अगम का खेल है,
गैब का चाँदना देख माहीं ॥२॥

(२)

करत कल्लोल दरियाव के बीच में,
ब्रह्म की १छौल में हंस झूलै ।
अर्ध और उर्ध की पेंग बाढ़ी तहाँ,
पलटि मन पवन को कँवल फूलै ॥१॥
गगन गरजै तहाँ सदा २पावस झरै,
होत झनकार नित बजत ३तूरा ।
बेद कत्तेब की गम्म नाहीं तहाँ,
कहैं कब्बीर कोई ४रमै ५सूरा ॥२॥

* परिचय *

६महरम होय सो जानै साधो, ऐसा देस हमारा ॥ टेक ॥
बेद कतेब पार नहिं पावत, कहन सुनन से न्यारा ।
जाति बरन कुल किरिया नाहीं, संध्या नेम अचारा ॥१॥
बिन जल बूँद परत जहँ भारी, नहिं मीठा नहिं खारा ।
७सुन्न महल में ८नौबत बाजै, किंगरी बीन सितारा ॥२॥
बिन बादर जहँ बिजुरी चमकै, बिन सूरज उजियारा ।
बिना सीप जहँ मोती उपजै, बिन सुर सबद उचारा ॥३॥
जोति लजाय ब्रह्म जहँ दरसै, आगे अगम अपारा ।
कहैं कब्बीर वहँ रहनि हमारी, बूझै गुरुमुख प्यारा ॥४॥

१--छाया अथवा गोद । २--बरसात । ३--अनहद शब्द का तूरा । ४--लिव लगाता है । ५--सूरमा । ६--भेदी । ७--दसवाँ द्वारा । ८--नक्कारा

* सूरमा *

छाड़ि दे मन बौरा डगमग ॥ टेक ॥

अब तो जरे मरे बनि आवै, लीन्हो हाथ १सिंधोरा ।
प्रीत प्रतीत करो दृढ़ गुरु की, सुनो सबद घनघोरा ॥१॥
होइ निसंक मगन ह्वै नाचै, लोभ मोह भ्रम छाड़ै ।
सूर कहा मरन से डरपै, सती न २संचय भांड़ै ॥२॥
लोक लाज कुल की मरजादा, यही गले में फाँसी ।
आगे ह्वै पग पाछे धरिहौ, होय जक्त में हाँसी ॥३॥
अगिन जरे ना सती कहावै, रन जूझे नहिं सूरा ।
बिरह अगिन अंतर में जारै, तब पावै पद पूरा ॥४॥
यह संसार सकल जग मैला, नाम गहे तेहि सूँचा ।
कहैं कबीर भक्ति मत छोड़ो, गिरत परत चढु ऊँचा ॥५॥

* घट-मठ *

अवधू भूले को घर लावै, सो जन हमको भावै ॥टेक॥
घर में जोग भोग घर ही में, घर तजि बन नहिं जावै ।
बन के गये कलपना उपजै, तब ३धौं कहाँ समावै ॥१॥
घर में जुक्ति मुक्ति घर ही में, जो गुरु अलख लखावै ।
सहज सुन्न में रहै समाना, सहज समाधि लगावै ॥२॥
४उनमुनि रहै ब्रह्म को चीन्है, परम तत्त को ध्यावै ।
सुरत निरत से मेला करिके, अनहद नाद बजावै ॥३॥
घर में बसत बस्तु भी घर है, घर ही बस्तु मिलावै ।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, ज्यों का त्यों ठहरावै ॥४॥

१–खड़ग । २–सती बर्तन इकट्ठे नहीं करती । ३–भला । ४–अंतर-लिव में मगन ।

* चेतावनी *

भजि ले सिरजनहार, सुघर तन पाय के ॥टेक॥
काहे रहो अचेत, कहाँ यह औसर पैहो।
फिर नहिं ऐसी देंह, बहुरि पाछे पछितैहो॥
लख चौरासी जोनि में, मानुष जन्म अनूप।
ताहि पाय नर चेतत नाहीं, कहा रंक कहा भूप ॥१॥
गर्भ बास में रह्यो, कह्यो मैं भजिहौं तोहीं।
निस दिन सुमिरौं नाम, कष्ट से काढ़ो मोहीं॥
चरनन ध्यान लगाइ के, रहौं नाम लौ लाय।
तनिक न तोहि बिसारिहौं, यह तन रहै कि जाय ॥२॥
इतना कियो १करार, काढ़ि गुरु बाहर कीन्हा।
भूलि गयो वह बात, भयो माया आधीना॥
भूली बातैं २उद्र की, आन पड़ी सुधि एत।
बारह बरस बीतिगे याबिधि, खेलत फिरत अचेत ॥३॥
बिषया बान समान, देंह जोबन मद माती।
चलत निहारत छाँह, ३तमक के बोलत बाती॥
चोवा चंदन लाइ के, पहिरे बसन रँगाय।
गलियाँ गलियाँ ४झाँकी मारै, पर तिरिया लख मुसकाय ॥४॥
५तरुनापन गइ बीत, बुढ़ापा आनि ६तुलाने।
काँपन लागे सीस, चलत दोउ चरन ७पिराने॥
नैन नासिका चूवन लागे, मुख तें आवत बास।

१--बचन या कौल। २--माता का गर्भ। ३--अकड़कर बोलता है। ४--ताकत है। ५--जवानीकी अवस्था। ६--तैयार होकर आने लगा। ७--थक गये।

कफ पित कंठै घेर लियो है, छुटि गइ घर की आस ॥५॥
मातु पिता सुत नारि, कहौ का के सँग जाई ।
तन धन घर औ काम धाम, सबही छुटि जाई ॥
आखिर काल घसीटिहै, पड़िहौ जम के फन्द ।
बिन सतगुरु नहिं बाचिहौ, समुझ देख मति मन्द ॥६॥
सुफल होत यह देंह, नेह सतगुरु से कीजै ।
मुक्ती मारग जानि, चरन सतगुरु चित दीजै ॥
नाम गहौ निरभय रहौ, तनिक न ब्यापै पीर ।
यह लीला है मुक्ति की, गावत दास कबीर ॥७॥

* उपदेश *

करो जतन सखि साईं मिलन की ॥ टेक ॥
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया ।
तजि दे बुधि लरिकैयाँ खेलन की ॥१॥
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी ।
यह मारग चौरासी चलन की ॥२॥
ऊँचा महल अजब रँग बँगला ।
साईं की सेज जहाँ लगी फूलन की ॥३॥
तन मन धन सब अर्पन करि वहाँ ।
सुरत सम्हार परु पइयाँ सजन की ॥४॥
कहैं कबीर निर्भय होय हंसा ।
कुंजी बता दियौं ताला खुलन की ॥५॥

* चेतावनी *

जाग पियारी अब का सोवै ।

रैन गई दिन काहे को खोवै ॥१॥
जिन जागा तिन मानिक पाया ।
तैं बौरी सब सोय गँवाया ॥२॥
पिय तेरे चतुर तु मूरख नारी ।
कबहुँ न पिय की सेज सँवारी ॥३॥
तैं बौरी बौरापन कीन्हो ।
भर जोबन पिय अपन न चीन्हो ॥४॥
जाग देख पिय सेज न तेरे ।
तोहि छाड़ि उठि गये सबेरे ॥५॥
कहैं कबीर सोई धन जागै ।
सबद बान उर अंतर लागै ॥६॥

* उपदेश *

अंधियरवा में ठाड़ि गोरी का करलू ॥ टेक ॥
जब लगि तेल दिया में बाती, येहि अंजोरवा बिछाय घल तू ॥
मन का पलँग संतोष बिछोना, ज्ञान कै तकिया लगाय रख तू ॥
जरि गया तेल बुझाय गइ बाती, सुरत में सुरत समाय रख तू ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जोतिया में जोतिया मिलाय रख तू ॥

* चेतावनी *

उठे सोहंगम नारि, प्रीति पिय से करो ।
यह [1]उरले ब्योहार, दूर दुरमति धरो ॥१॥
पाँच चोर बड़ जोर, संगि एते धने ।

[1]--हृदय में धारण कर ।

इन ठगियन के साथ, १मुसै घर निसु दिने ॥२॥
सोवत जागत चोर, करैं चोरी घनी ।
आपु भये कुतवाल, भली बिधि लूटहीं ॥३॥
द्वादस नगर मँझार, पुरुष इक देखिये ।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये ॥४॥
होत सबद घनघोर, संख धुनि अति घनी ।
तंतन की झनकार, बाजत झीनी झिनी ॥५॥
है कोइ महरम साध, भले पहिचानिये ।
सतगुरु कहैं कबीर, संत की बानि ये ॥६॥

* रेखता *

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइहै,
चाह का २चौतरा भूलि जावै
बीज के माहिं ज्यों बृच्छ बिस्तार,
यों चाह के माहिं सब रोग आवै ॥१॥
दृढ़ बैराग में होय आरूढ़ मन,
चाह के चौतरे आग दीजै ।
कहैं कब्बीर यों होय निरबासना,
तत्त से ३रत्त ह्वै काज कीजै ॥२॥

* चेतावनी *

तन मन धन बाजी लागी हो ॥ टेक ॥
चौपड़ खेलूँ पीव से रे, तन मन बाजी लगाय ।

१—लूटा जाता है । २—स्थान या ठिकाना । ३—परम-तत्त्व अर्थात आत्मा में लीन होकर ।

हारी ते पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो ॥१॥
चौसरिया के खेल में रे, जुग्ग मिलन की आस।
१ नर्द अकेली रहि गई रे, नहिं जीवन की आस हो ॥२॥
चार बरन घर एक है रे, भांति भांति के लोग।
मनसा बाचा कर्मना, कोई प्रीति निबाहे २ओर हो ॥३॥
लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटकी आय।
जो अब कै पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ॥४॥
कहैं कबीर धर्मदास से रे, जीती बाजी मत हार।
अब के सुरत चढ़ाई दे रे, सोई सुहागिन नारि हो ॥५॥

* नाम *

ऐसो है रे भाई हरि रस ऐसो है रे भाई, जा के पियै अमर ह्वै जाई ॥१॥
ध्रुव पीया प्रह्लादहु पीया, पीया मीराबाई।
बलख बुखारे के मीयाँ पीया, छोड़ी है बादसाई ॥२॥
हरि रस महँगा मोल का रे, पियै बिरला कोय।
हरि रस महँगा सो पियै, जा के धर पै सीस न होय ॥३॥
आगे आगे दौं जलै रे, पीछे हरिया होय।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि भज निर्मल होय ॥४॥

* रेखता *

(१)

सूर संग्राम को देखि भागै नहीं,
देखि भागै सोई सूर नाहीं।
काम औ क्रोध मद लोभ से ३ जूझना,

१—गोट। २— अन्त तक। ३--लड़ना।

१मँडा घमसान तहँ खेत माहीं ॥
सील और साच संतोष २साही भये,
नाम समसेर तहँ खूब बाजै
कहैं कब्बीर कोइ जूझिहै सूरमा,
कायराँ भीड़ तहँ तुरत भाजै ॥

(२)

बिना बैराग कहु गियान केहि काम का,
पुरुष बिनु नारि नहिं सोभ पावै ।
स्वाँग तो साहु का काम है चोर का,
कपट की झपट में बहुत धावै ॥
बात बहुते कहै झूठ छूटै नहीं,
मुख के कहे कहा खाँड़ खावै ।
कहैं कबीर जब काल गढ़ घेरि है,
बात बहु बकै सब भूलि जावै ॥

* उपदेश *

अरे मन धीरज काहे न धरै ।
सुभ और असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै ॥१॥
होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै ।
पसु पंछी जिव कीट पतंगा,सब की सुद्ध करै ॥२॥
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै ।
माता पिता सुत सम्पती दारा, मोह के ज्वाल जरै ॥३॥
मन तू हंसन से साहिब के, भटकत काहे फिरै ।
सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै ॥४॥

२-छिड़ा हुआ है । २--योद्धा ।

साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन ब्याध हरै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरै ॥५॥

* नाम *

(१)

बातौं मुक्ति न होइहै, छाड़े चतुराई हो ।
एक नाम जाने बिना, भूली दुनियाई हो ॥१॥
बेद कतेब भवजाल है, मरि है बौराई हो ।
मुक्ति भेव कछु और है, कोइ बिरले पाई हो ॥२॥
काग छाड़ि बिन हंस ह्वै, नहिं मिलत मिलाई हो ।
जो पै कागा हंस ह्वै, वा से मिलि जाई हो ॥३॥
बसहु हमारे देसवा, जम तलब नसाई हो ।
गुरु बिन रहनि न होइहै, जम धै धै खाई हो ॥४॥
कहैं कबीर पुकारि के, साधुन समुझाई हो ।
सत्त सजीवन नाम है, सतगुरु हि लखाई हो ॥५॥

(२)

नाम लगन छूटै नहीं, सोई साधु सयाना हो ॥ टेक ॥
माटी कै बरतन बन्यो, पानी लै १साना हो ।
बिनसत बार न लागिहै, राजा क्या राना हो ॥१॥
क्या सराय का बासना, सब लोग बिगाना हो ।
होत भोर सब उठि चले, दूर देस को जाना हो ॥२॥
आठ पहर सनमुख लड़ै, सो बांधै २बाना हो ।
जीत चला भवसागर, सोइ सूरा मरदाना हो ॥३॥
सतगुरु की सेवा करै, पावै ३परवाना हो ।

१–रचाया या गूँधा । २--हथियार । ३--मोक्ष का हुकुम ।

कहैं कबीर धर्मदास से, तेहि काल डेराना हो ॥४॥

* चेतावनी *

(१)

सुकिरत करि ले नाम सुमिरि ले, को जाने कल की ।
जगत में खबर नहीं पल की ॥१॥
झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करैं छल की ।
पाप की पोट धरे सिर ऊपर, किस बिधि ह्वै हलकी ॥२॥
यह तन तो है हस्ती मस्ती, काया मट्टी का ।
साँस साँस में नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की ॥३॥
काया अंदर हंसा बोलै, खुसियाँ कर दिल की ।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मट्टी जंगल की ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की ।
ज्ञान बैराग दया मन राखो, कहैं कबीरा दिल की ॥५॥

(२)

ए जियरा तैं अमरलोक को, परयो काल बस आई हो ।
मनै सरूपी देव निरंजन, तोहि राख्यो भरमाई हो ॥१॥
पाँच पचीस तीन को पिंजरा, ता में तो को राखै हो ।
तो को बिसरि गई सुधि घर की, महिमा आपन भावै हो ॥२॥
निरंकार निरगुन ह्वै माया, तो को नाच नचावै हो ॥
१चरम दृष्टि की २कुलफी दीन्हो, चौरासी भरमावै हो ॥३॥
चार बेद जा की है स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गावै हो ।
सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाये, तेहि मारग सब धावै हो ॥४॥
जोग ३जाग नेम ब्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो ।

१--शरीरकी बाहिरी सुन्दरता पर नजर रखना । २--ताला । ३--यज्ञ ।

जैसे बधिक ओट १टाटी के, दे बिस्वासै चारा हो ॥५॥
सतगुरु पीव जीव के रच्छक, वा से करो मिलाना हो ।
जा के मिले परम सुख उपजै, पावो पद निर्बाना हो ॥६॥
जुगन जुगन हम आय जनाई, कोइ कोइ हंस हमारा हो ।
कहैं कबीर तहाँ पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष दरबारा हो ॥७॥

(३)

मन रे अब की बेर सम्हारो ॥ टेक ॥
जन्म अनेक दगा में खोयो, बिन गुरु बाजी हारो ॥१॥
बालपने ज्ञान नहिं तन में, जब जन्मो तब २बारो ॥२॥
तरुनाई सुख ३बास में खोयो, बाज्यो कूच नगारो ॥३॥
सुत दारा मतलब के साथी, ता को कहत हमारो ॥४॥
तीन लोक औ भवन चतुरदस, सबहि काल को४चारो ॥५॥
पूर रह्यो जगदीस गुरू तन, वा से रह्यो नियारो ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब घट देखनहारो ॥७॥

* उपदेश *

(१)

मन करि ले साहिब से प्रीत ।
सरन आये सो सब ही उबरै, ऐसी उनकी रीति ॥१॥
सुन्दर देह देखि मत भूलो, जैसे तृन पर ५सीत ।
काँची देह गिरै आखिर को, ज्यों ६बारू की भीत ॥२॥
ऐसो जन्म बहुर नहिं पैहो, जात उमिरि सब बीत ।
दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपर, देव नगारा जीत ॥३॥

१—जाल । २--बालक । ३--विषय-वासना । ४--आहार । ५--पाला । ६--रेत की दीवार ।

(२)

सुख सागर में आय के, मत जा रे प्यासा ॥टेक॥
अजहुँ समझ नर बावरे, जम करत निरासा ॥१॥
निर्मल नीर भरियो तेरे आगे, पी ले स्वासो स्वासा ॥२॥
मृग-तृस्ना जल छाड़ बावरे, करो सुधा रस आसा ॥३॥
गोपीचंदा और भर्थरी, १पिहिन प्रेम भर २कासा ॥४॥
ध्रु प्रहलाद भभीखन पीया, और पिया रैदासा ॥५॥
प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक नाम की आसा ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मिटि गई भव की बासा ॥७॥

(३)

सब बातन में चतुर है, सुमिरन में काँचा ।
सत्तनाम को छाड़ि के, माया सँग राचा ॥१॥
दीनबन्धु बिसराइया, आया दे बाचा ।
ज्योंहि नचाया कामिनी, त्यों त्यों ही नाचा ॥२॥
इन्द्रि बिषे के कारने, सही नरक की आँचा ।
कहैं कबीर हरि जब मिलै, हरिजन हो साचा ॥३॥

* चेतावनी *

मन तू जाव रे महलिया, आपन ३बिरना जगाव ॥ टेक ॥
४भौजिया मरै जगाइ न जागै, लग न सकै कछु दाव ।
कायागढ़ तेरे निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥
५अकिल की आग दया की बाती, दीपक बारि लगाव ।
तत्त कै तेल चुवै दियना में, गियान मसाल दिखाव ॥२॥
भ्रम कै ताला लगा महल में, प्रेम की कुंजी लगाव ।

। १--पी गये । २--प्याला । ३--प्रीतम । ४--कुबुद्धि रूपी भौजाई । ५--शुद्ध बुद्धि ।

कपट किवरिया खोल के रे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥३॥
चित्त चुनरिया भक्ति घाघरा, चोली चाव सिलाव।
प्रेम कै पवन करौ प्रीतम पर, प्रीति १पिछौरी उढ़ाव ॥४॥
बार बार पैहौ नहिं नर तन, फेरि भूलि मत जाव।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥५॥

* प्रेम *

समुझ देख मन मीत पियरवा, आसिक होकर सोना क्या रे ॥१॥
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या रे ॥२॥
पाया हो तो दे ले प्यारे, पाय पाय फिर खोना क्या रे ॥३॥
जिन आँखन में नींद घनेरी, तकिया और बिछौना क्या रे ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सीस दिया तब रोना क्या रे ॥५॥

* चेतावनी *

(१)

नाम सुमिर नर बावरे, तोरी सदा न देहियाँ रे ॥ टेक॥
यह माया कहो कौन की, केकरे सँग लागी रे।
२गुदरी सी उठि जायगी, चित चेत अभागी रे ॥१॥
सोने की लंका बनी, भई धूर की धानी रे।
सोइ रावन की साहिबी, छिन माँ बिलानी रे ॥२॥
सोरह जोजन के मद्ध मद्ध में, चले छत्र की छांही रे।
सोइ दुर्जोधन मिलि गये, माटी के माहीं रे ॥३॥
भवसागर में आइ के, कछु कियो न नेका रे।
यह जीयरा अनमोल है, कौड़ी को फेका रे ॥४॥

१—चादर। २—हाट अथवा बाजार—जो गांवों में थोड़ी देर के लिये तीसरे पहर को लगता है और जल्दी उठ जाता है।

कहैं कबीर पुकारि के, इहाँ कोइ न अपना रे ।
यह जियरा चलि जायगा, जस रैन का सपना रे ॥५॥

(२)

है कोइ भूला मन समुझावै ।
या मन चंचल चोर १हेरि लो, छूटा हाथ न आवै ॥१॥
जोरि जोरि धन गहिरे गाड़ें, जहँ कोइ लेन न पावै ।
कंठ के २पौल आइ जम घेरे, दै दै ३सैन बतावै ॥२॥
खोटा दाम गांठि लै बांधै, बड़ि बड़ि वस्तु भुलावै ।
बोय बबूल ४दाख फल चाहै, सो फल कैसे पावै ॥३॥
गुरु की सेवा साध की संगत, भाव भगति बनि आवै ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न भवजल आवै ॥४॥

* जीवनमुक्त *

जावत मुक्त सोइ मुक्ता हो ।
जब लग जीवन मुक्ता नाहीं, तब लग दुख सुख भुगता हो ॥टेक॥
देह संग ना होवै मुक्ता, मुए मुक्ति कहाँ होई हो ।
तीरथबासी होइ न मुक्ता, मुक्ति न धरनी सोई हो ॥१॥
जीवन भ्रम की फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आसा हो ।
जल प्यासा जैसे नर कोई, सपने फिरै पियासा हो ॥२॥
ह्वै ५अतीत बंधन तें छूटै, जहँ इच्छा तहँ जाई हो ।
बिना अतीत सदा बंधन में, कितहूँ जानि न पाई हो ॥३॥
आवागवन से गये छूटि के, सुमिरि नाम अबिनासी हो ।
कहैं कबीर सोई जन गुरु है, काटी भ्रम की फांसी हो ॥४॥

१--खोज लो । २--कंठ के द्वारे । ३--इशारों से बतलाता है कि धन अमुक स्थान पर गड़ा है । ४--अंगूर । ५--तीनों गुणों और माया से न्यारा ।

* उपदेश *

छिमा गहौ हो भाई, धरि सतगुरु चरनी ध्यान रे ॥१॥
मिथ्या कपट तजो चतुराई, तजो जाति अभिमान रे ॥२॥
दया दीनता समता धारो, हो जीवत मृतक समान रे ॥३॥
सुरत निरत मन पवन एक करि, सुनो सबद धुन तान रे ॥४॥
कहैं कबीर पहुंचो सतलोका, जहँ रहै पुरुष अमान रे ॥५॥

* चेतावनी *

खसम न चीन्है बावरी, का करत बड़ाई ॥ टेक ॥
बातन भगति न होहिंगा, छोड़ो चतुराई ।
कागा हंस न होहिंगे, दुबिधा नहिं जाई ॥१॥
गुरु बिन ज्ञान न पाइहो, मरिहो भटकाई ।
चेत करो वा देस, नहीं जम हाथ बिकाई ॥२॥
दिल दरियाव की माछरी, गंगा बहि आई ।
कोटि जतन से धोवही, तहु बास न जाई ॥३॥
साखी सबद संदेस पढ़ि, मत भूलो भाई ।
संत मता कछु और है, खोजा सो पाई ॥४॥
तीनि लोक दसहों दिसा, जम धै धै खाई ।
जाइ बसो सतलोक में, जहँ काल न जाई ॥५॥
कहैं कबीर धर्मदास से, हंसा समुझाई ।
आदि अंत की बारता, सतगुरु से पाई ॥६॥

* उपदेश *

गुरु से कर मेल गँवारा, का सोचत बारम्बारा ॥१॥
जब पार उतरना चहिये, तब केवट से मिलि रहिये ॥२॥
जब उतरि जाय भवपारा, तब छूटै यह संसारा ॥३॥

जब दरसन देखा चहिये, तब १दर्पन माँजत रहिये ॥३॥
जब दर्पन लागत काई, तब दर्सन कहँ तें पाई ॥५॥
जब गढ़ पर बजी बधाई, तब देख तमासे जाई ॥६॥
जब गढ़ बिच होत २सकेला, तब हंसा चलत अकेला ॥७॥
कहैं कबीर देख मन करनी, वा के अंतर बीच कतरनी ॥८॥
कतरनि कै गांठि न छूटै, तब पकरि पकरि जम लूटै ॥९॥

* घट-मठ *

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो ॥टेक॥
यहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो ।
चौदह खंड बसै जा के मुख, सबको करत अहारा हो ॥१॥
जारि बारि कोइला करि डारत, फिरि फिरि दे औतारा हो ।
ब्रह्मा बिस्नु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो ॥२॥
सुर नर मुनि सब छल:छल मारिन, चौरासी में डारा हो ।
मद्ध आकास आप जहँ बैठे, जोति सबद उजियारा हो ॥३॥
३सेत सरूप सबद जहँ फूले, हंसा करत बिहारा हो ।
कोटिन सूर चंदा छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो ॥४॥
वही पार इक नगर बसतु है,बरसत अमृत धारा हो ।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो ॥५॥

* उपदेश *

(१)

सतसँग लागि रहो रे भाई, तेरी बिगरी बात बनि जाई ॥टेक॥
दौलत दुनियाँ माल खजाने, बधिया बैल चराई ।

१–मन रूपी शीशा । २–सिमटाव अर्थात् कूच । ३--सफेद रंगत का ।

जबही काल के डंडा बाजे, खोज खबरि नहिं पाई ॥१॥
ऐसी भगति करौ घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
सेवा बंदगी अरु अधीनता, सहज मिलैं गुरु आई ॥२॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु बात बताई ।
यह दुनियां दिन चार १दहाड़े, रहो अलख लौ लाई ॥३॥

(२)

कर गुजरान गरीबी से, मगरूरी किसपर करता है ॥१॥
२गीदी काया देख भुलाया, दीनन से क्यों डरता है ॥२॥
जगत पुकारै कूका मारै, हो हो कहि कर हलता है ॥३॥
रूह ३जलाली करत हलाली, क्यों दोजख आगी जलता है ।४।
खाय खुराका पहिन ४पुसाका, जम का बकरा पलता है ।५।
जम बदजाती तोड़ै छाती, क्यों नहिं उससे डरता है ॥६॥
तजि अभिमाना सीखो ज्ञाना, सतगुरु संगत तरता है ॥७॥
कहैं कबीर कोइ बिरला हंसा, जीवत ही जो मरता है ॥८॥

(३)

जग में गुरु समान नहिं दाता ॥ टेक ॥
वस्तु अगोचर दइ सतगुरु ने, भली बताई बाटा ।
काम क्रोध कैद करि राखे, लोभ को लीन्हो नाथा ॥१॥
काल्ह करै सो ५हालहि करि ले, फिर न मिलै यह साथा ।
चौरासी में जाइ पड़ोगे, भुगतो दिन और राता ॥२॥
सबद पुकार पुकार कहत है, करि ले संतन साथा ।
सुमिर बन्दगी कर साहिब की, काल नवावै माथा ॥३॥
कहैं कबीर सुनो हो धर्मन, मानो बचन हमारा ।

१—दिन । २—बे-समझ, मूढ़ । ३—तेजस्वी । ४—सुन्दर वस्त्र । ५—अभी ही ।

परदा खोलि मिलो सतगुरु से, आवो लोक [१]दयारा ॥४॥

* सतगुरु *

बलिहारी जाउँ मैं सतगुरु के, मेरा दरस करत भ्रम भागा ॥१॥
धर्मराय से [२]तिनुका तोड़ा, जम दुसमन से दूर किया ॥२॥
सबद पान परवाना दीया, काग करम तजि हंस किया ॥३॥
गुरु की मिहर से अगम निगम लख, बिन गुरु कोई न मुक्त भया ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन से राखि लिया ॥५॥

* घट-मठ *

(१)

संत जन करत साहिबी तन में ॥ टेक ॥
पाँच पचीस फौज यह मन की, खेलैं भीतर तन में ।
सतगुरु सबद से [३]मुरचा काटो, बैठो जुगत के घर में ॥१॥
[४]बंकनाल का धावा करिके, चढ़ि गये सूर गगन में ।
अष्ट कँवल दल फूल रह्यो है, परखे तत्त नजर में ॥२॥
[५]पच्छिम दिसि की खिड़की खोलो, मन रहै प्रेम मगन में ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, [६]लहरि लेहु या तन में ॥३॥
संख घंट सहनाई बाजे, सोभा सिंधु महल में ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अजर साहिब लख घट में ॥४॥

(२)

जब कोइ रतन पारखी पैहो, हीरा खोलि भँजैहो ॥१॥
तन को तुला सुरत कौ पलरा, मन कौ सेर बनैहो ।

१--दयाल देश में । २--खाता चुकता कर दिया ।३--मोरचा जीतो । ४--सुरति की अंतरीव चढ़ाई के एक स्थान का नाम है । ५--दसवाँ द्वार । ६--आनन्द ।

१मासा पाँच पचीस २रत्ती को, ३तोला तीन चढ़ैहौ ॥२॥
अगम अगोचर बस्तु गुरू की, लै सर्राफ पै जैहौ ।
जहँ देख्यो संतन की महिमा, तहवाँ खोलि भंजहौ ॥३॥
पाँच चोर मिलि घुसे महल में, इन से बस्तु छिपैहौ ।
जम राजा के कठिन दूत हैं, उन से आप बचैहौ ॥४॥
दया धरम से पार उतरिहौ, सहज परम पद पैहौ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हीरा गाँठि लगैहौ ॥५॥

* सतगुरु *

साचे सतगुरु की बलिहारी, जिन यह कुंजी कुफल उघारी ॥१॥
नख सिख साहिब है भरपूर, सो साहिब क्यों कहिये दूर ॥२॥
सतगुरु दया अमी रस भींजै, तन मन धन सब अर्पन कीजै ॥३॥
कहैं कबीर संत सुखदाई, सुख सागर इस्थिर घर पाई ॥४॥

* परिचय *

सुन सतगुर की बानी लो ।
ताहि चीन्ह हम भये बैरागी, परिहर कुल की कानी लो ॥१॥
तब हम बहुतक दिन लौं अटके, सुन सुन बात बिरानी लो ।
अब कुछ समझ पड़ी अंतरगति, आदि कथा परमानी लो ॥२॥
मनमति गई प्रगट भइ सम गति, रमता से रुचि मानी लो ।
लालच लोभ मोह ममता की, मिट गइ ऐंचा तानी लो ॥३॥
चंचल तें मन निस्चल कीन्हा, सुरत निरत ठहरानी लो ।
कहैं कबीर दया सतगुरु तें, लखी अटल रजधानी लो ॥४॥

* नाम *

हमरे सत्तनाम धन खेती ॥ टेक ॥

१–पाच विकारों के माशा ।२–पच्चीस प्रकृतियाँ । ३–तीनों गुण ।

मन कै बैल सुरत हरवाहा, जब चाहैं तब जोती ॥१॥
सत्तनाम का बीज बोवाया, उपजै हीरा मोती ॥२॥
उन खेतन में नफ़ा बहुत है, संतन लूटा सेंती ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, उलटि पलटि नर जोती ॥४॥

* सतगुरु की दात्ति *

सतगुरु सोई दया करि दीन्हा, तातें अनचिन्हार मैं चीन्हा ।टेक।
बिन पग चलना बिन पर उड़ना, बिना चुंच का चुगना ।
बिना नैन का देखन पेखन, बिन सरवन का सुनना ॥१॥
चंद न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लाई ।
बिना अन्न अमृत रस भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ॥२॥
जहाँ हरष तहँ पूरन सुख है यह सुख का से कहना ।
कहैं कबीर बलि बलि सतगुरु की, धन्य सिष्य का १लहना ॥३॥

* गुरु-कृपा *

मेरे सतगुरु पकड़ी बाँह, नहीं तो मैं बहि जाता ॥ टेक ॥
करम काटि कोइला किया, ब्रह्म अगिनि २परिचार ।
लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयार ॥१॥
कागा से हंसा किया, जाति बरन कुल खोय ।
दया दृष्टि से सहज सब, पातक डारे धोय ॥२॥
अज्ञानी भटकत फिरै, जाति बरन अभिमान ।
सतगुरु सबद सुनाइया, भनक पड़ी मेरे कान ॥३॥
माया ममता तजि दई, बिषया नाहिं समाय ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हद तजि बेहद जाय ॥४॥

१—भाग्य । २—प्रचंड करके ।

* घट-मठ *

अंखियाँ लागि रहन दो साधो, हिरदे नाम सम्हारा।
रीझै बूझै साहिब तेरा, कौन पड़ा है द्वारा ॥१॥
जम जालिम के सब डर मिटिगे, जा दिन दृष्टि निहारा।
जब सतगुरु ने किरपा कीन्हीं, लीन्हो आप उबारा ॥२॥
लख चौरासी बन्धन छूटे, सदा रहै गुरु संगी।
प्रेम पियाला हर दम पीवै, सदा मस्त बौरंगी ॥३॥
जब लग बस्तु पिछाने नाहीं, तब लग झूठी आसा।
झिलमिल जोति लखै कोई गुरमुख, उनमुनि घर के बासा ॥४॥
सब को दृष्टि पड़ै अबिनासी, बिरला संत पिछानै।
कहैं कबीर यह भर्म किवाड़ी, जो खोलै सो जानै ॥५॥

(चेतावनी)

(१)

परमातम गुरु निकट बिराजै, जागु जागु मन मेरे ॥ टेक ॥
धाय के सतगुरु चरनन लागो, काल खड़ा सिर तेरे।
छिन छिन पल पल सबहि संघारै, बहु बिधि देत न देरे ॥१॥
जुगन जुगन तोहि सोवत बीता, अजहुँ न जागु सबेरे।
काम क्रोध मद लोभ फंद तजि, छिमा दया दिल हेरे ॥२॥
भाई बन्धु कटम्ब कबीला, सब स्वारथ के चेरे।
जब जम जालि में आनि पकरि है, कोइ न संग चले रे ॥३॥
भौसागर बाँकी है धारा, लख चौरासी फेरे।
कहैं कबीर सुनो हो साधो, जग से किये निबेरे ॥४॥

(२)

जतन बिन मिरगन खेत उजाड़े ॥टेक॥
पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, तिन में तीन १चितारे।
अपने अपने रस के भोगी, चुगते न्यारे न्यारे ॥१॥
पाँच डार २सूअटन की आइ, उतरे खेत मंझारे।
हा हा करत बाल ले भागे, टेरि रहे रखवारे ॥२॥
सुनियो रे हम कहत सबन को, ऊँचे हाँक हँकारे।
यह नर देह बहुरि नहिं पैहौ, काहे न रहत सँभारे ॥३॥
तन कर खेती मन कर बाड़ी, मूल सुरत रखवारे।
ज्ञान बान और ध्यान धनुष करि, क्यों नहिं लेत ३सँघारे ॥४॥
सार सबद बन्दूख सुरत धरि, मारे तीन चितारे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ४उबरे खेत निहारे ॥५॥

(३)

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका चार गांठी, ५ऐंड़ों टेढ़ों जात ॥१
बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइके टका ६बरात।
दिवस चारि कै करो साहिबी, जैसे ७बनहर पात ॥२॥
ना कोऊ लै आयौ यह धन, ना कोऊ लै जात।
रावन हूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये ८बिलात ॥३॥
मैं उन संत सदा थिर पूजौं, जो सतनाम जपात।
जिन पर कृपा करत हैं सतगुरु, ते सतसंग मिलात ॥४॥

१—चितकबरे। २—तोते। ३—मार देवे। ४—बच गए। ५—अकड़ कर चलता है। ६—पूँजी। ७—हरा पत्ता। ८—नष्ट हो गये।

मात पिता बनिता सुत संपति, अंत न चलत सँगात ।
कहत कबीर संग कर सतगुरु, जनम अकारथ जात ॥५॥

(४)

खलक सब रैन का सपना, समझ मन कोइ नहीं अपना ॥१॥
कठिन है मोह का धारा, बहा सब जात संसारा ॥२॥
घड़ा ज्यों नीर का फूटा, पत्तर ज्यों डार से टूटा ॥३॥
ऐसे नर जात जिंदगानी, अजहुँ तौ चेत अभिमानी ॥४॥
निरखि मत भूल तन गोरा, जगत में जीवना थोरा ॥५॥
तजो मद लोभ चतुराई, रहो १निःसंक जग माहीं ॥६॥
सजन परिवार सुत दारा, सभी इक रोज ह्वै न्यारा ॥७॥
निकसि जब प्रान जावैंगे, कोई नहिं काम आवैंगे ॥८॥
सदा २जिनि जान यह देही, लगा ले नाम से नेही ॥९॥
कहत कब्बीर अबिनासी, लिये जम काल की फाँसी ॥१०॥

(५)

आपन काहे न सँवारै काजा ॥ टेक ॥
ना गुरु भगति साध की संगत, करत अधम निर्लाजा ।
मानुष जनम फेर नहिं पैहौ, सब जीवन में राजा ॥१॥
पर नारी प्यारी करि जानै, सो नर नरक समाजा ।
जिनके पंथ भूलिगे भोंदू, करु चलने कै साजा ॥२॥
इहाँ नहीं कोइ मोत तुम्हारा, मात पिता सुत आजा ।
ये हैं सब मतलब के साथी, काहे करत अकाजा ॥३॥
बृद्ध भये पर नाम भजतु हैं, निकसत सुरत अवाजा ।
टूटी खाट पुराना झिलँगा, पड़े रहो दरवाजा ॥४॥

१—भ्रम से रहित होकर । २—मत जान ।

ब्रह्मा बिस्नु महेस डिराने, सुनत काल कै गाजा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चढ़िले नाम जहाजा ॥५॥

(६)

जनम सिरान भजन कब करिहौ ॥ टेक ॥
गर्भ बास में भगति कबूल्यौ, बाहर आये भुलान ॥१॥
बालापन तो खेल गँवायौ, तरुनाई अभिमान ॥२॥
बृद्ध भये तन काँपन लागा, सिर धुन धुन पछितान ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जम के हाथ बिकान ॥४॥

* सार-शब्द *

मेरा दिल सतगुरु से राजी ॥ टेक ॥
नंगे हि आवन नंगे हि जावन, झूठी रचिया बाजी।
या दुनिया में जीवन थोरा, १ गरब करे सो २पाजी ॥१॥
स्याही गई सपेदी आई, हो गया राज बिराजी।
बेद पढ़ंते पंडित भूले, कतेब पढ़ंते काजी ॥२॥
सार सबद से सुरत लगाई, मारा ३रावन पाजी ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सतपुर नौबत बाजी ॥३॥

* चेतावनी *

(१)

ससुरे का ब्यौहार, अनोखी बहु सीखि ले रे ॥ टेक ॥
पिया तुम्हारे रंग बिरंगे, तुम हो नारे कुचाल।
संग तुम्हारो कसे निबहै, मूरख मूढ़ गँवार ॥१॥
इत उत तकना छोड़ि दे बहुवा, अपने महल चढ़ि आव।

१—अहंकार। २—मूर्ख। ३—अहंता रूपी रावण।

अंतर झाड़ू दे के सजनी, कूड़ा दूर बहाव ॥२॥
ज्ञान ध्यान का चूड़ा पहिरौ, सुखमन सेज बिछाव ।
हंसि के प्रीतम आन मिलेंगे, दुबिधा दूरि बहाव ॥३॥
कहैं कबीर सुनो हो बहुवा, सतसंगत को धाव ।
सार सबद १निरवार के रे, अमर लोक चलि आव ॥४॥

(२)

काया सराय में जीव मुसाफिर, कहा करत २उनमाद रे ।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चला सबेरे लाद रे ॥१॥
तन कै चोला खरा अमोला, लगा दाग पर दाग रे ।
दो दिन की जिंदगानी में क्या, जरै जगत की आग रे ॥२॥
क्रोध ३केंचुली उठी चित्त में, ४भइसि मनुष तें नाग रे ।
सूझत नाहिं समुँद सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥३॥
सरवन सबद बूझि सतगुरु से, पूरन प्रगटे भाग रे ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, पाया अचल सुहाग रे ॥४॥

(३)

भजु मन जीवन नाम सवेरा ॥ टेक ॥
सुंदर देह देखि जिनि भूलौ, झपट लेत जस बाज बटेरा ॥१॥
या देही कौ गरब न कीजै, उड़ि पंछी जस लेत बसेरा ॥२॥
या नगरी में रहन न पैहौ, कोइ रहि जाय न दुक्ख घनेरा ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मानुष जनम न पैहौ फेरा ॥४॥

(४)

मन तू पार उतरि कहँ जैहै ।

१–खोजकर अथवा पहचान कर । २–मसती । ३–सर्प की खाल के ऊपर का छिलका । ४–तू हो गया है ।

आगे पंथी पंथ न कोई, कूच मुकाम न पैहै ॥१॥
नहिं तहँ नीर नाव नहिं खेवट, ना १गुन खैंचनहारा।
धरनी गगन कल्प कछु नाहीं, ना कछु वार न पारा ॥२॥
नहिं तन नहिं मन नाहिं अपनपौ, सुन्न में सुद्धि न पैहौ।
बलवाना ह्वै २पैठौ घट में, वहाँ हीं ३ठौरें होइ हौ ॥३॥
बारहि बार बिचारि देखु मन, ४अंत कहूँ मत जैहौ।
कहैं कबीर सब छांड़ि कल्पना, ज्यों कै त्यों ठहरैहौ ॥४॥

(५)

कर साहिब से प्रीत रे मन, कर साहिब से प्रीत ॥ टेक ॥
ऐसा समय बहुरि नहिं पैहो, जैहै अवसर बीत।
तन सुंदर छबि देख न भूलो, यह बारू की भीत ॥१॥
सुख संपति सुपने की बतियाँ, जैसे तृन पर सीत।
जाही कर्म परम पद पावै, सोई कर्म करु मीत ॥२॥
सरन आये सो सबहि उबारैं, यहि साहिब की रीत।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चलिहो भवजल जीत ॥३॥

(६)

भजन बिन योंही जनम गँवायो ॥ टेक ॥
गर्भ बास में ५कौल कियो थो, तब तोही बाहर लायो ॥१॥
जठर अगिन में काढ़ि निकारो, गांठि बांधि क्या लायो ॥२॥
६बह बह मुबो बैल की नाईं, सोय रहियो उठि खायो ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चौरासी भरमायो ॥४॥

१–डोरी-जिसे नाव में बाँधकर खींचते हैं। २–घुस जाओ। ३–बिश्राम के ठिकाने पर। ४–दूसरी तरफ़। ५–बचन। ६–बैल की तरह डहका डहकाकर मर गया।

(७)

हंसा सुधि कर अपनो देसा ॥ टेक ॥
इहां आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फंसे परदेसा।
अबहुँ चेतु हेतु करु पिउ से, सतगुरु के उपदेसा ॥१॥
जौन देस से आये हंसा, कबहुं न कीन्ह अंदेसा ।
आई परियो तुम मोह के फंद में, काल गह्यो तेरो केसा ॥२॥
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जाको रटत महेसा ।
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा ॥३॥
का कहि आयौ काह करतु हौ, कहँ भूले परदेसा ।
कहैं कबीर वहाँ चल हंसा, जनम न होय हमेसा ॥४॥

(८)

अरे दिल गाफिल, गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवैगा ॥ टेक ॥
सौदा करन को या जग आया, पूँजी लाया मूल गँवाया ।
प्रेम नगर का अंत न पाया, ज्यों आया त्यों जावैगा ॥१॥
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या क्या कीता ।
सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा ॥२॥
परली पार मेरा मीता खड़िया, उस मिलने का ध्यान न धरिया।
टूटी नाव ऊपर जा बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥३॥
दास कबीर कहैं समुझाई, अंत काल तेरो कौन सहाई ।
चला अकेला संग ना काई, कीया अपना पावैगा ॥४॥

* परिचय *

साहिब हम में साहिब तुम में, जैसे तेल तिलन में।
मत कर बंदा गुमान दिल में, खोज देखिले तन में ॥ टेक ॥
चाँद सुरज के खंभ गाड़ि के, प्रान आसन कर घट में।
इंगला पिंगला सुरत लगा के, कमल पार कर घर में ॥१॥
वा में बैठी सुखमन [१]नारी, झुला झुलत बँगलन में।
कोटि सूर जहँ करते झिलिमिलि, नीलसर [२]सोती गगन में ॥२॥
तीन ताप मिटिगे देंही के, निर्मल होइ बैठी घट में।
पाँच चोर जहँ पकरि मँगाये, झंडा [३]रोपे निरगुन में ॥३॥
पाँच सहेली करत आरती, मनसा बाचा सतगुरु में।
अनहद घंटा बजै मृदंगा, तन सख लेहि रतन में ॥४॥
बिन पानी लागी जहँ बरषा, मोती देख नदिन में।
जहवाँ मनुआ बिमल रह्यो है, चलो हंस ब्रह्मँड में ॥५॥
इकइस ब्रह्मँड छाइ रह्यो है, समझैं बिर्ले सूरा।
मुरख गँवार कहा समझैंगे, ज्ञान कै घर है दूरा ॥६॥
बड़े भाग अलमस्त रंग में, कबिरा बोलै घट में।
हंस उबारन दुक्ख निवारन, आवागमन मिटै छिन में ॥७॥

* साखी *

साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोय।
चल चकवी वा देस को जहाँ रैन ना होय ॥
चकवी बिछुरा साँझ की, आन मिलै परभात।
जो नर बिछुरे नाम से, दिवस मिलैं नहिं रात ॥

१—नाड़ी। २—नदी या चशमा। ३—झंडा गाड़ दिया है।

* उपदेश *

एक नगरिया तनिक सी में, पाँच बसैं किसान ।
एक बसै धरती के ऊपर, एक अगिन में जान ॥१॥
दोय बसैं पवना पानी में, एक बसै असमान ।
पाँच पाँच उनकी घरवाली, नित उठि मांगैं खान ॥२॥
इनहीं से सब डुबकत डोलैं, मुकद्दम और दिवान ।
खान पान सब न्यारा राखैं, मन में उनके मान ॥३॥
जगत की आसा तजि दे हंसा, धरिलै पिय को ध्यान ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बैठो जाइ बिवान ॥४॥

* परिचय *

चुवत अमीं रस भरत ताल जहँ, सबद उठै असमानी हो ॥टेक॥
सरिता उमड़ सिन्ध को सोखै, नहिं कछु जात बखानी हो ॥१॥
चाँद सुरज तारागन नहिं वहँ, नहिं वहँ रैन बिहानी हो ॥२॥
बाजे बाजैं सितार बाँसुरी, ररंकार मृदु बानी हो ॥३॥
कोटि झिलिमिली जहँ वहँ झलकै, बिनु जल बरसत पानीहो॥४॥
सिव अज बिस्नु सुरेस सारदा, निज निज मति उनमानी हो ॥५॥
दस अवतार एक तत राजैं, अस्तुति सहज से आनी हो ॥६॥
कहैं कबीर भेद की बातैं, बिरला कोइ पहिचानी हो ॥७॥
कर पहिचान फेर नहिं आवै, जम जुलमी की खानी हो ॥८॥

* नाम *

नाम बिमल पकवान मनै हलवैया ॥टेक॥
ज्ञान कराही प्रेम घीव करि, मन मैदा कर सान ।
ब्रह्म अगिनि उदगारि के, इक अजब मिठाई छान ॥१॥
तन बनावो पालरा, मन पूरा करि सेर ।

सुरत निरत के डांडी बनवो, तौलत ना कछु फेर ॥२॥
गगन मँडल में घर है तुम्हरा, त्रिकुटी लागि दुकान।
उनमुनिया में रहनि बनाओ, तब कछु सौदा बिकान ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, या गति अगम अपार।
सत्त नाम साधु जन लादैं, बिष लादै संसार ॥४॥

* परिचय *

(१)

मारग बिहँग बतावैं संत जन ॥टेक॥
कौने घर से जिव की उतपति, कौने घर को जावै।
कहाँ जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहाँ चढ़ावै ॥१॥
गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै।
भूमंडल से परिचय करि ले, पर्बत धौल लखावै ॥२॥
द्वादस १ कोस साहिब के डेरा, तहाँ सुरत ठहरावै।
वा को रँग रूप नहिं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै।
अमर लोक में झूलै हिंडोला, सतगुरु सबद सुनावै ॥४॥

(२)

हंसा कहो २ पुरातम बात ॥टेक॥
कौन देस से आयौ हंसा, उतरियो कौने घाट।
कहँ हंसा बिसराम कियो है, कहाँ लगायो आस ॥१॥
बंक देस से आयो हंसा, उतरियो भौजल घाट।
भूलि परियो माया के बसि में, बिसरि गयो वो बात ॥२॥
अब ही हंसा चेतु सवेरा, चलो हमारे साथ।

१--बारह अंतरीव स्थान। २--प्राचीन।

संसय सोक वहाँ नहिं ब्यापै, नहीं काल कै त्रास ॥३॥
हुआँ मदन बनि फूलि रहे हैं, आवै सोहं बास।
मन भौंरा जहँ अरुझि रहो है, सुख कीना अभिलास ॥४॥
मकर तार तें हम चढ़ि करते, बंकनाल परबेस।
वहि डोरी चढ़ि चढ़ि चले हंसा, सतगुरु के उपदेस ॥५॥
जहँ संतन की चौकी बनी है, ढुरै सोहंगम चौंर।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु के सिर [१] मौर ॥६॥

* भेद *

(१)

ऐसा रंग कहा है भाई ॥टेक॥

सात दीप नौ खंड के बाहर, जहवाँ खोज लगाई।
वा देसवा कै मरम न जानै, जहँ से चूनरि आई ॥१॥
या चूनर में दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई।
जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहिं आई ॥२॥
प्रेम नगर की गैल कठिन है, वहँ कोइ जान न पाई।
चाँद सुरज जहँ पौन न पानी, पतिया को लै जाई ॥३॥
सोहंकार से काया सिरजी, ता में रंग समाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई ॥४॥

(२)

मेरी नजर में मोती आया है ॥टेक॥

कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है ॥१॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर थाके, तिनहूँ खोज न पाया है ॥२॥
संकर सेस और सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ॥३॥

१—मुकुट।

है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ॥४॥
चहुँ दिसि कँवल तिर्कुटी साजे, ओंकार दरसाया है ॥५॥
ररंकार पद सेत सुन्न मॅध, षटदल कँवल बताया है ॥६॥
पारब्रह्म महासुन्न मँझारा, सोइ निःअच्छर रहाया है ॥७॥
भँवर गुफा में सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है ॥८॥
सत्तलोक सत पुरुष बिराजै, अलख अगम दोउ भाया है ॥९॥
पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रम्हंड पार जो गाया है ॥१०॥
यह सब बातें देही माहीं, प्रतिबिंब अंड जो पाया है ॥११॥
प्रतिबिंब पिंड ब्रम्हँड है निकली, असली पार बताया है ॥१२॥
कहैं कबीर सत्तलोक सार है, यहं पुरुष नियारा पाया है ॥१३॥

(३)

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है।
तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है ॥१॥
पहिले ध्यान गुरन का धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो।
१सुहेलना धुन में नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है ॥२॥
सतगुरु दरस होइ जब भाई, वे दें तुमको नाम चिताई।
सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है ॥३॥
सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना।
सहज दाह तहँ रोपा थाना, जो अग्रदीप सरदारा है ॥४॥
सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिनकी ऊँचाई।
तीनि सुन्न लौं काल कहाई, आगे सत्त पसारा है ॥५॥
पिरथम अभय सुन्न है भाई, २कन्या निकल यहँ बाहर आई।
जोग ३संतायन पूछो वाही, (कहा) मम४दारा वह भरतारा है।६।

१—सहज। २—सुरति रूपी कन्या। ३—संत मत का योग-साधन बतलाने वाले महापुरुष। ४—सुरति ने कहा मैं उनकी स्त्री हूं और वे मेरे पुरुष हैं।

दूजे सकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई ।
अमर कोट के नकल बनाई, जिन अँड मधि रच्यो पसारा है ।।७।।
तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी ।
जोग संतायन आये अबिनासी, जिन गल नख छेद निकारा है ।८।
चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रम्ह पुर्ष ध्यान समाई ।
१आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है ।।९।।
पंचम सुन्न अलेख कहाई, तहँ अदली बंदीवान रहाई ।
जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है ।।१०।।
षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भण्डार याही के माहीं ।
नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है ।।११।।
सतवें सत्त सुन्न कहलाई, सत भंडार याही के माहीं ।
२ निःतत रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तें न्यारा है ।।१२।।
सत सुन ऊपर सत की नगरी, बाट बिहंगम३बांकी डगरी ।
सो पहुँचे चाले बिन पग री, ऐसा खेल अपारा है ।।१३।।
पहिली चकरी समाध कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई ।
बेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है ।।१४।।
दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु संग द्रोह कराई ।
पीछे आनि गहे सरनाई, सो यहँ आन पधारा है ।।१५।।
तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मति जाना ।
सो मुनियन यहँ आई रहाना, करम भरम तजि डारा है ।।१६।।
चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई ।
धुनि संगि पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है ।।१७।।

१—आदि रचना करने वाली माया । २—तत्त्वों से रहित । ३—टेढ़ी गैल ।

पंचम चकरी रास जो भाखी, १अलमीना है तहँ मधि झांकी।
लीला कोट अनंत वहाँ की, जहँ रास बिलास अपारा है
॥१८॥
षष्टम चकरी बिलास कहाई, जिन सतगुरु सँग प्रीति निबाही
छुटते देंह जगह यहँ पाई, फिर नहिं भव अवतारा है ॥१६॥
सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बँस गुरन तहँ जानो।
कलि में बोध किया ज्यों भानो, अंधकार खोया उजियारा है
॥२०॥
अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलहदी ताना ताना।
जा का नाम कबीर बखाना, जो सब संतन सिरधारा है ॥२१॥
ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पौड़ी ॥
गादी अदली रही सिर मौरी, जहँ सतगुरु बंदी छोरा है ॥२२॥
अनुरोधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही ॥
पाँच संख है याहि उँचाई, जहँ अदभुत ठाठ पसारा है।२३।
सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहैं तासु के माहीं।
गादी अदल कबीर यहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है।२४।
पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा।
सत्त पुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है ॥२५॥
आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु ऊँचाई।
हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अदभुत खेल अपारा है ॥२६॥
बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरें हो रहिं जारी।
हंसा केल करत तहँ भारी, जहँ अनहद घुरे अपारा है ॥२७॥

१—अति विचित्र।

ता मधि अधर सिंघासन गाजै,पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजै।
कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥२८॥
हंस हंसनी आरत उतारैं, खोड़स भानू सूर पुनि चारैं।
पद बीना सत सबद उचारैं जो बेधत हिये मंझारा है ॥२९॥
तापर अगम महल इक न्यारा, संखन कोटि तासु बिस्तारा।
बाग बावड़ी अमृत धारा, जहं अधरी चलैं फुहारा है ॥३०॥
मोती महल और हीरन चौंरा, सेत बरन तहं हंस चकोरा।
सहस सूर छबि हंसन जोरा, ऐसा रूप निहारा है ॥३१॥
अधर सिंघासन जिंदा साईं, अर्बन सूर रोम सम नाहीं।
हंस हिरंबर चंवर ढुलाईं, ऐसा अगम अपारा है ॥३२॥
तहँ अधरी ऊपर अधर धराई, संखन संख तासु ऊँचाई।
झिलमिल हट सो लोक कहाई, जहँ झिलमिल झिलमिल सारा है ॥३३॥
बाग बगीचे झिलमिल कारी, रतनन जड़े पात और डारी॥
मोती महल और रतन अटारी, तहँ पुरुष बिदेह पधारा है ॥३४॥
कोटिन भानु हंस को रूपा, धुन है वहँ की अजब अनूपा॥
हंसा करत चँवर सिर भूपा, बिन कर चँवर ढुलारा है ॥३५॥
हंसा केल सुनो मन लाइ, एक हंस के जो चित आई।
दूजा हंसा समझि पुनि जाई, बिन मुख बैन उचारा है ॥३६॥
ता आगे निःलोक है भाई, पुरुष अनामी अकह कहाई।
जो पहुंचे जानेंगे वाही, कहन सुनन तें न्यारा है ॥३७॥
रूप सरूप वहाँ कछु नाहीं, ठौर ठाँव कछु दीसै नाहीं।

१ अरज २तूल कछु दृष्टि न आई, कैसे कहूं ३ सुमारा है ॥३८॥
जा पर किरपा करहिं साईं, गगनी मारग पावै ताही ।
सत्तर प्रलय मारग माहीं, जब पावै दीदारा है ॥३९॥
कहैं कबीर मुख कहा न जाई, ना कागद पर अंक चढ़ाई ।
मानो गूंगे सम गुड़ खाई, ४सैनन ५बैन उचारा है ॥४०॥

(४)

६कायागढ़ जीतो रे भाई ॥ टेक ॥
ब्रह्म को चहुँ ओर ७मँडो है, माया ख्याल बनाई ।
कनक कामिनी फंदा ८रोपे, जग राखे ९बिलमाई ॥१॥
पांचो मुरचा गढ़ के भीतर, तहाँ लांघि कै जाई ।
आसा तृस्ना मनसा कहिये, तृगुन बनी जो खाई ॥२॥
पचिस सुभाव तहँ निसि दिन ब्यापै, काम क्रोध दोउ भाई ।
लालच लोभ खड़े दरवाजे, मोह करै ठकुराई ॥३॥
मूल कँवल पर आसन कीन्हो, गुरु कौ सीस नवाई ।
छवौं कँवल इक सुर में बेधे, चढ़ी गगन गढ़ जाई ॥४॥
ज्ञान कै घोड़ा ध्यान कै १०पाखर, जुक्त कौ जीन बनाई ।
सत्त सुकृत दोउ लगी ११पावरी, बिबेक लगाम लगाई ॥५॥
सील छिमा के १२बख्तर पहिरे, तत तरवार गहाई ।
साजन सुरति चढ़ि छाजे ऊपर, निरत के १३साँग गहाई ॥६॥
सतएँ कँवल त्रिकुट के भीतर, वहाँ पहुंचि के जाई ।

१—चौड़ाई । २—लम्बाई । ३—गिनती । ४—इशारों में । ५—बचन । ६—शरीर रूपी किला । ७—अर्थात् व्याप्त है । ८—डाले हैं । ९—अटकाकर । १०—ढाल । ११—रिकाब । १२—लड़ाई लड़ने की लोहे की वरदी । १३—नेजा या बल्लम ।

जोति सरूपी देव निरंजन, वेदन उनको गाई ॥७॥
बंकनाल की [१]औघट घाटी, तहाँ न पग ठहराई ।
ओअं ररंग अड़े जहँ दुइ दल, अजपा नाम सहाई ॥८॥
जोजन एक खरब के आगे, पुरुष बिदेही रहाई ।
सेत कँवल निस बासर फूले, सोभा बरनि न जाई ॥९॥
सेत छत्र और सेत सिंघासन, सेत धुजा फहिराई ।
कोटिन भानु चन्द्र तारागन, छत्र की छाँह रहाई ॥१०॥
मन में मन नैनन में नैना, मन नैन एक ह्वै जाई ।
सुरत सोहागिनि मिलत पिया को, तन कै तपन बुझाई ।११।
द्वादस ऊपर अजपा फेरै, मनै पवन थकि जाई ।
कहैं कबीर मिले गुरु पूरे, सबद में सुरत मिलाई ॥१२॥

(५)

चलु हंसा वा देस, जहाँ तोर पिया बसै ॥टेक॥
वहि देसवा में [२]अर्द्धमुख कुइयाँ, [३]साँकर वाकै [४]मोहड़ ।
सुरत सोहागिनि है पनिहारिनि, भरै ठाढ़ बिन डोर ॥१॥
वहि देसवाँ बादर न उमड़ै, रिमझिम बरसै मेह ।
चौबारे में बैठि रहो ना, जा भीजहु [५]निर्देह ॥२॥
वहि देसवाँ में नित्त पूर्निमा, कबहुँ न होइ अन्धेर ।
एक सुरज कै कौन बतावै, कोटिन सुरज उँजेर ॥३॥
लछमी वा घर झाड़ू देत है, सिव करते कोतवाली ।
ब्रम्हा वा के बने टहलुवा, बिस्नु करै चरवाही ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, [६]ई पद है निर्बानी ।

१--कठिन । २--उलटे मुँह वाला कूआं । ३--तंग । ४--मुहाना । ५--बिना देह के अर्थात सुरति के द्वारा । ६--यह ।

जो ई पद कै अरथ लगावै, पहुँचै मूल ठिकानी ॥५॥

(६)

जिन पिया प्रेम रस प्याला, सोई जन है मतवाला ॥१॥
मूल चक्र कौ बन्द लगावै, उलटी पवन चढ़ावै ।
जरा मरन भय ब्यापै नाहीं, सतगुरु सरनी आवै ॥२॥
बिन धरनी हरि मंदिर देखा, बिन सागर झर पानी ।
बिन दीपक मंदिर ऊँजियारा, बोलै गुरुमुख बाना ॥३॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, उनमुन के घर मेला ।
अष्ट कँवल पर कँवल बिराजै, सो साहिब अलबेला ॥४॥
चाँद न सुरज दिवस नहिं रजनी, तहां सुरत लौ लावै ।
अमृत पीय मगन होय बैठै, अनहद नाद बजावै ॥५॥
चांद सुरज एकै घरि राखै, भूला मन समुझावै ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सहज सहज गुन गावै ॥६॥

* प्रेम *

(१)

आजु मेरे सतगुरु आये ।

१रहस रहस मैं अँगना बुहारौं, मोतियन चौक पुराये ॥१॥
चरन २पखारि चरनामृत करिके, सब साधन बरताऊं ॥
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, सबद सुरत लौ लाऊं ॥२॥
करूँ आरती प्रेम निछावर, पल पल बलि बलि जाऊं ।
कहैं कबीर दया सतगुरु की, परम पुरुष बर पाऊं ॥३॥

(२)

आज सुबेलो सुहावनो, सतगुरु मेरे आये ।

१—प्रसन्नता में भरकर । २—धोकर ।

चंदन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये ॥१॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरत निरत करि देखा।
साध कृपा तें दरसन पाये, साधू संग बिसेखा ॥२॥
घर आँगन में आनन्द होवै, सुरत रही भरपूर।
झरि झरि पड़ै अमीरस दुर्लभ , है नेड़े नहिं दूरि ॥३॥
द्वादस मद्ध देखि लौ जाई, बिच है आपै आपा।
त्रिकुटी मद्ध तू सेज निरख ले, नहिं मंतर नहिं जापा ॥४॥
अगम अगाध गती जो लखिहै, सो साहिब को जीवा।
कहैं कबीर धरमदास से, भेंटि ले अपनो पीवा ॥५॥

(३)

आज दिन के मैं जाउं बलिहारी ॥ टेक ॥
सतगुरु साहिब आये मेरे १पहुना।
घर आँगन लगै २सुहौना ॥१॥
साध संत लगे मंगल गावन।
भये मगन लखि छबि मन-भावन ॥२॥
चरन पखारूँ ३बदन निहारूँ।
तन मन धन सब गुरु पर वारूँ ॥३॥
जा दिन आये साध धन सोई।
होत अनन्द परम सुख होई।
सतगुरु मिलि मोरी दुर्मति खोई ॥४॥
सुरत लगी सतनाम की आसा।
कहैं कबीर दासन कर दासा ॥५॥

१--मेहमान। २--सुन्दर। ३--मुख।

(४)

कब गुरु मिलिहौ १सनेही आई ॥ टेक ॥
लोभ मोह को जार बनो है, ता में रह्यो उरुझाइ ।
जाकी साची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ ॥१॥
सुरत समानी सबद कुंड में, निरत रही लौ लाई ।
पिया बिना यों प्यारी २तलफै, तलफि तलफि जिय जाइ ॥२॥
चलो सखी वह देस चलिये, जहाँ पुरुष को ठाँइ ।
हंस ३हिरंबर चँवर ढुरत हैं, तन की तपन बुझाइ ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सबद सुनो चित लाइ ।
नाम पान ४पाँजी जो पावै, सो वा लोकै जाइ ॥४॥

(५)

जो तू पिय की लाड़ली, अपना करिले री ।
५कलह कल्पना मेट के, चरनन चित दे री ॥१॥
पिय कौ मारग कठिन है, खांड़े की ६धारा ।
डिगमिगै तौ गिरि पड़े, नहिं उतरै पारा ॥२॥
पिय कौ मारग सुगम है, तेरी चाल ७अनेड़ा ।
नाचि न जानै बावरी, कहै आँगन टेढ़ा ॥३॥
जो तू नाचन नीकसी, तो घूँघट कैसा ।
घूंघट का पट खोलि दे, मत करै अंदेसा ॥४॥
चँचल मन इत उत फिरै, पतिबर्त जनावै ।
सेवा लागी ८आन की, पिय कैसे पावै ॥५॥

१–प्रीतम । २–तड़पै । ३–सुनहरी रंग का । ४–मार्ग । ५–मनकी खट-पट अथवा संकल्प-विकल्प । ६–तलवार की धार । ७–अनुचित । ८–दूसरे इष्ट की ।

पिय खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि देवा ।
कहैं कबीर बिचारि के, कर सतगुरु सेवा ॥६॥

(६)

बहुत दिनन में प्रीतम आये ।
भाग भले घर बैठे पाये ॥१॥
मंगलाचार महा मन राखो ।
नाम १रसायन रसना चाखो ॥२॥
मंदिर महा भयो उजियारा ।
लै सूती अपनो पिय पियारा ॥३॥
मैं निरास जो नौनिधि पाई ।
कहा करूँ पिय तुमरी बड़ाई ॥४॥
कहैं कबीर मैं कछु नहिं कीन्हा ।
सहज सुहाग पिय मोहिं दीन्हा ॥५॥

(७)

सबद की चोट लगी है तन में ।
घर नहिं चैन चैन नहिं बन में ॥१॥
ढूँढत फिरों पीव नहिं पावौं ।
औषधि २मूर खाई गुजरावौं ॥२॥
तुम से बैद न हम से रोगी ।
बिन दिदार क्यों जिये बियोगी ॥३॥
एकै रंग रंगी सब नारी ।
ना जानों को पिय की प्यारी ॥४॥

१--नामका अमृत । २--दवाई बूटी ।

कहैं कबीर कोइ गुरुमुख पावै। बिन नैनन दीदार दिखावै ।५।

(८)

चली मैं खोज में पिय की, मिटी नहिं सोच यह जिय की ॥१॥
रहै नित पासही मेरे, न पाऊँ यार को १हेरे ॥२॥
बिकल चहुँ २ओर को धाऊँ, तबहु नहिं कंत को पाऊँ ॥३॥
धरूँ केही भाँति से धीरा, गयो गिरि हाथ से हीरा ॥४॥
कटी जब नैन की ३झाई, लख्यो तब गगन में साई ॥५॥
कबीरा सबद कहि भासा, नैन में यार को बासा ॥६॥

(९)

राखि लेहु हम तें बिगरी ॥टेक॥
सील धरम जप भगति न कीन्ही, हौं अभिमान ४टेढ़ पगरी ॥१॥
अमर जानि ५संची यह काया, सो मिथ्या काँची गगरी ॥२॥
जिन निवाज साज सब कीन्हे, तिनहिं बिसारि और लगरी ॥३॥
६संधिक साध कबहुँ नहिं भेटियो, सरन परै जिनकी ७पगरी ॥४॥
कहैं कबीर इक बिनती सुनिये, मत घालौ जम की ८खबरी ॥५॥

(१०)

सुनहु अहो मेरी ९राँध परोसिन, आज सुहागिन अनंद भरी ।टेक।
सबद बान सतगुरु ने मारयो, सोवत तें १०धन चौंक परी ।
बहुत दिनन तें गइ मैं खेलन, बिनु सतगुरु सब भटकि मरी ।१।
या तन में ११बट-मार बहुत हैं, छिन छिन रोकत घरी घरी ।
जब प्रीतम की धुनि सुनि पाई, छाड़ि सखनि भइ बिलग खड़ी ।२।

१--ढूँढने से । २--चारों तरफ़ । ३--जाला या परदा । ४ टेढ़ी चाल वाला । ५--सेवन करी । ६--मालिक से मिलाने वाले संतजन । ७--चरण । ८-हवाले । ९--प्यारी । १०--स्त्री (अर्थात्) सुरति । ११--डाकू-लुटेरे ।

पाँच पचीस किये बस अपने, पिया मिलन की चाह धरी ।
सबद बिबेक चुनरिया पहिरे, ज्ञान गली में भई खड़ी ।३।
दीपक ज्ञान लिये कर अपने, निरखि पुरुष भई मोद भरी ।
मिटिगौ भर्म दूर भयो दोखो, उलटि महल में खबर परी ।४।
देखि पिया को रूप मगन भइ, निरखि सेज पर धाय चढ़ी ।
करत बिलास पिया अपने संग, १पौंढि सेज पर प्रेम भरी ।५।
सुख सागर से बिलसन लागी, बिछुरे पिय धन मिलि जो गई ।
कहैं कबीर मिली जब पिय से, जनम जनम को अमर भई ।६।

(११)

अब तोहि जानि न दयों पिउ प्यारे ।
ज्यौं भावै त्यौं रहो हमारे ॥१॥
बहुत दिनन के बिछुड़े पाये ।
भाग भले घर बैठे आये ॥२॥
चरनन लागि करौं सेवकाई ।
प्रेम प्रीति राखौं २अरुझाई ॥३॥
आज बसौ मम मंदिर ३चोखे ।
कहैं कबीर पड़ौं नहिं धोखे ॥४॥

(१२)

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन के ४रछपाल ॥टेक॥
जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास ।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग ५जोऊं, प्रीतम तुम्हारी आस ॥१॥
छोड़ियो गेह नेह लगि तुम से, भई चरन लौलीन ।

१--लेटी । २--अटका कर । ३--कुछ समय तक । ४--रच्छा करने वाले ।
५--रास्ता देखती हूँ ।

१ तालाबेलि होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन ॥२॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय ।
सेजरिया बैरिनि भइ हम को, जागत रैन बिहाय ॥३॥
हम तो तुम्हारी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।
दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार ॥४॥
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव ।
दास कबीर बिरह अति बाढियो, अब तो दरसन देव ॥५॥

(१३)

हम तो एक ही करि जानो ॥ टेक ॥
दोय कहै तेहि को दुबिधा है, जिन सतनाम न जानो ॥१॥
एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समानो ॥२॥
इक मट्टी कै घड़ा २ गढ़ैला, एकै ३ कोहँरा ४ सानो ॥३॥
माया देखि के जगत भुलानो, काहे रे नर ५ गरबानो ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के हाथ काहे न बिकानो ॥५॥

(१४)

हुआ जब इस्क मस्ताना, कहैं सब लोग दीवाना ॥१॥
जिसे लागी सोई जाना, कहे से दर्द क्या माना ॥२॥
कीट को ले उड़ी भृंगी, किया उन आप सों रंगी ॥३॥
सुषमना तत्त झनकारा, लखै कोइ नाम का प्यारा ॥४॥
मैं तेरा दास हूँ बंदा, तुझी के नेह में फंदा ॥५॥
ममत की खान में डूबा, कहो कस मिलै ६ महबूबा ॥६॥
साहिब ७ टुक मिहर से हेरो, दास को जगत से फेरो ॥७॥

१--तड़फ । २--रचे गये हैं । ३--कुम्हार ने अर्थात् मालिक ने । ४--रचाये हैं । ५--अहंकार करता है । ६--प्रीतम । ७--ज़रा कृपा की दृष्टि फेरो ।

कबीरा १तालिबा तेरा, किया दिल बीच में डेरा ॥८॥

(१५)

प्रेम सखी तुम करो बिचार । बहुरि न आना यहि संसार ॥१॥
जो तोहि प्रेम खिलनवा चाव । सीस उतारि महल में आव ॥२॥
प्रेम खिलनवा यही सुभाव । तू चलि आव कि मोहिं बुलाव ॥३॥
प्रेम खिलनवा यही २बिसेख । मैं तोहि देखूँ तू मोहिं देख ॥४॥
खेलत प्रेम बहुत पचि हारी । जो खेलि है सो जग से न्यारी ॥५॥
दीपक जरै बुझै चाहे बाति । उतरन न दे प्रेम रस माति ॥६॥
कहत कबीरा प्रेम ३समान । प्रेम ४समान और नहिं आन ॥७॥

(१६)

साचा साहिब एक तू, बंदा आसिक तेरा ॥टेक॥
निसदिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं ।
हर दम राख हजूर में, तू साचा साईं ॥१॥
गफलत मेरी मेटि के, मोहिं कर हुसियारा ।
भगति भाव बिसवास में, देखौं दरस तुम्हारा ॥२॥
सिफत तुम्हारी क्या करौं, तुम गहिर गँभीरा ।
सूरत में मूरत बसै, सोई निरख कबीरा ॥३॥

(१७)

ननदी जाव रे महलिया, आपन ५बिरना जगाव ॥टेक॥
भौजी सोवै जगाये न जागै, लै न सकै कछु दाव ।
काया गढ़ में निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥
मन कै अगिन दया कै दीपक, बाती प्रेम जगाव ।

१—तलबगार। २—विशेषता ३—समाया । ४—बराबर । ५—बीरन अर्थात् भाई ।

तत्त के तेल चुवै दीपक में, १मदन मसाल जराव ॥२॥
भरम के ताला लगे मन्दिर में, ज्ञान की कुंजी लगाव।
कपट किवरिया खोलि के रे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥३॥
ब्रम्हंड पार वह पति सुन्दर है, अब से भूलि जिनि जाव।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै २अस दाव ॥४॥

(१८)

सैयाँ बुलावे मैं जैहौं ससुरे, जल्दी से ३महरा डोलिया कस रे।१।
नैहर के सब लोग छुटत रे, कहा करूँ अब कछु नहिं बस रे।२।
बीरन आवो ४गरे तोरे लागों, फेर मिलब है न जानों कस रे ३
चालनहार भई मैं अचानक, रहौं बाबुल तोरी नगरी सुबस रे।४।
सात सहेली ता पै अकेली, सँग नहीं कोउ एक न दस रे।५।
गवना चाला ५तुराव लगो है, जो कोउ रोवै वा को न हँस रे।६।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सैयाँ के महल में बसहु सुजस रे।७।

(१९)

गुरु दियना बारु रे, यह अन्ध कूप संसार ॥ टेक ॥
माया के रंग रची सब दुनियाँ, नहिं सूझ परत करतार ॥१॥
पुरुष ६पुरान बसै घट भीतर, तिनुका ओट पहार ॥२॥
मृग के नाभि बसत कस्तूरी, सूँघत भ्रमत उजार ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, छूटि जात भ्रम जार ॥४॥

(२०)

भजन में होत अनँद अनँद।
बरसत ७बिसद ८अमी के बादर, भींजत हैं कोई संत ॥१॥

१--काम। २--ऐसा। ३--कहार। ४--गले। ५--चलो चली (पंजाबी तुरना)
६--परम पुरुष। ७--निर्मल। ८--अमृत।

अगर बास जहँ तत की नदिया, मानो धारा गंग ।
करि असनान मगन होइ बैठो, चढ़त सबद के रंग ॥२॥
रोम रोम जा के अमृत भीना, पारस परसत अंग
सबद गह्यो जिव संसय नाहीं, साहिब भये तेरे संग ॥३॥
सोई सार रच्यो मेरे साहिब, जहँ नहिं माया अहं ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जपो सोहं सोहं ॥४॥

(२१)

नाम १अमल उतरै न भाई ॥ टेक ॥
और अमल छिन छिन चढ़ि उतरै, नाम अमल दिन बढ़ै सवाई ।१।
देखत चढ़ै सुनत हिये लागै, सुरत किये तन देत घुमाई ॥२॥
पियत पियाला भये मतवाला, पायौ नाम मिटी २दुचिताई ॥३॥
जो जन नाम अमल रस चाखा, तर गइ गनिका सदन कसाई ॥४॥
कहैं कबीर गूंगे गुड़ खाया, बिन रसना क्या करै बड़ाई ॥५॥

* होली *

(१)

उड़िजा रे ३कुमतिया काग उड़िजा रे ॥ टेक ॥
तुम्हरो बचन मोहिं ४नीक न लागै, स्रवन सुनत दुख जागै ॥१॥
कोइल बोल सुहावन लागै, सब सुनि सुनि अनुरागै ॥२॥
हमरे सैयाँ परदेस बसतु हैं, मोर चित चरनन लागै ॥३॥
कहैं कबीर सुनो 'भाई साधो, गुरू मिलैं बड़ भागै ॥४॥

(२)

कैसे खेलौं पिया सँग होरी, दुबिधा ५रार मचाय रही रे ॥टेक॥

१--नशा । २--दुबिधा ।३--कुबुद्धि रूपी कौवा । ४--भले । ५--झगड़ा ।

पाँच पचीसो फाग रच्यो है, ममता रंग बनाय रही रे।
नाचत काल करम के आगे, संसा भाव बताय रही रे ॥१॥
करिके सिंगार कुमति बनि बैठी, भरम के घुंघुरू बजाय रही रे।
तीनों ताल मृदंग बजावैं, मैं मैं रागिनि छाय रही रे ॥२॥
कपट कटोरा १मद विष भरि भरि, तृस्ना मन को छकाय रही रे।
याहि जीव को बस करि अपने, हंसा को काग बनाय रही रे ॥३॥
जानि बूझि के सुनो भाई साधो, संत जनन ने पीठ दई रे।
दास कबीर कहैं कर जोरी, हमरी तो ऐसिही बीति गई रे ॥४॥

(३)

नित मंगल होरी खेलो, नित बसंत नित फाग ॥ टेक ॥
दया धर्म की केसर घोरो, प्रेम प्रीति पिचुकार।
भाव भगति से भरि सतगुरु तन, उमँग उमँग रँग डार ॥१॥
छिमा २अबीर ३चरच चित चंदन, सुमिरन ध्यान ४धमार।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, सुफल जनम नर नार ॥२॥
चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाव।
लोक लाज कुल ५कान छाड़ि के, निरभय निसान बजाव ॥३॥
कथा कीरतन मँगल ६महोछव, कर साधन की भीर।
कभी न काज बिगरिहै तेरो, सत सत कहत कबीर ॥४॥

(४)

मन तोहिं नाच नचावै माया ॥ टेक ॥
आसा डोरि लगाइ गले बिच, नट जिमि ७कपिहि नचाया।

१--विषय का नशा। २--सुगन्धित रंग। ३--छिड़क कर। ४--होली का नाच। ५--कुल मरजादा। ६--महोत्सव। ७--बंदर को।

नावत सीस फिरै सबही को,नाम सुरत बिसराया ॥१॥
काम हेतु तुम निसिदिन नाचे, का तुम भरम भुलाया।
नाम हेतु तुम कबहुँ न नाचे, जो १सिरजल तोरी काया ॥२॥
ध्रू प्रह्लाद अचल भये जा से, राज बिभीखन पाया।
अजहूँ चेत हेत कर पिउ से, हे रे निलज २बेहाया ॥३॥
सुख सम्पति सब साज बड़ाई, लिखि तेरे साथ पठाया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गनिका बिवान चढ़ाया ॥४॥

(५)

गगन मँडल ३अरुझाई, नित फाग मची है ॥टेक॥
ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सखियाँ लै लै धाईं।
उमँगि उमँगि रँग डारि पिया पर, फगुवा देहु भलाई ॥१॥
गगन मँडल बिच होरी मचो है, कोइ गुरु गम तें लखि पाई।
सबद डोर जहँ अगर ढरतु है, सोभा बरनि न जाई ॥२॥
फगुआ नाम दियो मोहिं सतगुरु, तन की तपन बुझाई।
कहैं कबीर मगन भइ बिरहिनि, आवागवन नसाई ॥३॥

(६)

कोइ मो पै रंग न डारो, मैं तो भइ हूँ बौरी ॥टेक॥
इक तो बौरी दूजे बिरह की मारी, तीजे नेह लगो री ॥१॥
अपने पिय सँग होरी खेलौं, येही फाग रचो री ॥२॥
पाँच सुहागिनि होरी खेलौं, कुमति सखी से न्यारी ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन निवारी ॥४॥

(७)

ऐसी खेल ले होरी जोगिया, जा में आवागवन तजि डारी ॥टेक॥

१--जिस मालिकने तेरी काया सिरजाई है। २--ऐ रे निर्लज्ज बेहया। ३-घुसकर।

ज्ञान ध्यान कै अबिर गुलाल लै, सुरति किये पिचुकारी ।
भक्ति भभूत लै अंग पर डारौ, १मृग मुद्रा नृतकारी ॥१॥
सील संतोष कै पहिरि चोलना, छिमा टोप सिर धारी ।
बिरह बैराग कै कानन मुद्रा, अनहद लाओ तारी ॥२॥
प्रीति प्रतीति नारि सँग लैलै, केसर रंग बना री ।
ब्रम्ह नगर में होरी खेलौ, अलख रंग भरि २झारी ॥३॥
काम क्रोध अरु मोह लोभ कै, कीच दूर तजि डारी ।
जनम मरन की दुबिधा मेटौ, आसा तृस्ना मारी ॥४॥
निर्गुन सर्गुन एकहि जानौ, भरम गुफा मत जा री ।
आनँद अनुभव उर में धारौ, अनहद मृदंग बजा री ॥५॥
जल थल जीव और जन्तु चराचर, एकहि रूप निहारी ।
दास कबीर से होरी मचाओ, खेलो जग में धमारी ॥६॥

(८)

कोइ है रे हमारे गाँव को, जा से ३परचा पूछौं ४ठाँव को ॥टेक॥
बिन बादर बरखै अखँड धार, बिन बिजुरी चमकै अति अपार ।१।
५ससि भानु बिना जहँ ह्वै प्रकास, गुरु सबद तहँ कियो निवास ।२।
बृच्छ एक तहँ अति अनूप, साखा पत्र न छाँह धूप ॥३॥
बिन फूलन भँवरा करि गुंजार, फल लागे तहँ निराधार ॥४॥
ऊँच नीच नहिं जाति पाँति, त्रिगुन न ब्यापै सदा सांति ॥५॥
हर्ष सोग नहिं राग ६दोष, जरा मरन नहिं बंध ७मोष ॥६॥
अखंडपुरी इक नग्र नाम, जहँ बसें साध जन सहज धाम ॥७॥
मरै न जीवै आवै न जाय, जन कबीर गुरु मिले धाय ॥८॥

१--मृग-मुद्रा का नाच करहु । २--मटकी । ३--पता निशान अथवा पहिचान। ४--स्थान । ५--चन्द्र-सूरज । ६--द्वेष । ७--मोक्ष ।

(९)

मानुषतन पायो बड़े भाग, अब बिचारि के खेलो फाग ॥टेक॥
बिन जिभ्या गावै गुन १ रसाल, बिन चरनन चालै २ अधर चाल ॥१॥
बिन कर बाजा बजै बैन, निरखि देखि जहँ बिना नैन ॥२॥
बिन ही मारे मृतक होइ, बिन जारे ह्वै खाक सोइ ॥३॥
बिन मांगे बिन जांचे देइ, सो ३सालिम बाजी जीति लेइ ॥४॥
बिन दीपक बरै अखंड जोति, पाप पुन्न नहिं लागे ४छोति ॥५॥
चँद सूर नहिं आदि अंत, तहँ कबीर खेलैं बसंत ॥६॥

(१०)

मन मिलि सतगुरु खेलो होरी ॥टेक॥
संसय सकल जात छिन माहीं, आवागवन कै फंदा तोरी ॥१॥
चित्त चंचल इसथिर करि राखो, सुरत निरत एक ठौरी ॥२॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ५डफ, अनहद धुनि कै घनघोरी ॥३॥
गावत राग सबै अनुरागी, सार सबद अंतर मोड़ी ॥४॥
ज्ञान ध्यान की करि पिचुकारी, केसर गुरु किरपा घोरी ॥५॥
अगर बास महकै चहुँ ओरी, सेत अबीर लै भरि झोरी ॥६॥
अजर अमर फगुवा नित पावै, कहैं कबीर गये जम ६जोरी ॥७॥

(११)

सखि आज हमारे गृह बसंत।
सुख उपज्यौ अब मिले कंत ॥टेक॥

१--रसीले। २--उलटी अर्थात् गगन मंडल की ओर। ३--पूर्ण। ४--छूआ-छूत। ५--ढोल। ६--जोर या बल।

पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद ।
अब नहिं ब्यापै संसै सोग, पल पल दरसन सरस भोग ॥१॥
जहँ बिन कर बाजे बजैं बैन, निरखि देख तहँ बिना नैन ।
धुनि सुन १थाक्यो २चपल चित्त, पल न बिसारौं देखौं नित्त ॥२॥
जहँ दीपक ३जेहि बरै आगि, सिव सनकादिक रहैं लागि ।
कहैं कबीर जहँ गुरु प्रताप, तहँ तो नाहीं पुन्न पाप ॥३॥

(१२)

तुम घट बसंत खेलो सुजान, सत्त सबद में धरो ध्यान ॥ टेक ॥
एक ब्रम्ह फल लगे दोय, सुबुद्धि कुबुद्धि लखि लेहु सोय ॥१॥
बिष फल खावैं सब संसार, अमृत फल साधु करैं अहार ॥२॥
पाँच पचीस जहँ फूलैं फूल, भर्म भँवर डारि रहे भूल ॥३॥
काम क्रोध दोउ लागे पात, नर पसु खाहिं कोइ न अघात ।४।
जहँ नौ द्वारे औ दस ४जुवार, तहँ सींचनहारा है मुरार ॥५॥
मेरे मुक्ति बाग में सुख निधान, देखै सो पावै ५अयन जान ।६।
संत चरन जो रहै लाग, वह देखै अपनो मुक्ति बाग ॥७॥
कहैं कबीर सुख भयो भोग, एक नाम बिन सकल रोग ॥८॥

(१३)

६चाचरि खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो ॥ टेक ॥
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई ।
सतसंगति सत भाव करि, सुख मंगल गाई ॥१॥
यह जग जम की खान है, या को न ७पतीजै ।
सतगुरु सबद बिचारि ले, तो जुग जुग ८जीजै ॥२॥

१--ठहर गया । २--चंचल मन । ३--जैसे । ४- गैल । ५--घर ।
६--होली । ७--भरोसा करो । ८--जीवो ।

जनम जनम भरमत रह्यौ, जिव नेक न बूझेव ।
चौरासी के खेल में, निज पंथ न सूझेव ॥३॥
एक कनक और कामिनी, इन संग मन बंधा ।
अंत नरक ले जातु हैं, चीन्है नहिं अंधा ॥४॥
तीनि लोक चाचरि रची, इन तीनों देवा ।
सुर नर मुनि और देवता, करैं इनकी सेवा ॥५॥
चौथा पद नहिं जानहों, भूले भ्रम माया ।
सेवक की सेवा करैं, साहिब बिसराया ॥६॥
यह औसर अब जातु है, चेतो नर प्रानी ।
आदि नाम चित दृढ़ गहो, छूटै जम खानी ॥७॥
खेलो सुरत सम्हारि के, सुकिरत उर राखो ।
प्रेम मगन बहु प्रीति से, अमृत रस चाखो ॥८॥
नाद मृदंग सम्हारि, तार दोउ संग मिलावो ।
आदी मूल बिचारि के, निज धुन उपजावो ॥९॥
निसि बासर खेलो सदा, जा तें लौ लागै ।
पिव सेती परिचय करो, सकलै भ्रम भागै ॥१०॥
सील संतोष को अरगजा, सब अंग लगावो ।
काम क्रोध मद लोभ, अबार गुलाल उड़ावो ॥११॥
नचै नवेली नारि, सबै मिलि के इक ठौरा ।
चाचरि खेलो प्रीति से, छूटै सब औरा ॥१२॥
पिचुकारी भरि अगर बास, खेलो पिय संगा ।
महके बास सुबास, खेल लागे अति रंगा ॥१३॥
छूटै बिषय बिकार, सबै भौसागर केरा ।

सुख सागर में घर करै, फिर होइ न १फेरा ॥१४॥
खेलैं संत सुजान, सोइ या गति को जानैं।
अनजाने २वादै सबै, कोई नेक न मानै ॥१५॥
कहैं कबीर बिचारि के, छाड़ो सब आसा।
ऐसी चाचरि खेलई, सोई निज दासा ॥१६॥

* मंगल *

(१)

अखंड साहिब का नाम, और सब खंड है।
खंडित मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥१॥
थिर न रहै धन धाम, सो जीवन धंध है।
लख चौरासी जीव, पड़े जम फंद है ॥२॥
जा का गुरु से हेत, सोई निर्बन्ध है।
उन साधन के सँग, सदा आनंद है ॥३॥
चंचल मन थिर राखु, जबै भल रंग है।
तेरे निकट उलट भरि पीव, सो अमृत गंग है ॥४॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है।
कहैं कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है ॥५॥

(२)

सुनो सुहागिनि नारि, प्यार पिव से करो।
ये ३वेले ब्यौहार, तिन्हें तुम परिहरो ॥१॥
दिनाँ चार को रंग, संग नहिं जायगा।
यह तो रंग ४पतंग, कहाँ ठहरायगा ॥२॥

१—जन्म-मरण। २—कहते हैं। ३—व्यर्थ। ४—एक लकड़ी जिससे कच्चा रंग निकलता है।

पाँच चोर बड़ जोर, कुसंगी अति घने।
ये ठगियन जिव संग, १मुसत घर निसि दिने ॥३॥
सोवत जागत रैन, दिवस घर मूसहीं।
ठाढ़े खड़े २पुठवार, भली बिधि लूटहीं ॥४॥
इन ठगियन को ३राव, पकड़ि सो लीजिये।
जो कहुँ आवै हाथ, छाड़ि नहिं दीजिये ॥५॥
चौथे घर इक गाँव, ठाँव पिव को बसै।
बासा दस के मद्ध, पुरुष इक तहँ हँसै ॥६॥
होत है सिंध ४घमोर, संख धुनि अति घनी।
५तन्ती की झनकार, बजत है झिनझिनी ॥७॥
६महरम होय जो संत, सोई भल जानई।
कहैं कबीर समुझाय, सत्त करि मानई ॥८॥

(३)

सुरत सरोवर न्हाई के मंगल गाइये।
दर्पन सबद निहारि, तिलक सिर लाइये ॥१॥
चल हंसा सतलोक, बहुत सुख पाइये।
७परस पुरुष के चरन, बहुरि नहिं ८आइये ॥२॥
अमृत भोजन तहाँ, अमी ९अचवाइये।
मुख में सेत १०तंबूल, सबद लौ लाइये ॥३॥
११पुहुप अनूपम बास, घर हंस चलीजिये।
अमृत कपड़े ओढ़ि, मुकट सिर दीजिये ॥४॥

१--लूटते हैं। २--ज़बरदस्त। ३--ठगों का सरदार अर्थात् मन ४--घनघोर शब्द जो समुद्र में उठता है। ५--सारंगी। ६--भेदी। ७--छूकर। ८--जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आओ। ९--चूवता है। १०--पान। ११--पुष्प।

वह घर बहुत अनंद, हंसा सुख लीजिये ।
वदन मनोहर गात, निरखि के जीजिये ॥५॥
१दुति बिन २मसि बिन ३अंक, सो पुस्तक बांचिये ।
बिन कर ताल बजाय, चरन बिन नाचिये ॥६॥
बिन दीपक उंजियार, अगम घर देखिये ।
खुलि गये सबद किवाड़, पुरुष से ४भेंटिये ॥७॥
साहिब सन्मुख होइ, भक्ति चित लाइये ।
मन मानिक संग हंस, दरस तहँ पाइय ॥८॥
कहैं कबीर यह मंगल, भागन पाइये ।
गुरु संगत लौ लाय, हंसा चलि जाइये ॥९॥

(४)

अगमपुरी को ध्यान, खबर सतगुरु करी ।
लीजे तत्त बिचार, सुरत मन में धरी ॥१॥
सुरत निरत दोउ संग, अगम को गम कीयो ।
सबर बिबेक बिचार, छिमा चित में दियो ॥२॥
गुरु के सबद लौ लाय, अगोचर घर कियो ।
सबद उठै झनकार, अलख तहँ लखि लियो ॥३॥
अलख लखो लौ लाय, डोरि आगे धरो ।
जगमगार वह देस, केल हंसा करो ॥४॥
सतगुरु डोरी लाय, पुकारैं जीव को ।
हंसा चले सँभालि, मिलन निज पीव को ॥५॥
मंगल कहैं कबीर, सो गुरुमुख पास है ।
हंसा आये लोक, अमर घर बास है ॥६॥

१—दवात । २—लिखने की स्याही । ३—अच्चर । ४—मिलो ।

(५)

* दोहा *

तुम साहिब बहुरंगी, रँग बहुतै किये ।
कब के बिछुड़े हंस, बांहि [१]गहि अब लिये ॥१॥
प्रथम पठाये छाप, सुरत से लीजिये ।
पाइ परवाना पान, चरन चित दीजिये ॥२॥

* छन्द *

पुरब पच्छिम देख दक्खिन, उत्तर रहै ठहराइ के ।
जहां देखो गम्म गुरु की, तहीं तत्त समाइ के ॥३॥
सुरत उत्तर पास किलकै, पुहुप दीप तें आइके ।
लाइ लौ की डोरि बांधै, संत पकरैं जाइके ॥४॥
पकरि चरन कर जोरि, निछावर कीजिये ।
तन मन धन औ प्रान, गुरु को दीजिये ॥५॥
तब गुरु होहिं दयाल, दया चित लावई ।
गहि हंसा की बांहि, सुघर पहुँचावई ॥६॥

* छन्द *

दया करि जब मुक्ति दीन्हो, गह्यो तत्त बनाइ के ।
परम प्रातम जानि अपने, हृदय लियो समाइ के ॥७॥
जरा मरन को भय नसायो, जबै गुरु दाया करी ।
कर्म भर्म को छाड़ि जिय तें, सकल ब्याधा परिहरी ॥८॥
तुम मेरे परम सनेही, हंसा घर चलो ।
छाड़ि बिषय भौसागर, हँस हंसन मिलो ॥९॥
सूरत निरत बिचार, तत पद सार है ।

१—पकड़कर ।

बैठु हंस सत लोक, नाम आधार है ॥१०॥

(६)

सत्त लोक अमान हंसा, सुखसागर सुख बास है।
सत्त सुकिरत पुरुष राजै, तहाँ नहिं जम त्रास है ॥११॥
अजर अमर जो हंस ह्वै, सुनि सत्त सबद चित्त लाइ के।
आवागवन से रहित होवैं, कहैं कबीर समुझाइ के ॥१२॥

(७)

देखि माया को रूप, तिमिर आगे फिरै।
तेरी भक्ति गई बड़ि दूर, जीव कैसे तरै ॥१॥
१जुन्हरी डार रस होय, तहू गुड़ ना पकै।
२कोदक कर्म कमाय, भक्ति बिन ना तरै ॥२॥
३ईखहि से गुड़ होय, भक्ति से क्रम कटै।
जम को बंद न होय, काल ४कागद फटै ॥३॥
कहैं कबीर बिचारि, बहुरि नाहिं आवई।
लोक लाज कुल मेटि, परम पद पावई ॥४॥

(८)

साध संगत गुरुदेव, उहाँ चलि जाइये।
भाव भक्ति उपदेस, तहाँ तें पाइये ॥१॥
अस संगत जरि जाव, न चरचा नाम की।
दूलह बिना बरात, कहो किस काम की ॥२॥
दुबिधा को करि दूर, सतगुरू ध्याइये।
५आन देव की सेव, न चित्त लगाइये ॥३॥

१—ज्वार की डाली। २—ओछे या छोटे। ३—गन्ने से ही। ४—खाता।
५—और इष्ट की सेवा में।

आन देव की सेव, भली नहिं जीव को।
कहैं कबीर बिचारि, न पावै पीव को ॥४॥

(६)

दुबिधा को करि दूर, धनी को सेव रे।
तेरी भौसागर में नाव, सुरत से खेव रे ॥१॥
सुमिरि सुमिरि गुरु नाम, चिरंजिव जीव रे।
नाम खाँड बिन मोल, घोल कर पीव रे ॥२॥
काया में नहिं नाम, गुरू के हेत का।
नाम बिना बेकाम, १ मटीला खेत का ॥३॥
ऊँचे बैठि कचहरी, न्याव चुकावते।
ते माटी मिलि गये, नजर नहिं आवते ॥४॥
तू माया धन धाम, देखि मत भूल रे।
दिना चार का रँग, मिलैगा धूल रे ॥५॥
बार बार नर देह, नहीं यह २ बीर रे।
चेत सके तो चेत, कहैं कबीर रे ॥६॥

(१०)

यह कलि न कोइ अपनो, का संग बोलिये रे।
ज्यों मैदानी रूख, अकेला डोलिये रे ॥१॥
माया के मद माते, सुनैं नहिं कोई रे।
क्या राजा क्या रंक, बियाकुल दोई रे ॥२॥
माया का बिस्तार, रहै नहिं कोई रे।
ज्यों ३ पुरइनि पर नीर, ४ थीर नहिं होई रे ॥३॥
५ बिष बोयो संसार, अमृत कस पावै रे।

१—ढेला। २—ऐ भाई! ३—गढे। ४—टिकाऊ। ५—जहर।

पुरब जनम तेरो कीन्ह, दोस कित लावै रे ॥४॥
मन आवै मन जावै, मनहिं बटोरो रे।
मन १ बुड़वै मन तारै, मनहिं २ निहारो रे ॥५॥
कहैं कबीर यह मंगल, मन समझावो रे।
समझि के कहौं ३ पयाम, बहुरि नहिं आवो रे ॥६॥

(११)

करि के कौल करार, आया था भजन को।
अब तू मुरख गँवार, कुंवे लगा परन को ॥१॥
परियो माया के जाल, रहियो मन फूलि के।
गर्भ बास की त्रास, रहियो नर भूलि के ॥२॥
ऊँची अटरिया पौल, चढ़ी चढ़ि गिरि परौ।
सतिगुरु बुधि लइ नाहिं, पार कैसे परौ ॥३॥
सतगुरु होहु दयाल, बाँह मेरी गहौ।
बूड़त लेव उबारि, पार अब के करौ ॥४॥
दास कबीर सिर नाय, कहैं करि जोरि के।
इक साहिब से जोरि, सबन से तोरि के ॥५॥

(१२)

आरत कीज आतम पूजा, सत्त पुरुष की और न दूजा ॥१॥
ज्ञान प्रकास दीप उँजियारा, घट घट देखो प्रान पियारा ॥२॥
भाव भक्ति और नहिं भेवा, दया सरूपी करि ले सेवा ॥३॥
सत संगत मिलि सबद बिराजै, धोखा दुंद भरम सब भाजै ॥४॥
काया नगरा देव ४बहाई, आनँद रूप सकल सुखदाई ॥५॥
सुन्न ध्यान सबके मन माना, तुम बैठो आतम अस्थाना ॥६॥

१—डुबोता है। २—समझावो अथवा सुधारो। ३—संदेशा। ४—त्यागी।

सबद सुरत लै हृदय बसावो, कपट क्रोध को दूरि बहावो ॥७॥
कहैं कबीर निज रहनि सम्हारी, सदा अनँद रहैं नर नारी ॥८॥

(१३)

सतगुरु सबद कमान, सुरत १गांसी भई ।
मारत २हियरे बान, पीर भारी भई ॥१॥
निसि दिन ३सालै घाव, नींद आवै नहीं ।
पिया मिलन की आस, नैहर भावै नहीं ॥२॥
चढ़ि ४गैलूं गगन अटारी, तो दीपक बारि के ।
होइ गैलै पुरुष से भेट, तो तन मन हारि के ॥३॥
कागा बोली बोल, कहाँ लगि भाखिये ।
कहैं कबीर धर्मदास, तीन गुन त्यागिये ॥४॥

(१४)

बंदी छोर कबीर भक्ति मोहिं दीजिये ।
बांहि गहे की लाज, ५गहर मत कीजिये ॥१॥
कागा बरन छुड़ाइ, हंस बुधि लाइये ।
पूरन पद को देव, महा सुख पाइये ॥२॥
जो तुम सरनै आयौं, बचन इक मानिये ।
भौसागर बहै जोर, सुरत निज राखिये ॥३॥
दसों द्वार बेकार, नवो ६नाटिका बहै ।
सुरत नहीं ठहराय, लगन कैसे लगै ॥४॥
जैसे मीन सनेह, सदा जल में रहै ।
जल बिन त्यागै प्रान, लगन ऐसी लगै ॥५॥

१—तीर की नोक । २—हृदय में । ३—चुभता है । ४—गया । ५—देर ।
६—नाड़ी ।

मेटौ सकल बिकार, भार सिर लेइयो ।
तुमहिं में रहौं समाइ, आपन करि लेइयो ॥६॥
कहैं कबीर बिचारि, सोइ टकसार है ।
हंस चले सतलोक, तो नाम अधार है ॥७॥

॥ मिश्रित ॥

(१)

समुझि बूझि के देखो गुइयाँ, भीतर यह क्या बोले है ॥१॥
बलि बलि जाउँ अपने गुरु की, जिन यह भेद को खोले है ॥२॥
आदम में वह आप समाया, जो सब रँग में घोले है ॥३॥
कहत कबीर जगै का सुपना, कहि न सकै वह बोलै है ॥४॥

(२)

हम ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
सत्त नाम कौ पटा लिखायौ, सतगुरु आज्ञा पाई ।
चौरासी के दुक्ख मिटे, अनुभौ जागीरी पाई ॥१॥
सुरत १सींगरा २साँग समुझ को, तन की तुपक बनाई ।
दम को दारू सहज को सीसा, ज्ञान के गज ठहकाई ॥२॥
सील संतोष प्रेम की पथरी, चित चकमक चमकाई ।
जोग को जामा बुद्धि मुद्रिका, प्रीति पियाला पाई ॥३॥
सत कै ३सेलह जुगत कै ४जमधर, छिमा ढाल ठनकाई ।
मोह मोरचा पहिले मारियौ, दुबिधा मारि हटाई ॥४॥
सत्त नाम कै लगा पलीता, हरहर होत हवाई ।
गम गोला गढ़ भीतर मारियो, भरम के बुर्ज ढहाई ॥५॥

१--सींग की आकृति का एक हथियार जिसमें बारूद रखते हैं । २--नेजा या बरछा । ३--बरछी । ४--कटारी ।

सुरत निरत के घेरा दीन्हो, बंद कियो दरवाजा ।
सबद सूरमा भीतर पैठा, पकरि लियो मन राजा ॥६॥
पाँचों पकरे १कामदार जो, पकरी ममता माई ।
दास कबीर चढ्यो गढ़ ऊपर, अभय निसान बजाई ॥७॥

(३)

दिन रातै गावो मेरी सजनी, सतगुरु को सिर नाइ हो ।
फिर पाछे पछितैहौ सजनी, जब जम पकरै आइ हो ॥१॥
सुख सागर में परौ हो सजनी, दुख को देहु बहाइ हो ।
भक्ति घाँघरा पहिरौ सजनी, रैन दिवस गुन गाइ हो ॥२॥
निरभय अंगिया कसि लेउ सजनी, भयहिं भगावो दूरि हो ।
प्रीति लगी साहिब संग सजनी, डारि जगत पर धूरि हो ॥३॥
प्रेम चुनरिया ओढ़ौ सजनी, सतगुरु दीन्ह रँगाइ हो ।
जित देखौं तित साहिब सजनी, नैनन रह्यो समाइ हो ॥४॥
२ फहम फुलेल बनाइ के सजनी, सिर में दीन्हो डारि हो ।
ज्ञान की कँगही लैके सजनी, कर्म केस ३ निरवारु हो ॥५॥
समुझ की पटिया पारो सजनी, चुटिया गहौ सम्हारि हो ।
संतोष सहेलरि गुहि ले आई, झबिया सहज अपार हो ॥६॥
दयाभाव की टिकुली सजनी, बिरह बीज अनुसार हो ।
जा को दया न आवै सजनी, परै चौरासी धार हो ॥७॥
सील के सेंदुर माँग भरु सजनी, सोभा अगम अपार हो ।
धीरज अंजन आँजी सजनी, छिमा की बेंदी ४लिलार हो ॥८॥
५बेसर बनी बुद्धि को सजनी, मोती बचन सुधार हो ।

१—मन के पाँचों कामदार अर्थात् पाँचों विकार आदि। २—समझ-बूझ। ३—संवार ले। ४—माथे पर। ५—नाक का जेवर।

दीन गरीबी रहो गुरन से, सोई गले के हार हो ॥६॥
बाजूबन्द बिबेक के सजनी, बहुँटा ब्रम्ह बिचारि हो।
चाल की चुरियाँ पहिरो सजनी, परख पटीला डारि हो ॥१०॥
नेह निगरही दुहरी सजनी, १ककना अकिल के ढारि हो।
मन की मुंदरी पहिरो सजनी, नाम नगीना सार हो ॥११॥
नाम जपो निसि बासर सजनी, काटै जम कै फांसि हो।
पहिरो चोप चुनरिया सजनी, चित मत करहु उदास हो ॥१२॥
सत सुकिरत दोउ नूपुर सजनी, उठै सबद झनकार हो।
पहिरि पचीसों बिछिया सजनी, धरि ल्यो पाँव सम्हार हो ॥१३॥
तीनों गुन कै अनवट सजनी, गुरु से ल्यो बदलाइ हो।
काम क्रोध दोउ सम करि सजनी, अमर लोक कौ जाइ हो ॥१४॥
घर जो बाढ़ा कुमति को सजनी, सहर से देव बहाइ हो।
पिया जो सोवै महल में सजनी, उनको लेव जगाई हो ॥१५॥
येहि विधि सुन्दर साजि के सजनी, करि ल्यो सोरहों सिंगार हो।
पाँच सहेलरि सँग ल्यो सजनी, गावो मंगलाचार हो ॥१६॥
पिय मोर सोवै महल में सजनी, अगम अगोचर पार हो।
अकिल आरसी लैकै सजनी, पिय को रूप निहार हो ॥१७॥
घूँघट खोलि कपट कौ सजनी, २हेरो गुरुन की ओरि हो।
पान लेहु मुक्ती को सजनी, जम ते तिनुका तोरि हो ॥१८॥
बिन सतगुरु चरचा के सजनी, सो पुनि बड़े लबार हो।
बिना पुरुष की तिरिया सजनी, उन कौ झूठ सिंगार हो ॥१६॥
सो दिन जिन जानो मोरि सजनी, जो गावै संसार हो।

१—कंगन। २--देखो।

यह तो दिन मुक्ती के सजना, साधो लेहु बिचार हो ॥२०॥
दास कबीर की बिनती सजनी, सुन लेहु संत सुजान हो।
आवागवन न होइहै सजनी, पावो पद निर्बान हो ॥२१॥

(४)

अब कोइ खेतिया मन लावै ॥ टेक ॥
ज्ञान १कुदार ले बंजर गोड़ै, नाम की बीज बोवावै।
सुरत २सरावन ३नय कर फेरै, ढेला रहन न पावै ॥१॥
मनसा खुरपी खेत ४निरावै, दूब बचन नहिं पावै।
कोस पचीस इक ५बथुवा नीचे, जड़ से खोदि बहावै ॥२॥
काम क्रोध के बैल बने हैं, खेत चरन को आवैं।
सुरत ६लकुटिया ले फटकारै, भागत राह न पावैं ॥३॥
उलटि उलटि के खेत को जोतै, ७पूर किसान कहावै।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जब वा घर को पावैं ॥४॥

(५)

यह मन जालिम जोर री, ८बरजे नहिं मानै ॥ टेक ॥
जो कोइ मन को पकरा चाहै, भागत ९साँकर तोर ॥१॥
सुन नर मुनि सब पचि पचि हारे, हाथ न आवै चोर ॥२॥
जो हंसा सतगुरु के होई, राखै ममता छोर ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बचो गुरुन की ओट ॥४॥

(६)

वाह वाह सरनागति ता की है ॥ टेक ॥
बोल अबोल अडोल अचाहक, ऐसी गतिया जा की है ॥१॥

१—कुदाली। २—पटरा या कुँरा। ३—जोतकर। ४—नलाई करे। ५—घास कंदुवा। ६—डंडा या लाठी। ७—पूरा। ८—मना करने से। ९—ज़ंजीर।

अंतरगति में भया उजाला, बिन दीपक बिन बाती है ॥२॥
सुरत सुहागिनि भई मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखी है ॥३॥
निरखि निरति अंतर पग धरना, अजब झरोखे झांकी है ॥४॥
कहैं कबीर इक नाम सुमिरि ले, आदि अंत जो साखी है ॥५॥

(७)

वाह वाह अमर घर पाया है ॥टेक॥
दुक्ख दर्द काल नहिं ब्यापै, आनँद मंगल गाया है ॥१॥
मूलबीज बिन बिर्छ बिराजै, सतगुरु अलख लखाया है ॥२॥
कोटि भानु छबि भया उजारा, हंस १हिरम्बर भाया है ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटाया है ॥४॥

(८)

अपनपौ आपहु तें बिसरौ ॥टेक॥
जैसे २स्वान काँच मंदिर में, भ्रम से भूँकि मरो ॥१॥
ज्यों ३केहरि ४बपु निरख कूप जल, ५प्रतिमा देखि गिरो ॥२॥
वैसे ही गज ६फटकि ७सिला में ८दसनन आनि अड़ो ॥३॥
९मरकट १०मूठि स्वाद नसिं बहुरै, घर घर रटत फिरो ॥४॥
कहैं कबीर ११नलनी के १२सुगना, तोहि कवनै पकरो ॥५॥

(९)

हीरा नाम अमोल है, रहै घट घट १३थीरा ।
सिद्धी आसन सोधि के, बैठै वहि १४तीरा ॥१॥
गंग जमुन के १५रेत पर, बहै झिरि झिरि नीरा ।

१--जलवा या प्रकाश । २--कुत्ता । ३--शेर । ४--शरीर । ५--छाया । ६--बिल्लौरी । ७--चटॉन । ८--दांत भिड़ाने लगा । ९--बंदर । १०--चने की मुठी का स्वाद । ११--खचरी । १२--तोता । १३--स्थापित । १४--घाट । १५--घाट ।

पुरब सोधि पच्छिम गये, करिके मन धीरा ॥२॥
बिरहिनि बाजे बाँसुरी, सुनि गइ मोर पीरा ।
आठ पहर बाजत रहै, अस गहिर गँभीरा ॥३॥
हीरा झलकै द्वार पर, परखै जोइ सूरा ।
कहैं कबीर गुरु गम्म से, पहुँचै कोइ पूरा ॥४॥

(१०)

जग में सोइ बैराग कहावै ॥ टेक ॥
आसन मारि गगन में बैठे, दुर्मति दूर बहावै ॥१॥
भूख प्यास औ निद्रा साधै, १ जियते तनहिं जरावै ॥२॥
भौसागर के भरम मिटावै, चौरासी जिति आवै ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै ॥४॥

(११)

हंसा लोक हमारे एहहु, ताते अमृत फल तुम पैहहु ॥ टेक ॥
लोक हमारा अगम दूर है, पार न पावै कोई ।
अति अधीन होय जब कोई, ताकौ देऊँ लखाई ॥१॥
मिरतलोक से हंसा आये, पुहुप-दीप चलि जाई ।
अंबुदीप में सुमिरन करिहहु, तब वह लोक दिखाई ॥२॥
माटी का पिण्ड छूट जायगा, और यह सकल विकारा ।
ज्यौं जल माहिं रहत है २पुरइनि ऐसे हंस हमारा ॥३॥
लोक हमारे ऐहहु हंसा, तब सुख पैहहु भाई ।
सुखसागर अस्नान करहुगे, अरज अमर होइ जाई ॥४॥
कहैं कबीर सुनहु धरमदासा, हंसन करहु बधाई ।
३सेत सिंघासन बैठक देहहौं, जुग जुग राज कराई ॥६॥

१—जीते जी । २—काई ।—उज्जल ।

(१२)

निरख प्रबोध की रमैनी

* दोहा *

जिनके धन सतनाम है, तिन का जीवन धन्न ।
जिनको सतगुरु तारहीं, बहुरि न धरई तन्न ॥१॥
कबीर महिमा नाम की, कहना कही न जाय ।
चार मुक्ति औ चार फल, और परम पद पाय ॥२॥
नाम सत्त संसार में, और सकल है पोच ।
कहना सुनना देखना, करना सोच असोच ॥३॥

* चौपाई

सब ही झूठ झूठ करि जाना । सत्त नाम को सत कर माना ॥
निसि बासर इक पल नहिं न्यारा । जाने सतगुरु जाननहारा ॥
सुरत निरत ले राखै जहवाँ । पहुँचै अजर अमर घर तहवाँ ॥
सत्तलोक को देय पयाना । चार मुक्ति पावै निर्बाना ॥

* दोहा *

सत्तलोक सब लोक-पति, सदा समीप प्रमान ।
परम जोति से जोति मिलि, प्रेम सरूप समान ॥४॥

* चौपाई *

१अंस नाम तें फिरि फिरि आवै । पूरन नाम परम पद पावै ॥
नहिं आवै नहिं जाय सो प्रानी । सत्तनाम की जेहि गति जानी ॥
सत्तनाम में रहै समाई । जुग जुग राज करै अधिकाई ॥
सत्त लोक में जाय समाना । सत्त पुरुष से भया मिलाना ॥

१--अधूरे नाम का आधार लेने से जीव बार-बार आवागमन के चक्कर में आता रहता है ।

हंस सुजान हंस ही पावा । जोग संतायन भया मिलावा ॥
हंसा सुघर दरस दिखालावा । जनम जनम की भूख मिटावा ॥
सुरत सुहागिनि आगे ठाढ़ी । प्रेम सुभाव प्रीति अति बाढ़ी ॥
पुहुप दीप में जाइ समाना । बास सुबास चहूँ दिसि आना ॥

* दोहा *

सुख सागर सुख बिलसही, मानसरोवर न्हाय ।
कोटि काम सी कामिनी, देखत नैन अघाय ॥५॥

* चौपाई *

[१]सूरत नाम सुनै जब काना । हंसा पावै पद निर्बाना ॥
अब तो कृपा करो गुरु देवा । ता तें सुफल भई सब सेवा ॥
नाम दान अब लेइ सुभागी । सत्त नाम पावै बड़ भागी ॥
मन बच क्रम चित निस्चय राखै । गुरु के सबद अमीरस चाखै ॥
आदि अंत कै भेदै पावै । पवन आड़ में ले बैठावै ॥
सब जग झूठ नाम इक साचा । स्वास स्वास में साचा राचा ॥
झूठा जानि जगत सुख भोगा । साचा साधू नाम सँजोगा ॥
यह तन माटी इन्द्री छारी । सत्त नाम साचा अधिकारी ॥
नाम प्रताप जुगै जुग भाखी । साध संत ले हिरदे राखी ॥

* दोहा *

महिमा बड़ी जो साध की, जा के नाम अधार ।
सतगुरु केरी दया तें, उतरे भौजल पार ॥६॥

१--सुरति से जपा जाने वाला नाम ।

श्रीनामदेवजी

[गुरु-शब्द] **राग सोरठ**

जब देखाँ तब गावाँ ॥ तौ जन धीरज पावाँ ॥१॥
१नादि समाइलो रे सतिगुरु भेंटिले देवा ॥१॥ रहाउ॥
जहँ झिलिमिलिकार दिसंता ॥ तहाँ अनहद सबद बजंता ॥
जोती जोति समाना ॥ मैं गुरपरसादी जानी ॥२॥
२रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल ३तहीं ॥
नेरै नाहीं दूरि ॥ निज आतमै रहिया भरपूरि ॥३॥
जहँ अनहत ४सूर ५उजारा ॥ तहँ दीपक जलै ६छंछारा ॥
गुरपरसादी जानिया ॥ जनु नामा सहज समानिया ॥४॥

[घट-मठ] **राग रामकली**

बेद पुरान सास्त्र ७आनंता गीत कबित्त न गावऊँगो ॥
अखंडमंडल निरंकार महिं अनहद ८बेनु बजावऊँगो ॥२॥
बैरागी रामहिं गावऊँगो ॥
सबदि अतीत अनाहदि राता ९आकुल कै घरि जाऊँगो ।१रहाउ।
१०ईड़ा ११पिंगुला और १२सुखमना १३पौने बंधि १४रहाऊँगो।

१--शब्दमें समा गया । २--रत्नोंके समान कमलों का स्थान । ३--वहाँ । ४--सूर्य । ५--प्रकाश । ६--धूयें से रहित और उज्जल । ७--अनेक । ८अनहद-शब्द की बीन। ९--कुल-मालिक। १०--कनपटी में दिमाग़की तरफ़ जाने-वाली दायीं नाड़ी । ११--बायीं तरफ़ की नाड़ी । १२--दोनोंके दरमियान वाली नाड़ी । १३--स्वाँस के द्वारा अथवा आसा-मनसा आदि से । १४--रोक रखूँगा।

चंद सूरज दोय १सम करि राखौं ब्रहम जोति मिलि जाऊँगो ॥२॥
तीरथ देखि न जल महिं २पैसौं ३जीअ जंत न सतावऊँगो।
अठसठ तीरथ गुरू दिखाये घट ही भीतरि नावऊँगो ॥३॥
पंच सहाई जनकी सोभा भलो भलो न कहावऊँगो ॥
नामा कहै चित्तु हरि स्यौं राता सुंनि समाधि समावऊँगो ॥

* नाम-महिमा *

तत्त गहन को नाम है, भजि लीजै सोई।
लीलासिंधु अगाध है, गति लखै न कोई ॥१॥
कंचन मेरु सुमेरु, ४हय ५गज दीजै दाना।
कोटि गऊ जो दान दे, नहिं नाम समाना ॥२॥
जोग जग्य तें कहा ६सरै, तीरथ ब्रत दाना।
७ओसै प्यास न भागिहै, भजिये भगवाना ॥३॥
पूजा करि साधू जनहिं, हरि को प्रन धारी।
उन तें गोबिंद पाइये, वे परउपकारी ॥४॥
एक मन एकै दसा एकै ब्रत धरिये।
नामदेव नाम जहाज है, भवसागर तरिये ॥५॥

* लव *

अस मन लाव राम रसना। तेरो बहुरि न होइ जरा मरना ।१।
जैसे मृगा नाद लव लावै। बान लगे वहि ध्यान लगावै ।२।
जैसे कीट भृंग मन दीन्ह। आपु सरीखे वा को कीन्ह ।३।
नामदेव ८भनै दासनदास। अब न तजों हरि चरन निवास ।४।

१--एक समान करके। २--भीतर घुसौं। ३--छोटे बड़े जीव।
४--घोड़े। ५--हाथी। ६--संवरैगा। ७--ओसके चाटनेसे। ८--कहते हैं।

* प्रेम *

भाई रे इन नैनन हरि पेखो।
हरिकी भक्ति साधुकी संगति, सोई यह दिल १लेखो ॥१॥
चरन सोई जो नचत प्रेम से, २कर सोई जो पूजा।
सीस सोई जो नवै साधु को, रसना और न दूजा ॥२॥
यह संसार ३हाट को लेखा, सब कोउ ४बनजहिं आया।
जिन ५जस लादा तिन ६तस पाया, मूरख मूल गँवाया ॥३॥
आतमराम ७देह धरि आयौ, ता में हरि को देखो।
कहत नामदेव बलि बलि जैहौं, हरि भजि और न लेखो ॥४॥

* उपदेश *

काहे मन बिषया बन जाय, भूलो रे ८ठगमूरी खाय ॥१॥
जैसे मीन पानी में रहै, काल-जाल की सुधि नहिं लहै ॥२॥
जिभ्या स्वादी ९लीलत लोह, ऐसे १०कनिक ११कामिनी मोह ।३
ज्यों मधु-माखी १२संचि अपार, मधु लीन्हो मुख दीन्हो १३छार ।४।
गऊ बाछ को संचै १४छीर, गला बांधि दुहि लेहि अहीर ।५।
माया कारन १५स्रम अति करै, सो माया लै गाड़ै धरै ।६।
अति संचै समझै नहिं मूढ़, धन धरती तन ह्वै गयो धूड़ ।७।
काम क्रोध त्रिस्ना अति जरै, साधुसंगत कबहूँ नहिं करै ।८।
कहत नामदेव १६ता ची आन, निरभय ह्वै भजिये भगवान ।९।

१--दिलमें लगाओ। २--हाथ। ३--बाज़ार। ४--सौदा खरीदने के लिये। ५--जैसा। ६--तैसा ही। ७--सन्तोंके रूपमें शरीर धारण करके। ८--एक जंगली बूटी का नाम है, जिसे खाकर इनसान बावला हो जाता है। ९--लोहे के कुण्डेको चाटती है। १०--धन। ११--स्त्री। १२--बहुत सा मधु (शहद) इकट्ठा करती है। १३--खाक। १४--दूध। १५--मिहनत। १६--उस मालिक की सौगन्ध है।

श्रीरविदासजी

[काल-फाँस] राग आसा

१मृग २मीन ३भृंग ४पतंग ५कुंचर एक ६दोख ७बिनास ॥
पंच दोख ८असाध जामहिं ताकी केतक आस ॥१॥
माधो अबिद्या हित कीन ॥ बिवेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
९त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन्न पाप असोच ॥
मानुखा अवतार दुरलभ तेही संगती १०पोच ॥२॥
जीअ जंत जहाँ जहाँ लगु करम के बसि जाय ॥
काल-फास अबँध लागै कछु न चलै उपाय ॥३॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तप गुर गियान ॥
भगतजन भैहरन ११परमानंद करहु १२निदान ॥४॥

[चेतावनी] राग सोरठ

जलकी १३भीति पवनका १४थंभा १५रकत बूँद का गारा ॥
हाड माँस नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
प्रानी क्या मेरा क्या तेरा ॥
जैसे १६तरुवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
राखहु१७कंध उसारहु १८नींवा। साढे तीनि हाथ तेरी१९सींवा।२।

१--हरिण। २--मछली। ३--भौंरा। ४--पतंगा। ५--हाथी। ६--दोष। ७--नष्ट हो जाते हैं। ८--काबूसे बाहर। ९- टेढ़ी योनियाँ (सर्प, बिच्छू आदि)। १०--बुरी। ११--परमगति। १२--अंत में। १३--दीवार। १४--खम्भा। १५--लहू की बूँद। १६--वृक्षपर। १७--दीवार। १८--बुनियाद। १९--हद्द।

१बंके बाल पाग सिर २डेरी। इहु तनु होयगो भसमकी ढेरी ॥३॥
ऊँचे मंदर सुंदर नारी ॥ रामनाम बिनु बाजी हारी ॥४॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा रामचंद्र कहै रविदास चमारा ॥५॥

* चेतावनी *

कहु मन राम नाम संभारि ।
माया के भ्रम कहाँ भूल्यो, जाहुगे कर ३झारि ॥ टेक ॥
देखि ४धौं इहाँ कौन तेरो, सगा सुत नहिं नारि ।
तोर ५उतँग सब दूरि करिहैं, देहिंगे तन जारि ॥१॥
प्रान गये कहु कौन तेरा, देखि सोच बिचारि ।
बहुरि येहि कलिकाल नाहीं, जीति भावैं हारि ॥२॥
यहु माया सब ६थोथरी रे, भगति दिस ७प्रतिहार ।
कहैं रैदास सत्त बचन गुरु के, सो जिव तें न बिसारि ॥३॥

* प्रेम *

(१)

जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरूँ, तुम सों तोरि कवन सों जोरूँ ॥ टेक ॥
तीरथ बरत न करौं अंदेसा, तुम्हरे चरनकमल के भरोसा ।१।
जहँ जहँ जाऊँ तुम्हारी पूजा, तुम सा देव और नहिं दूजा ।२।
मैं अपनो मन हरि सों जोरियो, हरि सों जोरि सबन से तोरियो ।३।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम बचन कहैं रैदासा ।४।

१--सुन्दर (सजे हुये) २--टेढ़ी ।३--हाथ झाड़कर । ४--भला । ५--डोरी ।
६--खोखली (अर्थात् सुखसे खाली)। ७--मनका रुख मोड़दे ।

(२)

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ॥ टेक ॥

प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ॥१॥
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समाना ॥२॥
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाको जोति बरै दिन राती ॥३॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ॥४॥
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसो भक्ति करै रैदासा ॥५॥

साची प्रीति हम तुम संग जोड़ी। तुम संग जोड़ि अवर संग तोड़ी ॥१॥
जो तुम बादर तो हम मोरा। जो तुम चंद हम भये चकोरा ॥२॥
जो तुम दीवा तो हम बाती। जो तुम तीरथ तो हम जात्री ॥३॥
जहाँ जाउँ तहाँ तुम्हरी सेवा। तुम सा ठाकुर और न देवा ॥४॥
तुम्हरे भजन कटे भय फाँसा। भक्ति हेतु गावै रैदासा ॥५॥

* साधु *

आज दिवस लेऊँ बलिहारा, मेरे गृह आया रामका प्यारा ॥टेक॥
आँगन बंगला भवन भयो पावन, हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥१॥
करूँ डंडवत चरन पखारूँ, तन मन धन उन ऊपरि वारूँ ॥२॥
कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं, आप तरैं औरन को तारैं ॥३॥
कहैं रैदास मिलैं निज दास, जनम जनम की काटैं फास ॥४॥

श्री बेणी साहब जी

[घट-मठ] **राग रामकली**

ईड़ा पिंगला और सुखमना तीनि बसहिं इक ठाईं ॥
बेणी १संगमु तहँ २पिरागु मन मॅजनु करै ३तिथाईं ॥१॥
संतहु तहाँ निरंजन रामु है ॥ ४गुर गमि ५चीन्है बिरला कोय ॥
तहाँ निरंजन रमैइया होय ॥१॥रहाउ॥
देवस्थानै क्या नीसाणी ॥ तहँ बाजे सबद अनाहद बाणी ॥
तहँ चंद न सूरज पौण न पाणी॥साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥२॥
ऊपजै गियानु दुरमति ६छीजै॥ अमृत-रस ७गगनंतरि भीजै ॥
एसु कला जो जाणै भेव ॥ भेंटै तासु परम गुरुदेव ॥३॥
दसम दुआरा अगम अपारा, परम-पुरख की ८घाटी ॥
ऊपरि हाट हाट परि आला, आले भीतरि ९थाती ॥४॥
जागत रहै सो कबहूँ न सोवै ॥ तीन तिलोक समाधि पलोवै ॥
बीजमंत्र लै हिरदै रहै ॥ मनुआ उलटि सुन्न महिं गहै ॥५॥
जागत रहै न अलीया भाखै ॥ पाँचों इन्द्री बसि करि राखै ॥
गुरकी १०साखी राखै चीति ॥ मन तन अरपै कृसन परीति ॥६॥
कर ११पल्लव साखा बीचारै ॥ अपुना जनम न जूए हारै ॥

१--जहाँ ईड़ा, पिंगला और सुखमना---ये तीनों नाड़ियाँ मिलती हैं; उसी को सन्तोंने त्रिवेणी संगम का नाम दिया है। २---प्रयागराज नाम का प्रसिद्ध तीर्थ। ३--वहाँ ही। ४-- जहाँ गुरुके द्वारा पहुँच सकना सम्भव है। ५--पहिचानता है। ६--नष्ट हो जाती है। ७--अन्तरके आकाशमें। ८--पहाड़ी। ९--पूँजी या सत्-वस्तु। १०--गुरूका शब्द। ११--पत्ते।

१असुर नदी का बंधै मूल ।। पच्छिम फेरि चढ़ावै सूर ।।
अजरु जरै सो निझरु झरै ।। जगन्नाथ स्यौं २गोसटि करै ।।७।।
चौमुख दीवा जोति दुआर ।।३पलू अनत मूल बिचकार।।
सरब कला ले आपे रहै ।।मनु माणकु रतनां महिं गुहै ।।८।।
मसतकि पदमु ४दुआलै मणी। माहिं निरंजन त्रिभुवण धणी ।।
पंच सबद निरमाइल बाजे । ५ढुलकै चँवर संख घन गाजै।।
दलिमलि ६दैतहु गुरमुखि गियानु ।बेणी जाचै तेरा नामु ।।९।।

श्री पीपा जी

* घट-मठ *

काया देवा काया देवल, काया जंगम जाती ।
काया धूप दीप नैबेदा, काया पूजौं पाती ।।१।।
काया बहु खंड खोजते, नव निद्धी पाई ।
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो, रामकी दुहाई ।।२।।
जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे, जो खोजै सो पावै ।
पीपा प्रणवै परम तत्त्व ही, सतगुरु होय लखावै ।।३।।

१—राक्षसी नदी का मुहाना बंद करे अर्थात् इन्द्रियोंको वशमें लावे । २—बातचीत । ३—पत्ते । ४आस-पास । ५—झूलता है । ६—दुष्टोंका नाश करके

श्री त्रिलोचनजी

* अन्त-काल *

अंतकालि जो लछमी सिमरै, ऐसी चिंता महिं जे मरै ॥
सरप जोनि १वलि वलि औतरै ॥१॥
अरी बाई गोबिंद नामु मतु बीसरै ॥ रहाउ ॥
अंतकालि जो इस्त्री सिमरै, ऐसी चिंता महिं जे मरै ॥
बेसवा जोनि वलि वलि औतरै ॥२॥
अंतकालि जो लड़के सिमरै, ऐसी चिंता महिं जे मरै ॥
२ सूकर जोनि वलि वलि औतरै ॥३॥
अंतकालि जो ३ मंदर सिमरै, ऐसी चिंता महिं जे मरै ॥
प्रेत जोनि वलि वलि औतरै ॥४॥
अंतकालि नाराइण सिमरै, ऐसी चिंता महिं जे मरै ॥
४ बदति त्रिलोचन ते नर मुकता, पीतंबरु वाके रिदै बसै ॥५॥

१—बारम्बार। २—सूअरकी योनिमें। ३—घर-मकान। ४—कहते हैं।

श्री शेख़ फ़रीद साहब जी

[प्रेम] **राग आसा**

दिलहुँ मुहबति जिन्ह सेई सच्चिया ॥
जिन्ह मन होर मुखि होर से १ कांढे कच्चिया ॥१॥
रत्ते इसक खुदाय रंग दीदार के ॥
विसरिया जिन्ह नाम ते २ भुएँ भारु थीए ॥१॥रहाउ॥
आपि लीए लड़ि लाए दरि दरवेस से ॥
तिन्ह धंनु जणेंदी माउ आए सफलु से ॥२॥
परवरदगार अपार अगम बे अंत तूँ ॥
जिन्हाँ पछाता सचु चुंमाँ पैर मूँ ॥३॥
तेरी ३ पनाह खुदाय तूँ बख्सदंगी ॥
सेख फ़रीद खैरु दीजै बंदगी ॥४॥

श्री बुल्हेशाह साहब जी

* चेतावनी *

अब तो जाग मुसाफर प्यारे, रैन घटी ४ लटके सब तारे ॥टेक॥
५ आवागौन सराई डेरे, साथ तयार मुसाफर तेरे ।
६ अजे न सुनदा ७ कूच नगारे ॥१॥

१—कहे जाते हैं । २—भूमि पर । ३—शरण । ४—डूबने लगे हैं । ५—आवागमन के चक्र रूपी सरायमें तेरा डेरा है । ६—अब तक भी। ७—चलनेके नक्कारे ।

करलै आज करन दी वेला, बहुरि न होसी आवन तेरा।
साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥२॥
आपो अपने १लाहे दौड़ी, क्या २सरधन क्या निरधन बौरी।
लाहा नाम तूँ लेहु सँभारे ॥३॥
बुल्ले सहु दी पैरी परिये, गफ़लत छोड़ ३हीला कुछ करिये।
४मिरग जतन बिन खेत उजारे ॥४॥

श्री गोसाईं तुलसीदास जी

* चेतावनी *

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु, करम बचन अरु ५ही ते ॥१॥
६सहसबाहु ७दसबदन आदि ८नृप, बचे न काल बली ते ॥
हम हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि ९रीते ॥२॥
१०सुत-बनितादि जानि स्वारथ-रत, न करु नेह सबही ते।
अंतहु तोहिं तजैंगे ११पामर ! तू न तजै अबही ते ॥३॥
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्याग दुरासा जी ते।
बुझै कि काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय-भोग बहु घी ते ॥४॥

१—लाभ के पीछे। २--धनवान्। ३--उपाय। ४--काम, क्रोध लोभ मोह और अहंकार रूपी हरिण ५--हृदयसे। ६--राजा सहस्रबाहु जिसकी एक-हज़ार भुजायें थीं। ७—रावण जिसके दस शीश थे। ८—राजा। ९—खाली हाथ। १०--पुत्र स्त्री आदि को। ११-- रे मूढ़ !

* निष्फल जीवन *

ते नर नरकरूप जीवत जग, १भवभंजन-पद-बिमुख अभागी।
निसिबासुर रुचि पाप २असुचि मन,
खल मति-मलिन ३निगम-पथ-त्यागी ॥१॥
नहिं सत्संग भजन नहिं हरि को,
स्रवन न राम-कथा-अनुरागी।
४सुत--बित्त--दार--भवन-ममता-निसि,
सोवत अति, न कबहुँ मति जागी ॥२॥
तुलसिदास हरिनाम ५सुधा तजि,
सठ हठि पियत विषय-विष माँगी।
६सूकर-स्वान-सृगाल-सरिस जन,
जनमत जगत ७जननि-दुख लागी ॥३॥

१--भव-दुःख का नाश करनेवाले मालिकके चरणोंसे विमुख होकर। २--अपवित्र मन ३--वेद-मार्ग को त्यागनेवाले। ४--पुत्र-धन-स्त्री-घर-मकान आदि की ममता रूपी रात्रि में। ५--अमृत। ६--सूअर-कुत्ते-गीदड़ आदि के समान हैं वे मनुष्य। ७--माता को दुःख देने के लिये।

श्री धनी धर्मदास जी

* सतगुरु *

गुरु मिले अगम के बासी ॥ टेक ॥

उनके चरन कमल चित्त दीजै, सतगुरु मिले अबिनासी ॥१॥
उनकी सीत प्रसादी लीजै, छूटि जाय चौरासी ॥२॥
अमृत बुंद झरै घट भीतर, साध संत जन १लासी ॥३॥
धर्मदास बिनवैं कर जोरी, सार सबद मन बासी ॥४॥

* नाम-महिमा *

हम सच्च नाम के बैपारी ॥ टेक ॥

कोइ कोइ लादै काँसा पीतल, कोइ कोइ लोंग सुपारी।
हम तो लादियो नाम धनी को, पूरन खेप हमारी ॥१॥
पूँजी न टूटै नफ़ा चौगुना, बनिज किया हम भारी।
हाट २जगाती रोक न सकिहै, निर्भय गैल हमारी ॥२॥
मोति बुंद घट ही में उपजै, ३सुकिरत भरत ४कोठारी।
नाम पदारथ लाद चला है, धर्मदास बैपारी ॥३॥

* बिरह *

(१)

सतगुरु आवो हमरे देस, निहारौं बाट खड़ी ॥ टेक ॥

५वाहि देस की बतियाँ रे, लावैं संत सुजान।
उन संतन के चरन पखारौं, तन मन करौं कुरबान ॥१॥

१—रस लेंगे। २—महसूल लेनेवाला (अर्थात् यम) ३—शुभ-कर्म। ४—कुठाली।
५—उस देसकी (अर्थात् निज-देश की) बातें।

वाहि देस की बतियाँ हमसे, सतगुरु आन कही।
आठ पहर के निरखत हमरे, नैन की नींद गई ॥२॥
भूलि गई तन मन धन सारा, ब्याकुल भया सरीर।
बिरह पुकारै बिरहनी, १ढुरकत नैनन नीर ॥३॥
धरमदास के दाता सतगुरु, पल में कियो निहाल।
आवागवन की डोरी कटि गई, मिटे भरम जंजाल ॥४॥

(२)

हमरे का करैं हाँसी लोग ॥टेक॥
मोरा मन लागा सतगुरु से, भला होय कै २खोर।
जबसे सतगुरु ज्ञान भयो है, चलै न ३कहु कै जोर ॥१॥
मात ४रिसाई पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।
ज्ञान खड़ग तिरगुन को मारौं, पाँच पच्चीसों चोर ॥२॥
अब तो मोहिं ऐसी बनि आवै, सतगुरु रचा संजोग।
आवत साध बहुत सुख लागै, जात बियापै रोग ॥३॥
धरमदास बिनवै कर जोरी, सुनु हो बंदी-छोर।
जाके पद तिरलोक से न्यारा, सो साहिब ५कस होय ॥४॥

* भेद *

६झरि लागे महलिया, गगन ७घहराय ॥टेक॥
८खन गरजै खन बिजली चमकै, लहर उठै सोभा बरनि न जाय।१।
सुन्न महल से अमृत बरसै, प्रेम आनंद ह्वै साध नहाय ॥२॥
खुली किवरिया मिटी अंधियरिया, धन सतगुरु जिन दिया है लखाय ॥३॥

१--गिरता है। २--बुरा। ३--किसी का भी। ४--रूठ जायें। ५--कैसा। ६--झड़ी या बरसात। ७--गरजता है। ८--घड़ी में।

धरमदास बिनवै कर जोरी, सतगुरु चरन में रहत समाय ॥४॥

* विनय *

(१)

गुरु पैयाँ लागौं नाम लखा दीजो रे ॥टेक॥

जनम जनम का सोया मनुवाँ, सबदन मार जगा दीजो रे ॥१॥
घट अंधियार नैन नहिं सूझै, ज्ञान का दीप जगा दीजो रे ॥२॥
बिषकी लहर उठत घट अंतर, अमृत बूँद चुवा दीजो रे ॥३॥
गहिरी नदिया अगम बहै १धरवा, खेय के पार लगा दीजो रे ॥४॥
धरमदास की अरज गुसाईं, अब के खेप निभा दीजो रे ॥५॥

(२)

चरन छाडि प्रभु जावँ कहाँ, मोरे और न कोई ।
जग में आपन कोई नहीं, देखा सब २टोई ॥१॥
मात पिता हित बन्धु तुम, का से दुख रोई ।
सब कछु तुम्हरे हाथ है, तुम्हरे मुख ३जोही ॥२॥
गुन तो मोरे है नहीं, औगुन बहुतेरे ।
ओट लई तुम नाम की, राखो ४पत सोई ॥३॥
सतगुरु तुम चीन्हे बिना, मति बुधि सब खोई ।
सब जीवन में एक तुम, दूजा नहिं कोई ॥४॥
मैं ५गरजी ६अरजी करौं, ७मरजी जस होई ।
अरज बिपति लखौं आपनी, राखौं नहिं ८गोई ॥५॥
धरमदास सत साहिबी, घट घटहिं समोई ।
साहिब कबीर सतगुरु मिले, आवागवन न होई ॥६॥

१–धारा । २खोजकर । ३–ताकते हैं । ४–लज्जा । ५–तलबगार । ६–बिनती
७–मौज । ८–छुपाकर ।

श्री पलटूसाहब जी

॥ कुण्डलिया ॥

* गुरुदेव *

(१)

सतगुरु सिकलीगर मिलै तब, छूटै पुराना दाग ॥
छूटै पुराना दाग गड़ा मन १मुरचा माहीं ।
सतगुरु पूरे बिना दाग यह छूटै नाहीं ॥
२झांवाँ लेवै जोग तेग को मलै बनाई ।
जौहर देय निकार सुरत को रंद चलाई ॥
सब्द मस्कला करै ज्ञान का कुरँड लगावै ।
जोग जुगत से मलै दाग तब मनका जावै ॥
पलटू ३सैफ़ को साफ़ करि, बाद धरै बैराग ।
सतगुरु ४सिकलीगर मिलैं तब, छूटै पुराना दाग ॥

(२)

पर स्वारथ के कारने, संत लिया औतार ॥
संत लिया औतार, जगत को राह चलावैं ।
भक्ति करैं उपदेस ज्ञान दे नाम सुनावैं ॥
प्रीत बढ़ावैं जगत में धरनी पर डोलैं ।
कितनौ कहै कठोर बचन वे अमृत बोलैं ॥
उनको क्या है चाह सहत हैं दुःख घनेरा ।
जिव तारन के हेतु मुलुक फिरते बहुतेरा ॥

१—जंग । २—तलवारपर मलने के लिये एक प्रकार की वस्तु, जिससे जंग साफ़ करते है । ३—तलवार । ४—हथियारों को साफ़ करनेवाले ।

पलटू सतगुरु पाय के, दास भया १निरवार ।
पर स्वारथ के कारने, संत लिया औतार ॥

(३)

नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार ॥
कैसे उतरै पार २पथिक बिस्वास न आवै ।
लगै नहीं बैराग यार कैसे कै पावै ॥
मन में धरै न ज्ञान नहीं सतसंगत रहनी ।
बात करै नहिं कान प्रीति बिन जैसे कहनी ॥
छूटि डगमगी नाहिं संत को बचन न मानै ।
मूरख तजै बिबेक चतुरई अपनी आनै ।
पलटू सतगुरु सब्द का, तनिक न करै बिचार ।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार ॥

(४)

३धुबिया फिर मर जायगा, ४चादर लीजै धोय ॥
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी ।
चल सतगुरु के घाट भरा जहँ निर्मल पानी ॥
चादर भई पुरानि दिनों-दिन ५बार न कीजै ।
सतसंगत में ६सौंदि ज्ञानका साबुन दीजै ॥
छूटै कलिमल दाग नाम का कलप लगावै ।
चलिये चादर ओढ़ि बहुर नहिं भवजल आवै ॥
पलटू ऐसा कीजिये, मन नहिं मैला होय ।
धुबिया फिर मर जायगा, चादर लीजै धोय ॥

१—आजाद । २—मुसाफ़िर । ३—जीव रूपी धोबी । ४—सुरति रूपी चादर ।
५—देरी । ६—डुबोकर ।

(५)

जग १खीझै तो का भया, रीझै सतगुरु सन्त ॥
रीझै सतगुरु सन्त आस कछु जग की नाहीं।
एक द्वार को छोड़ और ना माँगन जाहीं ॥
जिउ मेरो २बरु जाय जन्म बरु जाय नसाई।
करौं न दूसर आस संत की करौं दुहाई ॥
तीन लोक ३रिसियाएँ सकल सुर नर और नारी।
मोर न बांके बार ४पठंगा पाया भारी ॥
पलटू सब रोवै पड़ा, मोर भया ५सलतंत।
जग खीझै तो का भया, रीझै सतगुरु संत ॥

* नाम *

(१)

दीपक बारा नाम का, महल भया उजियार ॥
महल भया उजियार नाम का तेज बिराजा।
सब्द किया परकास ६मानसर ऊपर ७छाजा ॥
दसों दिसा भई सुद्ध बुद्धि भई निर्मल साची।
छुटी कुमति की गांठि सुमति परगट होय नाची ॥
होत छत्तीसों राग दाग तिरगुन का छूटा।
पूरन प्रगटे भाग करम का कलसा फूटा ॥
पलटू अंधियारी मिटी, बाती दीन्हीं टार।
दीपक बारा नाम का, महल भया उजियार ॥

(२)

देखौ नाम प्रताप से, सिला ८तिरै जल बीच ॥

१--नाराज होवें। २--यदि। ३--रूठ जावें। ४--ओट। ५--बादशाही।
६--पारब्रह्म का स्थान। ७--छा गये। ८--तैरती है।

सिला तिरै जल बीच १सेतु में २कटक उतारी।
नामहिं के परताप ३बानरन लंका जारी॥
नामहिं के परताप ज़हर मीरा ने खाई।
नामहिं के परताप बालक प्रहलाद बचाई॥
पलटू हरिजस ना सुनै, ता को कहियै नीच।
देखौ नाम प्रताप से, सिला तिरै जल बीच॥

* संत-महिमा *

(१)

सीतल चन्दन चन्द्रमा, तैसे सीतल सन्त॥
तैसे सीतल सन्त जगत की ताप बुझावैं।
जो कोइ आवै ४जरत मधुर मुख बचन सुनावैं॥
धीरज सील सुभाव छिमा ना जात बखानी।
कोमल अति मृदु बैन बज्रको करते पानी॥
रहन चलन मुसकान ज्ञान को सुगंध लगावैं।
तीन ताप मिट जायं संत के दर्सन पावैं॥
पलटू ज्वाला उदर की, रहै न मिटै तुरन्त।
सीतल चन्दन चन्द्रमा, तैसे सीतल संत॥

(२)

तीन लोक से जुदा है, उन सन्तन की चाल॥
उन सन्तन की चाल करम से रहते न्यारे।
लोभ मोह हंकार ताहि की गरदन मारे॥
काम क्रोध कछु नाहिं लगै ना भूख प्यासा।

१—पुल। २—फ़ौज। ३—बंदरोंने। ४—जलता हुआ।

जियते मिर्तक रहैं करैं ना जगकी आस ॥
ऋद्धि सिद्धि को देख देत हैं खाक चलाई ।
माया से १निर्विर्त भजनकी करैं बड़ाई ॥
सभै २चबैना काल का, पलटू उन्हैं न काल ।
तीन लोक से जुदा है, उन संतन की चाल ॥

* चेतावनी *

(१)

क्या सोवै तू ३बाँवरी, चाला जात बसन्त ॥
चाला जात बसन्त ४कन्त ना घर में आये ।
धृग जीवन है तोर कन्त बिन दिवस गँवाये ॥
गर्ब गुमानी नारि फिरै जोबन की माती ।
खसम रहा है रूठि नहीं तू ५पठवै ६पाती ॥
लगै न तेरो चित्त कन्त को नाहिं मनावै ।
का पर करै सिंगार फलकी सेज बिछावै ॥
पलटू ऋतु भरि खेलि ले, फिर पछितैहै अन्त ।
क्या सोवै तू बाँवरी, चाला जात बसन्त ॥

(२)

चोला भया पुराना, आज फटै की काल ॥
आज फटै की काल तेहू पै ह्वै ललचाना ।
तीनोंपन के बीत, भजन का मरम न जाना ॥
नख सिख भये सपेद तेहू पै नाहीं चेतै ।
जोरि जोरि धन धरै गला औरन का रेतै ॥

१—आज़ाद । २—आहार । ३—ऐ बाँवरी रूह । ४—मालिक । ५—भेजै । ६—पत्रिका ।

अब का करिहौ यार काल ने किहा १तगादा ।
चलै न एकौ जोर आय जब पहुँचा वादा ॥
पलटू तेहू पै लेत है, माया मोह जंजाल ।
चोला भया पुराना, आज फटै की काल ॥

(३)

भजन २आतुरी कीजिये, और बात में देर ॥
और बात में देर जगत में जीवन थोरा ।
मानुष तन धन जात ३गोड़ धरि करौ ४निहोरा ॥
काँचे महल के बीच पवन इक पंछी रहता ।
दस दरवाजा खुला उड़न को नित उठि चहता ॥
भजि लीजे भगवान एही में भल है अपना ।
आवागौन छुटि जाय जनम की मिटै कलपना ॥
पलटू अटक न कीजिये, चौरासी घर फेर ।
भजन आतुरी कीजिये, और बात में देर ॥

(४)

यही समय गुरु पाँय में, गोता लीजै खाय ॥
गोता लीजै खाय नाम के सरवर माहीं ।
५अवधि आइ ६निगिचाय दाँव फिर ऐसा नाहीं ॥
मानुष तन सकराँत ७महोदधि जात ८सिरानी ।
ऐसी ९परबी पाई नहीं तुम महिमा जानी ॥
सतसंगत के घाट पैठि कै कर असनाना ।

१—जोरदार माँग । २—जल्दी । ३—पाँव पकड़कर । ४—खुशामद करो । ५—मीयाद । ६—निकट आ गई । ७—महासमुद्र । ८—बीती जाती है । ९—पर्व ।

तन मन दीजै दान बहुरि नहिं औना जाना ॥
पलटू १बिलम न कीजिये, ऐसा औसर पाय।
यही समय गुरु पाँय में, गोता लीजै खाय ॥

* भक्ति *

सन्त न चाहैं मुक्ति को, नहीं पदारथ चार।
नहीं पदारथ चार मुक्ति संतन की चेरी।
ऋद्धि सिद्धि पर थुकैं स्वर्गकी आस न हेरी ॥
तीरथ करहिं न बर्त नहीं कछु मनमें इच्छा।
पुन्य तेज परताप संत को लगै अनिच्छा ॥
ना चाहैं बैकुंठ न आवागवन निवारा।
सात स्वर्ग अपवर्ग तुच्छ सम ताहि बिचारा ॥
पलटू चाहैं हरि भगति, ऐसा मता हमार।
सन्त न चाहैं मुक्ति को, नहीं पदारथ चार ॥

* प्रेम *

(१)

आठ पहर निरखत रहै, जैसे चन्द चकोर ॥
जैसे चन्द चकोर पलक से टारत नाहीं।
चुगै बिरह से आग रहै मन चन्दै माहीं ॥
फिरै जेही दिस चन्द तेही दिसि को मुख फेरै।
चँदा जाय छिपाय आग के भीतर २हेरै।
३मधुकर तजै न पदम जान से जाइ बँधावे।
दीपक में ज्यों पतंग प्रेम से प्रान गँवावे ॥
पलटू ऐसी प्रीत कर, ४परधन चाहै चोर।

१--देर। २--ढूँढता है। ३--भौंरा। ४--पराये धन को।

आठ पहर निरखत रहै, जैसे चन्द चकोर ॥

(२)

१फनि से मनि ज्यों बीछुरै, जलसे बीछुरै मीन ॥
जलसे बीछुरै मीन प्रानको तुरत गँवावै ।
रहै न कोटि उपाय दूधके भीतर नावै ॥
ऐसी करै जो प्रीति ताहि की प्रीति २सराही ।
बिछुरै पर नर जियै प्रीति वाहू की नाहीं ॥
पटकि पटकि तन रहै ३बिछोहा सहा न जाई ।
नैन ओट जब भये प्रानको संग पठाई ॥
पलटू हरि से बीछुरै, ये ना जीवैं तीन ।
फनि से मनि ज्यों बीछुरै, जल से बीछुरै मीन ॥

(३)

प्रेमबान जाके लगा, सो जानैगा पीर ॥
सो जानैगा पीर काह मूरख से कहिये ।
तिल भरि लगै न ज्ञान ताहि से चुप ह्वै रहिये ॥
लाख कहे समुझाय बचन मूरख नहिं मानै ।
तासे कहा बसाय ४ठान जो अपनी ठानै ।
जेहि के जगत पियार ताहि से भक्ति न आवै ॥
सतसंगति से बिमुख और के सन्मुख धावै ॥
जिन कर हिया कठोर है, पलटू ५धँसै न तीर ।
प्रेमबान जाके लगा, सो जानैगा पीर ॥

१--सर्प । २--सराहनी चाहिये । ३--वियोग । ४--जो अपनी मन-मतिका हठ करै
५--घुसै ।

(४)

सतगुरु सब्द के सुनत ही, तनकी सुधि रहि जात ॥
तनकी सुधि रहि जात जाय मन अंतै अटका ।
बिसरी भूख पियास किया सतगुरु ने [१]टोटका ।
[२]दतुइन करी न जाय नहीं अब जाय नहाई ।
बैठा उठा न जाय फिरी अब नाम दुहाई ॥
कौन बनावै भेष कौन अब टोपी देवै ।
बिसरा माला तिलक कौन अब दर्पन लेवै ॥
पलटू झुका है आपु को, मुखसे [३]भूली बात ।
सतगुरु सब्द के सुनत ही, तनकी सुधि रहि जात ॥

(५)

जहाँ तनिक जल बीछुड़ै, छोड़ि देतु है प्रान ॥
छोड़ि देतु है प्रान जहाँ जलसे बिलगावै ।
देइ दूध में डारि रहै ना प्रान गँवावै ॥
जाको वही आहार ताहि को का लै दीजै ।
रहै न कोटि उपाय और सुख नाना कीजै ॥
यह लीजै दृष्टान्त सकै सो लेइ बिचारी ।
ऐसो करै सनेह ताहि की मैं बलिहारी ॥
पलटू ऐसी प्रीति करु,जल और मीन समान ।
जहाँ तनिक जल बीछुड़ै, छोड़ि देतु है प्रान ॥

(६)

जो मैं हारौं राम की, जो जीतौं तौ राम ॥
जो जीतौं तौ राम राम से तन मन लावौं ।

१–जादू । २–दातून । ३–रह गई ।

खेलौं ऐसो खेल लोक की १लाज बहावौं ॥
पाँसा फेंकौं ज्ञान २नरद बिश्वास चलावौं ।
चौरासी घर फिरै अड़ी पौबारह नावौं ॥
पौबारह सिरवाय एक घर भीतर राखौं ।
कच्ची मारौं पाँच रैनि दिन सत्रह भाखौं ॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम ।
जौ मैं हारौं राम की, जो जीतौं तौ राम ॥

* सत्संग *

(१)

३मलया के परसंग से, सीतल होवत साँप ॥
सीतल होवत साँप ताप को तुरत बुझाई ।
संगत के परभाव सीतलता वा में आई ॥
मूरख ज्ञानी होय जाय ज्ञानी में बैठे ।
फूल अलग का अलग बासना तिल में पैठे ॥
कंचन लोहा होय जहाँ पारस छुइ जाई ।
४पनपै ५उकठा काठ जहाँ उन सरदी पाई ॥
पलटू संगत किये से, मिटते तीनिउँ ताप ।
मलया के परसंग से, सीतल होवत साँप ॥

(२)

पारस के परसंग से, लोहा महँग बिकान ॥
लोहा महँग बिकान छुए से कीमत निकरी ।
चंदन के परसंग चंदन भई बनकी लकरी ॥

१—त्यागौं । २—गोट । ३—चन्दन । ४—हरा होने लगता है । ५—कटा हुआ अथवा सूखा काष्ठ ।

जैसे तिल का तेल फूल संग महँग बिकाई ।
सतसंगति में पड़ा सन्त भा सदन कसाई ॥
गंगा में ह्वै शुभगंग मिली जो १ नारा २सोती ।
सीप बीच जो पड़ै बूँद सो होवै मोती ॥
पलटू हरि के नाम से, गनिका चढ़ी बिमान ।
पारस के परसंग से, लोहा महँग बिकान ॥

(३)

पलटू नीच से ऊँच भा, नीच कहै ना कोय ॥
नीच कहै ना कोय गये जबसे सरनाई ।
नारा बहि के मिलियो गंग में गंग कहाई ॥
पारस के परसंग लोह से कनक कहावै ।
आगि महैं जो परै जरै आगै होइ जावै ॥
राम का घर है बड़ा सकल ऐगुन छिपि जाई ।
जैसे तिल को तेल फूल संग बास बसाई ॥
भजन केरे परताप ते, तन मन निरमल होय ।
पलटू नीच से ऊँच भा, नीच कहै ना कोय ॥

* शब्द *

(१)

सबद छुड़ावै राज को, सबदै करै फ़कीर ॥
सबदै करै फ़कीर सबद फिर राम मिलावै ।
जिनकै लागा सबद तिन्हैं कछु और न भावै ॥
मरे सबद की घाव उन्हैं को सकै जियाई ।

१—नाले । २—चश्में ।

१होइगा उनका काम परी रोवै दुनियाई ॥
घायल भा वह फिरै सबद कै चोट है भारी ।
जियतै मिरतक होय झुकै फिर उठै सँभारी ॥
पलटू जिनके सबद का, लगा कलेजे तीर ।
सबद छुड़ावै राज को, सबदै करै फ़कीर ॥

(२)

सुरति सब्द के मिलन में, मुझको भया अनंद ॥
मुझको भया अनंद मिला पानी में पानी ।
दोऊ से भा सूत नहीं मिलिके अलगानी ॥
मुलुक भया सलतन्त मिला हाकिम को राजा ।
रैयत करै अराम खोलिकै २दस दरवाजा ॥
छूटी सकल बियाधि मिटी इंद्रिन की दुतिया ।
को अब करै उपाधि चोर से मिल गई कुतिया ॥
पलटू सतगुरु साहिब, काटियौ मेरौ बंद ।
सुरति सब्द के मिलन में, मुझको भया अनंद ॥

* ध्यान *

जैसे कामिनि के विषय, कामी लावै ध्यान ॥
कामी लावै ध्यान रैन दिन चित्त न टारै ।
तन मन धन मर्जाद कामिनि के ऊपर वारै ॥
लाख कोऊ जो कहै कहा ना तनिकौ मानै ।
बिन देखै ना रहै वाहि को सर्बस जानै ॥
लेय वाहि को नाम वाहि की करै बड़ाई ।
तनिक बिसारै नाहिं कनक ज्यों किरपिन पाई ॥

१—उनका कारज सिद्ध हो गया । २—दसवाँ द्वारा ।

ऐसी प्रीति अब दीजियै, पलटू को भगवान।
जैसे कामिनि के विषय, कामी लावै ध्यान॥

* घट मठ *

(१)

दिलमें आवै है नज़र, उस मालिक का नूर॥
उस मालिक का नूर कहाँ को ढूँढन जावै।
सबमें पूर समान दरस घर बैठे पावै॥
धरती नभ जल पवन तेही का सकल पसारा।
छुटै भरमकी गांठि सकल घट ठाकुरद्वारा॥
तिल भरि नाहीं कहीं जहाँ नहिं सिरजनहारा।
वोही आवै नज़र १फुरा बिस्वास हमारा॥
पलटू नेरे साच के, झूठे मे है दूर।
दिलमें आवै है नज़र, उस मालिक का नूर॥

(२)

खोजत खोजत मरि गये, घर ही लागा रंग॥
घर ही लागा रंग कीन्ह जब सन्तन दाया।
मन में भा बिस्वास छूटि गइ सहजै माया॥
बस्तु जो रही २हिरान ताहि का लगा ३ठिकाना।
अब चित्त चलै न इत उत आपु में आपु समाना॥
उठती लहर तरंग हृदयमें ४सातल लागे।
भरम गई है सोय बैठि कै चेतन जागे॥
पलटू खातिर जमा भई, सतगुरु के परसंग।

१—सच्चा। २—गुम। ३—पता। ४—ठंढक।

खोजत खोजत मरि गये, घर ही लागा रंग ॥

* सूरमा *

(१)

सन्त चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान ॥
तरकस बाँधे ज्ञान मोह दल मारि हटाई ।
मारि पाँच पच्चीस दिया गढ़ आगि लगाई ॥
काम क्रोध को मारि कैद में मनको कीन्हा ॥
नव दरवाज़े छाड़ि सुरति दसुएँ पर दीन्हा ॥
अनहद बाजै तूर अटल सिंहासन पाया ।
जीव भया सन्तोष आय गुरु नाम लखाया ॥
पलटू कफ़न बाँधिकै, खैंची सुरति कमान ।
सन्त चढ़े मैदान पर, तरकस बांधे ज्ञाम ॥

(२)

संत चढ़े जौ मोह पर, काया नगर मंझार ॥
काया नगर मंझार ज्ञान का तरकस बाँधे ।
दम की गोली साधि बिस्वास बंदूक है काँधे ।
घोड़ा है सन्तोष छिमा का जीन बँधाई ।
बखतर पहिरे प्रेम गगन में लै दौड़ाई ॥
मुरचा पाँच पच्चीस बात में लिया छुड़ाई ।
मन के बेरी डारि नगरमें अदल चलाई ॥
पलटू सुरति कमान करि, नाम निसाना मार ।
सन्त चढ़े जौ मोह पर, काया नगर मंझार ॥

* उपदेश *

(१)

गुरुकी भक्ति और माया, ज्यों छूरी तरबूज ॥
ज्यों छूरी तरबूज कुसल दोऊ बिधि नाहीं ।
गिरे गिराये घाव लगे तरबूजै माहीं ॥
कनक कामिनि बड़ी दोऊ हैं तीच्छन धारा ।
तब बचिहै तरबूज रहै छूरी से न्यारा ॥
छोट बड़ा कतलाम नहीं छूरी को दाया ।
बचे बिबेकी संत गये जिन अंग लगाया ॥
पलटू उनसे बैर है, पड़ै न मूरख बूझ ।
गुरुकी भक्ति और माया, ज्यों छूरी तरबूज ॥

(२)

बीज बासना को जरै, तब छूटै संसार ॥
तब छूटै संसार जगत से प्रीति न कीजै ।
लोभ मोह को जारि सत्य-पद मारग लीजै ॥
मारै भूख पियास जगत की करै न आसा ।
काम क्रोध को जारि तजै सब भोग-बिलासा ॥
सदा रहै निर्वृत्त चित्त ना अंतै जावै ।
मनको लेवै फेरि भजन में आय लगावै ॥
पलटू हिरन के कारने, जड़भर्त लिया अवतार ।
बीज बासना को जरै, तब छूटै संसार ॥

(३)

पलटू ऐसे दास का, भरम करै संसार ॥
भरम करै संसार होइ आसन से पक्का ।

भली बुरी कोउ कहै रहै सहि सबका धक्का ॥
धीरज धै सन्तोष रहै दृढ़ ह्वै ठहराई ।
जो कछु आवै खाइ बचै सो देइ लुटाई ॥
लगै न माया मोह जगतकी छोड़ै आसा ।
बल तजि निरबल होय सबुर से करै दिलासा ॥
काम क्रोध को मारि कै, मारै नींद अहार ।
पलटू ऐसे दास का, भरम करै संसार ॥

(४)

भक्ति बीज जब बोवै, निसिदिन करै बिवेक ॥
निसिदिन करै बिवेक लागि तब निकरन १साखा ।
डार पात बहु फूल जतन से जिन ने राखा ॥
हरिचर्चा से सींचि ज्ञान कै बाँधै २बेड़ा ।
पहुँचै ३सोर पताल खात संतन कै खेड़ा ॥
सोभित बृच्छ बिसाल माठ फल लटकन लागे ।
बिस्वास सोई रखवार बैठि कै पहरा जागे ॥
पलटू यहिबिधि ४जोगवै उपजै ज्ञान बिसेख ।
भक्ति बीज जब बोवै निसिदिन करै बिवेक ॥

* करनी-रहनी *

अपनी अपनी करनी, अपने अपने साथ ॥
अपने अपने साथ करै सो आगे आवै ।
बाप कै करनी बाप पूत कै पूतै पावै ॥
जोरू कै जोरुहिं चलै खसम कै खसम को फलता ।

१-टहनिया । २-बाड़ । ३-पाताल तक जड़ जा पहुँचे । ४-जतन करे ।

अपनी करनी सेती जीव सब पार उतरता ॥
नेकी बदी है संग और ना संगी कोई ।
देखौ बूझि बिचारि संग ये जैहैं दोई ॥
पलटू करनी और की, नहीं और के साथ ।
अपनी अपनी करनी, अपने अपने साथ ॥

* दीनता *

(१)

मन मिहीन करि लीजिये, जब पिउ लागै हाथ ॥
जब पिउ लागै हाथ नीच ह्वै सबसे रहना ।
पच्छा पच्छी त्यागि ऊँच बानी नहिं कहना ॥
मान बड़ाई खोय खाक में जीते मिलना ।
गारी कोउ दै जाय छिमा करि चुपके रहना ॥
सबकी करै तारीफ़ आपको छोटा जानै ।
पहिले हाथ उठाय सीस पर सबको आनै ॥
पलटू सोई सुहागिनी, हीरा झलकै माथ ।
मन मिहीन करि लीजिये, जब पिउ लागै हाथ ॥

(२)

जोग जुगत ना ज्ञान कछु, गुरु दासन को दास ॥
गुरु दासन को दास सन्तन ने कीन्ही दाया ।
सहज बात कछु १गहिनि छुड़ाइनि हरिकी माया ॥
२ताकिनि तनिक ३कटाच्छ भक्ति भूतल उर जागी ॥
४स्वस्ता मनमें आई जगत की भ्रमना भागी ॥

१—ग्रहण कराई । २—उन्होंने देखी । ३—दया की दृष्टि । ४—नीरोगता ।

भक्ति अभय-पद दीन्ह सनातन मारग वाकी।
१अबिरल ओकर नाम लगै ना सबही टांकी॥
पलटू ज्ञान न ध्यान तप, महापुरुष के आस।
जोग जुगत ना ज्ञान कछु, गुरु दासन को दास॥

* भेद *

(१)

उलटा कूवाँ गगन में, तिस में जरै चिराग॥
तिस में जरै चिराग बिना २रोग़न बिन बाती।
छः रितु बारह मास रहत जरतै दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नज़रमें आवै।
बिन सतगुरु कोउ होय नहीं वा को दरसावै॥
निकसै एक अवाज़ चिराग की जोतिहिं माहीं।
ज्ञान समाधी सुनै और कोउ सुनता नाहीं॥
पलटू जो कोई सुनै, ता के पूरे भाग।
उलटा कूवाँ गगन में, तिस में जरै चिराग॥

(२)

बंसी बाजी गगन में, मगन भया मन मोर॥
मगन भया मन मोर महल अठवें पर बैठा।
जहँ उठै सोहंगम सब्द सब्द के भीतर पैठा॥
नाना उठैं तरंग रंग कुछ कहा न जाई।
चाँद सुरज छिपि गये सुषमना सेज बिछाई॥
छूटि गया तन येह नेह उनहीं से लागी।
दसवाँ द्वारा फोड़ि जोति बाहर ह्वै जागी॥

१--निर्मल। २--तेल।

पलटू धारा तेल की, मेलत ह्वै गया भोर।
बंसी बाजी गगन में, मगन भया मन मोर॥

(३)

चढ़े चौमहले महल पर, कुंजी आवै हाथ॥
कुंजी आवै हाथ सबद का खोलै ताला।
सात महल के बाद मिलै अठएँ उजियाला॥
बिनु [१]कर बाजै [२]तार नाद बिनु रसना गावै।
महादीप इक बरै दीप में जाय समावै॥
दिन दिन लागै रंग सफ़ाई दिलकी अपने।
[३]रस रस मतलब करै सिताबी करै न सपने॥
पलटू मालिक तुही है, कोई न दूजा साथ।
चढ़े चौमहले महल पर, कुंजी आवै हाथ॥

(४)

चाँद सुरज पानी पवन, नहीं दिवस नहिं रात।
नहीं दिवस नहिं रात नाहीं उतपति संसारा।
ब्रह्मा बिस्नु महेस नाहिं तब किया पसारा॥
आदि जोति बैकुंठ सुन्य नाहीं कैलासा।
सेस कमठ दिग्पाल नाहिं धरती आकासा॥
लोक बेद पलटू नहीं, कहौं मैं तबकी बात।
चाँद सुरज पानी पवन, नहीं दिवस नहिं रात॥

(५)

झंडा गड़ा है जाय के, हद बेहद के पार॥
हद बेहद के पार तूर जहँ अनहद बाजै।

१--हाथ। २--सारंगी। ३--उसका रस ले लेकर धैर्य्य से कार्य-सिद्धि करे।

जगमग जोति जड़ाव सीसपर छत्र विराजै ॥
मन बुधि चित्त रहे हार नहीं कोउ वह घर पावै ।
सुरति शब्द रहै पार बीच से सब फिर आवै ॥
वेद पुरान को गम्म सकै ना उहवाँ जाई ।
तीन लोक के पार तहाँ रोसन रोसनाई ॥
पलटू ज्ञान के परे है, तकिया तहाँ हमार ।
झंडा गड़ा है जाय के, हद बेहद के पार ॥

* माया *

(१)

माया बड़ी बहादुरी, लूटि लिया संसार ॥
लूटि लिया संसार केहू को मानै नाहीं ।
तनिक उजुर जो करै ताहि को कच्चा खाहीं ॥
कहूँ कनक कहुँ कामिनी सुन्दर भेष बनावै ।
ताकै १जेकरी ओर नज़र से मारि गिरावै ॥
जोगी जती और तपी गुफा में पकरि मँगावै ।
बचै न कोऊ भागि दुपहरे लूटा जावै ॥
पलटू डरपै संत से, वे मारैं २पैज़ार ।
माया बड़ी बहादुरी, लूटि लिया संसार ॥

(२)

माया की चक्की चलै, पीसि गया संसार ॥
पीसि गया संसार बचै ना लाख बचावै ।
दोऊ पाट के बीच कोऊ ना साबित जावै ॥
काम क्रोध मद लोभ चक्की के पीसनहारे ।

१--जिस किसी की तरफ़ भी । २--जूते ।

तिरगुन डारै १झीक पकरि कै सबै निकारै ॥
दुरमति बड़ी सयानि २सानि कै रोटी पोवै ।
करम तवा में धारि सेंकि कै साबित होवै ॥
तृस्ना बड़ी ३छिनारि जाइ उन सब घर घाला ।
काल बड़ा बरियार किया उन एक निवाला ॥
पलटू हरि के भजन बिनु, कोऊ न उतरे पार ।
माया की चक्की चलै, पीसि गया संसार ॥

* जाति-भेद *

(१)

हरि को भजै सो बड़ा है, जाति न पूछै कोय ॥
जाति न पूछै कोय हरी को भक्ति पियारी ।
जो कोई करे सो बड़ा जाति हरि नाहिं निहारी ॥
बधिक अजामिल रहे रहे फिर सदन कसाई ।
गनिका बिस्वा रही बिमानपर तुरत चढ़ाई ॥
नीच जाति रैदास आपु में लिया मिलाई ।
लिया गिद्ध को गोदि दिया बैकुण्ठ पठाई ॥
पलटू पारस के छुए, लोहा कंचन होय ।
हरि को भजै सो बड़ा है, जाति न पूछै कोय ॥

(२)

साहिब के दरबार में, केवल भक्ति पियार ॥
केवल भक्ति पियार साहिब भक्ती में राजी ।
तजा सकल पकवान लिया ४दासीसुत ५भाजी ॥

१--मुट्ठी भर अनाज को पीसने के लिये चक्की में डाला जाता है (पंजाबी गान्हा) २--गूँधकर । ३--छल-भरी । ४--भक्त बिदुरजी । ५--बे--नमक साग ।

जप तप नेम अचार करै बहुतेरा कोई ।
खाये १सेवरी के बेर मुए सब ऋषि मुनि रोई ॥
किया युधिष्ठिर यज्ञ बटोरा सकल समाजा ।
मरदा सबका मान २सुपच बिन घंट न बाजा ॥
पलटू ऊँची जात का, ३जनि कोउ करै हंकार ।
साहिब के दरबार में, केवल भक्ति पियार ॥

* मिश्रित *

(१)

मन माया में मिलि गया, मारा गया बिबेक ॥
मारा गया बिवेक चोर का ४पहरू भेदा ।
दोऊ की मति एक सहर में करैं ५अहेदी ॥
आँधर नगर के बीच भया ६धमधूसर राजा ।
करै नीच सब काम चलै दस दिसि दरवाजा ॥
अधरम आठौं गाँठि न्याव बिन ७धींगमसूदा ।
८टकमि-दमारि गुलाम आप को भयो ९ असूदा ॥
जानि बूझि कूआँ परै, पलटू चलै न देख ।
मन माया में मिलि गया, मारा गया बिबेक ॥

(२)

देखौ जिउ की १० खोय को, फिर फिर गोता खाय ॥
फिर फिर गोता खाय तनिक ना लज्जा आवै ।

१--शबरी नाम की भीलनी (प्रसिद्ध भक्तिनि) । २--श्वपच ऋषि जी । ३--मत । ४--पहरेदार । ५--मन-मानी करनेवाले । ६--अंधेरनगरी चौपटराजा अर्थात् मन रूपी राजा और इन्द्रियोंकी नगरी । ७--'जिसकी लाठी उसीकी भैंस' वाला न्याय । ८-टक्के-दमड़ी का गुलाम । ९राजी १०--आदत ।

१पड़िगा वही सुभाव छुटै ना लाख छुटावै ॥
निमिख भरे की खुसी जन्म कोटिन दुख पावै ।
चौरासी-घर जाय आपु में आपु बँधावै ॥
स्वान लाख जो खाय दिया चाटै पै चाटै ।
छुटै न जिउ की खोय पकरि के पुरजे काटै ॥
पलटू भजै न नाम को, मूरख नर तन पाय ।
देखौ जिउ की खोय को, फिर फिर गोता खाय ॥

(३)

अमृत को सागर भरियो, देखे प्यास न जाय ॥
देखे प्यास न जाय पिये बिनु कौन बतावे ।
कल्पबृच्छ को देखि खाय बिनु भूख न जावे ॥
और की दौलत देखि २दरिद्दर नाहिं नसाई ।
अंधा पावे आँख साच वा की ३बैदाई ॥
लोहा कंचन होय पारसकी करे सरहना ।
क्या ४मलया का सिफत काठ को काठै रहना ॥
सतगुरु तुम्हरे बचन को, पलटू ना पतियाय ।
अमृत को सागर भरियो, देखे प्यास न जाय ॥

(४)

साध-बचन साचा सदा, जो दिल साचा होय ॥
जो दिल साचा होय रहै ना दुबिधा भागै ।
जो चाहै सो मिलै बात में ५बिलंब न लागै ॥
मन बच कर्म लगाय सन्त की सेवा लावै ।

१--पड़ गया । २--कंगाली । ३--हिकमत । ४--चंदन । ५--देरी ।

उकठा काठ १बियास साच जो दिलमें आवै ॥
जिनको है बिस्वास तेही को बचन २फुरानी ।
ह्वैगा उनका काम सन्तकी महिमा जानी ॥
पलटू गांठि में बांधिये, खाली पड़ै न कोय ।
साध-बचन साचा सदा, जो दिल साचा होय ॥

(५)

जगत भगत से बैर है, चारों जुग परमान ॥
चारों जुग परमान बैर ज्यों ३मूस बिलाई ।
४नेवर भुवंगम बैर कँवल ५हिम कर अधिकाई ॥
६हस्ती ७केहरि बैर बैर है दूध खटाई ।
भैंस घोड़ से बैर चोर पहरू से भाई ॥
पाप पुन्य से बैर अगिन और बैरी पानी ।
संतन यही बिचारि जगत की बात न मानी ॥
पलटू नाहक भूँकता, जोगी देखे ८स्वान ।
जगत भगत से बैर है, चारों जुग परमान ॥

(६)

जाके रथपर राम हैं, को करि सकै अकाज ॥
को करि सकै अकाज बार नहिं वाकौ बांकै ।
चक्र सुदर्सन छुटै कोऊ ९कुनजर से ताकै ॥
लोहू ढारैं राम सन्त कौ ढरै पसीना ।
का बालक प्रहलाद भया हरिनाकुस १०पीना ॥

१--हरा । २--सच्चा हुआ । ३--चूहे-बिल्ली का । ४--नेवले और साँप का । ५--पाला । ६--हाथी । ७--शेर । ८--कुत्ता । ९--बुरी नजर से । १०--शत्रु ।

करि १पंडौ की पैज २भरथ कौ दिया जिताई।
अम्बरीक के हेतु दुर्बासे नाच नचाई॥
पलटू मारियौ ग्राह कौ, हाँक दियौ गजराज।
जाके रथपर राम हैं, को करि सके अकाज॥

(७)

सतगुरु के परताप से, पकरा पाँचौं चोर॥
पकरा पाँचौं चोर नगर में ३अदल चलाया।
तिगुन दिया निकारि आनि कै भक्ति बसाया॥
लोभ मोह को पकरि ताहि की गरदन मारी॥
तृसना और हंकार पेट दियौ इनकौ फारी॥
दुर्मति दई निकारि सुमति का चाबुक दीन्हा।
चढ़े सिपाही सन्त ४अमल कायागढ़ कीन्हा॥
पलटू संजम मैं किया, परा मुलुक में सोर।
सतगुरु के परताप से पकरा पाँचौं चोर॥

(८)

का जानी केहि औसर, साहिब ताकै मोर॥
साहिब ताकै मोर मिहरकी नजरि निहारै।
तुरत परम-पद देइ औगुन नो नाहिं बिचारै॥
राम गरीब-निवाज गरीबन सदा निवाजा।
भक्त-बच्छल भगवान करत भक्तन के काजा॥
गाफिल नाहीं परै साच है लौ जब लावे।
परा रहै वहि द्वार धनी के धक्का खावे॥

१--महाभारतके युद्धमें श्रीकृष्णजी ने पांडवौं की लाज रखी। २--अर्जुन।
३--न्याय। ४--राज्य।

आठ पहर चौंसठ घड़ी, पलटू परे न १भोर ।
का जानी केहि औसर, साहिब ताकै मोर ॥

(६)

बनिया पूरा सोई है जो तौलै सत्-नाम ॥
जो तौलै सत्-नाम छिमा का टाट बिछावे ।
प्रेम तराजू करे बाट बिस्वास बनावे ॥
बिबेक की करे दुकान ज्ञानका लेना-देना ।
गादी है संतोष नाम का मारे टेना ॥
लादे २उलदै भजन बचन फिर मीठे बोले ।
कुँजी लावे सुरति सबद का ताला खोले ॥
पलटू जिसकी बनि परी, उसी से मेरा काम ।
बनिया पूरा सोई है, जो तौलै सत्-नाम ॥

रेखते

* नाम *

(१)

पीवता नाम सो जुगन जुग जीवता, नहिं वो मरे जो नाम पीवै ।
काल व्यापै नहीं अमर वह होयगा, आदि और अंत वह सदा जीवै
संत जन अमर हैं उसी हरिनाम से, उसी हरिनाम पर चित्त देवै ।
दास पलटू कहैं सुधा रस छोड़ि कै, भया अज्ञान तू छाछ लेवै ॥

(२)

राखु परवाह तू एक निज-नाम की, खलक मैदान में बाँध टाटी ।
मीर उमराव दिन चारि के पाहुना, छोड़ि घर माहिं दौलत्त हाथी ॥

१—चूक । २—सौदा ।

पकरि ले सबद जिन तोहि पैदा किया, और सब होइंगे खाक माटी ।
दास पलटू कहै देखु संसार गति, बिना निज नाम नहिं कोई साथी॥

* साध-सन्त *

(१)

धन्य हैं सन्त निज-धाम सुख छाड़ि कै, आन के काज को देह धारा।
ज्ञान समसेर लै पैठि संसार में, सकल संसार का मोह टारा ॥
प्रीति सबसे करैं मित्र और दुष्ट से, भली अरु बुरी दोऊ सीस धारा।
दास पलटू कहै राम नहिं जानहूँ, जानहूँ सन्त जिन जगत तारा॥

(२)

सन्त और राम को एक करि जानिये, दूसरा भेद न तनिक आनै ।
लाली ज्यों छिपी है मिहंदी के पात में, दूध में घीव यह ज्ञान ठानै ॥
फूल में बास ज्यों काठ में आग है, सन्त में राम यहि भांति जानै ।
दास पलटू कहैं सन्त में राम है, राम में सन्त यह सत्य मानै॥

(३)

संत दरबार तहसील संतोष की, कचहरी ज्ञान हरिनाम डंका ।
रिद्धि और सिद्धि दोउ हाथ बाँधे खड़ी बिवेक ने मारि के दिया धक्का ॥
मुक्ति सिर खोलि के करे फ़िरियाद को, दिया १दुदकार यह अदल बंका ।
मारि माया कहैं अमल ऐसा किया, दास पलटू अहै २हरीफ़ पक्का॥

* सत्संग *

(१)

बिना सतसंग ना कथा हरिनाम की, बिना हरिनाम ना मोह भागे ।

१—दुत्कार । २—दुशमन ।

मोह भागे बिना मुक्ति न मिलेगी, मुक्ति बिनु नाहिं अनुराग लागे ॥
बिना अनुराग से भक्ति ना मिलेगी, भक्ति बिनु प्रेम उर नाहिं जागे ।
प्रेम बिनु नाम ना नाम बिनु सन्त ना, पलटू सतसंग बरदान माँगे ॥

(२)

कौन तू सकस है चेत करु आपु को, कहाँ तू आइ के मन्न लाया ।
केतिक बेर तू गया ठगाय है, आपना भेद तू नाहिं पाया ॥
भटक यह मिटेगी काम तब होयगा, केतिक बेर तू भटकि आया ।
दास पलटू कहैं होयँ संसकार जब, बिना सतसंग ना छुटे माया ॥

(३)

गगन मैदान में ध्यान धूनी धरे,मनमें लखि गुरु का ज्ञान छाला ।
चन्द्र सिर तिलक है तत्त सुमिरन करे, जपे हरिनाम अवधूत बाला ॥
प्रेम भभूति बिबेक की फावड़ी, गूदरी खुसी अरु आड़ माला ।
दास पलटू कहैं सन्त की सरन में, लिखा नसीब को मेटि डाला ॥

* चेतावनी *

(१)

देंह और १गेह परिवार को देखिके, माया के जोर में फिरे फूला ।

१—घर ।

मारि तोहि लेहिंगे पड़ा चिल्लायेगा, बड़ा बेकूफ़ तू नाहिं भागा ॥
स्त्रिंगी ऋषि हूँ से तो मारि लिये, बचे ना कोऊ जो लाख त्यागा ।
दास पलटू कहैं बचैगा सोई जो, बैठि सतसंग दिन राति जागा ॥

* निन्दक *

संत की निन्दा १को करत जो देखिये ।
कान को मूँदि ले पाप लागै ॥
पाप के लगे से नरकमें जायगा ।
त्राहि कै त्राहि कै दूरि भागै ॥
मित्र जो होय तो दुष्ट सम जानिये ।
संतकी निन्दा सुनि दूरि त्यागै ॥
दास पलटू कहैं करै और सुनै जो ।
नरक के बीचमें भीख मांगै ॥

* मिश्रित *

(१)

काम और क्रोध को आगि बिनु जारिकै ।
महादल मोह मैदान टारा ॥
पाप और पुन्य के भरम को छोड़िकै ।
गगनके बीच इक जोति बारा ॥
जीव अमृत पिवै चुवै आकास से ।
जुक्ति से नाथिया नाग कारा ॥
दास पलटू कहैं संत सो अमर हैं ।
उलटि कै पकरि तिहुँ काल मारा ॥

१—कोई अथवा किसी को ।

(२)

सुन्यके सिखर पर अजब मँडप बना ।
मन और पवन मिलि करैं बासा ॥
एक से एक अनेक जंगल जहाँ ।
भँवर गुंजार इक भरैं स्वासा ॥
नाम सागर भरा झिलिमिलि मोती झरैं ।
चुनै कोई प्रेमरस हंस खासा ॥
दास पलटू परै जबै दिब-दृष्टि में ।
जरैं सब भर्म तब छुटै आसा ॥

॥ झूलने ॥

[गुरुदेव]

(१)

सतगुरु साहिब जब मिहर करी ।
तब ज्ञानका दीपक बारा है जी ॥
भर्म अंधेरा छूटि गया ।
दसहूँ दिसि भा उजियारा है जी ॥
रैन दिवस टूटै नाहीं ।
लागी ज्यों तेलकी धारा है जी ॥
पलटू कहैं मोहिं दीख परा ।
घट घट में ठाकुरद्वारा है जी ॥

(२)

१कटाच्छ कै हमरी २ओरि ताको ।
सतगुरु करौ दाया है जी ॥

१—कृपा की नजर फेरकर । २—तरफ़ ।

जड़ चेतन दोउ लागि रहे।
[1]जबर तेरी माया है जी॥
कुछ जोग-जुगत बतलाय दीजै।
जा से सोधौं मैं काया है जी॥
पलटू तुम दीनदयाल बड़े।
सतगुरु [2]सेतो सब पाया है जी॥

[सर्व-व्यापक]

हमने यह बात [3]तहकीक किया।
सबमें साहिब भरपूर है जी॥
अपनी समुझ कुआँ कै पानी।
क्या [4]नियरे क्या दूरि है जी॥
ग़ाफ़िल की ओर से सोइ गया।
चेतन को हाल हजूर है जी॥
पलटू इस बात को नहिं मानै।
तिसके मुँह में परै धूर है जी॥

[प्रेम]

(१)

लगन जिसी से लागि रही।
काज उसी से [5]सेरा है जी॥
सब लोक की लाज को तोरि डारे।
उसी के घर करो डेरा है जी॥
मेरे मन में कछु [6]डेर नाहीं।

१—ज़बरदस्त। २—द्वारा। ३—दृढ़ बिश्वास। ४—निकट। ५—सँवरा अथवा बना। ६—भय।

हँसैगा लोग बहुतेरा है जी।
पलटू घूँघट को खोलि डारौ।
समरथ सतगुरु का १चेरा है जी॥

[२]

साहिब के दास कहाय यारो, जगत की आस न राखिये जी।
समरथ स्वामी को जब पाया, जगत से दीन न भाखिये जी॥
साहिबके घरमें कौन कमी, किस बात को अतें आखिये जी।
पलटू जो दुख सुख लाख परै, वहि नाम सुधा-रस चाखिये जी॥

॥ मन ॥

मोटी माया तो सब तजै, २मैंहीं नहीं तजि जाति है जी।
ओही उनकी खोराक भई, ३मोटै रहै दिन-रात है जी।
पलटू जो मैंहीं माया तजै, वोही साहिब की जाति है जी॥

॥ उपदेश ॥

[१]

इलम पढ़ा पर अमल नहीं।
अमल बिनु इलम खाक है जी॥
इलम पढ़े और अमल करे।
उसके हम तो ४मुस्ताक हैं जी॥
बेहद्द कथे और हद्द रहे।
उसका तो मुँह ५नापाक है जी॥
पलटू ६गुफतन सोई ७दीदन।

१--शिष्य। २--सूक्ष्म माया। ३--जकड़े हुये है। ४--तलबगार। ५--अपवित्र। ६--कहना। ७--देखना।

वह तो १मारफ़त की २नाक है जी ॥

(२)

पहिले ३फ़ना - फ़िल-सेख होवे ।
४कदम ५मुरसिद को पाइ के जी ॥
तब ६ फ़ना फ़िल्लाह होवे ।
मारफ़त मकान ठहराइ के जी ॥
मुरसिद ७ मुरीद पर मिहर करे ।
८ लाहूत को देइ पहुँचाइ के जी ॥
पलटू हूहू आवाज आवे ।
रूह खास दीदन उहाँ जाइ के जी ॥

(३)

मेरी मेरी तू क्या करै ।
मेरी महैं अकाज है जी ॥
साहिब सब काम सँभारि लेवैं ।
मेरी से आवैं ९बाज है जी ॥
जिसका तू दास कहावता है ।
तिसको इस बातकी लाज है जी ॥
पलटू तू मेरी छोड़ि देवै ।
तीनि लोक तेरा राज है जी ॥

(४)

१०हवा कहैं खामोस करै ।

१--रूहानियत । २--लाज । ३--गुरु पर कुर्बान ४--चरण ५--सतगुरु ६--मालिकपर कुर्बान । ७--शिष्य । ८--सत्-लोक । ९--बाज आना । १०--हवा (प्राण-वायु) को खामोश करे अर्थात् रोक रक्खे ।

नाक आँख कान मुख मूंदि भाई ॥
तब नूर १तजल्ली दीद करै ।
आसमान की खिरकी खोलि २नाई ॥
खिरकी की राह निकरि जावै ।
सुनै हक हक्क आवाज पाई ॥
पलटू ३दीगर को ४नेस्त करै ।
होय खुद ५अहद इस भांति जाई ॥

* दीनता *

(१)

साहिब मोर कछु एक नाहीं ।
जो है सो सब कुछ ६तोर है जी ॥
मुझको इस बात की नाहीं खबर ।
आगे परा मुझे ७भोर है जी ॥
इस ८हमता ९ममता के कारन ।
तुमसे भये हम चोर हैं जी ॥
पलटू अब मुझको चेत परा ।
तेरा नहिं कहै मन मोर है जी ॥

(२)

जाय संत-सेवा में लागि रहै ।
यही धर्म १०जिग्यास है जी ॥
तन मन सेती जब नाहिं टरै ।

१—प्रकाश । २—डाली । ३—और सब कुछ (दुविधा) । ४—नष्ट । ५—एक । ६—तेरा । ७—भूल (भ्रम) । ८—अहंकार । ९—मैं-पना । १०—जिज्ञासु का धर्म ।

करै चरन में बास है जी ॥
दीन-दयाल हैं संत बड़े ।
जो १पुजावैं मनकी आस है जी ॥
पलटू जो सन्त उपदेस करैं ।
सोई कीजै बिस्वास है जी ॥

* भेद *

उठै झनकार गगनके बीच में ।
लगा दिन-राति इक रंग है जी ॥
टूट तहँ लगी है सुरति और निरति की ।
तान गावैं सबद सोहंग है जी ॥
सहज के खेलमें जोति हीरा बरै ।
नहीं कोई दूसरा संग है जी ॥
पलटू महल अठएँ ऊपर गई ।
२हवास देखि के दंग है जी ॥

* निन्दक *

संतकी ३निंद न कीजिये जी ।
संतनकी निंद में नाहिं भला ॥
चौरासी भोग वह भोगि आया ।
चौरासो भोगन फेरि चला ॥
संतन को कछु परवाह नहीं ।
अपने पाप सेती वह आप जला ॥
पलटू उसका जो मुंह देखै ।

१—पूर्ण करते हैं । २—उस प्रकाश-पुंज को देखकर बुद्धि आश्चर्यमें डूब जाती है ३—निन्दा ।

तिसका भी मुहँ फिर होय कॅला ॥

*** मिश्रित ***

(१)

१चला-चली की राह महैं।
भली भला कुछ कीजिये जी ॥
आखिर को मरना ठीक हुआ।
दुख नाहिं किसी को दीजिये जी ॥
जिसमें २पर-स्वारथ होय सकै।
उस ज्ञानको ३घोरिकै पीजिये जी ॥
पलटू ४कारिख को धोय डारैं।
चंदनका टीका लीजिये जी ॥

(२)

पूरब पुन्न भये परगट।
सतसंगति के बीच परी ॥
आनंद भये संत मिले।
वही सुभ दिन वहि सुभ घरी ॥
दरसन करत त्रय-ताप मिटे।
बिन कौड़ी दाम मैं जाय तरी ॥
पलटू आवागवन छूटा।
जब चरनन की रज सीस धरी ॥

१—संसारकी चार दिनों की जिन्दगी को चला-चली की राह कहा है।
२—परोपकार। ३—घोलकर। ४—काले--दाग़।

॥ अरिल ॥

* साध-सन्त *

(१)

संत भये बादसाह गैब के तखत पर ।
छत्र फिरै हरिनाम किया तिहुँ लोक १सर ॥
२धुजा फरक्कै सुन्न ३अदल भी बड़ी है ।
पलटू ४नौबत आठों पहर गगन में ५झरी है ॥

(२)

जीवन है दिन चार भजन कर लीजिये ।
तन मन धन सब वारि संत पर दीजिये ॥
संतहिं से सब होय जो चाहैं सो करैं ।
पलटू संग लगे भगवान संत से वे ६डेरैं ॥

(३)

ऋद्धि सिद्धि से बैर सन्त ७दुरियावते ।
इन्द्रासन बैकुंठ बिष्ठा सम जानते ॥
करते अबिरल भक्ति प्यास हरिनाम की ।
पलटू सन्त न चाहैं मुक्ति तुच्छ केहिं काम की ॥

(४)

जिन्ह के ज्ञान बैराग भक्ति में प्रीति है ।
रहनी कहनी एक हारि न जीति है ॥
सन्तोषी निरवृत्ति भजनपर सिर दिया ।
पलटू सबद बिबेकी संत आतमा बसि किया ॥

१–फ़तह । २–झंडा । ३–इनसाफ़ । ४—नक्कारा । ५–बजी है । ६—डरते हैं । ७–दूर रहते हैं ।

(५)

सन्त का मैं सन्त मोर अन्तर तनिक है।
सन्त बिना मैं जैसे फनि बिनु मनि कहै॥
लच्छमी मोर सरीर सो दासी सन्त की।
पलटू हरि ऊधौ से कहैं बात यह तन्त की॥

(६)

तिल को तेल बसाय फूल के संग में।
१सलिता गंगा होत परै जब गंग में॥
लोहा कंचन होय पारस के २परस से।
पलटू मूरख कथते ज्ञान सन्त के दरस से॥

(७)

हरि जन हरि हैं एक सबद के सार में।
जो चाहैं सो करैं सन्त दरबार में॥
तुरत मिलावैं नाम एक ही बात में।
पलटू लाली मेंहदी बीच छिपी है पात में॥

* बैराग *

३तुरी अठारह लाख अमीरी बलख की।
दिया ४मर्द ने छोड़ आस सब खलक की॥
चिथरा पहिरि लंगोटी ५साका कै गया।
पलटू रहा अखाड़े का यार फ़कीरी लै गया॥

* चेतावनी *

माया ठगिनी बड़ी ठगे यह जाति है।

१--नदी। २--छू जाने से। ३--घोड़े। ४--सूरमा ने (बलख-बुखारेके बादशाह इब्राहीमशाह की बात कही जा रही है, जो राज्य त्यागकर फ़कीर हुये हैं) ५--अपनी साख कर गया (अर्थात् जगत में अपना नाम प्रसिद्ध कर गया)।

बचे न इह से कोय लगी दिन–राति है ॥
कौड़ी नाहीं संग करोरिन जोरि कै ।
पलटू गये राजा रंक फकीर लंगोटा छोरि कै ॥

* भक्ति *

जो तुझको है चाह सज्जन को देखना ।
करम भरम दे छोड़ि जगत का पेखना ॥
बाँध सुरति का डोरि सबद में [1]पिलैगा ।
पलटू ज्ञान ध्यान के पार ठिकाना मिलैगा ॥

* सूरमा *

(१)

राम के घर की बात कसौटी खरी है ।
झूठा टिकै न कोय आजु की घरी है ॥
जियतै जो मरि जाय सीस लै हाथ में ।
पलटू ऐसा मर्द जो होय परै यहि बात में ॥

(२)

सिंह जो भूखा रहै चरै ना घास को ।
हंस पिवै ना नीर करै उपवास को ॥
सती एक और सूर पाँच हैं काम के ।
पलटू सन्त न माँगैं भीख भरोसे राम के ॥

(३)

दीन्हा संतन डारि राम पर भार है ।
सन्तन के रे हेतु दसों अवतार है ॥
ताज के हरि बैकुंठ रहत हैं साथमें ।

१–जो कोई लीन हो रहैगा ।

पलटू सन्तन के रखवार सुदरसन हाथमें ॥

* उपदेश *

(१)

धरौ फूंकि के पाँव कुसंग ना कीजिये ।
भजन महैं भंग होय सोच ना लीजिये ॥
कोऊ ना पकरै फेर कर जो त्याग है ।
पलटू माया संग्रह कर भक्ति में दाग है ॥

(२)

हरिचरचा से बैर संग वह त्यागिये ।
अपनी बुद्धि १ नसाय सबेरे भागिये ॥
सरबस वह जो देइ तो नाहीं काम का ।
पलटू मित्र नहीं वह दुष्ट जो द्रोही राम का ॥

(३)

केतिक जुग गये बीत माला के फेरते ।
छाला परि गये जीभ राम के टेरते ॥
माला दीजै डारि मनै को फेरना ।
पलटू मुँह के कहे न मिलै दिलै बिच हेरना ॥

(४)

सुपना यह संसार लागता आइ कै ।
चले जुवा में हारि मनुष तन पाइ कै ॥
देखत सोना लगै सकल जग काँच है ।
पलटू जीवन कहिये झूठ तो मरना साँच है ॥

१—नष्ट होती है ।

(५)

चलती चक्की देखि दिया मैं रोय है ।
पीस गया संसार बचा ना कोय है ।।
अधबीचे में परा कोऊ ना [1]निरबहा ।
पलटू बचिगा कोऊ संत जो खूंटे लगि रहा ।।

(६)

तीरथ सन्त-समाज आतमा गंग है ।
तट है सील सनेह अरु दया तरंग है ।।
निरमल नीर गँभीर ज्ञान धारा बहै ।
पलटू गुरु दरियाव नहाय तो दुरमति ना रहै ।।

* भेद *

(१)

दृष्टि कमठ का ध्यान गगन में लावना ।
मकरी उलटै तार तेहि भांति चढ़ावना ।।
झिलिमिलि झलकै नूर तिरकुटी महल में ।
पलटू भया हमारा काम सन्तकी टहल में ।।

(२)

अरध उरध के बीच बसा इक सहर है ।
बीच सहर में बाग बाग में लहर है ।।
मध्य अकास में छुटै फुहारा पवन का ।
पलटू अंदर धंसिकै देखु तमासा भवन का ।।

१—नहीं बच सका ।

(३)

सुन्न समाधि के बीच ध्यान को लावना ।
सुखमनि के रे घाट पवन ले आवना ॥
टूटै ना वह डोरि बाट आरूढ़ है ।
पलटू ऐसे को परनाम अवस्था गूढ़ है ॥

(४)

जगमग जोति जगाव झिरिहिरी बीच में ।
कमठ दृष्टि से मारि गिरौ जनि कीच में ॥
सोहं सोहं सबद रैनि दिन बोलता ।
पलटू जब देखो गरकाब पलक नहिं खोलता ॥

(५)

बिना जंतरी जंत्र बाजता गगन में ।
बिसरि गया संसार उसी की लगन में ॥
जो कोई जनमी होय हमारे लगन की ।
पलटू सो प्यारी लै जानि बात यह सजन की ॥

(६)

गाड़ि ज्ञान को बाँस सुरति की डोर है ।
चढ़ा खिलाड़ी धाय जगत में सोर है ॥
अमर-लोक के बीच हरा इक दूब है ।
पलटू हद्द अनहद्द के पार तमासा खूब है ॥

॥ दया ॥

माता बालक कहैं राखती प्रान है ।
फनि मनि धरै उतारि ओही पर ध्यान है ॥
माली रच्छा करै सींचता पेड़ ज्यों ।

पलटू भक्त संग भगवान गऊ और बच्छ त्यों ॥

(२)

साहिब के दरबार कमी किस बात की।
चूक चाकरी माहिं परी दिन रात की ॥
जल थल जीव चराचर की सुधि लेत है।
पलटू [1]कुसवारो में कीटहिं चारा देत है ॥

॥ मिश्रित ॥

(१)

भंग भजन में करै दुष्ट यह पेट है।
बिना भजन भगवान से नाहीं भेंट है ॥
सतसंगति जब करै भूख तब मिटैगी।
पलटू यहि का यही इलाज फिकिर सब फटैगी ॥

(२)

खाला कै घर नाहिं भक्ति है नाम की।
दाल भात है नाहिं खाये के काम की ॥
साहिब का घर दूर सहज ना जानिये।
पलटू गिरे तो चकनाचूर बचन को मानिये ॥

* शब्द *

पड़ा रहु सन्त के द्वारे, बनत बनत बनि जाय ॥टेक॥
तन मन धन सब अरपन करिके, धक्के धनी के खाय ॥१॥
स्वान बिर्त आवै सोई पावै, रहै चरन लौ लाय ॥२॥
मुरदा होय टरै नहिं टारे, लाख कहो समुझाय ॥३॥
पलटूदास काम बनि जावै, इतने पर ठहराय ॥४॥

१—रेशमके कीड़ेका घर।

श्री दादूदयाल साहब जी

* घट-मठ *

(१)

भाई रे घर ही में घर पाया।
सहजि समाइ रह्या ता माहीं, सतगुरु खोज बताया ॥टेक॥
ता घर १काज सबै फिरि आया, आपै आप लखाया।
खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ॥१॥
भय और भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया।
२प्यंड परै जहाँ जिव जावै, ता में सहज समाया ॥२॥
निहचल सदा चलै नहिं कबहूँ, देख्या सबमें सोई।
ताही सूँ मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ॥३॥
आदि अन्त सोई घर पाया, ३इब मन ४अनत न जाई।
दादू एक रंगे रंग लागा, तामें रह्या समाई ॥४॥

(२)

आप आपण में खोजौ रे भाई, बस्तु अगोचर गुरू लखाई ।टेक।
ज्यों ५मही बिलोयें माखण आवै, त्यों मन मथियाँ ते तत्त पावै ।१।
काठ ६हुतासन रह्या समाई, त्यों मन माहिं निरंजनराई ॥२॥
ज्यों ७अवनी में ८नीर समाना, त्यों मन माहैं साच सयाना ॥३॥
ज्यों दर्पन के नहिं लागै काई, त्यों मूरति माहैं निरखि लखाई ।४।
सहजैं मन मथियाँ तें तत्त पाया, दादू उन तौ आप लगाया ॥५॥

१—के लिये। २—शरीर छूटनेपर जहाँ जीवको जाना होता है। ३—अब। ४—और कहीं भी। ५—दही। ६—अग्नि। ७—पृथ्वी। ८—जल।

* उपदेश *

(१)

जियरा मेरे सुमिर सार, काम क्रोध मद तजि बिकार ॥टेक॥
तू जिनि भूले मन गँवार, सिर भार न लीजै मानि हार ॥१॥
सुणि समझायौ बार बार, अजहुँ न चेतै हो हुसियार ॥२॥
करि तैसें भव तरिये पार, दादू १इब थैं यहि बिचार ॥३॥

(२)

बटाऊ रे चलना आज कि काल ।
समझ न देखै कहा सुख सोवै, रे मन राम सँभाल ॥१॥
जैसें तरवर बिरख बसेरा, पंखी बैठे आइ ।
ऐसें यह सब हाट पसारा, आप आपकूँ जाइ ॥२॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती, मति खोवै मन मूल ।
यह संसार देख मत भूलै, सबही २सेंवल फूल ॥३॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा, कहा रह्यो ३इहिं लागि ।
दादू हरि बिनु क्यों सुख सोवै, काहे न देखै जागि ॥४॥

(३)

मन मुरिखा तैं यौंहीं जन्म गँवायौ ।
साईं केरी सेवा न कीन्हीं, इहि कलि काहे कूँ आयौ ॥१॥
जिन बातन तेरौ छूटिक नाहीं, सोई मन तेरौ भयौ ।
कामी ह्वै विषया संग लाग्यौ, रोम रोम लपटायौ ॥२॥
कुछ इक चेत बिचारी देखौ, कहा पाप जिय लायौ ।
दादूदास भजन करि लीजै, सुपने जग ४डहकायौ ॥३॥

१--अभी से । २--जिस प्रकार सेमरके फूल फीके और थोथे होते हैं । ३--इन से । ४--भरमाया है ।

श्री तुलसी साहब जी

(हाथरस वाले)

[विनय]

॥ कुण्डलिया ॥

बार बार बिनती करूँ, सतगुरु चरन निवास ॥
सतगुरु चरन निवास बास मोहिं दीन्ह लखाई ।
नित नित करूँ बिलास पास घर अपने आई ॥
मैं अति पत-मत-हीन दीन देखा मोहिं साईं ।
लीन्हा अंग लगाय कहूँ अस कौन बड़ाई ॥
तुलसी मैं अति हीन हूँ, दीन्हा अगम [१]अवास ।
बार बार बिनती करूँ, सतगुरु चरन निवास ॥

[चेतावनी]

[१] ॥ कुण्डलिया ॥

जग जग कहते जुग भये, जगा न एको बार ॥
जगा न एको बार सार कहो कैसे पावै ।
सोवत जुग जुग भये, संत बिन कौन जगावै ॥
पड़े भरम के माहिं बंद से कौन छुड़ावै ।
जो कोई कहै बिबेक ताहि की नेक न भावै ॥
तुलसी पंडित भेष से, सब भूला संसार ।
जग जग कहते जुग भये, जगा न एको बार ॥

१--स्थान या ठिकाना ।

[२] * शब्द *

क्या सोवत गाफिल चेत, सिर पर काल खड़ा ॥ टेक ॥
जोर जुलम की रीति बिचारी, करि माया से हेत ।
जम की-जबर खबर नहिं जानी, बाँधि नरक दुख देत ॥१॥
बिनसै बदन अगिन बिच जारैं, खीर खाँड रस लेत ।
फिरि फिरि काल कमान चढ़ावै, मार लेत १खुल खेत ॥२॥
२बिषै रस रंग संग बहु कीन्हा, करि करि बैस ३बितेत ।
बृद्ध बनाय बूढ़ तन भइया, कारे केस सपेद ॥३॥
सुत दारा आदर अलसाने, बुढ़वा मरै परेत ।
छलबल माया करि गई रे, या दुनिया के हेत ॥४॥
४मनी मान से धनी न चीन्हा, चिड़ियाँ चुगि गई खेत ।
तुलसी चरन सरन सतगुरु बिन, ५ग्रासत रबि जस केत ॥५॥

[३] * अरिल *

संत-मता है सार और सब जाल पसारा ।
परमहंस जग भेष बहे सब मनकी-६लारा ॥
संत बिना नहिं घाट बाट एको नहिं पावै ।
तुलसी भटकि भटकि भ्रम खान संत बिन भव में आवै ॥

[४] * अरिल *

भव-जल अगम अथाह थाह नहिं मिलै ठिकाना ।
सतगुरु केवट मिलै पार घर अपना जाना ॥
जग रचना जंजाल जीव माया ने घेरा ।

१–खुले मैदान में । २–विषयोंके रस में । ३–बीत गई । ४–मनकी मति में लगकर । ५–जिस प्रकार सूर्यको केतु (अर्थात् सूर्य-ग्रहण) ग्रास लेता है, उसी प्रकार काल जीवको ग्रासैगा । ६–मनके आधीन होकर ।

तुलसी लोभ मोह बस परे करैं चौरासी फेरा ॥

[५] * अरिल *

इन्द्री-रस सुख स्वाद १बाद ले जन्म बिगारा ।
जिभ्या-रस बज काज पेट भया बिष्ठा सारा ॥
टुक जीवन के काज लाज नहिं मन में आवै ।
तुलसी काल खड़ा सिर ऊपर घड़ी घड़ियाल बजावै ॥

श्री सुंदरदास जी

॥ कबित्त ॥

* गुरुदेव *

गुरु बिन ज्ञान नहिं, गुरु बिन ध्यान नहिं;
गुरु बिन आतम बिचार न लहतु है ।
गुरु बिन प्रेम नहिं, गुरु बिन नेम नहिं;
गुरु बिन सीलहु संतोष न गहतु है ॥
गुरु बिन प्यास नहिं, बुद्धि को प्रकास नहिं;
भ्रमहूँ को नास नहिं, संसेई रहतु है ।
गुरु बिन बाट नहिं, कौड़ी बिन हाट नहिं;
सुन्दर प्रगट लोक बेद यों कहतु है ॥

(२)

गोबिंद के किये जीब, जात हैं रसातल को;
गुरु उपदेसे से तो, छूटैं जम फन्द तें ।
गोबिंद के किये जीव, बस परे कर्मन के;

१—व्यर्थ

गुरु के निवाजे से, फिरत हैं स्वच्छंद तें॥
गोबिंद के किये जीव, बूड़त भवसागर में;
सुन्दर कहत गुरु, काढ़ैं दुःख दुन्द तें।
औरहूँ कहाँ लौं कछू, मुख ते कहूँ बनाय;
गुरु की तो महिमा, अधिक है गोविन्द तें॥

(३)

लोह को ज्यौं पारस, पखान हूँ पलटि लेत;
कंचन छुवत होत, जग में प्रमानिये।
द्रुम को ज्यौं चन्दनहूँ, पलटि लगाई बास;
आप के समान ता के, सीतलता आनिये॥
कीट को ज्यौं भृंगहूँ, पलटि के करत भृंग;
सोऊ उड़ि जाई ताको, अचरज न मानिये।
सुन्दर कहत यह, सगरे प्रसिद्ध बात;
सद्य शिष्य पलटै सु, सत्यगुरु जानिये॥

* चेतावनी *

(१)

बार बार कह्यो तोहिं, सावधान क्यों न होइ;
ममता की १पोट सिर, काहे को धरतु है।
मेरो धन मेरो धाम, मेरे सुत मेरी २बाम;
मेरे पसु मेरे ग्राम, भूल्यो ही फिरतु है॥
तु तो भयो बावरो, बिकाय गई बुद्धि तेरी;
ऐसो अन्धकूप गेह, ता में तु परतु है।
सुन्दर कहत तोहिं, नेकहूँ न आवै लाज;

१--पोटली अथवा गठड़ी। २--स्त्री।

काज को बिगार के, अकाज क्यों करतु है ॥

(२)

पायो है मनुष्य देह, औसर बन्यो है येह ;
ऐसी देह बार बार, कहो कहाँ पाईये ।
भूलत है बाँवरे तू, अब के सयानो होइ ;
रतन अमोल सो तो, काहे कूँ ठगाईये ॥
समुझि बिचार करि, ठगन को संग त्यागि ;
ठगबाज़ी देख करि, मन ना डुलाईये ।
सुन्दर कहत तातें, १सावधान क्यों न होइ ;
हरि को भजन करि, हरि में समाईये ॥

* प्रेम *

जल को सनेही मीन, बिछुरत तजे प्रान ;
मणि बिनु २अहि जैसे, जीवत न ३लहिये ।
स्वांति बुंद को सनेही, प्रगट जगत माहिं ;
एक सीप दूसरो सु, चातक हू कहिये ॥
रवि को सनेही पुनि, कमल सरोवर में ;
४ससि को सनेही हू, चकोर जैसे रहिये ॥
तैसेही सुन्दर एक, प्रभु सों सनेह जोरि ;
और कछु देखि, काहू ओर नहिं बहिये ॥

॥ सवैये ॥

* गुरुदेव *

सो गुरुदेव ५लिपै न छिपै कछु, सत्त्व रजो तम ताप निवारी ।

१--चैतन्य । २—सर्प । ३–पाया जाता है । ४--चन्द्रमा । ५--लिपायमान् ।

इन्द्रिय देह १मृषा करि जानत, सीतलता समता उर धारी ॥
ब्यापक ब्रह्म बिचार अखंडित, द्वैत उपाधि सबै जिन टारी ।
सब्द सुनाय २सन्देह मिटावत, सुन्दर वा गुरु की बलिहारी ॥

* चेतावनी *

(१)

संत सदा उपदेश बतावत, केस सबै सिर ३स्वेत भये हैं ।
तू ममता अजहूँ नहिं छाँडत, ४मौतहु आय संदेस दिये हैं ॥
आज कि काल्ह चलै उठि मूरख, तेरे तो देखत केते गये हैं ।
सुन्दर क्यों नहिं राम सँभारत, या जगमें कहो कौन रहे हैं ॥

(२)

तू कछु और बिचारत है नर, तेरो बिचार धरियो ही रहैगो ।
कोटि उपाय करे धन के हित, भाग्य लिख्यौ तितनों हि लहैगो ॥
भोर कि साँझ घरी पल माँझ, सो काल अचानक आइ परैगो ।
राम भज्यौ न कियौ कछु सुकृत, सुन्दर यौं पछिताई कहैगो ॥

* तृष्णा *

(१)

तीनहुँ लोक अहार कियो सब, सात समुद्र पियो पुनि पानी ।
और जहाँ तहाँ ताकत डोलत, काढ़त आँख डरावत प्रानी ॥
दाँत दिखावत जीभ हिलावत, याहि तें मैं यह ५डाकिनि जानी ।
सुन्दर खात भये कितने दिन, है तृसना अजहूँ न ६अघानी ॥

(२)

जो दस बीस पचास भये ७सत, होइ हजार तु लाख मँगैगी ।
कोटि अरब खरब ८असंख्य, ९पृथ्वीपति होन की चाह जगैगी ॥

१--मिथ्या । २--संशय । ३--सफेद । ४--मौत ने भी । ५-- डायन । ६--तृप्त नहीं हुई । ७--सौ । ८--बे-शुमार । ९--राना ।

स्वर्ग पताल को राज करौं, तृष्णा १अधिकी अति आग लगैगी।
सुन्दर एक संतोष बिना २सठ, तेरी तौ भूख ३कधी न भगैगी॥

* अज्ञान *

(१)

आप न देखत है अपनो मुख, दर्पण ४काट लग्यो अति थूला।
ज्यौं ५दृग देखत तें रहि जात, भयो जबहीं ६पुतरी परि फूला॥
छाय अज्ञान रह्यो ७अभ्यंतर, जानि सकै नहिं आतम भूला।
सुन्दर यों उपजे मनके मल, ज्ञान बिना निज-रूपहिं भूला॥

(२)

जो कोउ कष्ट करै बहु भांतिनि, जात अज्ञान नहीं मन केरो।
ज्यौं तम पूरि रह्यो घर भीतर, कैसहु दूर न होय अंधेरो॥
लाठिनि मारिये ठेलि निकारिये, और उपाय करे बहुतेरो।
सुन्दर सूर प्रकास भयो तब, तौ कितहूँ नहिं देखियै नेरो॥

श्री चरनदास जी

[गुरुदेव]

(१)

गुरु बिन और न जान, मान मेरो कहो।
चरनदास उपदेस, बिचारत ही रहो॥१॥

१--बढ़ गई। २--रे मूढ़! ३-- कभी। ४--जंग (अर्थात् मन रूपी दर्पण पर मलिनता का जंग मोटा चढ़ चुका है। ५--नेत्र। ६--ऊपर। ७--हृदय में।

१कल्पबृच्छ गुरूदेव, मनोरथ सब २सरैं ।
३कामधेनु गुरूदेव, ४छुधा तृस्ना हरैं ॥२॥
गुरु ही सेस महेस, तोहि चेतन करैं ।
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु, होय खाली भरैं ॥३॥
गंगा सम गुरु होय, पाप सब धोवहीं ।
सूरज सम गुरु होय, ५तिमिर हरि लेवहीं ॥४॥
गुरु ही को करु ध्यान, नाम गुरु को जपौ ।
आपा दीजै भेंट, पुजन गुरु ही ६थपौ ॥५॥
सम्रथ श्रीगुरुदेव, कहा महिमा करौं ।
अस्तुति कही न जाय, सीस चरनन धरौं ॥६॥

(२)

मेरे सतगुरु खेलत नित बसंत, जाकी महिमा गावत साध. सन्त १
ज्ञान बिबेक के फूले फूल, जहँ साखा अरु भक्ति मूल ॥२॥
प्रेम लता जहँ रही भूल, सतसंगत सागर के कूल ॥३॥
जहँ भर्म उड़त है ज्यों गुलाल, अरु चोवा चरचै निस्चे बाल ।४।
जहँ सील छिमा को बरसै रंग, काम क्रोध को मान भंग ॥५॥
हरिचरचा जित है अनन्त, सुनि मुक्ति होत सब जीव जन्त ॥६॥
आन धर्म सब जाहिं खोय, राम-नाम की जय जय होय ॥७॥
जहँ अपने पिय कूँ ढूँढि लेव, अरु चरनकँवल में सुरति देव ।८।
कहै चरनदास दुख दुंद जाहिं, जब प्रीतम गुरुदेव गहैं बांहि ।९।

१—देवलोक का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी छाया में बैठने से मन-माँगी मुराद मिलती है । २—सब मनोरथ सँवर जावेंगे । ३—देवलोक की गऊ का नाम जो मुहँ-माँगे फल देती है । ४—तृष्णा रूपी भूख । ५—अन्धकार । ६—इष्टदेव मानौ ।

* चेतावनी *

(१)

अरे नर हरि का १हेत न जाना ।
२उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कछु औरै ठाना ॥१॥
गर्भ माहिं जिन रच्छा कीन्हीं, ह्वाँ खाने को दीन्हा ।
जठर-अगिन सों राखि लियो है, अंग संपूरन कीन्हा ॥२॥
बाहर आय बहुत सुधि लीन्ही, ३दसन बिना ४पय प्यायौ ।
दाँत भये भोजन बहु-भांती, हित सों तोहि खिलायौ ॥३॥
और दिये सुख नाना बिधि के, समुझि देखु मन माहीं ।
भूलो फिरत महा गर्बायो, तू कछु जानत नाहीं ॥४॥
तुव कारन सब कछु प्रभु कीन्हो, तू कीन्हा निज-काजा ।
जग-ब्योहार ५पगो ही डोलै, तोहि न आवै लाजा ॥५॥
अजहूँ चेत उलट हरि सौं ही, जन्म सुफल करु भाई ।
चरनदास सुकदेव कहैं यौं, सुमिरन है सुखदाई ॥६॥

(२)

अपना हरि बिन और न कोई ।
मातु पिता सुत बंधु कुटुंब सब, स्वारथ ही के होई ॥१॥
या काया कूँ भोग बहुत दै, ६मरदन करि करि धोई ।
सो भी छूटत नेक तनिक सी, संग न चाली ७वोई ॥२॥
घर की नारि बहुत ही प्यारी, तिन में नाहीं ८दोई ।
जीवत कहती साथ चलूँगी, डरपन लागी सोई ॥३॥

१--प्यार । २--पैदा किया । ३--दाँत । ४--दूध । ५--फँसा हुआ ।
६--मल-मलकर । ७--सो भी । ८--उन दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं है अर्थात् एक प्राण दो शरीर बने रहते हैं ।

जो कहिये यह १द्रव्य आपनो, जिन उज्जल मति खोई ।
आवत कष्ट रखत रखवारी, चलत प्रान ले जोई ॥४॥
या जग में कोई २हितू न दीखै, मैं समझाऊँ तोई ।
चरनदास सुकदेव कहैं यौं, सुनि लीजै नर लोई ॥५॥

श्री धरनीदास जी

* विनय *

प्रभुजी अब जिनि मोहिं बिसारो ।
असरन-सरन अधम-जन-तारन, जुग जुग बिरद तिहारो ॥१॥
जहँ जहँ जनम करम-बसि पायो, तहँ अरुझे रस खारो ।
पाँचहु के परपंच भुलानो, धरेउ न ध्यान अधारो ॥२॥
अंध गर्भ दस मास निरन्तर, नख-सिख सुरति सँवारो ।
३मज्जा मुत्र अग्नि ४कल ५कृम जहँ, सहजै तहँ प्रतिपारो ॥३॥
दीजै दरस दयाल दया करि, गुन-ऐगुन न बिचारो ।
धरनी ६भजि आयो सरनागति, तजि लज्जा कुल ७गारो ॥४॥

* भक्तजन *

हरि जन हरि के हाथ बिकाने ।
भावै कहो जग धृग जीवन है, भावै कहो बौराने ॥१॥
जाति गँवाये अजाति कहाये, साधु संगति ठहराने ।
मेटो दुख दारिद्र ८परानो, जूठन खाय अघाने ॥२॥

१—धन । २भलाई चाहने वाला । ३--हड्डी का गूदा । ४—मैल । ५—कीड़े । ६—भागकर । ७—गँवा दिया । ८--भाग गया ।

पाँच जने परबल परपंची, १खलटि परे २बंदिखाने ।
छूटी ३मजूरी भये ४हजूरी, साहिब के मन भाने ॥३॥
निरममता निरबैर सभन तें, निरसंका निरबाने ।
धरनी काम राम अपने तें, चरनकमल लपटाने ॥४॥

* उपदेश *

(१)

मन बसि लेहु अगम अटारी ॥टेक॥
नव नारिन को द्वारा निरखो, सहज सुखमना नारी ॥१॥
अजब अवाज नगारा बाजत, गगन गरजि धुनि भारी ॥२॥
तहँ बरे बाती दिवस न राती, अलख पुरुस मठधारी ॥३॥
धरनी कै मन कहा न मानै, तबहिं हनो है कटारी ॥४॥

(२)

हित करि हरि नामहिं लागि रे ।
घरी घरी घरियाल पुकारै, का सोवै उठि जाग रे ॥१॥
चोआ चंदन चुपड़ तेलना, और अलबेली पाग रे ।
सो तन जरे खड़े जग देखा, गूद निकारत काग रे ॥२॥
मात-पिता परिवार सुता-सुत, बंधु त्रिया रस त्याग रे ।
साधु के संगति सुमिर सुचित होइ, जो सिर मोटे भाग रे ॥३॥
सम्बत जरै बरै नहिं जबलगि, तबलगि खेलहु फाग रे ।
धरनीदास तासु बलिहारी, जहँ उपजै अनुराग रे ॥४॥

(३)

अजहुँ मन सब्द प्रतीति न आई ॥टेक॥

१--जकड़कर । २--जेलखाना । ३--जगत और माया की गुलामी । ४--मालिक के सम्मुख ।

चंचल चपल चहूँदिसि डोलै, तजत नाहिं चतुराई ॥१॥
सब्द तें १सुकमुनि सारद नारद, गोरख की २गरु आई ॥२॥
सब्द प्रतीत कबीर नामदेव, जागत जगत दोहाई ॥३॥
सदन धन्ना रैदास चतुरभुज, नानक मीराबाई ॥४॥
संत अनंत प्रतीति सब्द की, प्रगट परमगति पाई ॥५॥
धरनी जो जन सब्द सनेही, मोहिं बरनी नहिं जाई ॥६॥

(४)

जगमें सोई ३जीवनि जिया ।
जाके उर अनुराग उपज्यौ, प्रेम प्याला पिया ॥१॥
कमल उलटो भर्म छूटो, अजप जप जपिया ।
जनु अँधारे भवन भीतर, बारि राखो दिया ॥२॥
काम क्रोध समोधियो जिन्ह, घरहि में घर किया ।
माया के परिपंच जेते, सकल जानो ४छिया ॥३॥
बहुत दिन को बहुत अरुझो, सहजहीं सरुझिया ।
दास धरनी तासु बलि बलि, भूंजियो जिन्ह बिया ॥४॥

॥ कबित्त ॥

* उपदेश *

(१)

जीवकी दया जेहि, जीव व्यापै नहीं ;
भूखे न अहार, प्यासे न पानी ।
साधु से संग नहिं, सब्द से रंग नहिं;
बोलि जानै न मुख, मधुर बानी ॥

१-शुकदेव मुनि जी । २--बड़ाई । ३-शोभा-युक्त जीवन । ४-राख ।

एक जगदीस को, सीस अरपै नहीं ;
पाँच पच्चीस बहु, बात ठानी ।
राम को नाम निज, धाम बिसराम नहिं ;
धरनी कहै धरनी मों, धृग सो प्रानी ॥

(२)

जीवन थोर, बचा भो [१]भोर ;
कहा धन जोरि, करोर बढ़ाये ।
जीव-दया करु, साधुकी संगति ;
पैहो अभय-पद, दास कहाये ॥
[२]जा सन कर्म, छपावत है सो ;
तो देखत है घट, में घर छाये ।
बेगि भजो धरनी, सरनी ना तो ;
आवत काल, कमान चढ़ाये ॥

(३)

जननी पितु बंधु, सुता सुत संपति ;
मीत महा हित, संतत जोई ।
आवत संग न, संग सिधावत ;
फाँस मया परि, नाहक खोई ॥
केवल नाम, निरंजन को जपु ;
चारि पदारथ, जेहि तें होई ।
बूझि बिचारि कहै, धरनी जग ;
कोई न काहू, के संग सगोई ॥

१—सवेरा । २—जिससे ।

श्री दूलनदास जी

* नाम *

जब गज अरध नाम गुहरायो ।
जबलगि आवै दूसर अच्छर, तबलगि आपुहिं धायो ॥१॥
पाँय पियादे भै करुनामय, गरुड़ासन बिसरायो ।
धाय गजन्द गोद प्रभु लीन्हो, आपनि भक्ति दिढ़ायो ॥२॥
मीरा को बिष अमृत कीन्हो, बिमल सुजस जग छायो ।
नामदेव हित कारन प्रभु तुम, मिर्तक गाय जियायो ॥३॥
भक्त हेतु तुम जुग जुग जनमेउ, तुमहिं सदा यह भायो ।
बलि बलि दूलनदास नामकी, नामहिं तें चित्त लायो ॥४॥

* चेतावनी *

तू काहे को जगमें आया, जो पै नामसे प्रीति न लाया रे ॥टेक॥
तृस्ना काम स्वाद घनेरे, मनसे नहिं बिसराया रे ।
भोग-बिलास आस निस बासर, इत उत चित्त भरमाया रे ॥१॥
त्रिकुटी तिरथ प्रेम-जल निर्मल, सुरत नहीं अन्हवाया रे ।
दुर्मति करम मैल सब मनके, सुमिरि सुमिरि न छुड़ाया रे ॥२॥
कहँ से आयो कहँ को जैहै, अंत खोज नहिं पाया रे ।
उपजि उपजि के बिनसि गये सब, काल सबै जग खाया रे ॥३॥
कर सत्संग आपने अंतर, तजि मन मोह और माया रे ।
जन दूलन बलि बलि सतगुरुके, जिन मोहिं अलख लखाया रे ।४।

श्री बाबा मलूकदास जी

* नाम *

[गुरुदेव]

नाम तुम्हारा निरमला, निरमोलक हीरा ।
तू साहिब समरत्थ, हम मल-मुत्र के कीरा ॥१॥
पाप न राखै देह में, जब सुमिरन करिये ।
एक अच्छर के कहत ही, भौसागर तरिये ॥२॥
अधम-उद्धारन सब कहैं, प्रभु बिरद तुम्हारा ।
सुनि सरनागत आइया, तब पार उतारा ॥३॥
कोटिक औगुन जन करै, प्रभु मनहिं न आनै ।
कहत मलूकदास को, अपना करि जानै ॥४॥

* उपदेश *

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे ।
अवसर न चूक भौंदू, पायो भलो दाँव रे ॥१॥
जिन तोको तन दीन्हो, ताको न भजन कीन्हो ।
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे ॥२॥
राम जी को गाय गाय, राम जी को रिझाव रे ।
राम जी के चरनकमल, चित्त माहीं लाव रे ॥३॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे तैं झूठी आस ।
आनन्द-मगन होइकै, हरिगुन गाव रे ॥४॥

श्री दरिया साहब जी

(मारवाड़ वाले)

*** नाम ***

नाम बिना भाव करम नहिं छूटै ॥टेक॥
साधसंग और राम-भजन बिन, काल निरन्तर लूटै ॥१॥
मल सेती जो मल को धोवै, सो मल कैसे छूटै ॥२॥
प्रेम का साबुन नाम का पानी, दुइ मिलि ताँता टूटै ॥३॥
भेद अभेद भरम का भाँडा, चौड़े परि परि फूटै ॥४॥
गुरुमुख सबद गहै उर अंतर, सकल भरम से छूटै ॥५॥
राम का ध्यान धरहु रे प्राना, अमृत का मेंह १बूटै ॥६॥
जन दरियाव अरप दे आपा, जरा मरन तब टूटै ॥७॥

श्री यारी साहब जी

॥ झूलना ॥

*** गुरुदेव ***

गुरु के चरन की रज लै के, दोउ नैन के बिच अंजन दीया।
तिमिर मेटि उजियार हूआ, निरंकार पिया को देखि लिया॥
कोटि सुरज तहँ छिपे घने, तीनि लोक धनी धन पाइ पिया।
सतगुरु ने जो करी किरपा, मरि कै यारी जुग जुग जीया॥

१--बरसै।

* उपदेश *

बिन बंदगी इस आलम में, खाना तुझे हराम है रे।
बंदा करै सोई बंदगी, खिदमत में आठों जाम है रे॥
यारी मौला बिसारि के, तू क्या लागा बेकाम है रे।
कुछ जीते बंदगी कर ले, आखिर को [1]गोर [2]मुक़ाम है रे॥

श्री केशवदास जी

[प्रेम]

निरमल कंत संत हम पाया।
कोटि सूर जाकी निर्मल काया॥१॥
प्रेम बिलास अमृत-रस भरिया।
अनुभौ चँवर रैन-दिन ढुरिया॥२॥
आनन्द मंगल सोहं गावैं।
सुखसागर प्रभु कंठ लगावैं॥३॥
सत्यपुरुष धुनि अति उजियारी।
कोटि भानु ससि छबि पर वारी॥४॥
तेज-पुंज निर्गुन उजियारा।
कह केसो सोइ कंत हमारा॥५॥

१—कब्र। २—ठिकाना।

श्री बुल्ला साहब जी

॥ उपदेश ॥

(१)

सुखमनि सुरति डोरि बनाव ।
मेटिहै सब कर्म जिय के, बहुरि इतहिं न आव ॥१॥
पैठि अंदर देखि कंदर, जहाँ जिय को बास ।
उलटि प्रान अपान मेटो, सेत सब्द निवास ॥२॥
गंग जमना मिलि सरस्वति, उमँगि सिखर बहाव ।
लवकंति बिजुली दामिनी, अनहद्द गरज सुनाव ॥३॥
जीति आया आपहीं, गुरु यारि सब्द सुनाव ।
तब दास बुल्ला भक्ति ठानो, सदा रामहिं गाव ॥४॥

(२)

बुल्ला कवने द्वारा देखै आपु ॥ टेक ॥
कवने द्वारा आवै जाय । कवने द्वारा रहै समाय ॥१॥
तिरबेनी द्वारे देखै आपु । सुखमन द्वारे सुमिरै जापु ॥२॥
इँगला पिंगला आवै जाय । दसवें द्वारा रहै समाय ॥३॥

* होली *

होरी खेलो सतगुरु दयाल से ।
धन जोबन सुपना करि जानो, मेलो जोति अपार से ॥१॥
होत अगाध अकास सब्द धुनि, सुनत रहो सुख चाह से ।
साहिब सुरति मुरति हिय लागी, केल करत हर हाल से ॥२॥
एक तान इक मान मनावै, एक ज्ञान इक ध्यान से ।

एक दसा इक भाव भक्ति लै, मिलो बुंद दरियाव से ॥३॥
अलख लखायो दरस दिखायो, खेलत फाग सुचाल से ।
जन बुल्ला ऐसी होरी खेले, उतरि गये भव-जाल से ॥४॥

* रेखता *

प्रीति की रीति से जीति मैदान लिया,
पवन के घोरा से जोरा जाय किया है ॥१॥
पाँच अरु तीन पच्चीस को बसि किया,
साहिब को ध्यान धरि ज्ञान-रस पिया है ॥२॥
तहँ भूख और प्यास नहिं आस और बास नहिं,
एक साहिब से ब्रम्ह जाय थिया है ॥३॥
दास बुल्ला कहै अगम गति तौ लहै,
तोरि के कुफुर तब गगन गढ़ लिया है ॥४॥

श्री गुलाल साहब जी

*** उपदेश ***

(१)

भजन करु मनुवाँ बैरागी ॥१॥

काम क्रोध मद ममता त्यागो, प्रभुचरनन महँ पागी ॥१॥
सुत हित नारि बन्धु १परिजन जन, २डहत हैं स्वारथ लागी ॥२॥
झूठी सेव सेमर फल चाखो, अमृत फल काहे त्यागो ॥३॥
विष भोजनहिं पाय मत सोवहु, सत्त सबद हिये जागी ॥४॥
जन गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन मेलो मन लागी ॥५॥

(२)

३मूढ़हु रे निर्फल दिन जाय, मानुष जन्म बहुरि नहिं पाय ॥१॥
कोइ कासी कोइ प्राग नहाय, पाँच चोर घर लुटहिं बनाय ॥२॥
करि अस्नान राखहिं मन आसा, फिरि फिरि नरक कुंड में बासा ॥३॥
खोजो आप चितै कै ज्ञाना, सतगुरु सत्त बचन परवाना ॥४॥
समय गये पाछे पछिताव, कहैं गुलाल जात है दाव ॥५॥

(३)

मन तुम नेक गहहु चित्त राम ॥टेक॥

जासु नाम सुर नर नहिं पावहिं, संत महा सुख धाम।
पाँच पच्चीस तीन हैं ४मूसिद, उन कहँ ग्राम न ठाम ॥१॥
जारहिं सहर लुटहिं बिनु लसकर, निसिदिन आठौं जाम।
जालिम जोर नेक नहिं मानत, परजा दुखित बेराम ॥२॥

१--परिवार वाले। २-डाह (ईर्ष्या) करते हैं। ३-रे मूढ़। ४--लुटेरे।

सत्त संतोष कायागढ़ भीतर, गहि लो सुरति सों नाम।
उर्ध पवन लै धरहु गगन में, बांधि करहु बिसराम ॥३॥
जम जीतौ घर नौबति बाजै, कियो है जोति मुकाम।
जन गुलाल करहिं बादसाही, नूर तज्जली नाम ॥४॥

(४)

जौ पै कोउ चरनकमल चित्त लावै।
तबहीं कटै करम के फंदा, जमदुत निकट न आवै ॥१॥
पाँच पच्चीस सुनि १थकित भये हैं, तिरगुन ताप मिटावै।
सतगुरु कृपा परम-पद पावै, फिर नहिं भवजल आवै ॥२॥
हरदम नाम उठत है २करारी, संतन मिलि जुल पावै।
मगन भयो सुख दुख नहिं व्यापै, अनहद ढोल बजावै ॥३॥
चरन प्रताप कहाँ लगि बरनौं, मो मन ३उक्ति न आवै।
कहैं गुलाल हम नाम भिखारी, चरनन में घर पावैं ॥४॥

(५)

अगमपुर नौबत धुनि जहँ बाजई।
घन गरजै मोती तहँ बरसै, उलट गगन चढ़ि गाजई ॥१॥
ससि और सूर तहाँ नहिं दिखियत, एकै ब्रह्म बिराजई।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, कुहुकि कुहुकि मन पागई ॥२॥
जाको गुन सुर नर मुनि गावहिं, ध्यावहिं भावहिं जागई।
सकल मनोरथ पूरन पायो, निगुन छत्र सिर छाजई ॥३॥
४इकछत राज करो कायागढ़, काहू ५सोभ न भागई।
कहैं गुलाल सुनो रे मूढ़ मन, दुनिया हाथ न लागई ॥४॥

१--ढीले। २--ध्वनि। ३--कहने के लिये प्रमाण नहीं मिलता। ४--अच्चत अर्थात् नाशसे रहित। ५--किसी के सामने भी।

(६)

सहज सुख दिन दिन हो, भजि लेहु आनँदराय ॥टेक॥
प्रेम प्रीत धरि रीत चरन सों, इत्त उत्त चित्त नहिं जाय।
सुरति निरति ले गवन कियो है, काल निकट नहिं आय ॥१॥
आपु आपनको चीन्हत नाहीं, निसिदिन धंधे धाय।
मोर तोर में लपट रह्यो है, भोंदू भटका खाय ॥२॥
संत साध की रीति न जानै, देवहरि पूजे धाय।
लोक बेद महँ अरुझि रह्यो है, जन्म पदारथ जाय ॥३॥
अगम अगोचर गोचर करिकै, सतगुरु बचन सहाय।
कहैं गुलाल तब जन्म सुफल भयो, घरही में घर पाय ॥४॥

* चेतावनी *

(१)

अंखियाँ खोलि देखु अब, दुनिया है रंग [१]बौर ॥टेक॥
यह तन जीवन दिवस चारि को, धन जोबन कहै मोर।
पाँच तीन के फेर लगो है, मनुवाँ लेत [२]अंकोर ॥१॥
नेकु न रहत डहत निसिबासर, मनुवाँ है सठ [३]घोर।
ऊँच नीच कहिं खावन जानत, भरि भरि बिषै हिलोर ॥२॥
[४]मुदगर मारि कायागढ़ लीन्हो, परो अमरपुर सोर।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारि, मन बाँधो गयो जोर ॥३॥

(२)

करु मन सहज नाम ब्योपार, छोड़ि सकल ब्योहार ॥ टेक ॥
निसु बासर दिन रैन ढहतु है, नेक न धरत करार।
धंध धोख रहत लपटानो, भ्रमत फिरत संसार ॥१॥

१--आमका फूल जो थोड़े समय में झड़ जाता है। २--रस। ३--बहुत बड़ा।
४--मुगदर।

मात पिता सुत बंधू नारी, कुल कुटुम्ब परिवार।
माया फांसि बांधि मत डूबहु, छिन में होहु १सँघार ॥२॥
हरि की भक्ति करी नहीं कबहीं, संत बचन आगार।
करि हंकार मद गर्ब भुलानो, जनम गयो जरि छार ॥३॥
अनुभव घर के सुधियो न जानत, का सूँ कहूँ गँवार।
कहैं गुलाल सबै नर गाफिल, कौन उतारै पार ॥४॥

(३)

हे मन ऐसो बनिज लदावो।
पाँच पच्चीस तीनि आपा में, कसि कै गगन गुफा ठहरावो ॥१॥
सुन्न सिखर पर बाजन बाजै, सुनत सुनत मन भावो।
२लवकै बिजुली मोती बरसै, ३चूँगत चुँगत अघावो ॥२॥
चाँद सूर तहवाँ नहिं दिखियत, निसु दिन आनंद भावो।
काम क्रोध की गरदन मारो, अनुभव अमल चलावो ॥३॥
उमँगि उमँगि प्रभुके रँग राती, ४पुलकित कंठ लगावो।
जन गुलाल पिय प्यारी खसम की, जम सिर डंक बजावो ॥४॥

(४)

नर करबो कवन बिचार, लोगवा पाहुन ॥टेक॥
साँझ सकार रैन-दिन धावहिं, सबहि करत ब्योहार।
भर ५ढिंढ खाइन जनम गँवाइन, काहू न आपु सँभार ॥१॥
पाँच पच्चीस नगर के बासी, मनुवाँ है ६फ़ौदार।
मारि लूटि कै डाँड लेतु है, का तुम करब गँवार ॥२॥
समय गये कोउ संग न साथी, धन जोबन परिवार।

१--नष्ट। २--लपकती है (चमकती है)। ३--चुन-चुनकर। ४--प्रसन्न होकर। ५--पेट। ६--फ़ौजदार (सेनापति)।

जम राजा जब [1]धै लै चलिहैं, छुटिहै सकल पसार ॥३॥
कुसुम सिंगार पहिरि मति भूलो, ढरत न लागै बार।
कहत गुलाल सबै नर गाफिल, जम का करिहै हमार ॥४॥

(५)

लागो रंग झूठो खेल बनाया।
जहँलगि ताको सबै पसारा, मिथ्या है यह काया ॥१॥
मोर तोर छूटत नहिं कबहीं, काम क्रोध अरु माया।
आतमराम नहीं पहिचानत, भोंदू जनम गँवाया ॥२॥
नेम कै आस धरत नर मूढ़हु, चढ़त चरख दिन जाया।
घुमत घुमत कहिं पार न पावै, का लै आया का लै जाया॥३॥
साधसंगति कीन्हे नहिं कबहीं, साहब प्रीति न लाया।
कहैं गुलाल यह अवसर बीते, हाथ कछू नहिं आया ॥४॥

* माया *

सन्तो नारि सों प्रीति न लावै।
प्रीति जो लावै आपु ठगावै, मूल बहुत को पावै ॥१॥
गुरु को बचन हृदय लै लावै, पाँचौं इन्दरी जारै।
मनहिं जीति माया बसि करिकै, काम क्रोध को मारै ॥२॥
लोभ मोह ममता को त्यागै, तृस्ना जीभि निवारै।
सील संतोष सों आसन माँडै, निसुदिन सब्द बिचारै ॥३॥
जीव दया करि आपु सँभारै, साधसंगति चित्त लावै।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, बहुरि न भवजल आवै ॥४॥

* नाम *

नाम रस अमरा है भाई, कोउ साधसंगति तें पाई ॥ टेक ॥

१--पकड़कर।

बिन घोटे बिन छाने पीवैं, कौड़ी दाम न लाई ।
रंग रंगीले चढ़त रसीले, कबहीं उतरि न जाई ॥१॥
छके छकाये पगे पगाये, झूमि झूमि रस लाई ।
बिमल बिमल बानी गुन बोलै, अनुभव अमल चलाई ॥२॥
जहँ जहँ जावै थिर नहिं आवै, १खोलि अमल लै धाई।
जल पत्थल पूजन करि मानत, २फोकट गाढ़ बनाई ॥३॥
गुरु प्रताप कृपा तें पावै, घट भरि ३प्याल फिराई ।
कहैं गुलाल मगन ह्वै बैठे, भगिहै हमरि बलाई ॥४॥

(२)

रे मन नामहिं सुमिरन करै ।
अजपा जाप हृदय लै लावहु, पाँच पच्चीसों तीन मरै ॥१॥
अष्ट-कमल में जीव बसतु है, द्वादस में गुरु दरस करै ।
सोरह ऊपर बानि उठतु है, दुइ दल अमी झरै ॥२॥
गंगा जमुना मिली सरसुती, पदुम झलक तहँ करै ।
पच्छिम दिसा ह्वै गगन मँडल में, काल बली सों लरै ॥३॥
जम जीतो है परम-पद पायो, जोती जगमग बरै ।
कहैं गुलाल सोइ पूरन साहब, हरदम मुक्ति फरै ॥४॥

* प्रेम *

(१)

अबिगत जागल हो सजनी ।
खोजत खोजत सतगुरु पावल,
ताहि चरनवा चितवा लागल हो सजनी ॥टेक॥
साँझ समय उठि दीपक बारल,

१—थोथा । २—फीका । ३—प्याला ।

कटल करमवा मनुवा पागल हो सजनी ॥१॥
चलति उबटि बाट छुटलि सकल घाट,
गरजि गगनवा अनहद बाजल हो सजनी ॥२॥
गइली अनँदपुर भइली अगम सूर,
जितली मैदनवा नेजवा गाड़ल हो सजनी ॥३॥
कहैं गुलाल हम प्रभुजी पावल,
फरल लिलरवा पपवा भागल हो सजनी ॥४॥

(२)

जौ पै कोइ प्रेम को गाहक होई ।
त्याग करै जो मन की कामना, सीस दान दै सोई ॥१॥
और अमल की दर जो छोड़ै, आपु अपन गति जोई ।
हरदम हाजिर प्रेम–प्याला, पुलिक पुलिक रस लेई ॥२॥
जीव पीव महँ पीव जीव महँ, बानी बोलत सोई ।
सोई सभन महँ हम सबहन महँ, बूझत बिरला कोई ॥३॥
वा की गती कहा कोइ जानै, जो जिय साँचा होई ।
कहैं गुलाल वे नाम समाने, मत भूले नर लोई ॥४॥

(३)

आनँद बरखत बुन्द सुहावन ।
उमंगि उमंगि सतगुरु बर राजित, समय सोहावन भावन ॥१॥
चहूँ ओर घन घोरि घटा आयौ, सुन्न भवन मन-भावन ।
तिलक तत्त बेंदी पर झलकत, जगमग जोति जगावन ॥२॥
गुरु के चरन मन मगन भयो जब, बिमल बिमल गुन गावन ।
कहैं गुलाल प्रभु कृपा जाहि पर, हरदम भादों सावन ॥३॥

(४)

सुन्न सिखर चढ़ि जाहब हो, बाजत अनहद तार ॥टेक॥
उमंगि उमंगि सखि गावहिं हो, मानिक देव लिलार ॥१॥
उलटी नदिया सोहावन हो, सत्त सुखमना बास ॥२॥
दृढ़ कै सुरति लगावल हो, सतगुरु संग निवास ॥३॥
जीवके १ऊब निवारहु हो, पाँच पच्चीस मन मार ॥४॥
यहिबिधि ध्यान लगावहु हो, करम मेटो संसार ॥५॥
गावल निर्गुन मनोरवा हो, जन गुलाल मिलो यार ॥६॥

* चेतावनी *

नाहक गर्ब करैहो अंतहि, खाक में मिलि जायगा ॥टेक॥
दिना चारि को रंग कुसुम है, मैं मैं करि दिन जायगा।
बालु का मंदिल ढहत बार नहिं, फिर पाछे पछितायगा ॥१॥
रचि रचि मंदिल कनक बनायो, तापर कियो है अवासा।
घरमें चोर रैनि दिनि मूसहिं, कहहु कहाँ है बासा ॥२॥
पहिरि पटंबर भयो लाडिला, बन्यो छैल मद माता।
गैबी चक्र फिरै सिर ऊपर, छिन में करै २निपाता ॥३॥
नेकु धीर नहिं धरत बावरे, ठौर ठौर चित्त जाते।
देवहरि पूजत तीर्थ नेम ब्रत, फोकट को दंग राते ॥४॥
कासे कहूँ कोउ संग न साथी, खलक सबै हैराना।
कहैं गुलाल संतपुर बासी, जम जातो है दिवाना ॥५॥

* भेद *

(१)

उलटि देखो, घट में जोति पसार।

१--चिन्ता। २--नष्ट।

बिनु बाजे तहँ धुनि सब होवै, बिगसि कमल कचनार ॥१॥
पैठि पताल सूर ससि बांधौ, साधौ त्रिकुटी द्वार।
गंग जमुन के वार पार बिच, भरतु है अमिय करार ॥२॥
इंगला पिंगला सुखमन सोधौ, बहत सिखर मुख धार।
सुरति निरति ले बैठु गगन पर, सहज उठै झनकार ॥३॥
सोहं डोरि मूल गहि बाँधौ, मानिक बरत लिलार।
कहै गुलाल सतगुरु बर पायो, भरियो है मुक्ति भंडार ॥४॥

(२)

* अरिल *

अर्ध उर्ध को खेल कोऊ नर पावई।
चाँद सूर को बाँधि गगन ले जावई॥
इंगल पिंगल दोउ बांधि सहज तब आवई।
कहैं गुलाल हर रोज अनँद तब पावई॥

(३)

रबि ससि दूनों बांधि के सुरति लगाइया।
अजपा जपै सुजाप सोहं डोरि लाइया॥
लगन लगो निरंकार सुरति संग पाइया।
कहैं गुलाल अतीथ सत्त गुन गाइया॥

(४)

मन पवना को संगम कोइ नर पाइया।
अनहद बजै अपार तो अलख लखाइया॥
अनुभव फरत है ज्ञान सुरति ठहराइया।
कहैं गुलाल सोइ संत निसान बजाइया॥

(५)

अष्ट कंवल दल फूल भंवर रस पाइया ।
सुखमन झरत है अमी तो स्वाद से खाइया ॥
नूर [१]तजल्ली बीच सुरति ठहराइया ।
कहैं गुलाल मन पाक अगम घर छाइया ॥

(६)

तिरबेनी का तीर नूर झरि लगाई ।
इंगल पिंगल को खेल सुन्न चढ़ि गाजई ॥
हरदम मन रहो लीन सुरति रस पागई ।
कहैं गुलाल ब्रह्म हेतु सत्त सब जागई ॥

(७)

जालिम मन को बांधि के सहज नचावई ।
पाँच पच्चीस को [२]रफत नूर कस पावई ॥
उलटि सुखमना देस अचल घर छावई ।
कहा गुलाल हर रोज प्रान तब भावई ॥

(८)

साँच करहु नर आपु अवर मति धाइया ।
सतगुरु बचन बिचारि ताहि ठहराइया ॥
गंग जमुन के बीच फूल इक पाइया ।
कहैं गुलाल सत साजि के उर्ध समाइया ॥

* छंद *

यहि दिवस दस रंग कुसुम है, पुनि अंत ना ठहराइया ।
नहिं प्रीति प्रानी करत प्रभ सों, सिर धुनै पछताइया ॥

१—प्रकाश । २—मेल जोल ।

सिर धुनै पछताइया, तब हृदय ज्ञान भुलाइया।
मरकट मुँठी धारे भ्रम ज्यों, आपु आपु बंधाइया॥

* बसंत *

मन मधुकर खेलत बसंत, बाजत अनहद गति अनंत ॥१॥
बिगसत कमल भयो गुँजार, जोति जगमग कर पसार ॥२॥
निरखि निरखि जिय भयो अनंद, बाभल मन तब परल फंद॥३॥
लहरि लहरि बहै जोति धार, चरनकमल मन मिलो हमार ॥४॥
आवै न जाइ मरै नहिं जीव, पुलकि पुलकि रस अमिय पीव ॥५॥
अगम अगोचर अलख नाथ, देखत नैन भयो सनाथ ॥६॥
कहैं गुलाल मोरी पूजलि आस, जम जीत्यो भयो जोति बास ।७।

* होली *

(१)

राम रंग होली खेलो आई, फिर पाछे पछिताई ॥टेक॥
यहि तन फागु मचो परमारथ, अवधि बदो दिन ढाई ॥१॥
काल अगिन जब मस्तक जरिहै, छूटी सब चतुराई ॥२॥
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, चेतन अबीर उड़ाई ॥३॥
इंगल पिंगल दोउ भरत उर्धमुख, छिरकत प्रभुहिं बनाई ॥४॥
दुइबिधि फाग बनो या जग में, जिन जैसो मन लाई ॥५॥
कहैं गुलाल यह अगम फागु है, बिन सतगुरु नहिं पाई ॥६॥

(२)

कोऊ आतम भक्ति ज्ञान जाने। तब सहज सुरत मनुवा माने ।टेक।
याही रीति प्रीति चरनन सों, खोजि सतगुरु पहिचाने॥१॥
तबही होय प्रेम पद पूरन, फाग परम-पद आने ॥२॥
एका एकी खेल बनो जब, सिव घर सक्ति समाने ॥३॥

अनंत कोटि धुनि बाजा बाजे, अगम निगम लपटाने ॥४॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन, गति काहू न जानै ॥५॥
कहैं गुलाल हम नागरि प्रभु संग, नाम परियो दीवाने ॥६॥

(३)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज भनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है, बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार ।
दसों दिसा में होरी ऊठत, प्रभुजी के दरबार ॥१॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं पंचम सुर १रुचिकार ।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फाग खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार ।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छबि, २भूमक परल ३बिहार ॥३॥
संतन संग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कहैं गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(४)

हरदम बंसी बाजी, बाजि निवाजी मेरे मन में ॥टेक॥
जहँ सहज सरूप समाजी, सेत धुजा सिर ऊपर गाजी ॥१॥
उमंगि उमंगि मानिक मनि बरसत, मुक्ता तहँ भरि लागी ॥२॥
सत्त सबद तत्तकार उठत है, संत सदा सुख राजी ॥३॥
जम जीत्यो घर नौबति बाजे, कहैं गुलाल गति साजी ॥४॥

(५)

को जाने हरिनाम की होरी ॥ टेक ॥
चौरासी में रमि रह पूरन, ४तीहुर खेल बनो री ॥१॥

१—मन-भावन । २—होली का एक राग । ३—लीला । ४—तीन प्रकार से ।

घूमि घूमि के फिरत दसों दिसि, कारन नाहिं छुटो री ॥२॥
नेक प्रीति हिये नाहिं आयो, नहिं सतसंग मिलो री ॥३॥
कहैं गुलाल अधम भौ प्रानी, अवरे अवरि गहो री ॥४॥

(६)

मैं तो खेलूँगी प्रभुजी से होरी ॥ टेक ॥
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत, तत्त अबीर भरि झोरी ॥१॥
निसु बासर को फागु परो है, घूमत लगलि ठगौरी ॥२॥
लागो रंग सोहंग गुन गावहिं, निरतत १बाँहा जोरी ॥३॥
कहैं गुलाल सुख बरनि न आवै, चाखत अधर कटोरी ॥४॥

(७)

चरनन में फागुन मन खेले, अनत कहूँ नहिं डोले ॥टेक॥
आठ पहर नौबति धुनि बाजे, पल पल छिन छिन होले ॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, प्रभु से करत कलोले ॥२॥
सुन्न नगर में होरी लै लै, जोति उजेरे खेले ॥३॥
तत्त अबीर उड़त दसहूँ दिसि, काहे को कोऊ तोले ॥४॥
ऐसो सुख जुग जुग नहिं कोई, जो तुम साँची खेले ॥५॥
कहैं गुलाल तब परदा छूटै, कबहूं न भवजल भूले ॥६॥

* रेखते *

(१)

सरन सँभारि धरि चरन तर रहो परि,
काल अरु जाल कोउ अवर नाहीं ॥१॥
प्रेम सों प्रीति करु नाम को हृदय धरु,
जोर जम काल सब दूर जाहीं ॥२॥

१--हाथ जोड़कर ।

सुरति संभारि कै नेह लगाइ कै,
रहो अडोल कहुँ डोल नाहीं ॥३॥
कहैं गुलाल किरपा कियो सतगुरू,
परियो अथाह लियो पकरि बाहीं ॥४॥

(२)

सुरति सों निरति मिलि ध्यान अजपा जपै,
ज्ञान का घोड़ा लै सुन्न धावै ॥१॥
सेत परकास आकास में फूलि रहो,
चित ह्वै भंवर तब जाय पावै ॥२॥
वहँ गुंज अनहद गुंजै नाम तबहीं जगै,
प्रेम भो पूर नहिं अनत आवै ॥३॥
कहैं गुलाल फकीर सो सूर है,
मौज के खेल में खेल पावै ॥४॥

(३)

मन मुक्ता होवै नाम रस नित लेवै,
हंस ह्वै रूप तब दसा पावै ॥१॥
मोती मुक्ता चुंगै कीच में नहिं पगै,
सदा चेतन्य नहिं भरम आवै ॥२॥
देखि दीदार सँभारि ले आपु को,
और नहिं फेर कहुँ दूरि धावै ॥३॥
कहैं गुलाल यहि भांति जो जन होवै,
दिब्य दीदार सो दरस पावै ॥४॥

(४)

ज्ञान उद्योत करि हृदय गुरु बचन धरि,

जोग संग्राम के खेत आवैं ॥१॥
संत सो पूर है सूर माँडे रहै,
१कंच कुच आदि नहिं ओर आवैं ॥२॥
अगम असाध यह मारि कैसे करैं,
काटि के सीस आगे धरावैं ॥३॥
कहैं गुॅलाल तब राम किरपा करैं,
जीति भा सूर सो खेत पावैं ॥४॥

(५)

राम के धाम मोकाम नहिं करत नर,
फिरत संसार चहुँ ओर धाया ॥१॥
करत संताप सब पाप सिर पर लिये,
साध और संत नहिं नेह लाया ॥२॥
बांधिहै काल जंजाल जम-जाल में,
रहत नहिं चेत सब सुधि हेराया ॥३॥
कहैं गुॅलाल जो नाम को जानिहै,
जीति है काल सोइ ज्ञान पाया ॥४॥

(६)

सबद समसेर लै ज्ञान तरकस भरा,
पवन का घोड़ मैदान धाया ॥१॥
पाँच अरु तीन पच्चीस को बांधि कै,
पकरि कै जेर जंजीर नाया ॥२॥
जागती जोति दीवान आपन किया,

१—कनक और कामिनी ।

बचा नहिं कोउ जिन सिर उठाया ॥३॥
मुलुक १मवासि २खवासि आपन किया,
गैब की फौज अदल चलाया ॥४॥
गरजि नीसान अनहद्द नौबति बजै,
जीत के काल मैदान पाया ॥५॥
कहैं गुलाल अगम्य अपार में,
बैठु जे तख्त तिहुँ लोक राया ॥६॥

(७)

गुरू परताप जब साधसंगति करै,
फुलै तब ब्रह्म संतोष आया ॥१॥
आपना जाप तें जाप अजपा जपो,
चाँद अरु सूर को बांधि नाया ॥२॥
सहज नाड़ी बहै सब्द अनुभौ गहै,
सुरति और निरति मिलि नाम गाया ॥३॥
नैन बिनु सूझिया पिंड बिनु जूझिया,
जीति के काल अनहद बजाया ॥४॥
परो आ डंक चहुँ ओर दसहूँ दिसा,
गैब का ज्ञान अदल चलाया ॥५॥
कहैं गुलाल सो साफ साहब हुआ,
आपना काज आपुहिं बनाया ॥६॥

* मंगल शब्द *

अबिनासी दुलहा हमारा हो ॥टेक॥

१--मुलक के मालिक अर्थात् पाँचों विकार आदि । २--गुलाम (सेवक)।

जीतो जोग भोग सब त्यागो, भवसागर सों न्यारा हो ॥१॥
किरपा कीन्हो सतगुरु दीन्हो, उलटा चौक पसारा हो ॥२॥
तन मन धन न्योछावरि डारों, कंत मिलो प्रभु यारा हो ॥३॥
सुखमन सेज निरंतर १डासों, सोहं चँवर २सुढारा हो ॥४॥
ताही पलँग मोर पिय बैसहिं, गावौं मगलाचारा हो ॥५॥
अगम अपार अनुभव अनमूरत, लोक बेद से पारा हो ॥६॥
कहैं गुलाल भाग हम पायो, कियो है चरन अधारा हो ॥७॥

* मिश्रित *

(१)

साँचा है साँचा हरिनाम । संत रटत हैं आठौं जाम ॥१॥
सनकादिकन्ह लियो सुकदेव । नारद कीन्हो संतन भेव ॥२॥
अंबरीक लियो जनक बिदेह । लियो जोगेसरन्ह माया खेह ॥३॥
ध्रू प्रहलाद भरि लियो करार । लियो है कूबरी कंचन थार ॥४॥
लियो हनुमान लियो सुग्रीम । लियो बिभीषन पंडो भीम ॥५॥
नामदेव भरि लियो कबीर । लियो मलूका नानक धीर ॥६॥
रैदास लियो है मीराबाई । नरसी जन लियो खेल कन्हाई ॥७॥
यारीदास लियो गुरु संग पाय । केसो बुल्ला दूनों भाय ॥८॥
सतगुरु बुल्ला सहज लखाय । कहैं गुलाल सब चरन समाय ॥९॥

(२)

हे मन गगन गरजि धुन भारी ।
लेके पवन भवन मन लावो, थकित भई नौ नारी ॥१॥
सुखमन सेज जे सुरति सोहागिनि, निर्गुन कंत पियारी ।
निसु बासर हरदम-दम निरखत, पूजलि आस हमारी ॥२॥

१–बिछावौं । २–भली प्रकार झुलाया ।

जासु नाम सुर नर मुनि ध्यावहिं, आगम बेद उच्चारी।
सोइ प्रभुजी ने आनि कृपा कियो, पल पल लेत करारी ॥३॥
प्रेम पगो मन थकित भयो है, पूरन ब्रह्म निहारी।
कहैं गुलाल राम को सेवक, प्रभुकी गती निनारी ॥४॥

(३)

सुनु सखि मोर बचन इक भारी, उलटि गगन चढ़ि लावो तारी।१।
गहि करि बाँधो नवों दुवारी, हंसा निज-घर कइल धमारी ॥२॥
मनुवाँ मोर चालल १रसना री, बैठल जीव, तहँ मिलिल मुरारी ३
छिन छिन २गारत नाम ३अगारी, पीवत मनुवाँ भइल सुखारी४
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, अचल अमर चर डेरा लेवै ॥५॥
कहैं गुलाल हम पिया की पियारी, तब घर पावल छुटल धंधा री६

(४)

सोई दिन लेखे जा दिन संत मिलाप ॥ टेक ॥
संत के चरनकमल की महिमा, मोरे ४बूते बरनि न जाइ ।१।
जलतरंग जलही तें उपजे, फिर जल माहिं समाइ ॥२॥
हरि में साध साध में हरि हैं, साध से अन्तर नाहिं ॥३॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस साधसंग, पाछे लागे जाहिं ॥४॥
दास गुलाल साधकी संगति, नीच परम-पद पाहिं ॥५॥

१--अंतरका रस लेने चला है। २--भट्टी पर चढ़ाकर रूह निकालना। ३--नामका रस या रूह। ४--बल से।

श्री भीखा साहिब जी

* उपदेश *

॥ कुण्डलिया ॥

जौ भल चाहो आपनो, तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥
सतगुरु खोजहु जाइ, जहाँ वै साहिब रहते ।
निसि दिन इहै बिचार, सदा हरि को गुन कहते ॥
समुझै बूझि बिचारि कै, तन मन लावै सेव ।
कृपा करहिं तब रीझि कै, [1]नाक देहिं गुरुदेव ॥
भीखा बिछुरे जुगन के, पल महँ देहिं मिलाइ ।
जौ भल चाहो आपनो, तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥

* प्रेम *

प्रीति की यह रीति बखानौं ॥ टेक ॥
कितनौ दुख सुख परै देह पर, चरन कमल कर ध्यानौ ॥१॥
हो चेतन्य बिचारि तजो भ्रम, खाँड़ धूर जनि सानौ ॥२॥
जैसे चात्रिक स्वाँति बुन्द बिनु, प्रान समरपन ठानौ ॥३॥
भीखा जेहि तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहि जानौ ॥४॥

* विनय *

अस करिये साहिब दाया ॥ टेक ॥
कृपा कटाच्छ होइ जेहि तें प्रभु, छूटि जाय मन माया ॥१॥
सोवत मोह निसा निस बासर, तुमहीं मोहिं जगाया ॥२॥
जनमत मरत अनेक बार, तुम सतगुरु होय लखाया ॥३॥
भीखा केवल एक रूप हरि, ब्यापक त्रिभुवन राया ॥४॥

१--सत्-धाम ।

श्री गरीबदास जी

* भेद *

(१)

मन मगन भया जब क्या गावै ॥ टेक ॥
ये गुन इंद्री दमन करेगा, बस्तु अमोली सो पावै ॥१॥
तिरलोकी की इच्छा छाड़ै, जग में बिचरै निर्दावै ॥२॥
उलटी सुलटी निरति निरंतर, बाहर से भीतर लावै ॥३॥
अधर सिंघासन अबिचल आसन, जहँवाँ सुरति ठहरावै ॥४॥
त्रिकुटी महल में सेज बिछी है, द्वादस अंदर छिप जावै ॥५॥
अजर अमर निज मूरत सूरत, ओअं सोहं दम ध्यावै ॥६॥
सकल मनोरथ पूरन साहिब, बहुरि नहीं भौजल आवै ॥७॥
गरीबदास सतपुरष बिदेही, साचा सतगुरु दरसावै ॥८॥

(२)

घट ही में चंद चकोरा साधो, घट ही चंद चकोरा ॥टेक॥
दामिनि दमकै घनहर गरजै, बोले दादुर मोरा ।
सतगुरु गस्ती बस्त फिरावै, फिरता ज्ञान ढंढोरा ॥१॥
अदली राज अदल बादसाही, पाँच पचीसो चोरा ।
चीन्हो सबद सिंध घर कीजै, होना १गारतगोरा ॥२॥
त्रिकुटी महल में आसन मारो, जहँ न चलै जम जोरा ।
दास गरीब भक्ति को कीजो, हुआ जात है २भोरा ॥३॥

१--नष्ट । २--प्रभात ।

श्री सूरदास जी

॥ विनय ॥

हमारे प्रभु औगुन चित न धरो।
सम-दरसी है नाम तिहारो, अब मोहिं पार करो ॥१॥
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नार भरो।
जब दोनों मिलि एक बरन भये, सुरसरि नाम परो ॥२॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुन अवगुन नहिं चितवै, कंचन करत खरो ॥३॥
यह माया भ्रम जाल निवारो, सूरदास सगरो।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो ॥४॥

॥ चेतावनी ॥

[१]

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन तरुवर के, सबै पात झरि जैहैं ॥१॥
घर के कहैं बेग ही काढ़ो, भूत भये कोउ खैहैं।
जा प्रीतम से प्रीति घनेरी, सोऊ देखि डरैहैं ॥२॥
कहँ वह ताल कहाँ वह सोभा, देखत धूर उड़ैहैं।
भाई बंधु कुटुम्ब कबीला, सुमिरि सुमिरि पछितैहैं ॥३॥
बिना गुपाल कोऊ नहिं अपना, जस कीरति रहि जैहैं।
सो तो सूर दुर्लभ देवन को, सतसंगति में पैहैं ॥४॥

(२)

रे मन मूरख जनम गँवायो ।। टेक ।।
कर अभिमान विषय सों राच्यो, नाम सरन नहिं आयो ।।१।।
यह संसार फूल सेमर को, सुंदर देखि लुभायो ।
चाखन लाग्यो रूई उड़ि गइ, हाथ कछू नहिं आयो ।।२।।
कहा भयो अब के मन सोचे, पहिले नाहिं कमायो ।
सूरदास सतनाम भजन बिनु, सिर धुनि धुनि पछितायो ।।३।।

* महिमा *

सुने री मैंने निरबल के बल राम ।
पिछली साख भरौं संतन की, अरे सँवारे काम ।।१।।
जब लगि गज बल अपनो बरतियो, नेक सरियो नहिं काम ।
निरबल होइ बल राम पुकारियो, आये आधे नाम ।।२।।
द्रुपद-सुता निरबल भई ता दिन, तजि आये निजधाम ।
दूसासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम ।।३।।
अप-बल तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल दाम ।
सूर किशोर कृपा तें सब बल, हारे को हरि नाम ।।४।।
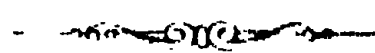
मीराबाई जी

* चेतावनी *

१मनखा जनम पदारथ पायो, ऐसो बहुर न आती ।।टेक।।
अब के २मोसर ज्ञान बिचारो, राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया ३सुंज पिछानी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ।।१।।
४सगुरा सूरा अमृत पीवे, ५निगुरा प्यासा जाती ।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोबिंद का गुन गाती ।।२।।
साहिब पाया आदि अनादी, नातर भव में जाती ।
मीरा कहे इक आस आपकी, औराँ सूँ सकुचाती ।।३।।

* उपदेश *

राम नाम रस पीजे मनुआँ, राम नाम रस पीजे ।। टेक ।।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ।।१।।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से ६बहाय दीजे ।।२।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भींजे ।।३।।

* बिरह *

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय ।। टेक ।।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय ।
गगन मंडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलना होय ।।१।।
घायल की गति घायल जानै, की जिन लाई होय ।

१--मानुष-जन्म । २--अवसर । ३--सूझ । ४--गुरु वाला सूरमा । ५--गुरु से हीन अथवा मनमुख प्राणी । ६--त्याग ।

जौहरी की गत जौहरी जानै, की जिन जौहर होय ॥२॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद सँवलिया होय ॥३॥

* नाम-महिमा *

मेरो मन रामहि राम रटै रे ॥
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के१खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे ॥१॥
२कनक कटोरे ३इम्रत भरियो, पीवत कौन ४नटै रे।
मीराँ कहे प्रभु हरि अबिनासी, तन मन ताहि ५पटै रे ॥२॥

* गुरु-महिमा *

पायो जी मैं तो राम रतन धन पायौ।
बसतु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा करि अपणायौ ॥१॥
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायौ।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिनदिन बधत ६सवायौ ॥२॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयौ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायौ ॥३॥

१—खाते (काल के)। २-सोने के कटोरे में। ३—अमृत। ४—भागे अथवा पीछे हटे। ५—अर्पण। ६—अधिक अधिक।

सहजोबाई जी

* गुरु-महिमा *

(१)

नमो नमो गुरु तुम सरना ।
तुम्हरे ध्यान भरम भय भागैं, जीते पाँचौ और मना ॥१॥
दुख दारिद्र मिटैं तुम नाऊँ, कर्म कटैं जो होहिं घना ।
लोक परलोक सकल बिधि सुधरैं, पग लागैं आय ज्ञान गुना ॥२॥
चरन छुए सब गति मति पलटैं, पारस जैसे लोह सुना ।
सीप परसि स्वाँती भयो मोती, सोहत है सिर राज १रना ॥३॥
ब्रह्म होय जीव बुधि नासै, जब कैसो होना मरना ।
अमर होय अमरापद पावै, यह गुरु कहिये गुरु बचना ॥४॥
चरनदास गुरु पूरे पाये, जग का दुख सुख क्यों सहना ।
सहजो बाई ब्याध छुटा कर, आनँद मंगल में रहना ॥५॥

(२)

हमारे गुरु पूरन दातार ।
अभय दान दीनन को दीन्हे, कीन्हे भवजल पार ॥१॥
जन्म जन्म के बंधन काटे, जम की बंध निवार ।
रंक हुते सो राजा कीन्हे, हरि धन दियो अपार ॥२॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं, जोग बतावनहार ।

१-राजा-राणाओं के सिरपर ।

तन मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुद्धि उँजियार ॥३॥
सब दुख-गंजन पातक-भंजन, रंजन ध्यान बिचार ।
साजन दुर्जन जो चलि आवैं, एकहि दृष्टि निहार ॥४॥
आनँद रूप सरूप मई है, लिप्त नहीं संसार ।
चरनदास गुरु सहजो के रे, नमो नमो बारम्बार ॥५॥

(३)

हमारे गुरु बचनन की टेक।
आन धरम कूँ नाहिं जानूँ, जपूँ हरि हरि एक ॥१॥
गुरु बिना नहिं पार उतरौ, करौ नाना भेख ।
रमौ तीरथ बर्त राखौ, होहु पंडित सेख ॥२॥
गुरु बिना नहिं ज्ञान दीपक, जाय ना अँधियार ।
काम क्रोध मद लोभ माहीं, उरझिया संसार ॥३॥
चरनदास गुरु दया करि के, दिये मन्तर कान ।
सहजो घट परगास हूवा, गयौ सब अज्ञान ॥४॥

* नाम *

भया हरि रस पी मतवारा ।
आठ पहर झूमत ही बीतै, डार दिया सब भारा ॥१॥
इड़ा पिंगला ऊपर पहुँचे, सुखमन पाट उघारा ।
पीवन लगे सुधा रस जब ही, दुर्जन पड़ी बिडारा ॥२॥
गंग जमन बिच आसन मारियो, चमक चमक चमकारा ।
भँवर गुफा में दृढ़ ह्वै बैठे, देख्यो अधिक उजारा ॥३॥
चित इस्थिर चंचल मन थाका, पाँचौ का बल हारा ।
चरनदास किरपा सूँ सहजो, भरम करम हुए छारा ॥४॥

* चेतावनी *

हरि बिनु तेरौ न हितू, कोइ या जग माहीं ।
अन्त समय तू देखि ले, कोइ गहै न बाँहीं ॥१॥
जम सूँ कहा छुटा सकै, कोइ संग न होई ।
नारी हू फटि रहि गई, स्वारथ कूँ रोई ॥२॥
पुत्र कलित्तर कौन के, भाई अरु बन्धा ।
सब ही ठीक जलाइ हैं, समझै नहिं अन्धा ॥३॥
महल दरब ह्याँ ही रहै, पचि पचि करि जोड़ा ।
करहा गज ठाढ़े रहैं, चाकर और घोड़ा ॥४॥
पर काजै बहु दुख सहे, हरि सुमिरन खोया ।
सहजो बाई जम घिरैं, सिर धुनि धुनि रोया ॥५॥

* उपदेश *

बाबा काया नगर बसावौ ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौ, सुरति निरति लौ लावौ ॥१॥
पाँच मारि मन बसि कर अपने, तीनौं ताप नसावौ ।
सत संतोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भजावौ ॥२॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बंब बजावौ ।
पाप बानिया रहन न दीजै, धरम बजार लगावौ ॥३॥
सुबस बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई ।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो सँभलौ सोई ॥४॥

* बसंत *

(१)

आयौ बसंत धन मेरे भाग, पाँचौ गावैं एक राग ॥१॥

और पचीसौं उनके संग, सो भी भींगे सरस रंग ॥२॥
मतवारे भये मन से भूप, सखि बिसरीं सब अपना रूप ॥३॥
नगर लोग नहिं तन सँभार, मगन भये सब वार वार ॥४॥
कह्यो न जाय उपज्यो अनन्द, और खेल सब भये मन्द ॥५॥
तिरबेनी तट करि बिहार, पीवत बैठे अमी धार ॥६॥
जोति बाल पूजे सुदेव, अगम अगोचर पायौ भेव ॥७॥
सीस भेंट जो दीन्हो जाय, दरसन कीन्हे अति अघाय ॥८॥
चरनदास गुरु दई सैन, सहजो बाई पायो चैन ॥९॥

(२)

सो बसंत नहिं बार बार। तं पाई मानुष देह सार ॥
यह औसर बिरथा न खोव। भक्ति बीज हिये धरती बोव ॥
सतसंगत को सींच नीर। सतगुरु जी सों करौ १सीर ॥
ताकी २बार बिचार देव। परन राख या कूँ जु सेव ॥
रखवारी कर हेत हेत। जब तेरी होवै जैत जैत ॥
खोट कपट पंछी उड़ाव। मोह प्यास सबही जलाव ॥
सँभलै बाड़ी नऊ अंग। प्रेम फूल फूलै रंग रंग ॥
पुहुप गूँध माला बनाव। आदि पुरुष कूँ जा चढ़ाव ॥
तौ सहजो बाई चरनदास। तेरे मन की पुरवैं सकल आस ॥

* उपदेश *

(१)

हरि हर जप लेनी औसर बीतो जाय।
जो दिन गये सो फिर नहिं आवैं, कर बिचार मन लाय ॥१॥
या जग बाजी साच न जानौं, ता में मत भरमाय।

१–शिराकत या हिस्सेदारी। २–बाड़।

कोइ किसी का है नहिं बौरे, नाहक लियौ लगाय ॥२॥
अंत समय कोइ काम न आवै, जब जम देहि बोलाय।
चरनदास कहैं सहजो बाई, सत संगत सरनाय ॥३॥

(२)

सुमिर सुमिर नर उतरो पार, भौसागर की १तीछन धार ॥टेक॥
धर्म जिहाज माहिं चढ़ि लीजै,सँभल सँभल ता में पग दीजै।
२स्रम करि मन को संगी कीजै,हरि मारग को लागौ यार॥१॥
३बादबान पुनि ताहि चलावै, पाप भरै तौ हलन न पावै।
काम क्रोध लूटन को आवै, सावधान ह्वै करो संभार ॥२॥
मान पहाड़ी तहाँ अड़त है, आसा तृस्ना भँवर पड़त है।
४पाँच मच्छ जहँ चोट करत हैं,ज्ञान आँखि बल चलौ निहार।३।
ध्यान धनी का हिरदै धारै, गुरु किरपा सूँ लगै किनारे।
जब तेरी ५बोहित उतरै पारै,जन्म मरन दुख बिपता टार ॥४॥
चौथे पद में आनँद पावै, या जग में तू बहुरि न आवै।
चरनदास गुरुदेव चितावैं, सहजो बाई यही बिचार ॥५॥

* नाम *

(१)

जाग जाग जो सुमिरन करै, आप तरै औरन लै तरै ॥टेक॥
हरि की भक्ति माहिं चित देवै, पद पंकज बिन और न सेवै।
आन धरम कूँ संग न लेवै, फलन कामना सब परिहरै ॥१॥
काल ज्वाल सबही छुट जावै, आवा गवन की डोरि नसावै।

१--तेज़। २--मिहनत करके। ३--किश्ती में हवा का मुक़ाबला करने के लिये जो कपड़े का बना हुआ होता है। ४--काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी पाँच मगरमच्छ। ५--जहाज़।

जोनी संकट फिरि नहिं आवैं, बार बार जनमै नहिं मरै ॥२॥
ऊँची पदवी जग में पावै, राजा राना सीस नवावे ।
तन छूटै जा मुक्ति समावै, जो पै ध्यान धनी का धरै ॥३॥
ह्याँ पै सुख जो जानै कूरा, गुरु चरनन में लागै पूरा ।
बेग सम्हारै जो जन सूरा, चरनदास सहजो हो अरै ॥४॥

(२)

ज्यों त्यों राम नाम ही तारै ।
जान अजान अग्नि जो छुवै, वह जारै पै जारै ॥१॥
उलटा सुलटा बीज गिरै ज्यों, धरती माहीं कैसे ।
उपजि रहै निहचै करि जानौ, हरि सुमिरन है ऐसे ॥२॥
बेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा ।
तीन १कांड में अधिकी जानौ, पाप जलावन हारा ॥३॥
हिरदा सुद्ध करै बुद्धि निरमल, ऊँची पदवी देवै ।
चरनदास कहैं सहजो बाई, ब्याधा सब हरि लेवै ॥४॥

(३)

हमरे औषध नाँव धनी का ।
आध ब्याध तन मन की खोवै, सुद्ध करै वह नीका ॥१॥
अमर भये जिन जिन यह खाई, भव नगरी नहिं आये ।
जो पॅछ करै सँभल दृढ़ राखे, सतगुर बैद बताये ॥२॥
सतसंगत को भवन बनावै, पड़दा लाज लगावै ।
जगत बासना पवन चलत है, सो आवन नहिं पावै ॥३॥
सूभ करम लै टेक टहलुवा, दीपक ज्ञान जलावै ।
नित्य अनित्य बिचार सार गहु, हो आसार बगावै ॥४॥

१—लोक ।

जीव रूप के रोग भगैं यौं, ब्रह्म रूप ह्वै जावै ।
सहजो बाई सुन हुलसावै, चरनदास बतलावै ॥५॥

* चेतावनी *

मन तोहि कब उपजैगी ग्यान ।
इंद्रिन के रस सूँ छुटि निर्मल, पारब्रह्म गलतान ॥१॥
जग सूँ पीठ कहो कब दैहो, सनमुख हरि की ओर ।
साधों की संगत कब करिहो, कुल कुटुँब को छोड़ ॥२॥
जप करिबे को कब तुम लगिहो, चरन कमल के ध्यान ।
निस दिन आयु घटै तन छीजै, मनुष जनम की हान ॥३॥
तुम जो कहो मैं काल्ह करूँगो, काल्ह काल के हाथ ।
जा कारन ऐसी मति उपजै, सो झूठा है साथ ॥४॥
चरनदास गुरु मोहिं बतायो, सहजो हिरदे राख ।
भजनहिं एक सार वस्तु है, सब मिलि बेद पुरानन भाख ॥५॥

सोलह तिथि निर्नय

* दोहा *

परनाम करूँ सुकदेव जी, तुम पर वारूँ प्रान ।
सोलह तिथि अब कहत हूँ, इन का दीजै ज्ञान ॥
चरनदास के चरन कूँ, निस दिन राखूँ ध्यान ।
ज्ञान भक्ति और जोग कूँ, तिथि में करूँ बखान ॥

* कुण्डलियाँ *

॥ मावस ॥

ममा ररा दो अँक कूँ, राखौ हिरदे माहिं ।
धर्म राय जाँचै नहीं, लेखा माँगै नाहिं ॥

लेखा मांगै नाहिं, जाय नहिं जमपुर बंधा ।
ऐसे निर्मल नाम को, बिसरै सो अंधा ॥
टीका चारों बेद का, महिमा कही न जाय ।
औसर बीत्यौ जात है, सहजो सुमिर अघाय ॥

॥ पड़िवा ॥

पानी का सा बुलबुला, यह तन ऐसा होय ।
पीव मिलन की ठानिये, रहिये ना पड़ि सोय ॥
रहिये ना पड़ि सोय, बहुर नहिं मनुखा देही ।
आपन ही कूँ खोज, मिलै जब राम सनेही ॥
हरि कूँ भूले जो फिरैं, सहजो जीवन छार ।
सुखिया जबही होयगो, सुमिरैगो करतार ।

॥ दूज ॥

दोयज धंधा जगत का, लागि रहै दिन रैन ।
कुटुँब महा दुख देत हैं, कैसे पावै चैन ॥
कैसे पावै चैन, बिना साधू की संगत ।
दुनिया रंग पतंग, मजीठी गुरु की रंगत ॥
जन्म मरन ता सूँ छुटै, सहजो दरसै राम ।
चौरासी के दुख मिटैं, पावै निजपुर धाम ॥

॥ तीज ॥

तीज तनिक सुख कारने, बहुत फसायो जीव ।
लालच लागि ऐसो गिरै, जैसे मक्खी घीव ॥
जैसे मक्खी घीव, डूब करि निकसै नाहीं ।

ऐसे यह नर बूड़ि, रहै कुनबे के माहीं ॥
मनुखा देही पाय कै, सहजो डारी खोय ।
जमपुर बाँधे वे चले, चौरासी दुख होय ॥

॥ चौथ ॥

चौथ चहूँ दिसि तिमिर है, महा घोर भयमान ।
मूरख जन सोवत तहाँ, मिथ्या ते अज्ञान ॥
मिथ्या ते अज्ञान, सत्य कूँ जानत नाहीं ।
बन बन ढूँढ़त फिरत, राम अपने ही माहीं ॥
ज्यों मिंहदीं में रंग है, लकड़ी मध्य हुतास ।
सहजो काया खोजि ले, काहे रहत उदास ॥

॥ पाँचै ॥

पाँचौ इन्द्री बस करौ, मन जीतन की ठान ।
पवन रोक अनहद लगौ, पावौ पद निर्बान ॥
पावौ पद निर्बान, करौ तुम ऐसी करनी ।
आसन संजम साध, बन्ध लागौ जब धरनी ॥
चित मन बुधि हंकार कूँ, करौ इकट्ठे आन ।
सहजो निज मन होय जब, निस्चल लागै ध्यान ॥

॥ छट्ट ॥

छहूँ कँवल कूँ देख करि, सतवें में घर छाव ।
रसना उलटि लगाय करि, जब आगे कूँ धाव ॥
जब आगे कूं धाव, देख करि जगमग जोती ।
बिन दामिनि चमकार, सीप बिन उपजै मोती ॥
हन्स हन्स जहँ होत है, ओअं ओअं होय ।

चरनदास यों कहत हैं, सहजो सुरति समोय ॥

॥ सातैं ॥

सतसंगत ही कीजिये, सत ही कथिये ज्ञान ।
सत ही मुख सूँ बोलिये, सत ही कीजे ध्यान ॥
सत ही कीजे ध्यान, हद्द तजि बेहद लागो ।
तीन अवस्था छोड़ि, जाय तुरिया सूं पागो ॥
निराकार निर्गुन तहाँ, इकरस चेतन रूप ।
रात दिना सहजो नहीं, नहीं छाँह नहिं धूप ॥

॥ आठैं ॥

आठन कूँ जानै नहीं, दस कूँ नाहीं भेद ।
चौबीसो समझै नहीं, कैसे छूटै खेद ॥
कैसे छूटै खेद, पंच कूँ जीतै नाहीं ।
और पचीसों संग, रहै उनके ही माहीं ॥
दोय सदा लागी रहै, चौरासी के फेर ।
चरनदास यों कहत हैं सहजो आपा हेर ॥

॥ नौमी ॥

निन्दा हिन्सा त्याग करि, तामस कूँ दे पीठ ।
चित कूँ अस्थिर कीजिये, नासा आगे दीठ ॥
नासा आगे दीठ, जहाँ कछु देखौ भाई ।
पाँच तत्त दरसायँ, और अचरज दरसाई ॥
तिरदेवा और सिधि, देखौ इन्दर भूप ।
चरनदास कहैं सहजिया, साधन अधिक अनूप ॥

॥ दसमी ॥

दसो दिसा भर पूर है, ता में यह सब पिंड ।
ज्यों सरवर में बुदबुदे, ब्रह्म बीच ब्रह्मंड ॥
ब्रह्म बीच ब्रह्मंड, तासु को वार न पारा ।
ऐसो तत्त अगाध, नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरनदास कहैं सहजिया, गुरु से लेवौ ज्ञान ।
नैना होहिं अनन्त ही, जब यह पावै जान ॥

॥ एकादसी ॥

ग्यारस गति जो चहत हौ, तजौ जगत की आस ।
कलह कल्पना छाँड़ि के, आतम में करि बास ॥
आतम में करि बास, खैंच इन्द्री दस लावौ ।
मन इस्थिर जब होय, सुरति और निरति मिलावौ ॥
ध्याता थाके ध्यान में, ध्यान ध्येय के माहिं ।
जनम मरन मिटि सहजिया, उपजै बिनसै नाहिं ॥

॥ द्वादसी ॥

द्वादस दावा दूर करि, दावे ही में दुक्ख ।
राग दोष और आपदा, अकस निबारै सुक्ख ॥
अकस निबारै सुक्ख, मोहिं चरनदास दुहाई ।
तामस सब ही त्याग, तासु में बहुत भलाई ॥
काम क्रोध मद लोभ कूँ, ज्ञान अगिन सूँ जार ।
जब निर्मल ह्वै सहजिया, आनँद लहै अपार ॥

॥ तेरस ॥

तेरस तन अचरज महा, छिनभंगी छल रूप ।
देखत ही देखत गये, कहा रंक कहा भूप ॥
कहा रंक कहा भूप, कोई रहने नहिं पावै ।
इत सूँ सब ही जाहि, बहुरि उत सूँ नहिं आवै ॥
इतने ऊपर घर करै, महल दरब सन्तान ।
हाँसी आवै सहजिया, ये मूरख मस्तान ॥

॥ चौदस ॥

चौरासी भुगती घनी, बहुत सही जम मार ।
भरम फिरें तिहु लोक में, तहू न मानी हार ॥
तहू न मानी हार, मुक्ति की चाह न कीन्ही ।
हीरा देही पाय, मोल माटी के दीन्ही ॥
मूरख नर समझै नहीं, समझाया बहु बार ।
चरनदास कहैं सहजिया, सुमिरै ना करतार ॥

॥ पूनो ॥

पूनो पूरा गुरु मिलै, मेटै सब सन्देह ।
सोवत सूं चेतन्न होय, देखै जाग्रत गेह ॥
देखै जाग्रत गेह, जहाँ सूं सुपने आयौ ।
जग कूं जान्यौ सांच, रूप अपनों बिसरायौ ॥
चरनदास कहैं सहजिया, गुरु चरनन चित लाव ।
तिमिर मिटै अज्ञान कूं, ज्ञान चाँदनो पाव ॥

॥ दोहा ॥

सोलह तिथि पूरन भई, सहजो करी बखान।
चरनदास की दया सूँ, मिटौ सकल अज्ञान ॥
लिखै पढ़ै सुनै प्रीति सूँ, ता को पाप नसाहि।
और ऐसी करनी करै, मुक्ति रूप ह्वै जाहि ॥

सात वार निर्नय

* कुँडलिया *

बुध बारी में फल घने, जो पै देवै बाड़।
रखवारी के बिन किये, पाँचौ करै उजाड़ ॥
पाँचौ करै उजाड़, पचीसौ चरि चरि जाई।
सावधान जो होय, सोई वा के फल खाई ॥
चरनदास कहैं सहजिया, ऐसे समुझ बिचार।
तेरी काया में खिलै, भाँति भाँति गुलजार ॥

बृहस्पति वारी आइया, पाई मनुषा देह।
सो तन छिन छिन घटत है, भयो जात है खेह ॥
भयो जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहो।
बेगहिं समुझ सँभार, नहीं बहुतै पछितैहो ॥
आगा पीछा क्या करै, सकल बासना त्याग।
चरनदास कहैं सहजिया, हरि सुमिरन सूँ लाग ॥

एत जो आये जगत में, हरि सुमिरन के काज।
ह्याँ कुछ कीया और ही, नेक न आई लाज ॥
नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे।

सदा रहे अज्ञान, राम घट में नहिं चीन्हे ॥
जैहौ जनम गँवाय के, पछितावा रहि जाय ।
चरनदास कहैं सहजिया, कहा कियौ तन पाय ॥

सोम सिरीपति सेइये, गुरु की आयस लेय ।
सतसंगति अचरज कथा, ताहीं में मन देय ॥
ताहीं में मन देय, और ऊँचा नहिं या तें ।
और सकल धर्म डरै, सभी थोथी हैं बातें ॥
चरनदास कहैं सहजिया, भक्ति सिरोमनि जान ।
तन मन चित बुध प्रान कूँ, ता में दीजै आन ॥

दयाबाई जी

* दोहा *

चरनदास गुरुदेव ने, मो सूँ कह्यो उचार ।
"दया" अहर निसि जपत रहु, सोहं सुमिरन सार ॥१॥
नासा आगे दृष्टि धरि, स्वाँसा में मन राख ।
"दया" दया करिकै कह्यौ, सतगुर मो सूँ भाख ॥२॥
पदमासन सूँ बैठ करि, अंतर दृष्टि लगाव ।
"दया" जाय अजपा जपौ, सुरति स्वाँस में लाव ॥३॥
अर्ध उर्ध मधि सुरति धरि, जपै जु अजपा जाप ।

"दया" लहै निज धाम कूँ, छुटै सकल संताप ॥४॥
स्वाँसउ स्वाँस बिचार करि, राखै सुरति लगाय।
"दया" ध्यान त्रिकुटी धरै, परमातम दरसाय ॥५॥
"दया" कह्यो गुरदेव ने, कूरम को ब्रत लेहि।
सब इंद्रिन कूँ रोकि करि, सुरत स्वाँस में देहि ॥६॥
बिन रसना बिन माल कर, अंतर सुमिरन होय।
"दया" दया गुरुदेव की, बिरला जानै कोय ॥७॥
अजपा सोहं जाप तें, त्रिबिध ताप मिटि जाहिं।
"दया" लहै निज रूप कूँ, या में संसय नाहिं ॥८॥
हृदय कमल में सुरति धरि, अजपा जपै जो कोय।
बिमल ज्ञान प्रगटै तहाँ, कलमख डारै खोय ॥९॥

※ चौपाई ※

गुरु बिन ज्ञान ध्यान नहिं होवै।
गुरु बिन चौरासी मग जोवै ॥१॥
गुरु बिन राम भक्ति नहिं जागै।
गुरु बिन असुभ कर्म नहिं त्यागै ॥२॥
गुरु ही दीन-दयाल गुसाईं।
गुरू सरनै जो कोई जाई ॥३॥
पलटैं करैं काग सूँ हंसा।
मन को मेटत हैं सब संसा ॥४॥
गुरू हैं सब देवन के देवा।
गुरु को कोउ न जानत भेवा ॥५॥

करुना-सागर कृपा-निधाना ।
गुरु हैं ब्रह्म रूप भगवाना ॥६॥
दै उपदेस करैं भ्रम नासा ।
"दया" देत सुख-सागर बासा ॥७॥
गुरु को अहि निसि ध्यान जो करिये ।
बिधिवत सेवा में अनुसरिये ॥८॥
तन मन सू अज्ञा में रहिये ।
गुरु अज्ञा बिन कछू न करिये ॥९॥

फुटकर

॥ रुबाई ॥

ख़ाक आप को समझना, १इकसीर है तो यह है ।
२इख़लाक़ सबसे रखना, ३तसख़ीर है तो यह है ॥
सब काम अपना करना, ४तक़दीर के हवाले ।
नज़दीक ५आरिफ़ों के, तदबीर है तो यह है ॥

॥ रुबाई ॥

वीराँ किया जब आप को, बस्ती नज़र पड़ी ।
जब आप ६नेस्त हम हुए, हस्ती नज़र पड़ी ॥
देखा तो ख़ाकसारी ही, आला मुक़ाम है ।
ज्यों ज्यों ७बलंद हम हुए, ८पस्ती नज़र पड़ी ॥

१--रसायन । २--अच्छा बर्ताव । ३--वशी करन । ४--मौज । ५--साधुओं । ६--जब अपने को मिटा दिया । ७--ऊँचे । ८--निचाई (नीचे) ।

आनन्द-सागर

यह संसार क्या है ? मनुष्य क्यों इस संसार में आया है ? मानुष-जीवन का परम उद्देश्य क्या है ? उद्देश्य की प्राप्ति के लिये साधन क्या है ? अपने आपकी पहिचान और असलियत की खोज का ठीक ठीक रास्ता कौनसा है ? जन्मों का बिछुड़ा हुआ जीव अपने मालिक से क्योंकर मिल सकता है ? बन्धन क्या है और मोक्ष क्या है ? बन्धन से छुटकारा पाने या मोक्ष-प्राप्ति का सरल मार्ग कौनसा है ? सतगुरु की जीव को क्यों ज़रूरत है ? और मनुष्य किस प्रकार रूहानियत या भक्ति के मार्ग में सफल-मनोरथ हो सकता है ? ये तथा ऐसे ही कुछ अन्य प्रश्न भी हैं, जोकि करीब करीब प्रत्येक उस मनुष्य के चित्तमें उत्पन्न होते हैं जिसे थोड़ी बहुत भी रूहानी लगन होती है।

यदि आप इन सभी प्रश्नों के उत्तर सन्तों-महापुरुषों की वाणियों तथा माने हुए प्रसिद्ध ग्रन्थों और शास्त्रों के बचनों के द्वारा जानना चाहते हैं तो 'आनन्द-सागर' पढ़िए। यह प्रसिद्ध ग्रन्थ क्या है ? आपको घर बैठे रूहानी खूराक पहुँचाने का प्रबन्ध है। भक्ति-मार्ग के अभिलाषियों के लिए यह अनूपम उपहार है।

इस प्रसिद्ध ग्रन्थ के कई भाग होंगे, जिनमें पहला भाग छपकर तैय्यार है। यह सुन्दर ग्रन्थ केवल हिन्दी भाषा में छपवाया गया है, इसलिये प्रेमी जन केवल हिन्दी में ही आर्डर देवें ।

पुस्तक मिलने का पता :—

कार्यालय आनन्द-सन्देश

पोस्ट श्रीआनन्दपुर

जिला गुना (मध्यप्रदेश)

मुद्रक :--आनन्द प्रिंटिंग प्रेस, श्रीआनन्दपुर